इंग्लैंड का राजदर्शन

बेकन से हैलीफैक्स तक

o

जी० पी० गूच

कि ता ब म ह ल,

इलाहाबाद, बम्बई, दिल्ली

१९५८

अंग्रेजी संस्करण

सन् १९१५ में सर्वप्रथम मुद्रित तथा सन् १९२३, १९२६, १९२७, १९२९, १९३३, १९४४, १९४६ तथा १९५० में पुनर्मुद्रित।

प्रथम हिन्दी संस्करण

१९५८

ज्योफ्रे कम्बरलीज लिमिटेड, आक्सफ़ोर्ड प्रेस, लन्दन, न्यूयार्क, टॉरन्टो द्वारा प्रकाशित जी० पी० गूच की रचना Political Thought In England, From Bacon To Halifax का श्री गणेशप्रसाद सिंह, एम० ए०, द्वारा किया गया हिन्दी अनुवाद।

प्रकाशक—किताब महल, इलाहाबाद
मुद्रक—हिन्दी प्रेस, इलाहाबाद

विषय-सूची

अध्याय १

जेम्स प्रथम, बेकन तथा राजाओं का दैवी अधिकार

(१)

यदि सोलहवीं शताब्दी धार्मिक विवादों का युग थी तो सत्रहवीं विशेषकर राजनीतिक बहस का काल रही। धार्मिक सुधारवादी आन्दोलन ने योरोप की परम्परागत व्यवस्था को छिन्न-भिन्न कर दिया था और अब किसी ऐसी नई पद्धति की आवश्यकता थी जिसके आश्रय में व्यक्ति तथा राष्ट्र सुरक्षित रह सकते। ऐसा आश्रय लौकिक शासक के अधिकारों में अभिवृद्धि हो जाने से प्राप्त हुआ। लेकिन राजाओं के अपरिमित तथा अनधिकृति दावों की अवश्यम्भावी प्रतिक्रिया जनता की लोक-अधिकारों की माँग में हुई। यदि निरंकुश राज्य सुधारवादी आन्दोलन का शिशु व उत्तराधिकारी था तो प्रजातंत्र उसके अवशेष का प्रतिनिधि। बेकन (Bacon) से लॉक (Locke) तक के दार्शनिकों तथा जेम्स प्रथम (James I) से हेलीफैक्स (Halifax) तक के राजनयज्ञों ने सामन्तवादी तथा धार्मिक सिद्धान्तों के स्थान पर, जो हमेशा के के लिए लुप्त हो चुके थे, मानवीय साहचर्य का एक नवीन आधार ढूँढ़ निकालने में अपने आप को लगा दिया। यही सत्रहवीं शताब्दी के राजनीतिक विचारों की कुंजी है।

पोपशाही तथा चर्च की खोई हुई सत्ता को हेनरी अष्टम ने अपने काबू में ले लिया तथा वह उसे अपने शक्तिशाली हाथों में दृढ़तापूर्वक जकड़े रहा; और एलिज़ाबेथ के शासनकाल में राष्ट्रीय अस्तित्व के लिए जो संघर्ष छिड़ा, उसमें देश इस बात से संतुष्ट था कि उसका भाग्य-निर्णायक एक शक्तिशाली तथा लोकप्रिय शासक है। एलिजाबेथ ने घोषणा की कि, "इस संसार की कोई भी वस्तु मुझे अपनी प्रजा के स्नेह तथा सद्भावना से अधिक प्रिय नहीं है"; और उसकी प्रजा को उसके शब्दों में विश्वास था। राष्ट्र ने ट्यूडर

राजाओं की स्वेच्छाचारिता को सहमति प्रदान की; किन्तु राष्ट्र की धार्मिक तथा राजनीतिक आकांक्षाओं के प्रवर्तक होने के नाते ही, वे अपने अनियंत्रित स्वत्वों तथा अधिकारों का उपयोग करने में सफल हो सके थे। आर्मेडा की पराजय के पश्चात् देश अनुभव करने लगा था कि कठोर नियत्रण की आवश्यकता समाप्त हो चुकी है, और कुमारी रानी की मृत्यु के पश्चात् नई प्रवृत्तियों का उठना प्रारंभ हो गया। उसके प्रति लोगों की श्रद्धा व्यक्तिगत रूप में थी, उसके पद के कारण नहीं। सुधारवादी आन्दोलन का व्यक्तिवादी अवशेष दो पीढ़ियों से चुपचाप अपना कार्य कर रहा था, तथा प्योरिटन सम्प्रदाय को पूर्णरूप से विश्वास हो गया था कि निरंकुशता तथा धार्मिक स्वतंत्रता जिसे वे अपना सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण लौकिक अधिकार मानते थे, दो असंगत चीज़ें हैं। यदि राज़सत्ता और जनता के बीच संघर्ष को टालना था तो यह केवल असाधारण युक्ति के प्रयोग और इस बात की स्वीकृति कि राजनीतिक एवं धार्मिक स्वतंत्रता की दिशा में सचेत होकर आगे बढ़ने का अवसर आ गया है, से ही किया जा सकता था। मुख्यतः ट्यूडर राजाओं की नीति के कारण राज-सत्ता कुलीनों के हाथ से निकलकर ग्रामीण मध्य वर्गीय लोगों तथा व्यापारियों के हाथ में चली गई थी। अब उत्तराधिकार किसी प्रकार संकट में नहीं था और निरंकुश शासन सहन करने की भावना लोगों के हृदय से लुप्त हो चुकी थी। जेम्स प्रथम से अधिक बुद्धिमान कोई भी शासक अपनी प्रजा को प्रगति के पथ पर अग्रसर कर सकता था; किन्तु वह जन-साधारण की भावना के अंतरतम से पूर्णतः अनभिज्ञ था जिसने एलिजाबेथ को असाध्य भूलें करने से बचा लिया था। ऐसे समय में जब अधिकांश लोग उन रियायतों से भी अधिक रियायतें चाहते थे जो या तो उन्हें पहले प्राप्त थीं या एलिजाबेथ के समय में योरप की परिस्थितियों में संभव हो सकी थीं, जेम्स ने अपनी सत्ता के विषय में ऊँची धारणा बना रखी थी, जबकि उसमें अपने पूर्ववर्ती गुणी तथा कुशल शासक के समान शासन करने की क्षमता न थी। जब इंग्लैंड शीघ्रता से उन्नति के पथ पर अग्रसर हो रहा था, उसने उसकी प्रगति को नियंत्रित करने का निश्चय किया।

जेम्स के राजनीतिक दर्शन का उदय अधिकतर उसके प्रारंभिक जीवन के

अनुभवों से हुआ था। यह जानकर कि एक तो राजपद में निहित सत्ता अत्यल्प है और दूसरे उसके प्रति जनता में अधिक सम्मान भी नहीं है, अकाल प्रौढ़ कुमार का हृदय रोष से भर गया। उसके पिता की हत्या कर दी गई थी और उसकी माँ को राजगद्दी से उतार दिया गया था। सबसे बड़ी बात यह थी कि 'प्रेस्बीटेरियन्स' (Presbyterians) लौकिक सत्ता को तिरस्कार की दृष्टि से देखते थे, और उनके नेता प्रजा का राज पर नियंत्रण रखने तथा उसे पदच्युत करने के अधिकारों की धृष्टतापूर्वक घोषणा करते थे। सच ही कहा गया है कि कालविन (Calvin) ने चर्च के सुधारवादी आन्दोलन का सुधारवादी आन्दोलन कालीन राज्य के विरुद्ध नेतृत्व किया। नॉक्स ने घोषित किया था कि, "ईश्वर के विरुद्ध स्वेच्छाचारी राजा की आज्ञा मानने के लिए जनता को कोई भी शपथ या सौगंध बाध्य नहीं कर सकती; और यदि अज्ञानतावश उन्होंने किसी ऐसे शासक को चुन लिया है जो बाद में अयोग्य साबित हो तो जनता को उसे अपदस्थ करने तथा दंड देने का पूरा अधिकार है। ऐन्ड्र्यू मेलवाइल (Andrew Melville) ने भी संत एंड्रयूज़ में दिये गए अपने व्याख्यानों में इसी मत की शिक्षा दी थी। युवक शिक्षक तथा मानवतावादियों के अग्रणी नेता बकनन (Buchanon) ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ 'डिजुरे रेज्नी' (De Jure Regni) में स्काटलैंड की सर्व व्यापक धारणा अभिव्यक्त की थी, जिसमें घोषणा की गई थी कि शासक अपना समस्त अधिकार प्रजा से प्राप्त करता है, तथा धार्मिक नियमों के अनुसार दुष्ट मनुष्यों को बहिष्कृत कर देना चाहिए। फ्रान्स में 'ह्यूगनोज़वादियों' (Huguenots) ने राजविद्रोह करने का प्रचार भी किया और वे उसे अपने व्यवहार में भी लाए थे। यह आश्चर्य की बात नहीं है कि उसके प्रारम्भिक जीवन के निरीक्षण और तिरस्कार इस सार गर्भित कथन में प्रकट हुए—"यदि बिशप नहीं, तो राजा भी नहीं।"

बत्तीस वर्ष की आयु में जेम्स ने अपने राजनीतिक विश्वास दो विशेष महत्वपूर्ण ग्रन्थों में व्यक्त किए। सर्व प्रथम ग्रन्थ "बैसिलीकन डोरोन" (Basilicon Doron) उसके सबसे बड़े पुत्र हेनरी के पथप्रदर्शन के लिए लिखा गया था, प्रकाशन के लिए नहीं। इसके प्रथम भाग में, जिसमें ईश्वर के प्रति राजा के कर्त्तव्यों का वर्णन किया गया है, उसने कहा है कि जिस व्यक्ति को ईश्वर का भय न हो या उसमें आस्था न हो तो वह ईसाई जनता पर शासन करने के योग्य

नहीं है। द्वितीय भाग "ए किंग्स ड्यूटी इन हिज़ आफिस" (A King's Duty in His Office) में विधिसम्मत शासक तथा बलात सत्ता धारण करने वाले शासक में भेद किया गया है। इनमें से दूसरी प्रकार का शासक ईश्वर के प्रति अपना उत्तरदायित्व अनुभव नहीं करता और उसकी प्रजा भी उसके प्रति भक्ति नहीं रखती। दूसरी ओर विधिसम्मत राजा का स्थान गौरवपूर्ण होता है, और जो लोग उसे स्वीकार नहीं करते उनके प्रति वह उग्र रोष व्यक्त करता है। "उनके धर्मोपदेशों में मैं अपने किसी दुर्गुण के कारण बदनाम नहीं किया गया बल्कि इसलिए कि मैं एक राजा हूँ। क्योंकि वे जनता में कहते थे कि राजा तथा युवराज स्वभाव से धर्म के शत्रु हैं। इसलिए मेरे पुत्र! इन प्योरिटनों से जो धर्म तथा राज्य के लिए महामारी के समान हैं, सावधान रहना!" उसने आगे कहा है कि स्काटलैंड की सम्पूर्ण जनता अपने राजा को परखने तथा उसके प्रति धृष्टतापूर्ण व्यवहार करने के दोष की भागी है। राजा को पार्लमेण्ट की सभा तभी बुलानी चाहिए जब नई विधियों की आवश्यकता हो, जिनकी आवश्यकता कभी-कभी ही होगी। उसे अपने तथा दूसरे देशों के इतिहास का अच्छी तरह अध्ययन करना चाहिये, पर उसे निस्संदेह "बकनन और नॉक्स जैसे विचारकों के निन्दनीय आक्षेपों" के अध्ययन की आवश्यकता नहीं है। ग्रन्थ के अंतिम भाग में विभिन्न क्षेत्रों में राजा के व्यवहार की विवेचना की गई है। क्योंकि राजा की स्थिति रंगमंच पर एक अभिनेता के समान है, इसलिए छोटी-छोटी बातें भी महत्वपूर्ण होती हैं। यह आवश्यक है कि वह विशुद्ध जीवन व्यतीत करे और मदिरा तथा मांस के सेवन में संयम से काम ले। "मुख्यतः मदिरा पान से सावधान रहना क्योंकि यह पशुवत बुराई है।" इसके अतिरिक्त शासक को अपने साथी, खेल, भाषा तथा कपड़ों के चुनाव में भी सावधानी बरतने की अत्यधिक आवश्यकता है। इस छोटे से ग्रन्थ में लेखक की ईमानदारी की अनुकूल छाप पड़ती है। यदि ये सूत्र लेखक के व्यवहार की अपेक्षा उसके आदर्शों के प्रतीक थे, तो उन्होंने यह स्पष्ट कर दिया कि राजपद के कर्त्तव्यों के विषय में उसकी धारणा उतनी ही ऊँची थी, जितनी उसकी सत्ता के विषय में।

"बेसिलीकन डोरोन" ने पिता के युवा राजकुमार को उपदेश का रूप धारण

किया; "दि ट्रू ला आॅव फ्री मोनार्कीज आर दि म्युचुअल ड्यूटी बिटविक्सट ए फ्री किंग एन्ड हिज सबजेक्ट्स" (The Law of Free Monarchies or the Mutual Duty betwixt a free King and his Subjects) एक व्यवस्थित राजनीतिक ग्रन्थ था जिसमें देशवासियों को सम्बोधित किया गया है। उसने कहा है कि प्रजा के प्रति राजा का कर्त्तव्य धर्म-ग्रन्थों में स्पष्टतया निर्धारित है। वात्सल्यपूर्ण पिता को अपने बच्चों की भलाई में आनन्द मिलता है। जिस प्रकार मस्तिष्क शरीर की देखभाल करता है, उसी प्रकार राजा अपनी प्रजा की। राजा विधियों तथा प्रजा से ऊपर है और वह केवल अपने अंतःकरण तथा ईश्वर के अधीन होता है। "यद्यपि अच्छा राजा अपने सारे कार्य विधियों के अनुसार ही करेगा; फिर भी वह उनसे बाध्य नहीं है, पर अपनी सद्भावना तथा उनके समक्ष उत्तम उदाहरण प्रस्तुत करने के कारण बाध्य है। देश में वह प्रत्येक मनुष्य का स्वामी है और उसे उनके जीवन तथा मृत्यु पर पूर्ण अधिकार है। यद्यपि एक न्यायप्रिय राजा अपनी प्रजा में से किसी का जीवन बिना किसी स्पष्ट विधि के नहीं लेगा, फिर भी वे विधियाँ जिनसे वह जीवन लेगा, उसके या उसके पूर्ववर्ती शासकों की ही बनाई हुई हैं।" वह रूक्षतापूर्वक कहता है कि स्काटलैंड के राजा विधियों की रचना करते हैं, न कि विधि राजा को बनाती है। फिर भी वे राज्याभिषेक के समय ली गई शपथ से धर्म तथा अपने पूर्ववर्ती राजाओं की अच्छी विधियों की सुरक्षा करने को बाध्य हैं। सर्वत्र यही पूर्वधारणा पाई जाती है कि राजा बुद्धिमान तथा भले होते हैं और उनकी प्रजा दुर्बल तथा अज्ञान। जेम्स ने लिखा है कि राजा समस्त देश का महान शिक्षक है। 'स्वतंत्र राजतंत्र' ऐसा राजतंत्र हैं जिसमें वह सब कुछ करने को स्वतंत्र है।

यह जानने के लिए कि राजा सदैव गुणों के आदर्श नहीं होते, जेम्स को इतिहास का समुचित ज्ञान था, किन्तु वह अपनी व्यवस्था को परिवर्तित करने को तैयार नहीं है। "राजा की दुष्टता उन व्यक्तियों को उसका निर्णायक नहीं बना सकती, जिन पर निर्णय देना उसका निर्दिष्ट कार्य है।" प्रथम तो वे राज्य को बचाने की अपेक्षा उसके संकटों को दुगुना कर देंगे; क्योंकि कोई राजा इतना पतित नहीं हो सकता कि वह साधारणतया न्याय पक्ष ग्रहण न करे और

व्यवस्था स्थापित न करे। दूसरे, एक दुष्ट राजा पृथ्वी पर लोगों के पापों पर दैवी प्रकोप के रूप में ईश्वर द्वारा भेजा जाता है, इसलिये जो भार ईश्वर ने उनके ऊपर डाला है उससे मुक्ति चाहना विधिसंगत नहीं है। "धैर्य, निष्कपट प्रार्थना और जीवन में संशोधन द्वारा ही इस घोर अभिशाप से मुक्त कराने के लिये ईश्वर को प्रेरित किया जा सकता है।" इसके पश्चात् यह शाही लेखक राज्याभिषेक के अवसर पर राजा और उसकी प्रजा के बीच हुए तथाकथित समझौते का खंडन करता है। "जहाँ तक ऐसे समझौते का प्रश्न है, मैं नहीं मानता कि वह हुआ था, यद्यपि मैं यह स्वीकार करता हूँ कि राजा अपने पद से सम्बन्धित कर्त्तव्यों को सच्चाई के साथ पालन करने का आश्वासन देता है।" लेकिन यह निर्णय कौन करेगा कि यह आश्वासन भंग हुआ है या नहीं? यदि यह निर्णय प्रजा करती है, तो वह अपने मामले में स्वयं ही निर्णायक बन जाएगी। इसलिए स्पष्ट है कि इसका निर्णय ईश्वर ही कर सकता है। "ईश्वर जब तक राजा को दंडित न कर दे जनता अपने को उस शपथ से मुक्त नहीं समझ सकती।" इस कष्टदायक परीक्षा में पड़े लोगों तक ईश्वर का यह निर्णय कैसे पहुँचेगा, यह हम नहीं जान पाते। व्यावहारिक रूप में दुष्ट राजा के ऊपर एक मात्र अवरोध परलोक में दंडित होने का भय ही है, जो निश्चय ही बहुत भयानक होगा। "अन्य पुरुषों की अपेक्षा ईश्वर राजा को जितना अधिक चाहता है, वह ईश्वर के प्रति उतना ही अधिक आभारी होता है।" राजाओं के दैवी अधिकार के ये सिद्धान्त कि राजतंत्र ईश्वरीय है, अनुवंशिक अधिकार अकाट्य है, राजा केवल ईश्वर के प्रति उत्तरदायी है और विधिसम्मत राजा का विरोध करना पाप है, ब्रिटिश सौलोमन की इस पुस्तक के अतिरिक्त अन्य कहीं इतने दृढ़ विश्वास के साथ और इतने संक्षेप में प्रतिपादित नहीं किये गए हैं।

केवल स्काटलैंड का शासक होते हुए जब जेम्स के ऐसे विचार थे, तो यह आशा नहीं की जा सकती थी कि उसके बिना किसी अधिनियमित विधि के, बिना किसी मनोनयन या चुनाव के, वरन् केवल जन्माधिकार से ही एक विशाल साम्राज्य का स्वामी बन जाने पर उसके अन्दर अपनी शक्तियों के मूल्यांकन में कोई कमी आएगी। उसके प्रारम्भिक वक्तव्यों के परिणामस्वरूप पार्लमेंट में "माफी माँगो"

की ध्वनि गूँज उठी जिससे उसका अपने अधिकारों का प्रदर्शन करने का दृढ़ निश्चय प्रकट हुआ; और जिसने राजा को स्पष्ट शब्दों में बता दिया कि उसके विचार सत्य पर आधारित नहीं हैं तथा उसकी घोषणाओं की प्रवृत्ति से "पार्लमेंट के मूलभूत विशेषाधिकार कुचले जा रहे हैं जिससे कामन्स सभा के सदस्यों की स्वतंत्रता तथा अधिकारों पर आघात हो रहा है।" सन् १६०६ की पार्लमेंट के समक्ष किये गए अपने भाषण में, जो सन् १६१६ में उसके राजकीय संग्रह में प्रकाशित हुआ, 'ट्रू ला ऑव फ्री मोनार्कीज' के सिद्धान्त दृढ़तापूर्वक पुनः प्रतिपादित किए गए।" राजाओं को ठीक ही देवता कहा जाता है, क्योंकि पृथ्वी पर उनकी सत्ता दैवी सत्ता के अनुरूप होती है। यदि आप ईश्वर के गुणों पर ध्यान दें, तो आप देखेंगे कि राजा के व्यक्तित्व से उनका कितना साम्य है। ईश्वर में सृजन और विसर्जन, इच्छानुसार बनाने या बिगाड़ने, जीवन या मृत्यु देने, सबके ऊपर निर्णय देने तथा किसी के प्रति उत्तरदायी न होने की सत्ता निहित है। इसी प्रकार की शक्तियाँ राजाओं को प्राप्त हैं। वे अपनी प्रजा को बनाते-बिगाड़ते हैं; उन्हें उनकी उन्नति व अवनति और जीवन तथा मृत्यु पर अधिकार है; वे ही अपनी प्रजा के सम्पूर्ण मामलों में निर्णय देते हैं, फिर भी वे ईश्वर के अतिरिक्त अन्य किसी के प्रति उत्तरदायी नहीं हैं। उन्हें हेय वस्तुओं को गौरव देने तथा श्रेष्ठ वस्तुओं को हीन बना देने और अपनी प्रजा को शतरंज के मोहरों जैसा बना देने का अधिकार प्राप्त है। सन् १६१० में उसने कहा कि "राजतंत्र पृथ्वी पर श्रेष्ठतम वस्तु है; क्योंकि राजा पृथ्वी पर ईश्वर का केवल प्रतिनिधि ही नहीं है परन्तु ईश्वर भी उन्हें देवता मानता है।" सन् १६१६ में स्टार चैम्बर में भाषण करते हुए उसने घोषणा की थी कि, "जिस प्रकार ईश्वर की कार्य-क्षमता के बारे में विवाद करना नास्तिकता तथा असद्वक्तृता है, उसी प्रकार इस पर विवाद करना कि राजा क्या कर सकता है या यह कहना कि वह अमुक अमुक कार्य नहीं कर सकता, धृष्टता तथा तिरस्कार की भावना प्रकट करता है।" सन् १६२१ में कामन्स सभा के नाम एक पत्र में राजा ने शिकायत की थी कि कुछ उत्तेजक तथा लोकप्रिय लोगों ने उन विषयों पर जो उनकी पहुँच तथा क्षमता से बाहर है, सार्वजनिक रूप से विवाद और तर्क करने का साहस किया है। पार्लमेंट के अध्यक्ष को उन्हें यह

बताने की आज्ञा दी गई कि, "हमारे शासन तथा राज्य के गंभीर विषयों में किसी को विघ्न डालने का अधिकार नहीं है।" जब रैले (Raleigh) ने अपनी पुस्तक "प्रीरोगेटिव ऑव पार्लमेंट्स" (Prerogative of Parliaments) में जेम्स से उसकी धन एकत्र करने की अप्रिय योजना को वापस लेने तथा एलिजाबेथ की भाँति प्रजा का स्नेह पात्र बनने का अनुरोध किया, तो उसने उसके उत्तर में उस पुस्तक को ही दबा दिया। यद्यपि उस समय हालैन्डवासियों के प्रति सहानुभूति एक राष्ट्रीय भावना थी, पर जेम्स कहा करता था कि वे अपने विधि-सम्मत राजा का विरोध करने में लगे हुए राजद्रोही ही हैं। यहाँ तक कि उसने यह भी घोषित किया कि, किसी अभिषिक्त राजा के प्रति प्रजाजन द्वारा असम्मानजनक शब्दों का प्रयोग उपयुक्त नहीं है, "चाहे वह हमारा शत्रु ही क्यों न हो।" ट्यूडर राजाओं के शासन काल में राजा और पार्लमेंट राज्य के संयुक्त अवयव थे। यहाँ पहली बार विशुद्ध और स्पष्ट स्वेच्छाचारिता का दर्शन हुआ। इस लौकिक-देव के सम्मुख विधि की महानता तथा पार्लमेंट के परमाधिकार अपमानित होकर पृष्ठभूमि में चले गए। इंग्लैण्ड अपने शासक का दास तथा खिलौना हो गया, और ब्रिटिश तथा योरोपीय राजतंत्रों का परम्परागत भेद लुप्त हो गया।

इन नवीन और अतिरंजित दावों को 'एंग्लिकन' पादरी वर्ग तथा विश्वविद्यालयों में तत्कालीन समर्थन मिला। एक ओर तो 'प्योरिटन' सम्प्रदाय शासक की अपेक्षा अंतःकरण के आज्ञापालन के सिद्धान्त को मानते थे, दूसरी ओर राज्य-चर्च के धर्माधिकारी राजाओं के दैवी अधिकार और उनके आदेशों का बिना किसी शर्त के पालन करने के कर्तव्य की घोषणा करते थे। हुकर (Hooker) में इस सिद्धान्त का चिन्हमात्र तक नहीं मिलता; किन्तु "जैकोबियन' (Jacobean) धर्मशास्त्रियों ने शीघ्र ही यह शिक्षा ग्रहण कर ली। और निस्संदेह वे एक महत्वपूर्ण क्षेत्र में तो राजा से भी आगे बढ़ गए। 'गनपाउडर प्लाट' से प्रभावित होकर पादरियों के संघ ने सन् १६०६ में नियमों का एक संग्रह तैयार किया था, जिसमें यथार्थ (de facto) सरकार को भी दैवी सत्ता घोषित किया गया। जेम्स ने यह कहते हुए इन नियमों का अनुसमर्थन करने से इनकार कर दिया कि यदि स्पेन का राजा इस देश को जीत ले तो इन नियमों के अनुसार राजपद पर

उसका अधिकार दैवी होगा और अपहरणकर्त्ता को निष्कासित तथा विधिसम्मत राजा को पुनः प्रतिष्ठित करने की कोई चेष्टा भी नहीं कर सकेगा। पादरी लोग राजपद के धार्मिक पक्ष तथा राजा की अर्द्ध-दैविकता पर बल देने में परस्पर स्पर्द्धा करते थे। 'हिज सेक्रेड मैजेस्टी' (His Sacred Majesty) और 'दाइन अनाइंटेड सरवेन्ट' (Thine Anointed servant) जैसे कथन अब साधारण हो गए थे। राजा के कृपापात्र पुरोहित और आक्सफोर्ड में डिविनिटी के रीजियस प्रोफेसर सैंडरसन (Sanderson) ने राजसभा में दिए गए एक उपदेश में विधिसम्मत राजा के विरुद्ध किसी भी कारण से शस्त्र उठाने की घोर निन्दा की थी; "अपनी या दूसरे लोगों की जीवन-रक्षा तथा स्वतंत्रता के लिए नहीं; धर्म की रक्षा के लिए नहीं; आत्मा की मुक्ति के लिए नहीं—यदि उसकी मुक्ति की कल्पना की जा सके; इतना ही नहीं सम्पूर्ण संसार को बचाने के लिए भी नहीं।" पादरियों ने राजा के परमाधिकारों का एक ओर पोपशाही तथा दूसरी ओर 'प्योरिटनों' के विरुद्ध अनवरत संघर्ष में अत्यन्त प्रभावशाली अस्त्र के रूप में समर्थन किया। राजपद का वैभव बढ़ाना चर्च को शक्तिशाली बनाना था।

चार्ल्स प्रथम के शासन के प्रारंभिक काल में इस नवीन मान्यता-प्राप्त सिद्धान्त और जनमत के बीच एक नाटकीय संघर्ष हुआ। सन् १६२६ में सिब्टोर्प (Sibthorpe) नामक धर्मशास्त्री ने नार्थम्पटन में न्यायाधीशों के समक्ष ऐपासलिक ओबीडियन्स' (Apostalic obedience) पर उपदेश दिया था। उसने घोषणा की कि, "राजा आस्तिक हो या नास्तिक, शासन में न्यायप्रिय या अन्यायी, दयालु हो या क्रूर" उसकी आज्ञा का पालन होना आवश्यक है। यदि राजा असंयत, यहाँ तक कि अनुचित, कर भी लगाए तो प्रजा अपने अंतःकरण से आज्ञापालन के लिए विवश है। "यदि राजा कोई ऐसा आदेश दे जिसका पालन प्रजा इसलिये न कर सके कि वह ईश्वरीय वा प्राकृतिक विधियों के प्रतिकूल है या उसका पालन करना असंभव है, तो उसे बिना कोई विरोध अथवा निन्दा किए दंड का भागी होना ही पड़ेगा; और इस प्रकार जहाँ वह सक्रिय रूप से आज्ञा-पालन नहीं कर सकती वहाँ उसे निष्क्रिय रूप से वैसा करना पड़ता है। राजा ने आर्कबिशप एबाट (Abbot) को उक्त उपदेश के प्रकाशन की अनुमति देने की आज्ञा दी, और न मानने पर उसे बन्दीगृह में डाल दिया। अपेक्षाकृत

अधिक सहनशील एक दूसरे धर्मशास्त्री ने इस उपदेश के प्रकाशन की आज्ञा दे दी, परिणामस्वरूप उसे शाही पादरी घोषित कर दिया गया। अगले वर्ष मेनवेय-रिंग (Mainwaring) ने अपने एक धर्मोपदेश में, जो स्वयं राजा के समक्ष दिया गया था, स्वेच्छाचारिता की और अधिक लज्जाहीन व्याख्या की। "ईश्वर प्रदत्त सभी सत्ताओं में राज-सत्ता सर्वोच्च, सर्वशक्तिमान तथा विशालतम है। संसार या चर्च की कोई भी शक्ति इस पर प्रतिबन्ध नहीं लगा सकती। सांसारिक शासक में विद्यमान् यह श्रेष्ठ सत्ता न तो मानवीय शक्ति से प्राप्त होती है और न उसका संग्रह ही है, वरन ईश्वर की सर्वशक्तिमत्ता का एक अंश है।" राजाओं को आज्ञा पालन करने के लिए ईश्वरीय आदेश है। "कोई मनुष्य चाहे वह कितना ही महान क्यों न हो, राजा की सत्ता से उच्च कोई अधिकार नहीं रखता, और न ही उसकी देखरेख से छुटकारा मिल सकता है, चाहे वह कितना ही निष्कृष्ट क्यों न हो। इस स्वामी की सर्वोच्च इच्छा से ही विधियों को बंधनीय क्षमता प्राप्त होती है।" राजा द्वारा लगाए गए करों को देने से बिना नरक-यातना के संकट के इन्कार नहीं किया जा सकता था। "यद्यपि राजा चाहे ईश्वरीय विधियों के ठीक विपरीत आज्ञा दे, प्रजा को राजा द्वारा दिए गए दंड को धैर्य-पूर्वक सहन करना चाहिए, चाहे अपने अंतर से वे किसी व्यक्ति की अपेक्षा ईश्वर की ही आज्ञा मानना चाहे।" लाड (Laud) तक ने जनता को अत्यन्त अरुचि-कर लगने वाले इस उपदेश के प्रकाशन का घोर प्रतिवाद किया, किन्तु राजा अपने निश्चय पर दृढ़ था और वह उपदेश प्रकाशित होकर ही रहा। इसके उत्तर में कामन्स सभा (House of Commons) ने मेनवेयरिंग को अभियोगी ठहराकर उसे जुर्माना, कारावास और पदच्युति के दंड का भागी बनाया। किन्तु राजा ने उसे क्षमा कर दिया, और अन्ततः वह बिशप के पद तक पहुँच गया। पार्लमेंट द्वारा तीव्र आलोचना के बावजूद भी राजाओं को दैविकता पादरी-वर्ग के लिए उत्तरोत्तर बढ़ता हुआ आम विश्वास बन गई। निपुण एवं चतुर फुलर (Fuller) तक का मत था कि उन लोगों के अतिरिक्त जो राजा की बराबरी के हैं, और कोई उसके कार्यों के कारण नहीं खोज सकता, और उसने "दि किंग" का विवेचन समाप्त करते हुए लिखा है, "परन्तु या तो मुझे अपनी स्थिति पर दृढ़ रहना चाहिए नहीं तो मेरा पतन अवश्यम्भावी है।

महत्ता के ऐश्वर्य की चमक से मेरी आँखें चकाचौंध होकर ज्योतिहीन हो जाती हैं।"

स्टुअर्ट वंश के प्रथम दो राजाओं को पार्लमेंट में दैवी अधिकार के सिद्धान्त का कोई समर्थक नहीं मिला; फिर भी पादरी वर्ग में इस सिद्धान्त के प्रचलन के अनेक स्पष्ट कारण थे। अपने शासक को दैवी स्वरूप प्रदान करने की मानव जाति की प्रवृत्ति उतनी ही प्राचीन है, जितना कि इतिहास; और सत्रहवीं शताब्दी के प्रारंभिक चरणों में अब भी धार्मिक वातावरण छाया हुआ था। 'ऐंग्लिकनों' और 'प्योरिटनों' ने, प्रजातंत्रवादियों और राजतंत्रवादियों ने, अपने धर्मशास्त्र को राजनीति में मिश्रित कर दिया; वे बाइबिल के दृष्टान्तों तथा सूत्रों में आनन्द लेते थे और उन्होंने अपने शासन के सिद्धान्तों के लिए दैवी सत्ता की माँग की। अतः अनेक लोगों को यह स्वतः-सिद्ध प्रतीत होने लगा कि जिस प्रकार सारे संसार में केवल एक ईश्वर राज करता है, उसी प्रकार राज्य में केवल एक व्यक्ति का शासन होना चाहिए। परन्तु राजा के दैवी अधिकार के सिद्धान्त के समर्थन के लिए विवश करने वाले कारण और ऐतिहासिक प्रमाणिकता उपस्थित थी। पोपशाही के बढ़ते हुए दावों के विरुद्ध मध्य युगीन सम्राटों के पक्ष में दाँते, ओखम, मार्सेलिओ तथा अन्य समर्थकों द्वारा प्रयोग किए गए तर्क 'प्रोटेस्टेन्ट' राजाओं के समर्थकों द्वारा उसी शक्तिशाली शत्रु के विरुद्ध पुनः स्वीकार कर लिए गए। रोम के पोप के विरुद्ध संघर्ष ने लूथर और उसके अनुयायियों को राजपद को गौरवशाली बनाने और राष्ट्रीय स्वतंत्रता के प्रतिनिधि की पवित्रता पर बल देने की ओर अग्रसर किया। इस प्रकार दैवी सिद्धान्त का प्रारंभ संघर्षशील 'कैथोलिक' मत के विरुद्ध प्रतिरक्षक शस्त्र के रूप में हुआ। राजाओं को इच्छानुसार पदच्युत करने के पोप के धृष्टतापूर्ण दावे और 'कैथोलिक' प्रचारकों के इस कथन के लिए कि सत्ता जनता में अवस्थित है, उत्तर की आवश्यकता थी। लोग दैवी स्वीकृति के तर्क में सशक्त शासन का संवेगात्मक आधार पाने के इच्छुक थे। राजपद को शक्तिशाली बनाना राज्य को शक्तिशाली बनाना था। इसने राजा के चारों ओर सावयवी राष्ट्रीय जीवन के प्रतीक और केन्द्र तथा उसके स्वतंत्र अबाधित विकास के अविभावक के रूप में भावना केन्द्रित कर दी। जब 'ह्यूगनोज़

वादियों' (Huguenots) तथा 'प्योरिटनों' ने जनता के संप्रभुत्व का सिद्धान्त अपनाया, तो अनेक लोगों को शासक के व्यक्तित्व और पद को उसके भीतरी और बाहरी शत्रुओं के विरुद्ध रक्षापंक्ति के रूप में अधिक गौरवशाली बनाना आवश्यक जान पड़ा।

दैवी-अधिकार का सिद्धान्त तथा इसकी उपसिद्धि अप्रतिरोध, ऐतिहासिक तथा दार्शनिक स्वीकृति प्राप्त होने पर भी गृहयुद्ध से पहले 'एंग्लिकन' पादरियों के अतिरिक्त इने-गिने अनुयायी ही बना सका था; और स्टुअर्ट वंश के प्रथम दो शासकों के योग्यतम मंत्रियों ने इस सिद्धान्त को अस्वीकृत कर दिया। इस प्रकार की उत्कट राजभक्ति उत्पन्न करने के लिए, जो रहस्यात्मक श्रद्धा के शब्दों में स्वाभाविक अभिव्यक्ति चाहती थी—चार्ल्स के रक्त, और उसके पुत्र के निष्कासन और अराजकता की भयानकता की आवश्यकता पड़ी। यद्यपि इसके समर्थकों में अपने युग के सर्वाधिक साधु पुरुष भी सम्मिलित थे, फिर भी यह सिद्धान्त इंग्लैंड में गहरी जड़ें न जमा पाया। पोप और 'प्योरिटनों' के विरुद्ध इस सिद्धान्त का समर्थन करने से ये लोग निरंकुश शासन का समर्थन करने को बाध्य हुए। धार्मिक सत्ता के विरुद्ध लौकिक सत्ता का समर्थन करने में ये लोग भूल गए कि लौकिक सत्ताधारी स्वयं भी निरंकुश बन सकता है। इसके अतिरिक्त स्टुअर्ट राजाओं की भूलों तथा योरोप में राजनीतिक विवेकवाद और धार्मिक उदारतावाद (Latitudinarianism) के उदय के कारण इस सिद्धान्त का पक्ष कमजोर पड़ गया। इंग्लैंड जैसे देश को, जो वैधानिक जीवन की परम्पराओं से परिपूर्ण तथा संस्कृति व समृद्धि के क्षेत्र में द्रुत गति से विकासोन्मुख था, अप्रतिरोध का सिद्धान्त संतुष्ट नहीं कर सकता था; और एक 'कैथोलिक' शासक के संक्षिप्त अनुभव के बाद इने-गिने 'नॉन-जूरर्स' (Non-Jurors) के अतिरिक्त सभी ने इस सिद्धान्त को बिना किसी शोक के त्याग दिया। जब 'कैथोलिकों' का विरोध करने के लिए निर्मित एक सिद्धान्त इसके समर्थन में प्रस्तुत किया गया, तो इसके अस्वीकृत कर दिए जाने का समय आ गया था। सन् १६८८ की क्रान्ति के साथ राजाओं की दैविकता का सिद्धान्त जो इंग्लैंड के इतिहास से नाटकीय चंचलता के साथ लुप्त हो गया—के स्थान पर मौलिक अनुबन्ध का सिद्धान्त

प्रतिष्ठित किया गया। गार्डिनर (Gardine:) ने असाधारण रूप से कठोर शब्दों मे कहा है, "अप्रतिरोध का सिद्धान्त कृत्रिम था और वह अनेक वर्षों तक इंग्लैंड की शक्तियो के घातक रोग के रूप मे बना रहा। यदि इसे कभी भी सामान्य मान्यता प्राप्त हुई होती, तो यह उन सब गुणों को, जिनसे यह देश आज इतना महान है, समूल नष्ट कर देता।"

(२)

यद्यपि राजाओ की दैविकता का सिद्धान्त ऐंग्लिकन चर्च के बाहर शायद ही अन्य कहीं स्वीकृत हुआ, फिर भी प्रबुद्ध स्वेच्छाचारिता का आदर्श उस समय के प्रबलतम विद्वानो द्वारा पोषित था। किसी बड़े राज्य का पार्लमेंट द्वारा शासन हो सकता है, यह किसी को सभव नही जान पड़ता था और केवल राजसभासदो को ही नहीं वरन विचारको व जन-सामान्य को भी यह स्वाभाविक सिद्धांत लगता था कि राजा देश का वास्तविक प्रतिनिधि और संचालक है। प्रबुद्ध और शक्तिशाली राजतंत्र के समर्थको मे बेकन महानतम था। उसके पुरोहित रॉले (Rawley) ने सन् १६२७ मे 'न्यू एटलांटिस' (New Atlantis) प्रकाशित करते हुए घोषणा भी थी कि उसके स्वामी की 'सालोमन्स हाऊस' (Solomon's House) के चित्र को आदर्श राज्य के चित्र द्वारा आपूरित करने की इच्छा थी। "लेकिन यह देखते हुए कि यह बहुत लम्बा कार्य हो जाएगा, प्राकृतिक इतिहास को संग्रहीत करने की इच्छा, जिसे वह इसकी अपेक्षा प्राथमिकता देता था, उसे दूसरी ओर ले गई।" फिर भी उसकी पुस्तिकाओ, भाषणों, लेखो तथा ग्रन्थो द्वारा उसके राजनीतिक विचारो का पुनर्निर्माण करना संभव है। यद्यपि 'डी आग्मेन्टिस' (De Augmentis) मे उसने अपने को "स्वभावत: अन्य किसी कार्य की अपेक्षा साहित्य के लिए अधिक उपयुक्त बताया है तथा दुर्भाग्यवश अपनी प्रकृति के प्रतिकूल दैनिक जीवन के कार्यों में फँस जाने वाला" कहा है, पर विचारो के क्षेत्र की भाँति राजकीय विषयो में भी उसका एक निश्चित संदेश था। परन्तु जहाँ दर्शन के क्षेत्र मे वह पथ-प्रदर्शक था, राजनीति में, यदि प्रतिक्रियावादी नही, तो रूढ़िवादी तो था ही।

बेकन का प्रथम राजनीतिक वक्तव्य जो धार्मिक समस्याओं से सम्बन्धित

थे, एलिजाबेथ के शासनकाल में प्रकाशित हुये। सन् १५८५ के लगभग लिखे गए "एडवाइस टु क्वीन एलिजाबेथ" (Advice to Queen Elizabeth) में उसने सम्राज्ञी से अनुरोध किया कि कैथोलिकों को राजकीय पदों से वंचित तो रखा जाय, पर उनके लिए निर्धारित राजभक्ति की शपथ में परिवर्तन कर दिया जाय। साथ ही उसने 'प्योरिटन' प्रचारकों के निष्कासन के लिए, यद्यपि जिनकी हठवादिता का समर्थन करने की उसने कभी चेष्टा नहीं की, बिशपों की तीव्र आलोचना की। अपने "एडवर्टाइज़मेन्ट टचिंग दी कन्ट्रोवर्सीज ऑव दी चर्च ऑव इंगलैंड" (Advertisement touching the Controversies of the Church of England) में इस युवा वकील के विचार पुनः स्थापित और विस्तृत हुए। वह पुनः कैथोलिकों और प्योरिटनों पर दोष लगाता है, यद्यपि, शायद अपनी माँ के कारण प्योरिटनों के प्रति उसकी सहानुभूति स्पष्ट है। वह एक वास्तविक राष्ट्रीय चर्च की स्थापना का इच्छुक था। ईसाइयत का वह सम्मान करता था, परन्तु वह चर्च के आन्तरिक शासन और रीति-रिवाजों के विवरण के प्रति उदासीन था। उसने परिवर्तनशीलता का अनुरोध किया और वह चर्च में सुधार की आवश्यकता स्पष्टतया स्वीकार करता है। हम हुकर के से शांत वातावरण में साँस लेते जान पड़ते हैं। वह सहनशील एराशियन (Erastian) था और राज्य को सर्वोच्च मानने तथा समाज के कल्याण के लिए विभिन्न सम्प्रदायों के झगड़ों पर ध्यान न देने को कहता है। उसकी यह धारणा थी कि 'प्रेसबिटेरवाद' (Presbyterianism) सामान्य व्यक्ति की स्वतंत्रता के लिए राजाओं की संप्रभुता से कम हानिकारक नहीं होगा। सन् १६८१ में एकाधिकार पर प्रमुख विवाद में उसने कहा—"मुझे आशा है कि राजाओं के परमाधिकार पर बहस होते हुए मैं कभी नहीं सुनूँगा। महारानी को बंधनमुक्त करने तथा प्रतिबन्ध लगाने दोनों प्रकार के अधिकार प्राप्त हैं; जिन वस्तुओं पर वैधानिक प्रतिबन्ध है वह उन्हें बंधनमुक्त कर सकती है तथा जो स्वतंत्र हैं, उन पर प्रतिबंध लगा सकती है।"

सन् १५९७ में प्रकाशित प्रथम दस लेख (Essays) राजनीति से अलग हैं, परन्तु जेम्स के राज्याभिषेक के पश्चात् राजसभा में आगे बढ़ने के

लिए बेकन ने दृढ़ प्रयत्न किया। उसने जेम्स को लिखा, "ऐसा कोई प्रजाजन नहीं है, जो हृदय से आपकी सेवा के लिए अपने को पूर्णतः बलिदान कर देने के लिए उद्यत नहीं है और उनमें से किसी के हृदय में यह भावना उतनी पवित्र और तीक्ष्ण नहीं है, जितनी मेरे हृदय में।" इन अतिपूर्ण वाक्यों के बावजूद भी उसे पूर्ण विश्वास था कि विद्वान् शासक प्रजा के राजनीतिक पथप्रदर्शन और विज्ञान के संरक्षण के लिए अपनी शक्ति का प्रयोग करेगा। सन् १६०५ में प्रकाशित और राजा को समर्पित "दि एडवान्समेन्ट आव लर्निङ्ग" (The Advancement of Learning) में भी इसी आशावादी खुशामद का प्राधान्य है। "मैं आपकी विशाल क्षमता, स्मरण शक्ति की परिपूर्णता, तीव्र ज्ञेयशीलता, तीक्ष्ण अर्थबोध और सरल वक्तृता देखकर आश्चर्यान्वित हो गया हूँ। यद्यपि प्रकृति के लिए एक ही यन्त्र को छोटे और बड़े कार्यों के उपयुक्त बनाना असंभव सा जान पड़ता है, फिर भी ईश्वर ने आपको विशालतम विषयों का निर्वाह करने और समझने तथा छोटे से छोटों को स्पर्श करने तथा समझ लेने की योग्यता प्रदान की है। ईसा मसीह के बाद कोई शासक समस्त मानवीय तथा दैवी साहित्य और पांडित्य का इतना प्रकांड विद्वान् नहीं हुआ है।" विभिन्न विजयों के पर्यावलोकन तथा अध्ययन के उद्देश्य से लिखी गई इस पुस्तक में राजनीति पर बहुत संक्षेप में विचार किया गया है। ऐसा अंशतः इसलिए कि "मैं एक ऐसे राजा को लिख रहा हूँ, जो स्वयं इस विज्ञान का आचार्य है।" इसके अतिरिक्त, यदि वह एक हजार वर्ष भी जीवित रहता तो "ट्रू ला आव फ्री मोनार्कीज" के दर्शन से असहमति की ओर कभी नहीं झुकता, वह अपने पाठकों को केवल इस सत्य का स्मरण कराता है कि लोगों ने विधियों की दार्शनिक या विधिवेत्ता की हैसियत से ही व्याख्या की है, राजनयज्ञ के रूप में नहीं। "जहाँ तक दार्शनिकों का प्रश्न है, वे काल्पनिक राज्यों के लिए काल्पनिक विधियों का निर्माण करते हैं और उनके उपदेश सितारों के समान हैं, जो इस कारण अतिक्षीण प्रकाश देते हैं, कि वे इतनी ऊँचाई पर हैं। जहाँ तक विधिवेत्ताओं का प्रश्न है, वे वैसे ही राज्य के बारे में लिखते हैं, जिसमें वे रहते हैं; विधि का जो रूप होना चाहिए, उसके अनुसार नहीं, बल्कि जो वर्तमान रूप है उसी की विवेचना करते हैं; क्योंकि विधिवेत्ता का विवेक

कुछ और होता है और विधि-निर्माता का कुछ और। "स्काटलैंड के पोस्ट-नाटी (Post Nati) मुकदमें से संबंधित अपने स्मृतिपत्र में उसने घोषणा की कि राजतंत्र का अस्तित्त्व किसी पुरानी विधि अथवा समझौते पर निर्भर नहीं है। उसके प्रति अधीनता उतनी ही स्वाभाविक है, जितनी बच्चे की अपने माँ-बाप के प्रति। वंशानुगत राजपद के प्रति आज्ञाकारिता प्राकृतिक नियम का आदेश है। विधिवेत्ताओं के प्रति बेकन की घृणा की पुनरावृत्ति उसके अनेक राजनीतिक स्मृतिपत्रों में हुई है; और उसने अनेक छिटपुट संघर्षों में जिनसे जेम्स का शासनकाल पूर्ण था, उसका साथ दिया। न्यायशास्त्री अतीत से बँधे होते हैं और राजा वर्तमान या भविष्य की आवश्यकताओं पर स्वतंत्रतापूर्वक विचार कर सकता है। उसका विश्वास था कि विधियों का कितना भी ज्ञान किसी राजनीतिज्ञ या कुशल व्यक्ति को गंभीर नीति के विषयों में भाग लेने के लिए उपयुक्त नहीं बना सकता। ज्ञान के झूठे प्रदर्शन और रूढ़िप्रियता के विरुद्ध संघर्ष में परमाधिकार प्रगति का प्रतीक है। उसके विचार के अनुसार राजा विधियों का उल्लंघन नहीं करता है, अपितु राज्य के हित में उनके ऊपर उठ जाता। पार्लमेंट भी विधिवेत्ताओं की सभा होने के कारण प्रगति में संभवनीय अवरोध हो सकता है। सन् १६०६ में "व्यू आव दी डिफरेन्सेज़ बिट्वीन किंग्स बेंच ऐंड दी कौंसिल इन दी मार्चेज़" (View of the Differences between King's Bench and the Council in the Marches) में उसने मंत्रणा दी कि राजा पार्लमेंट द्वारा पारित अधिनियमों को विलम्बित और लोक विधि (common law) को नियंत्रित कर सकता है। उसके हार्दिक विचार लगभग पूर्ण स्पष्टता के साथ सन् १६०८ के उन अव्यवस्थित लेखों में अंकित हैं जिन्हें 'कमेंटेरियस सालूटस' के नाम से पुकारा जाता है। 'मात्र विधिवेत्ताओं' के प्रति उसका घृणाभाव उसमें पड़ता फूट है। उसे पार्लमेंटों के प्रति तब तक कोई आपत्ति नही है जब तक वे शासन को नियंत्रित करने का प्रयत्न नहीं करतीं। परन्तु वह कहता है कि विधिवेत्ताओं को, जिनके बिना देश के भद्र पुरुष नेताहीन हो जाएँगे, उनकी उन्नति रोक देने के भय से आतंकित किए रखना चाहिए। उसकी नीति राजा के 'संक्षेप न्याय' (Summary Trial) को जो गरीबों को शीघ्र और सस्ता न्याय देकर

सांत्वना देगा तथा स्थायी राजस्व का साधन बन जाएगा गौरवान्वित करने की है। यद्यपि बेकन सच्चा राजपक्षावलम्बी था फिर भी ये गोपनीय टिप्पणियाँ अप्रिय प्रभाव डालती हैं। राजा के परमाधिकारों को गौरवशाली बनाने में स्पष्टतया उसकी अपने स्वामी की चापलूसी करने की इच्छा निहित थी। इसी स्थल पर ही पहली बार विदेशों पर आक्रमण द्वारा आंतरिक विवाद से ध्यान हटाने का सुझाव आता है। अगले वर्षों में उसने दो पुस्तिकाओं में, एक में कैथालिक और प्रोटेस्टेन्ट राष्ट्रों द्वारा तुर्कों के विरुद्ध धर्म-युद्ध और दूसरी में स्पेन, जिस पर उसका अडिग अविश्वास था, के विरुद्ध भयंकर आक्रमण प्रारम्भ करने का परामर्श देते हुए, इस अशुभ सम्मति को विकसित किया। बेकन के इस विचार में असावधानी की प्रवृत्ति थी, जो नैतिक सिद्धान्तों से और देश के स्थायी हितों के विचार दोनों में से किसी में निर्बन्धित न थी।

उसके राजनीतिक दर्शन का सर्वाधिक पूर्ण तथा विस्तृत विवरण 'एसेज़' (Essays) के सन् १६१२ और १६२५ के संस्करणों में जोड़े गए लेखों में मिलता है। इनमें से सर्वाधिक महत्वपूर्ण "ऑव दी ट्रू ग्रेटनेस आव किंगडमस् एंड एस्टेट्स" (Of the true greatness of Kingdoms and Estates) 'डी आग्मेन्टिस' के आठवें भाग में उद्धृत किया गया था। इसमें ओजपूर्ण, समृद्ध और अस्त्रशस्त्रों से सुसज्जित जनसमूह पर आधारित शक्तिशाली सैनिक राज्य का आदर्श रखा गया है। किराए के सैनिकों का विश्वास नहीं किया जा सकता, सैनिक उत्साह के अभाव में संख्या का महत्व नहीं के बराबर है और कर संयमित होने चाहिये। "कर भार से लदी हुई जनता साम्राज्य के अयोग्य है। यह बात सर्वाधिक महत्वपूर्ण है कि राष्ट्र अपने प्रमुख सम्मान, अध्ययन और व्यवसाय के रूप में युद्ध-कार्य करे। इसके अतिरिक्त उन्हें सदैव शस्त्र धारण करने के लिए उद्यत रहना चाहिए। जो राष्ट्र अपनी महानता का दंभ करते हैं, उन्हें किसी योजना पर अधिक समय तक शान्त नहीं बैठना चाहिये।" युद्ध साम्राज्यों की महानता की तरह उनके कल्याण के लिए भी आवश्यक है। "प्राकृतिक शरीर अथवा राजनीतिक संगठन व्यायाम के बिना स्वस्थ नहीं रह सकता, और किसी साम्राज्य अथवा राज्य के लिए उचित और सम्मानजनक युद्ध निस्संदेह यथार्थ

व्यायाम है।" राज्य को जल और थल दोनों पर ही शक्तिशाली होना चाहिए। "समुद्र पर स्वामित्व रखना राजतंत्र का सार है।" "ऑव एम्पायर" (Of Empire) नामक लेख में इसी विचार शृंखला का क्रम जारी रक्खा गया है। इस दार्शनिक के अनुसार अन्तर्राष्ट्रीय संबंधों में एक ही व्यापक नियम है। "राजाओं को इस बात की सदैव सावधानी बरतनी चाहिये कि राज्य और व्यापार के विस्तार तथा इसी प्रकार के अन्य साधनों के द्वारा उनके पड़ोसी राज्य इतने अधिक विकसित न हो जायँ कि वे पहले की अपेक्षा उसे अधिक उद्विग्न कर सकें।" वैदेशिक नीति का सही सिद्धान्त शक्ति संतुलन बनाये रखना है। "कुछ दार्शनिकों की यह धारणा स्वीकार नहीं की जा सकती कि युद्ध किसी पूर्व आघात या उत्तेजना पर ही आरम्भ किया जा सकता है; क्योंकि आक्रमण न होने पर भी खतरे की समुचित आशंका मात्र ही युद्ध का विधिसम्मत कारण है।" अनन्य राष्ट्रवादी बेकन को इस बात का तनिक भी ज्ञान नहीं था कि राजनयज्ञ और शासक योरोपीय संस्कृति और समग्र मानवता के प्रति उत्तरदायी हैं। इस संबंध में वह अपने स्वामी और उससे भी अधिक अपने महान समकालीन ग्रोशस (Grotius) से हीन ठहरता है। उसके इस प्रसिद्ध आर्थिक सूत्र कि "किसी राज्य का विस्तार किसी विदेशी राज्य के मूल्य पर ही होगा; एक जो कुछ प्राप्त करता है, दूसरा उतना खो देता है" में भी वही दृष्टिहीनता सामने आती है।

"ऑव सेडिशन्स" (Of Seditions) नामक लेख में आंतरिक शासन कला के सिद्धांत की व्याख्या की गई है। "राजद्रोह, निर्धनता और असंतोष दो कारणों से उत्पन्न होता है। व्यावसायिक और औद्योगिक जीवन के प्रत्येक विभाग में हस्तक्षेप कर, व्यापार से प्रारम्भ कर और उत्तम संतुलन स्थापित कर कारीगरों को प्रोत्साहन देकर, आलस्य का उन्मूलन कर, धन के अपव्यय और असंयम का मितव्ययता की विधियों से दमन कर, भूमि के सुधार और उसकी रक्षा से मूल्यों के नियमित कर तथा कर और राजस्व में न्यूनता के द्वारा निर्धनता का प्रतिरोध करने के लिए राज्य को पूरी शक्ति लगा देनी चाहिये, क्योंकि भूखे विद्रोही सबसे बुरे होते हैं।" सबसे मुख्य बात यह है कि धन कुछ लोगों के हाथ में एकत्रित नहीं होने देना चाहिये ताकि राज्य में अत्यधिक सम्पदा रहने पर भी लोग भूखों न

मरें; क्योंकि द्रव्य खाद जैसी वस्तु है, जो यदि यत्रतत्र बिखरी न हो, तो अच्छी नहीं होती।" इसलिए एकाधिकार, सूदखोरी तथा बड़ी सम्पदा पर कड़ा नियंत्रण रखना चाहिए। असंतोष से उत्पन्न विद्रोह के कारणों पर विचार करते हुए वह घाव के भीतर ही खून बहते रहने के खतरे के विरुद्ध चेतावनी देता है; परन्तु वह कोई व्यावहारिक सुझाव नहीं देता। बुद्धिमान सरकार इस प्रकार प्रबंध करती है "कि कोई बुराई इतनी शक्तिशाली न प्रतीत हो कि उससे मुक्ति की आशा के लिए कोई राह ही न रहे।" राज्य के किसी बड़े व्यक्ति को असंतुष्टों का नेता नहीं बनने देना चाहिए और राजाओं को कोई ऐसा अविवेकपूर्ण वक्तव्य नहीं देना चाहिये, जो विदेशों में शीघ्रता से फैल जाय। अन्ततः, शासक को विद्रोहों को विकसित होने के पूर्व ही दमन करने के लिए अपनी सेवा में सैनिक दृष्टि से वीर और महान् व्यक्ति रखना चाहिए।

'एसेज़' में एक भी लेख पत्र-पत्रिकाओं में प्रचलित राजपद के प्रति उन सम्मानपूर्ण लेखों की भाँति नहीं है, जो राजा की कृपा-दृष्टि प्राप्त करने के उद्देश्य से लिखे जाते थे। वस्तुतः बेकन की धारणा 'जैकोबियन' युग की अपेक्षा ट्यूडरकाल और ऐसे राज्य की अपेक्षा, जिसमें राजा ही शक्ति का एक मात्र स्रोत हो, ऐसी व्यवस्था के जिसमें राजा और पार्लमेंट के अपने-अपने उपयुक्त कर्तव्य हों, अधिक निकट थी। राज्य एक व्यवस्थित समष्टि है, जिसमें राजा "प्रमुख गतिदाता है, जो प्रत्येक वस्तु को गतिशीलता प्रदान करता है।" "कुलीनों के बिना राजतंत्र तुर्कों की भाँति विशुद्ध तथा पूर्णरूपेण निरंकुश शासन है।" परन्तु "कुलीन वर्ग का होना तब ठीक है जब वह संप्रभुता और न्याय की राह में रुकावट डालने योग्य न हो, फिर भी उनको इतने उच्च पदों पर आसीन रखना चाहिए कि निम्न व्यक्तियों की धृष्टता का निशाना राजा के गौरव के स्थान पर वे ही बनें" कुलीनों को संतुलित रखने के लिए उन्हें उच्च और निम्न श्रेणियों में विभाजित रखना चाहिये। राजा, कुलीन, व्यापारी और कृषक शासन की उत्तरोत्तर व्यवस्था की विभिन्न श्रेणियाँ हैं। "ऑव जुडिकेचर" (Of Judicature) लेख में वह कहता है कि न्यायाधीशों को सदैव स्मरण रखना चाहिये कि सॉलोमन के सिंहासन के दोनों तरफ दो सिंह रहते थे। "वे सिंह हों, परन्तु राजसिंहासन के अधीन और इस मर्यादा के अधीन रह कर कि वे संप्रभुत्व की किसी बात का

अवरोध या विरोध नहीं करते।" उनके पद का कार्य विधि की व्याख्या करना है, उसका निर्माण नहीं। यदि राजा और न्यायाधीश प्रायः परस्पर परामर्श करें तो यह बहुत अच्छी बात है। किसी व्यक्ति को उचित विधियों और सही नीति में विरोध की कल्पना नहीं करनी चाहिये।

"डी आगूमेन्टिस" के आठवें भाग में "ट्रिटाइज ऑन यूनिवर्सल जस्टिस ऑर दी फाउन्टेन्स ऑव इक्विटी" (Treatise on Universal Justice or the Fountains of Equity) में उसने पूर्व दृष्टान्तों की पूजा का विरोध किया है। यह तथ्य कि किसी समय एक विशेष दृष्टिकोण स्वीकार किया गया था, उसके पक्ष को उतना दृढ़ नहीं बनाता, जितना आगे चलकर उसका परित्याग उसके विपक्ष को। "उदाहरण परामर्श के रूप में ही प्रयुक्त होने चाहिए, शासक और राजाज्ञा के रूप में नहीं।" राष्ट्रीय जीवन के हर पहलू में राजा को नियामक होना चाहिए। "ऑव यूनिटी इन रेलिजन (Of Unity in Religion) में वह अपनी पहली दो पुस्तिकाओं में छोटी चीजों पर विवादों के विरुद्ध दी गई चेतावनी को दुहराता है। "ईसाइयों की आध्यात्मिक और सांसारिक दो तलवारें हों और दोनों धर्म की रक्षा करते हुए अपना पद और स्थान अलग-अलग बनाए रखें।" सांसारिक तलवार का प्रयोग अत्यधिक सावधानी के साथ हो और उसे सामान्य लोगों के हाथ में नहीं सौंपा जाना चाहिये। वैसा तो अनाबाप्टिस्ट्स (Anabaptists) और अन्य हिंसावादी ही करें। परन्तु जनता का निर्दयतापूर्वक बध तथा राज्य और सरकार को उलटने के प्रयत्न प्रोत्साहित करने वाले सिद्धान्तों को हमेशा के लिए निर्मूल करने के लिए प्रत्येक अस्त्र को प्रयोग में लाया जाना चाहिए। यदि ल्यूक्रेटियस (Lucretius) को बार्थोलोम्यू काण्ड (Bartholomew Massacre) और 'गनपाउडर प्लाट' का पता होता, तो वह क्या कहता? चर्च को जनता में विद्रोह फैलाने या राज्य पर आक्रमण करने से रोकना आवश्यक है। हाब्स (Hobbes) से एक पीढ़ी पूर्व बेकन ने नागरिकों के धर्म और राजनीति पर समान रूप से राज्य की बंधनरहित संप्रभुता का पाठ पढ़ाया।

बेकन का आदर्श एक ऐसा राज्य था, जिसमें संप्रभु राजा अपने बुद्धिमान परामर्शदाताओं से सहायता लेते हुए भी परमाधिकारों के विस्तृत और अनिश्चित

क्षेत्र में अपने कार्यों के लिए किसी के प्रति भी उत्तरदायी न हो। 'कामन्स सभा' (House of Commons) की बैठक देश की शिकायतों और इच्छाओं की अभिव्यक्ति तथा नवीन विधियों और असाधारण करों पर सहमति प्रदान करने के लिए बार-बार बुलायी जानी चाहिए। सामान्य व्यय के लिए राजा के पास पर्याप्त आय होनी चाहिये और उसे अपने अधिकार के विरोध करने वालों को जूरी द्वारा मुकद्मे के बजाय किसी अधिक परोक्ष और निश्चित साधन द्वारा दंडित करने की शक्ति होनी चाहिए। परन्तु विधि के सामान्य क्रम में ऐसे हस्तक्षेप कम ही होंगे। पार्लमेंट के सुझावों पर शासक और प्रिवी कौंसिल (Privy Council) विचार करेंगे और उनमें जो महत्वपूर्ण होंगे, उन्हें स्वीकार कर लिया जायगा। पार्लमेंट को देश के शासन का न तो ज्ञान है और न अनुभव। इसलिये पार्लमेंट को संप्रभु राजा में विश्वास रखते हुए उसके अधिकारों को सीमित करने की चेष्टाओं तथा उसके प्रत्येक कार्य के स्पष्टीकरण के आग्रह द्वारा उसे शक्तिहीन नहीं बनाना चाहिए।

तत्कालीन समस्याओं के लिए अनुदान और राजनयज्ञता की कला के पथ प्रदर्शक के रूप में इस सिद्धान्त की दुर्बलता यह है कि अपनी सफलता के लिए यह शासक के चरित्र और उसकी क्षमता पर निर्भर था और इसने स्वशासन के शैक्षिक प्रभाव की अपेक्षा की। यद्यपि उसे अपने स्वामी की बौद्धिक और नैतिक सीमाओं को जानने के प्रचुर अवसर प्राप्त थे, फिर भी वह अपने प्रासाद का निर्माण राजाओं की बुद्धिमत्ता के आधार पर ही करता गया। सन् १६२१ में लिखित "डी आग्मेन्टिस" में "दि आर्ट ऑव एम्पायर ऑर सिविल गवर्नमेन्ट" (The Art of Empire or Civil Government) नामक अध्याय में वह कहता है कि उसने स्वयं चुप्पी साध ली, यद्यपि "वह एक ऐसा व्यक्ति है जिसे लम्बा अनुभव और अठारह वर्षों तक आपकी आज्ञाओं और बातचीत से अभ्यस्त होने की सुविधा रही है, जिससे कोई मूर्ख भी राजनयज्ञ बन सकता है।" मगर जेम्स के अतिरिक्त प्रत्येक व्यक्ति को यह बहुत पहले स्पष्ट हो गया था कि वह किसी की सहायता के बिना एक महान जनता पर शासन करने के अयोग्य है। बेकन का दोष यह है कि ऐसे राजा को परमाधिकारों पर अत्यधिक बल देने के लिए उत्साहित करके वह उसे संघर्ष की ओर ले गया, जिसका अन्त केवल

दुर्भाग्यपूर्ण ही हो सकता था। उस कार्य के लिए जेम्स तो अयोग्य था ही, यह सिद्धान्त भी दोषपूर्ण था। परमाधिकार के संभव उपयोगों पर मनन करते समय वह भूल गया कि अनुत्तरदायी सत्ता द्वारा प्राप्त सुविधाएँ कितनी डाँवाडोल होती हैं और उसे धारण करने वाले को यह सत्ता कितनी अपमानजनक सिद्ध होती हैं। अपनी दृष्टि को कुशल कार्यकारिणी पर केन्द्रित करते समय वह जनसाधारण की राजनीतिक शिक्षा को भूल गया। इसके अतिरिक्त उसके ध्यान में यह कभी आया ही नहीं कि साधारण मनुष्य की सहज प्रवृत्ति कभी-कभी राजाओं और दार्शनिकों की बुद्धिमत्ता से भी अधिक विवेकपूर्ण हो सकती है। संक्षेप में उसका दर्शन समाज की ऐसी अवस्था के उपयुक्त था, जो पहले ही समाप्त हो गयी थी। यदि विज्ञान और कल्पना में उसका मुख अरुणोदय की ओर था, तो राजनीतिक मनीषी के रूप में उसके विचारों का क्षितिज सुधारवादी आन्दोलन की शताब्दी के स्वेच्छाचारी राजतंत्रों तक ही सीमित था। उन नए विचारों की शक्ति और महत्व तक उसकी अन्तर्दृष्टि नहीं जा पाई, जो उसके देशवासियों को अधिक व्यापक और सुनिश्चित स्वतंत्रता की दिशा में ले जा रहे थे।

अध्याय २

हॉब्स

जब कि जेम्स ने विधिसम्मत राजाओं की दैविकता घोषित की और बेकन ने ट्यूडर राजतंत्र के आदर्शों का उपदेश दिया, हॉब्स ने, जो इंग्लैंड में प्रथम व्यापक राजनीतिक दर्शन का रचयिता है, राज्य का अपना सिद्धांत धर्मशास्त्र और परम्परा पर नहीं बल्कि मानव स्वभाव के अध्ययन पर आधारित किया। सत्रहवीं शताब्दी में इंगलैंड में राजनीति का सर्वाधिक रोचक और बिस्फोटक विचारक संघर्षरत दलों से अलग रहा। विचारों के क्षेत्र में उसके समकालीन व्यक्तियों में किसी को उसके समान एकाकी स्थान प्राप्त नहीं था और उन्नीसवीं शताब्दी में ही उसकी महत्ता पूर्णतः समझी जा सकी व उसके मुख्य सिद्धान्तों की आश्चर्य-जनक आधुनिकता आँकी गई। राजाओं का दैवी अधिकार धार्मिक युग के साथ ही, जिसने उसे उत्पन्न किया था, समाप्त हो गया पर राज्य के संप्रभुत्व का सिद्धान्त पुष्ट और अन्यून जीवनशक्ति के लक्षण प्रदर्शित करता है।

आरमेडा के वर्ष में उत्पन्न, हॉब्स ने अपने अधिकांश समकालीनों की तरह आक्सफोर्ड में अत्यल्प शिक्षा प्राप्त की। डेवनशायर के प्रथम अर्ल (Earl of Devonshire), जिसके साथ वह फ्रांस और इटली गया, के पुत्र का शिक्षक बनकर उसने कैवेन्डिश (Cavendish) परिवार के साथ अच्छे संबंध स्थापित किए, जो सत्तर वर्ष बाद उसकी मृत्यु के साथ ही समाप्त हुए। उसे पर्याप्त अवकाश प्राप्त था और उसने दर्शन व उच्चकोटि के साहित्य के विस्तृत क्षेत्र में इच्छानुसार विचरण किया। इन्ही दिनों बेकन से भी इसका परिचय हुआ, जो आबरे (Aubery) के कथनानुसार, गॉर्हमबरी (Gorhambary) के बागों में मनन करते हुए टहलता रहता था। जब कोई विचार उसके मस्तिष्क में आता था, तो वह अपने सहायकों में से एक को तत्काल बता देता था; और वह कहा करता था कि हॉब्स उसका भाव समझने और उसे स्पष्ट रूप से लिख

देने में और लोगों की अपेक्षा अधिक तेज़ था। उसके प्रारम्भिक अध्ययन का प्रमुख फल थ्यूसीडायड्स (Thucydides) की पुस्तकों का अनुवाद था, जिसके राजकीय समस्याओं के सारगर्भित विश्लेषण की वह बड़ी प्रशंसा करता था तथा जिसके राजनीतिक अव्यवस्था के स्पष्ट चित्रण ने शक्तिशाली शासक की आवश्यकता में उसके विश्वास को दृढ़ बनाया। दूसरी और तीसरी विदेश यात्राओं ने उसे रिचलू (Richlieu) के समय के फ्रांस की स्थिति का अति निकट से अध्ययन करने का अवसर प्रदान किया। इटली में उसने गैलीलिओ (Galileo) का परिचय प्राप्त किया। और पेरिस में डेकार्टे (Descartes) के अनुयायी मेरसेने (Mersenne), गैसेन्डी (Gassendi) तथा फ्रांस के अन्य विद्वानों से स्थायी मित्रता स्थापित की। सन् १६३८ में इंग्लैंड लौटने पर वह विधिवेत्ताओं, कवियों तथा धर्मशास्त्रियों के प्रसिद्ध समुदाय के सम्पर्क में आया जो ग्रेट ट्यू (Great Tew) में फाकलैंड (Falkland) के इर्दगिर्द एकत्र होते थे। और सरकार तथा धर्म की समस्याओं पर स्वतन्त्रतापूर्वक बहस करते थे। वह आने वाले तूफान को देखता रहा और सन् १६४० में राजा या पार्लमेंट के सिद्धान्तों से काफी भिन्न राजनैतिक सिद्धान्त की रूपरेखा निर्मित करने के लिये उसने अपने को विवश अनुभव किया।

यद्यपि उसकी लघुरचना "दी एलिमेन्ट्स ऑव ला नैचुरल ऐन्ड पॉलिटिक" (The Elements of Law Natural and Politic) प्रकाशनार्थ नहीं लिखी गई थी, फिर भी उसकी हस्तलिखित प्रतियाँ खूब प्रचलित थीं और उसने बाद में कहा कि यदि 'शॉर्ट पार्लमेन्ट' (Short Parliament) भंग न कर दी गई होती, तो उसका जीवन संकट में पड़ गया होता। विरोध पक्ष को एक अज्ञात दार्शनिक का खंडन करने की अपेक्षा अधिक गम्भीर कार्य करने थे, परन्तु यह भीरु विचारक घबराहट में फ्रांस भाग गया और चार्ल्स की हत्या होने तक वहीं रहा। यह पुस्तक, जिसके "ह्यूमन नेचर" (Human Nature) और "डी कारपोर पॉलिटिकों" (De Corpore Politico) नामक दो भाग हैं, अपनी स्पष्टता और सारगर्भित संक्षिप्तता के लिए विशिष्ट है, जो उसने सदैव बनाए रखी। यद्यपि यह प्रत्यक्षतः तत्कालीन विवादों की पृष्ठभूमि में शीघ्रतापूर्वक लिखी गयी, फिर भी समकालीन घटनाओं की ओर संकेत और

विवाद करने के उद्देश्य का एक भी चिह्न उसमें नहीं मिलता। पहला भाग मानव स्वभाव के विभिन्न तत्वों का वर्णन करता है और मनुष्यों को एक दूसरे के विरुद्ध रक्षा का साधन प्राप्त करने की आवश्यकता पर जोर देता है। "किसी व्यक्ति के दूसरे का दासत्व स्वीकार करने का कारण उसके अभाव में अपनी रक्षा न कर पाने का भय ही है।" यहाँ से दूसरा भाग आरम्भ होता है। जब यह बात मान ली जाती है कि बहुमत, अथवा कुछ व्यक्ति, या केवल एक ही, सबकी इच्छा का किसी निश्चित समय अथवा सदैव के लिए प्रतिनिधित्व करेगा, तो प्राकृतिक अवस्था जो परस्पर युद्ध की अवस्था है, राजनीतिक समाज में परिणत हो जाती है। सरकार के पास, चाहे उसमें किसी प्रकार की व्यवस्था हो, बल प्रयोग करने का अधिकार अवश्य होना चाहिए; "क्योंकि अधिकांश व्यक्तियों की इच्छाएँ भय से शान्ति होती हैं।" प्रत्येक राज्य में निरंकुश और अविभाज्य संप्रभुता होती है, जिसका न तो प्रतिरोध किया जा सकता है और न उसे दंडित ही किया जा सकता है। संप्रभु के आदेश पालन से उसके देश-निष्कासन या उसकी हार के बाद ही इन्कार किया जा सकता है, क्योंकि यदि व्यक्ति का कोई अन्य रक्षक न हो, तो वह विधिसम्मत रूप से अपनी रक्षा स्वयं कर सकता है।" यद्यपि राजतन्त्र ही शासन का एक मात्र संभाव्य रूप नहीं है परन्तु इसमें भावुकता का सबसे कम प्राधान्य रहता है तथा गृह-युद्ध द्वारा समाप्ति की इसमें न्यूनतम संभावना होती है। उत्तराधिकार की अनिश्चितता दूर करने के लिये संप्रभु अपना उत्तराधिकारी मनोनीत कर सकता है। उसे व्यक्ति के कार्य और भाषण को नियंत्रित करते हुए, निस्संदेह उसकी आत्मा को नहीं, धार्मिक विवादों का निर्णय करना चाहिए; क्योंकि ईसा मसीह के बाद चर्च का वही सबसे उच्च शासक है और अन्य सब अधिकारी उसके अधीन हैं। काज़ेज ऑव रिबेलियन (Causes of Rebellion) नामक एक अध्याय में वह विशेष दशाओं में संप्रभु का विरोध करने के दावे की निन्दा करता है। यदि आज्ञाकारिता के स्पष्ट नियम में अपवाद स्वीकार किये जायँगे, तो अनिश्चितता और विनाश के द्वार खुल जाते हैं। वह ऐसे शब्दों में "जो ट्रू ला आव फ्री मोनारकीज" की याद दिलाते हैं, कहता है कि ईश्वर राजा से श्रेष्ठ और विवेकपूर्ण शासन की अपेक्षा करता है और ऐसा न करने पर वह महामरण का भागी होगा,

तथा राजा को दंड देना, मानवीय नहीं ईश्वरीय विषय है। परन्तु जब कि जेम्स ने केवल विधिसम्मत राजाओं के लिये ही अदंडनीयता का दावा किया था हॉब्स सब के लिए समान रूप से इसका दावा करता है। इस प्रकार वैधानिक (De jure) और वास्तविक (De facto) शासन का विभेद समाप्त कर दिया गया है। संप्रभु का कर्त्तव्य है कि वह लोगों को एक दूसरे की गर्दन काटने से रोके, और इस कर्त्तव्य का निर्वाह बल प्रयोग से राजसत्ता प्राप्त करने वाला भी उतनी ही कुशलता से कर सकता है, जितनी कि सैकड़ों पीढ़ियों से शासन करने वाले राजवंश के अभिषिक्त उत्तराधिकारी।

यह आश्चर्य की बात नहीं है कि इस छोटी सी पुस्तिका का पाठकों पर प्रभाव पड़ा, क्योंकि इसके सिद्धांत सन् १६४० के बसन्त में संघर्ष के लिए प्रस्तुत होने वाले दलों के सम्मुख तीक्ष्ण चुनौती बन कर आये। अविभाज्य संप्रभुता और विधि का संप्रभु के आदेश होने का सिद्धांत फ्रांस के धर्म-युद्धों के काल में बोदां (Bodin) द्वारा घोषित किया जा चुका था, परन्तु इंग्लैंड में यह विचार अभी भी सामान्यतः अपरिचित था। राजतंत्र की उत्पत्ति के विषय में अपने पूर्णतया धर्मनिरपेक्ष दृष्टिकोण तथा संप्रभु की विधि सम्मतता के विचार से अपने को संबंधित न करने के कारण वह दैवी सिद्धांत के समर्थकों से पृथक था। मूलभूत विधियों का तिरस्कार और सीमित राजतंत्र का खंडन करने के कारण पार्लमेंट के नेताओं से भी उसका गहरा मतभेद था। यद्यपि राजा और पार्लमेंट दोनों ही ने अपने कुछ आकांक्षित दावों पर आक्रमण होते पाया, परन्तु पार्लमेंट अधिक उत्तेजित हुई। इस पुस्तक का संदेश था कि राजा को जो कुछ वह चाहे, करने का अधिकार है। पेरिस के सुरक्षित आश्रय से वह व्यग्रता-पूर्ण रुचि से इस संकट का अध्ययन कर रहा था और 'डी साइव' (De Cive) की रचना में लगा हुआ था, जो सन् १६४२ में लैटिन भाषा में प्रकाशित हुई।

यद्यपि पुस्तक को अपने आश्रयदाता 'अर्ल ऑव डेवनशायर' को समर्पित करते हुए उसने घोषणा की है कि वह किसी राष्ट्र विशेष की विधियों में हस्तक्षेप न करने के लिए सचेत है, पर उसके आमुख से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि यह पूर्ण पुस्तक लेखक ने अंग्रेजी राजनीति को ध्यान में रखकर

ही लिखी है। वह इन "गलत धारणाओं" का कि स्वेच्छाचारी राजा की हत्या की जा सकती है, राजा को पदच्युत किया जा सकता है और उसकी आज्ञा का पालन करने के पहले नागरिकों द्वारा उन पर विवाद किया जा सकता है तथा उन भयंकर आपत्तियों का जो इनके परिणामस्वरूप उत्पन्न होती हैं, उल्लेख करता है। प्राचीन काल में सर्वोच्च सत्ता का सम्मान और उसकी आज्ञाओं का पालन किया जाता था। "आधुनिक युग के विपरीत वे लोग देश को सर्वनाश से बचाने के लिए महत्वाकांक्षाओं और दुष्टात्माओं से दूर रहते थे। वे लोग अपने रक्षक का परिरक्षण न चाहने का आश्चर्यपूर्ण विचार तो मन में ला ही नहीं सकते थे।" प्राकृतिक अवस्था के सतत पारस्परिक युद्ध मात्र होने के कारण आत्म-बोध इस "दारुण अवस्था" से मुक्ति पाने के लिए व्यक्ति को विवश करता है। यद्यपि राजतंत्रीय शासन सर्वाधिक सुविधाजनक शासन है, फिर भी मानव को बुद्धि के विकास के साथ यह स्वीकार करना चाहिए कि प्रत्येक राज्य में एक सर्वोच्च सत्ता होनी चाहिए जिसके प्रति, आध्यात्मिक तथा सांसारिक, सभी विषयों में आज्ञाकारिता आवश्यक है।

'डी साइव' आरम्भ करने के समय हॉब्स ने अपने राजदर्शन की तीसरी तथा अत्यधिक व्यापक व्याख्या आरम्भ की। जब वह 'लेवायथन' (Leviathan) लिखने में व्यस्त था, उसे 'प्रिंस आव वेल्स' (Prince of Wales) के लिए गणित का शिक्षक नियुक्त किया गया और इस प्रकार ऐसे परिचय की नींव पड़ी, जो अगले वर्षों में अत्यधिक महत्वपूर्ण सिद्ध हुआ। सन् १६४६ में राजा की फाँसी ने उसे अपने पीड़ित देश के पथप्रदर्शन के लिए उत्साहित किया। अन्त में सन् १६५० में उसने 'एलिमेन्ट्स ऑव ला' (Elements of Law) नामक पुस्तक प्रकाशित कराई और सन् १६५१ में "डी साइव" का अंग्रेजी भाषा में अनुवाद प्रकाशित किया। इसके बाद उसी वर्ष लन्दन में लेवायथन प्रकाशित हुआ। अब उसने अपनी मंत्रणाओं को लैटिन भाषा तक ही सीमित नहीं रखा, वरन् अपने देशवासियों को सीधे संबोधित किया। इसके प्रकाशन के थोड़े समय बाद ही चार्ल्स द्वितीय पीछा किए जाते हुए फरार व्यक्ति के रूप में पेरिस पहुँचा। वहाँ लेखक ने उसे पुस्तक की एक हस्तलिखित प्रति भेंट की। यद्यपि प्रफुल्लचित्त युवक राजा ने उस

बृहद् ग्रन्थ की उपेक्षा ही की, परन्तु राजा के साथ के कुछ लोग उसके बारे में अधिक उत्सुक थे और उन्होंने इस पर इतना हल्ला मचाया कि हॉब्स पेरिस छोड़ कर भाग गया।

उसके अंतिम देश-निष्कासन के कई वर्ष पश्चात् लिखी गई 'लेवायथन' की आलोचना में क्लेरेंडन (Clarendon) ने कहा है कि उसने इस पुस्तक के प्रकाशन के ठीक पहले हॉब्स से बात की थी और उससे पूछा कि वह ऐसे सिद्धान्तों को कैसे प्रकाशित करा रहा है। उस दार्शनिक ने कुछ व्यंग और कुछ गंभीरता से उत्तर दिया, "सच यह है कि मैं स्वदेश लौटना चाहता हूँ।" यदि उस बातचीत का यह सही वर्णन है, तो यह केवल परिहास ही रहा होगा, क्योंकि लेवॉयथन के सिद्धान्त १६४० में प्रकाशित उस छोटी सी पुस्तक के ही हैं, और हॉब्स जानबूझकर राजा को अप्रसन्न करने वाला अंतिम व्यक्ति होता। इसी प्रकार पुनर्स्थापन (Restoration) के पश्चात् उस पर लगाया गया यह आरोप कि यह पुस्तक ओलिवर (Oliver) के पद की रक्षा के लिए लिखी गई थी, ऐतिहासिकता से शून्य है। सन् १६५० में जब वह अपनी पुस्तक को समाप्त कर रहा था, उस समय देश पर 'रम्प पार्लमेंट' (Rump Parliament) शासन कर रही थी। उसके निष्कासन का वास्तविक कारण उसकी राजनीति नहीं थी, वरन् उसके धार्मिक विचार और चर्च की महत्वाकांक्षाओं के प्रति तिरस्कारपूर्ण दृष्टिकोण था। राजा के मंत्री सर एडवर्ड निकोलस ने लिखा है, "यहाँ प्रत्येक ईमानदार व्यक्ति यह जानकर बहुत प्रसन्न है कि अंत में राजा ने नास्तिकों के सर्वाग्र नेता मि० हॉब्स को अपनी राजसभा से निकाल दिया।" दार्शनिक ने कौंसिल आव स्टेट के सम्मुख समर्पण कर दिया और अपनी दीर्घायु का शेष अंश इंग्लैंड में ही व्यतीत किया।

"दी लेवॉयथन ऑर दी मैटर, फार्म ऐण्ड पावर ऑव ए कामनवेल्थ एक्लेसिआस्टिकल ऐण्ड सिविल" (The Leviathan or the Matter, Form and Power of a Commonwealth Ecclesiastical and Civil) हॉब्स के राज्य के सिद्धांतों की पूर्ण व्याख्या ही नहीं, बल्कि संसार की महान पुस्तकों में से एक है। इसकी मौलिकता

और दृढ़ता, विचारों की स्पष्टता और शब्दों की सारगर्भितता ने "दि प्रिंस" The Prince, "एसेज ऑन सिविल गवर्नमेन्ट" (Essays on Civil Government) और "कॉनट्रैट सोशल" (Contrat Social) के समान इसका स्थान राजदर्शन के उच्चकोटि के साहित्य में सुरक्षित कर दिया है। मुखपृष्ठ का चित्र पुस्तक का प्रधान भाव अभिव्यक्त करता है। दाहिने हाथ में तलवार और बाएँ में क्रास का चिन्ह धारण किए हुए एक भीमकाय, मुकुटधारी आकृति पर्वत के पीछे से ऊपर उठती है, जिसके नीचे वैभवशाली नगरी है। संप्रभु के मस्तक पर ये प्रभावशाली शब्द अंकित हैं, 'नान एस्ट पोटेस्टाज़ सुपर टैरम् क्वौय कम्परेटर आई' (Non est potests Super terram quoe Comparetur ei)। पुस्तक के प्राक्कथन में कहा गया है कि यह महान लेवाँयथन ही राज्य है जो, यद्यपि डीलडौल और शक्ति की दृष्टि से प्राकृतिक मनुष्य की अपेक्षा बड़ा है पर स्वयं कृत्रिम मानव मात्र है; और इसकी रचना प्राकृतिक मनुष्य की रक्षार्थ ही हुई है। पुस्तक के चार भागों में से प्रथम भाग में "मनुष्य" पर विचार किया गया है और वह उसकी विशेषताओं और क्षमताओं, गुणों और दोषों की समीक्षा करता है। वह कहता है कि स्वाभाविक रूप में मनुष्य मानसिक और शारीरिक गुणों में इतने समान हैं कि यद्यपि वे सभी शक्ति की कामना करते हैं, फिर भी उनमें से कोई भी ऐसी सुविधा का दावा नहीं कर सकता, जो दूसरों को प्राप्त नहीं है। समानता से प्रतिस्पर्द्धा उत्पन्न होती है और प्रतिस्पर्धा से संघर्ष—संगठित युद्ध नहीं वरन् एक सतत संघर्ष, सब प्राणियों का सब के विरुद्ध। इच्छाएँ और वासनाएँ जिनसे यह अराजकता उत्पन्न होती है अपने आप ही कोई पाप नहीं हैं, और न वे क्रियाएँ जो इनसे उत्पन्न होती हैं, अपराध ही हैं,—यदि वे विधि द्वारा निषिद्ध नहीं हैं। किन्तु जब तक लोग यह तय न करें कि विधियों का निर्माण कौन करेगा, तब तक उनका निर्माण नहीं हो सकता। समाज की आदिम या प्राकृतिक अवस्था असह्य थी, क्योंकि उसमें "उद्योग, कला, साहित्य तथा समाज का पूर्ण अभाव था और हिंसात्मक मृत्यु का निरंतर भय रहता था। मनुष्य का जीवन "एकाकी (Solitary), दारिद्र्यपूर्ण (Poor), कुत्सित (Nasty), पशुतुल्य (Brutish)

और अल्प (short)" था। उचित व अनुचित, न्याय व अन्याय का कोई महत्व नहीं था। "जहाँ कोई सामान्य सत्ता नहीं होती वहाँ विधि भी नहीं होती; और जब विधि ही नहीं है तो अन्याय का प्रश्न ही नहीं उठता।" प्राकृतिक अवस्था किसी के लिए हितकर सिद्ध नहीं हुई—क्योंकि दुर्बलतम व्यक्ति भी सर्वाधिक शक्तिशाली को मारने के लिए काफी था—इसलिए यह स्वाभाविक था कि इस अवस्था से छुटकारे का कोई मार्ग ढूँढ़ा जाता। यह कार्य प्रत्येक व्यक्ति ने अपनी इच्छानुसार जो कुछ चाहें करने का अधिकार किसी एक व्यक्ति या व्यक्तियों की संस्था को सौंप देने से ही संभव हो सकता था। इस प्रकार परस्पर युद्ध की अवस्था का राजनीतिक अवस्था से विनिमय कर लिया गया। समाज ने राज्य का रूप ले लिया और उसका शासन संप्रभु, लेवॉयथन या 'मरणशील ईश्वर' के हाथों में सौंप दिया गया। समझौता करने वाले पक्ष समाज और संप्रभु नहीं हैं, वरन् प्रजा ही है। संप्रभु इस समझौते का परिणाम है, इसका कोई पक्ष नहीं। सामान्य सिद्धान्त से इस विचित्र विभेद का हॉब्स इस कारण समर्थन करता है कि प्राकृतिक अवस्था में बिना किसी सामान्य सत्ता को स्वीकार करते हुए मनुष्य सामूहिक रूप से कोई समझौता नहीं कर सकते। समूह एक इकाई नहीं होती और जब तक किसी सरकार की स्थापना नहीं हो जाती, तब तक "जनता" का अस्तित्व नहीं होता।

संप्रभु का चुनाव और उसे अधिकारों से विभूषित इस आशा से किया जाता है कि वह शांति और सुरक्षा स्थापित करेगा; परन्तु यद्यपि उसे अपने अधिकारों की प्राप्ति उन्हीं लोगों से होती है, जिन पर वह शासन करता है, पर वह उनके प्रति किसी बंधन से बँधा नहीं है। मनुष्य की समाज-विरोधी प्रवृत्तियाँ इतनी प्रबल होती हैं कि वे बिना निर्बन्ध सत्ता के नहीं दबाई जा सकतीं। और उस सत्ता पर किसी प्रकार का आक्रमण फिर उस असभ्य अवस्था में ले जायगा, जिसका सोच-विचार कर परित्याग किया गया था। उसकी इच्छा ही विधि है और उसकी प्रजा को वही करने का अधिकार है, जिस पर उसने प्रतिबन्ध नहीं लगाया है। उसके अधिकार असीमित हैं, यद्यपि हॉब्स व्यक्ति को हत्या, आघात पहुँचाने या बन्दी किए जाने के प्रयत्नों का प्रतिरोध करने का अधिकार देता है।

एक बार जो समझौता (Covenant) हो गया उसमें न तो संशोधन हो सकता है और न उसका अन्त ही। क्योंकि वह सब की इच्छा का प्रतीक है इसलिए उसके कृत्य वास्तव में उनके कृत्य हैं। सीमित राजतंत्र में आत्मविरोध है। उसका कर्त्तव्य अपनी प्रजा का विदेशी शत्रु और आंतरिक विप्लव से रक्षा करना, युद्ध और शांति के विषय में निर्णय करना तथा आवश्यक कर लगाना है। विधि उसकी आज्ञा है और उसे ही इसकी व्याख्या के बारे में निर्णय करना चाहिए। उसे उन विचारों के प्रकाशन का दमन करना चाहिए, जिन्हें वह सामाजिक शांति के लिए खतरनाक समझता है क्योंकि उसकी नियुक्ति मनुष्यों की एक दूसरे के विरुद्ध रक्षा करने के लिए हुई थी, इसलिए उसे अपना कार्य सावधानी पूर्वक और निर्विघ्न रूप से करना चाहिये।

अपने पूर्व ग्रन्थों की तरह ही हॉब्स ने लेवॉयथन में यह सिद्ध करने का अथक प्रयत्न किया है कि संप्रभु की सर्वोच्च सत्ता आध्यात्मिक विषयों में भी सांसारिक विषयों से कम नहीं है। राजसिंहासन के निकट वह किसी प्रतिद्वन्दी को सहन नहीं करेगा। निस्संदेह उसके मौलिक अनुबन्ध के सिद्धान्त में ऐसी अधीनता अन्तर्निहित है, परन्तु अपने समकालीन कैथोलिकों और प्योरिटनों के दावों के कारण ही इसकी आवश्यकता के बारे में उसका विश्वास और गहरा हो गया। सार्वभौमिकता की अविभाज्यता उसका संदेश था, और चर्च के इस सत्ता के समान होने अथवा उसके अधीन एक सत्ता होने के दावों का कठोरता से खंडन किया गया। रोमन चर्च के दावों पर उसने तीव्र प्रहार करने की तैयारी की, क्योंकि उसके छलपूर्ण प्रभाव की शक्ति को वह समझता था। आध्यात्मिक सत्ता सामान्य आदमी की कमजोरी में, जिसे "अंधकार तथा भूत-पिशाच का भय अन्य भयों से अधिक होता है" और जो शाश्वत नरक के शाप के भय से काँप उठता है, अपना अवसर प्राप्त करती है। संप्रभु को ऐसे खतरे से अपनी तथा अपनी प्रजा की रक्षा करनी चाहिए ताकि मनुष्यों के अंतर में धर्म और राजनीतिक विषयों पर संघर्ष न हो।

विशुद्ध 'इरासशियनिज्म' (Erastianism) इस दर्शन का प्रमुख अंश है; परन्तु हॉब्स अपने तर्क की आवश्यकता से भी बहुत आगे चला जाता है। वह यह दिखाने का प्रयत्न करता है कि ईश्वर द्वारा स्थापित कोई भी आध्यात्मिक सत्ता

राज्य से स्वतंत्र नहीं रही है, यहाँ तक कि यहूदियों में भी लौकिक शासक की सत्ता ही सर्वोच्च थी। क्रिश्चियन चर्च की वैधानिक स्थिति सम्राट की एक देन मात्र है, इसलिए इसका अलौकिक सत्ता का दावा आधारहीन है। पादरियों ने प्रत्येक मानव में परिव्याप्त अन्धविश्वास की प्रवृति को बढ़ावा देकर अपनी सत्ता में वृद्धि की। फिर वह उस प्रसिद्ध वाक्य को लिखता है, जो सैकड़ों प्रोटेस्टेन्ट इतिहासकारों द्वारा उद्धृत किया गया है—"यदि कोई आदमी चर्च की विशाल सत्ता के प्रारम्भिक रूप पर विचार करे, तो वह सरलता से देख लेगा कि पोपशाही मृत रोमन साम्राज्य का ही भूत है जो उसकी कब्र पर मुकुट धारण किए हुए आसीन है।" धर्मग्रंथों की विस्तृत प्रदर्शनी के पीछे न केवल चर्च के दावों का घृणापूर्वक खंडन ही स्पष्ट है, वरन् चर्च के सिद्धान्तों के लिए एक प्रकार का तिरस्कार भी। वह गिबन (Gibbon) के इस इतिहास-प्रसिद्ध उपहास का स्वागत अवश्य करता कि धर्म में विश्वास करने वाले के लिए सभी धर्म समान रूप से सत्य, दार्शनिकों के लिए समान रूप से असत्य तथा अधिकारी वर्ग के लिए समान रूप से उपयोगी हैं। धर्म की उपयोगिता तब थी जब इसका प्रयोग, राज्य के निर्णयों का विरोध करने के लिए नहीं, वरन् मनुष्य को शांतिपूर्वक रहने की शिक्षा देने के लिए किया जाता था।

यदि 'लेवॉयथन' का शासन उतना ही असह्य मालूम होने लगे जितनी अराजकता, वह अवस्था जिससे इसने छुटकारा दिलवाया था तो इसका उत्तर यह था कि सरकार दैनिक जीवन के कार्यक्रम में बहुत कम हस्तक्षेप करेगी। प्रत्येक क्षेत्र को निर्धारित करने की शक्ति और अधिकार रखते हुए भी व्यवहार में ऐसे हर कार्य के लिए इसकी अनुमति रहेगी जिससे शान्ति भंग होने का भय न हो। विधियाँ थोड़ी और सरल होनी चाहिए। "जिस प्रकार प्रकृति ने किनारों को धारा रोकने के लिए नहीं वरन् उसका पथ निश्चित करने के लिए बनाया है, उसी प्रकार शासक और प्रजा दोनों के हित के लिए आवश्यक से अधिक का विधियों होना स्वस्थ नीति के विरुद्ध है। इसी प्रकार विचारों की अभिव्यक्ति यद्यपि संप्रभु की इच्छा के अधीन है, फिर भी विचार स्वयं स्वतंत्र हैं। कानून द्वारा स्वीकृत धर्म के प्रति वाह्य सहमति रखनी चाहिए, यद्यपि व्यक्ति उसमें कम या अधिक जितनी चाहे आस्था रख सकता है। उदाहरण के

लिए वह "उन कृत्यों का जो चमत्कार के लिए बताए गए हैं" परित्याग कर सकता है। वास्तव में माम्सबरी के दार्शनिक जैसे आज्ञाकारी किन्तु संदेहवादी को तंग करने की आवश्यकता नहीं थी।

'लेवॉयथन' से राजतन्त्रवादी और चर्च क्षेत्रों में घृणा का विस्फोट हुआ और इसके धृष्ट लेखक के प्रति कड़े शब्दों का प्रयोग किया गया। ये लोग उसकी चर्च-विरोधी धर्मनिरपेक्षता तथा तत्कालीन विश्वविद्यालयों के प्रति तिरस्कार की भावना से घृणा करते थे। धर्मशास्त्र राजनीति का एक भाग है, राजनीति धर्मशास्त्र का नहीं, उसके इस विचार से वे लोग बहुत उत्तेजित हुए थे। अनेक वर्षों तक किसी प्रकार के संदेहवाद (Scepticism) और स्वतन्त्र विचार को हॉब्सवाद कह कर निंदित किया जाता रहा। एवलिन (Evalyn) ने लिखा है कि भौतिक शास्त्र के विद्वान राबर्ट बॉयल (Robert Boyle) जैसा भद्र पुरुष संसार में केवल एक ही व्यक्ति के प्रति घृणा भाव रखता था और वह व्यक्ति था हॉब्स। आगे चलकर बेंटले (Bentley) ने नैतिक पतन का जिम्मेदार हाब्स को ठहराया और डा० शैकबेरेल (Dr. Sacheverell) ने उसको स्पिनोजा (Spinoza) की कोटि का घोर नास्तिक बताया। हॉब्स पादरियों के प्रति इतने घृणा भाव से भरा था कि उसकी तुलना उसके प्रति पादरियों की घृणा से ही की जा सकती थी। उसका सर्वाधिक ठोस और आधिकारिक प्रत्युत्तर राजपक्ष के सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति ने दिया। १६७० ई० में निर्वासनकाल में क्लैरण्डन द्वारा लिखित पुस्तक "ब्रीफ व्यू ऑव दी डेन्जरस एण्ड पर्निशियस एरर्स टु चर्च एण्ड स्टेट इन मिस्टर हॉब्सेज बुक" (Brief View of the Dangerous and Pernicious Errors to Church and State in Mr. Hobbes's Book) चार्ल्स द्वितीय को समर्पित की गई। "मैं हॉब्स को गलत सिद्ध करने के अतिरिक्त आपकी कोई और अधिक महत्वपूर्ण सेवा कर सकने की सोच नहीं सका।" उसकी व्यक्तिगत योग्यता की वह सहानुभूतिपूर्ण प्रशंसा करता है। "गुणी, बुद्धिमान, विद्यावान और उससे भी अधिक विचारशील हॉब्स संसार मेरे प्राचीनतम परिचितों में से हैं, जिसके प्रति मैं सदैव श्रद्धा रखता आया हूँ, और जो पंडित तथा ज्ञानी होने के साथ ही ईमानदार और कलंकशून्य जीवन वाला व्यक्ति माना गया है।" फिर भी उसके सिद्धान्तों के प्रति

वह तनिक भी दया नहीं दिखाता। स्वतन्त्रता, धर्म और न्याय सारहीन शब्द हैं। इसके अतिरिक्त उसके अनुबन्ध का सिद्धान्त विद्रोह का द्वार अवरुद्ध नहीं कर सका। यदि विद्रोह हो, तो राजा शिकायत नहीं कर सकता, क्योंकि इससे प्रजा उसके प्रति की हुई कोई प्रतिज्ञा भंग नहीं करती। स्वदेश से निर्वासित यह व्यक्ति स्वाभाविक रूप से इस सिद्धान्त का खंडन करता है कि यदि कोई अनधिकृत रूप से राज-पद प्राप्त कर ले तो भी उसकी आज्ञा को बिना किसी संशय के पालन करना चाहिए। पुराने शासक के उनकी रक्षा करने के असमर्थ हो जाने पर यदि प्रजा-जन नए शासक के प्रति स्वामिभक्ति दिखाने लगे और उसकी आज्ञा पालन करना उसके लिए आवश्यक हो जाय, तो ऐसी परिस्थिति में राज-भक्ति आमूल नष्ट हो जाती है। धर्म के प्रति घृणास्पद दृष्टिकोण भी उतना ही रोष उत्तेजित करता है। अंत में वह कहता है कि हॉब्स की यह पुस्तक जला डालनी चाहिए। "मैंने कभी ऐसी कोई पुस्तक नहीं पढ़ी, जिसमें विद्रोह, गद्दारी और अनीश्वरवादिता इतनी अधिक मात्रा में हो।"

तत्कालीन आलोचकों (Controversialists) को यहीं छोड़िए। एक आधुनिक आलोचक इस दर्शन की आधार-शिला को चुनौती देते हुए ही अपनी आलोचना प्रारम्भ करेगा। मानव स्वभाव में निहित निरंकुश सरकार की आवश्यकता, जिसकी अभिव्यक्ति आदिम समाज में हुई, बार-बार दुहराई गई है। पर आदिम समुदायों के वास्तविक जीवन का न तो हॉब्स को और न उसके समकालीन व्यक्तियों को ही ज्ञान था। उसका सबका सभी से निरंतर युद्ध का वीभत्स चित्र यथार्थता के अनुकूल नहीं है। जिस अवस्था का वह वर्णन करता है, उसमें न तो कोई समुदाय रहता है और न रहा होगा। हॉब्स के लिए अराजकता और स्वेच्छाचारिता के बीच कोई मार्ग नहीं है। उसे पता नहीं था कि विधि के पूर्व रीति-रिवाज रहे हैं और एक की बंधनीयता उतनी ही प्रबल थी जितनी कि दूसरे की। आदर्श आदिम मनुष्य और स्वर्णिमयुग की निष्कपटता व सदाचारिता पर भावुक रचनाओं के बारे में उसकी अस्वीकृति उचित ही थी; पर उसे यह ज्ञात नहीं था कि मनुष्य में सामाजिक जीवन के तत्त्वों का कभी अभाव नहीं रहा और राजनीतिक संगठन न रहने पर भी आदिम जातियों में नैतिकता अपरिपक्व रूप में रहती है। उसकी कल्पना के विपरीत आदिम

समाज की इकाई व्यक्ति नहीं वरन् कुटुम्ब या दूसरे समुदाय थे। और उस समाज के मनुष्यों का जीवन स्टुअर्ट-कालीन इंग्लैंड की अपेक्षा रीति-रिवाजों के बंधनों से अधिक बँधा था। अधिक जटिल संगठन की ओर प्रगति परिस्थितियों के असह्य हो जाने के कारण नहीं हुई, समुदायों के शान्तिमय या वैमनस्यपूर्ण परस्पर सम्मिलन के कारण उत्पन्न नई आवश्यकताओं तथा प्रवृत्तियों के अभ्युदय के कारण हुई। हॉब्स ने यह स्पष्ट कहा था कि प्राकृतिक समाज का ऐसा अंधकारपूर्ण चित्र खींचकर वह मानव स्वभाव पर कोई दोष आरोपित करना नहीं चाहता; परन्तु आत्मरक्षा पर ध्यान केन्द्रित करने में वह उसकी पूरक पारस्परिक सहयोग की प्रवृत्ति की पूर्णतः उपेक्षा कर बैठता है। उसके लिए मनुष्य न तो नैतिक प्राणी है और न राजनीतिक। निरंकुश सरकार के प्रत्येक सिद्धान्त में मनुष्य के प्रति हीन दृष्टिकोण रहता है और हॉब्स भी इस नियम का अपवाद नहीं था।

आदिम समाज के प्रति ऐसे दृष्टिकोण के विनष्ट हो जाने पर 'लेवायथन' की दासता का तर्क धराशायी हो जाता है। परन्तु उस असह्य अवस्था से मुक्ति की आवश्यकता मान लेने पर भी हॉब्स अपने पाठकों को यह विश्वास नहीं दिला पाता कि इसके लिए प्राकृतिक अधिकारों का बिना किसी शर्त के परित्याग ही एक मात्र उपाय है। स्पेनवासी 'जेसुइट' मेरियाना (Mariana) ने जिसकी प्राकृतिक अवस्था के वर्णन में हॉब्स के विचारों की झलक मिलती है और जिसने राजनीतिक समाज की उत्पत्ति का कारण मनुष्य की असफलताओं को ठहराया, अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'डी रेजे' (De Rege) में लिखा है कि समाज ने समर्पण करने की अपेक्षा अधिक शक्ति अपने पास सुरक्षित रखी। हुकर भी, जो इस विचार से सहमत था कि समझौता राजा और प्रजा के बीच न होकर समूह के विभिन्न सदस्यों के बीच ही हुआ था, इस निष्कर्ष पर पहुँचने को तैयार नहीं है कि वे सब पूर्णतः अधिकारशून्य बन गए। उसका यह तर्क कि सामूहिक क्रिया असंभव थी, उसी के द्वारा वर्णित घटनाओं से असंगत सिद्ध हो जाता है। प्राकृतिक अवस्था से मुक्ति का दृढ़ निश्चय सामूहिक इच्छा और संप्रभु को अपने अधिकारों का समर्पण सामूहिक क्रिया थी। भविष्य में रक्षा की तनिक भी चिंता

न करके मनुष्य द्वारा अपने सम्पूर्ण अधिकारों के परित्याग कर दिए जाने का उसका दावा सामान्य बुद्धि के लिए अपमान है। यदि उनमें अपने पारस्परिक अधिकारों को अनुबन्ध के द्वारा सीमित करने की क्षमता थी, तो अपनी इच्छानुसार चुने हुए शासक को सामान्य निर्देश देने की भी उनमें क्षमता रही होगी। साधारण रूप में मौलिक अनुबन्ध का सिद्धान्त काल्पनिक होते हुए भी कई शताब्दियों तक माना जाता रहा, क्योंकि इससे नीति (equity) की भावना संतुष्ट होती रही। इसने सहमति द्वारा शासन के सिद्धान्त की घोषणा की। जिस प्रकार प्रजा राजा की आज्ञा का समुचित पालन करने के लिए बाध्य थी उसी प्रकार राजा भी प्रजा के प्रति अच्छा शासन करने को बाध्य था। प्राकृतिक अधिकारों का सदैव के लिए बिना किसी शर्त के समर्पण नहीं हो सकता था। शेष अधिकारों की रक्षा के लिए कुछ अधिकारों का परित्याग किया गया। कोई पीढ़ी अपनी संतति को हमेशा के लिए नहीं बाँध सकती। श्रेष्ठतर जीवन की माँग में, जिसके फलस्वरूप ही राजा चुना गया, शासक के कृत्यों को इस कसौटी पर परखने का अधिकार छिपा था कि उस ध्येय की प्राप्ति कहाँ तक हुई। पर दूसरी ओर हॉब्स की योजना में प्रजा या संप्रभु एक दूसरे के प्रति कोई उत्तरदायित्व स्वीकार नहीं करते।

जैसा कि पहले कहा जा चुका है, निरंकुश संप्रभु का सिद्धांत उन संघर्षरत दलों को, जिनमें इंग्लैंड हॉब्स के ग्रन्थ लिखने के समय विभक्त था, सामान रूप से अमान्य था। क्लेरंडन ने "इंग्लैंड के विधि और विधान के विषय में उसकी प्रसिद्ध अज्ञानता" के प्रति बड़ी कटुता से लिखा है; और निस्संदेह उसका दृष्टिकोण ब्रिटिश लेखक का न होकर योरोपीय था। उसकी यह धारणा गलत थी कि प्रत्येक राज्य में एक संप्रभु होता है तथा उसका सदैव होना आवश्यक है। उसके अर्थ में मध्यकालीन युग में जब सत्ता गिरजा और राज्य तथा राजा और सामन्तों में विभक्त थी, संप्रभुता थी ही नहीं। उसका यह विचार कि मिश्रित सरकार में अराजकता सन्निहित है, अनुभव द्वारा गलत सिद्ध हुआ है। फिर भी उसका सत्रहवीं शताब्दी में व्यर्थ लगने वाला सिद्धान्त एक पूर्णतः विभिन्न युग की परिस्थितियों के अनुकूल बन सकने योग्य था। यद्यपि उसने बार-बार राजतंत्र को सबसे अधिक उपयुक्त सरकार कहा है, फिर भी वह कहता है

कि राजा या एक सभा कोई भी संप्रभु हो सकता है। उसका उद्देश्य सत्ता के विभाजन का विरोध करना था। यह सत्ता किसके हाथ में है, इसका महत्व उसके लिए बहुत कम था। इस प्रकार जो सिद्धान्त किसी एक व्यक्ति से ही संलग्न होने पर बिलकुल राक्षसी प्रतीत होता था, वही प्रतिनिधि सभा से सम्बद्ध होने पर पूर्णतया नवीन रूप ग्रहण कर लेगा; और हाब्स की ख्याति एक लम्बी अवधि तक दबी रहकर उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारंभ में दार्शनिक उग्रतावादियों (Philosophic Radicals) द्वारा पुनर्स्थापित हुई। राजा और पार्लमेन्ट के बीच सत्ता का विभाजन, उसकी धारणा के अनुसार, संकट का साधन है और इसे समाप्त करने का एक मात्र उपाय यह निश्चित कर देना है कि कौन सर्वोच्च हो। सन् १६८८ ई० की घटनाओं द्वारा राजा के विरुद्ध अन्तिम रूप से निर्णय किए जाने के पश्चात् पार्लमेंट क्रमशः निर्विवाद संप्रभु का पद ग्रहण करती गई। हॉब्स की शर्तें अलिखित विधान वाले देश की जनतांत्रिक पार्लमेंट द्वारा उतनी ही पूरी होती हैं, जितनी लुई चतुर्दश (Louis XIV) के राजतंत्र द्वारा। पूर्णतया भिन्न परिस्थितियों के अनुकूल बन जाने की यह क्षमता उसका स्थान उसके समकालीन राजतंत्रवादियों से भिन्न बना देती है।

उसके सिद्धान्तों का एक और पक्ष भी विचित्र रूप से आधुनिक है। हॉब्स वास्तविक संप्रभु की इच्छा के अतिरिक्त अन्य कोई विधि स्वीकार नहीं करता। "प्राकृतिक विधियाँ", "विवेक पर आधारित नियम" अनुभूति के साधारणीकरण और जीवन समृद्धि के लिए आविष्कृत सिद्धान्त ही हैं; परन्तु अपनी प्रामाणिकता स्वीकार कराने की उनमें क्षमता नहीं होती। धर्मग्रंथों की प्रामाणिकता नाममात्र के लिए स्वीकार करते हुए उसने इनकी व्याख्या का एकाधिकार संप्रभु को प्रदान किया। साथ ही वह मैग्ना कार्टा (Magna Charta) जैसी विशेषतः पवित्र प्रकार की मूलभूत विधियों तथा पूर्वकालीन प्रथाओं की मान्यता को अस्वीकार करता है। हैलीफैक्स, बर्क तथा बेन्थम की भाँति वह कहता है कि सरकार की शक्तियाँ समाज की आवश्यकताओं पर आधारित होनी चाहिए, न कि प्राकृतिक अधिकारों के किसी सिद्धान्त पर। वृद्धावस्था में लिखित "डायलॉग ऑव दि कामन लाज़" (Dialogue of

Common Laws) में वह संक्षेप में कहता है कि विधि का निर्माण बुद्धि से नहीं वरन् सत्ता से होता है। पूर्व काल में बनी विधियाँ, वर्तमान संप्रभु की सहमति और सहयोग के अभाव में सारहीन हैं। प्राकृतिक विधि जिसे कई धाराओं के विचारकों ने अपने दर्शन का आधार बनाया तथा जिसके द्वारा उन्होंने तत्कालीन दशाओं का विश्लेषण किया, हॉब्स के लिए व्यर्थ थी; क्योंकि इसका अस्तित्व स्वीकार कर लेने पर प्रत्येक व्यक्ति अपनी इच्छानुसार इसकी व्याख्या कर सकता था और प्राकृतिक तथा सकारात्मक विधियों में तत्काल विवाद उत्पन्न हो जाता। यह सिद्धान्त कि विधि अधिक शक्तिशाली मनुष्य का आदेश है और जब तक कि दंड द्वारा कार्यान्वित न की जा सके उसे मान्यता प्राप्त नहीं हो सकती, मूर्त रूप में आस्टिन (Austin) द्वारा ग्रहण किया गया और उसके सिद्धांत का प्रमुख अंश बना।

हॉब्स के दर्शन में सबसे बड़ा दोष यह है कि इसमें राज्य को कोई रचनात्मक कार्य नहीं सौंपा गया है। इसका एक मात्र कार्य शान्ति बनाए रखना है। 'लेवायथन' शिक्षक नहीं वरन् एक पुलिसमैन ही है। राज्य सम्बन्धी ग्रीक आदर्श का कि वह एक कलात्मक कृति है, या बर्क की शानदार कल्पना का कि राज्य सभी विज्ञानों और कलाओं का संगठन है, उसे ज्ञान नहीं था। वह अरस्तू (Aristotle) के इस सिद्धान्त को स्वीकार करता है कि राज्य की उत्पत्ति इसलिए हुई कि मनुष्य जीवित रह सके, परन्तु साथ ही समान रूप से महत्वपूर्ण इस सत्य को भूल जाता है कि इसका स्थायित्व इसलिए रहता है कि मनुष्य सुखी रह सके। उसके लिए राज्य एक आवश्यक बुराई है; यह एक स्वतंत्र व प्रगतिशील सभ्यता का साधन नहीं, वरन् मनुष्यों की बर्बर प्रवृत्तियों से उनकी रक्षा करने वाला एक साधन है। उसका आदर्श बोर्बन्स (Bourbons) का कठोर निरंकुशवाद है, प्रथाओं द्वारा उत्तरोत्तर बढ़ने वाली स्वतन्त्रता नहीं।

सन् १६५१ में जब हॉब्स इंग्लैंड वापस आया और उसने कामनवैल्थ से समझौता किया तब उसका यह व्यवहार उसके सिद्धान्तों के पूर्ण अनुरूप ही था। संप्रभु जैसे ही अपने प्रजा की रक्षा करने में असमर्थ हो जाय, उसकी भक्ति के प्रति उसका अधिकार भी समाप्त हो जाता है। यद्यपि लेवायथन कामनवैल्थ

के हित के लिए नहीं लिखा गया था, फिर भी वास्तविक (De facto) सरकार की अधीनता स्वीकार करने का उसका परामर्श अत्यधिक हितकर था। सन् १६५६ में इस दार्शनिक ने "तत्कालीन सरकार के लिए सजग आज्ञाकारिता के प्रति सहस्रों व्यक्तियों के विचार परिवर्तन करने" के श्रेय का दावा किया "जो अन्यथा अस्थिर रहती।" यद्यपि प्रतिरक्षक (Protector) की मृत्यु के पश्चात् परिव्याप्त अव्यवस्था से वह घृणा करता था, फिर भी पुनर्स्थापन के आगमन ने उसकी सुरक्षा के लिए वास्तविक भय उत्पन्न कर दिया। यद्यपि राज-दरबार में उसके अनेक शत्रु थे, परन्तु चार्ल्स द्वितीय के रूप में उसे एक स्थायी मित्र प्राप्त था जिसने लंदन वापस आने पर अपने पुराने शिक्षक को सड़कों पर पहचान लिया और उसके अभिनन्दन के लिए अपना टोप उतार लिया। बुद्धिमानों के संसर्ग के प्रेमी राजा ने आज्ञा दी थी कि जब कभी यह अनुभवी दार्शनिक दरबार में आए, उसे अन्दर बुला लिया जाए तथा वह "Here comes the bear to be baited" कहते हुए उसका अभिनन्दन करता था। क्लेरंडन ने लिखा है कि "राजा की वापसी के बाद वह प्रायः दरबार में आता था, जहाँ उसके अनेक शिष्य थे और वह एक बार मेरे यहाँ भी आया।" यद्यपि यह प्रभावशाली मंत्री उसके निरंकुशवाद और संदेहवाद दोनों ही से घृणा करता था, उसके श्रद्धालु मित्र आबरे (Aubrey) के शब्दों में "अद्भुत; प्रसन्नचित्त और प्रत्युत्तर में तत्पर" इस व्यक्ति की संगीत में कम आत्मसंयम के लोग प्रसन्न रहते थे। परन्तु प्रतिक्रिया के उन्नतिशील वेग के कारण उसकी स्थिति उत्तरोत्तर अरक्षित होती गई और जब प्लेग तथा भयंकर अग्निकांड (Great Fire) ने जनता की शक्ति को क्षुब्ध कर दिया, तो नास्तिकता और धर्म भ्रष्टता का दमन करने के लिए एक विधेयक पेश किया गया और 'लेवॉयथन' की जाँच करने के लिए एक कमेटी नियुक्त की गई। यद्यपि उस विधेयक को, जिसे कामन्स सभा ने पारित कर दिया था, आगे नहीं बढ़ाया गया, परन्तु सदा का भीरु और तब अठहत्तर साल का वृद्ध हॉब्स पूर्णतः आतंकित हो गया। उसने अपने कुछ कागजों को जला डाला और यह सिद्ध करने के लिए कि विधिसम्मत ढंग से नास्तिकता के लिए उसे फाँसी नहीं दी जा सकती उसने एक लेख लिखा, और दिखाने मात्र के लिए डेवनशायर के अर्ल केनिजी गिरजे में

जाने लगा। राजा ने उसके शत्रुओं को चरम सीमा तक जाने से रोक दिया, परन्तु हॉब्स को फिर कोई विवादास्पद रचनाएँ प्रकाशित करने से मना कर दिया।

सन् १६६८ में लिखी हुई हॉब्स की अंतिम रचना "बेहेमॉथ ऑर ए डायलॉग ऑन दी सिविल वार्स" (Behemoth or a Dialogue on the Civil Wars) उसकी अपूर्ण पांडुलिपि से उसके अनजाने में ही उसके मृत्यु के कुछ मास पूर्व छाप दी गई। अस्सी वर्ष के वयोवृद्ध के लिए ऐसी रचना अत्यन्त स्वस्थ और प्रभावशाली है और उस शताब्दी के मध्यवर्ती दशकों की पृथ्वी को कँपा देने वाली घटनाओं पर उसके विचार जानने की दृष्टि से काफी उपयोगी है। स्वाभाविक रूप से उस दुर्घटना के लिए मुख्यतया पार्लमेंट के समर्थकों को उत्तरदायी ठहराते हुए उसने राजतंत्रवादियों की, जिनके मत से इंग्लैण्ड का शासन निरंकुश नहीं वरन् मिश्रित राजतन्त्र था और जो परमाधिकारों को सीमित करने की चेष्टा करते थे, तीव्र आलोचना की। उसी समय लिखी गई 'डायलॉग ऑव दी कामन लाज़' (Dialogue of the Common Laws) में वैधानिक विधिवेत्ताओं की फिर से आलोचना की गई है। वह पुनः कहता है कि राजा ही सर्वोच्च न्यायाधीश व एकमात्र विधि निर्माता है, और प्रजा में उसे नियंत्रित करने की क्षमता नहीं है। फिर भी निरंकुशता के इस मसीहे को सत्ता (authority) के समर्थक शंका की दृष्टि से ही देखते थे; क्योंकि हॉब्स एक तर्कवादी (rationalist) था और तर्कवाद रहस्यवाद (mysticism) का जिस पर राजा और चर्च के दावे आधारित हैं—भयंकर शत्रु है। बेकन की अपेक्षा हॉब्स ने वातावरण में अत्याधिक परिवर्तन उपस्थित किया, जिसके फलस्वरूप विचार और कल्पना के असीमित क्षेत्र में धर्म के स्थान पर लौकिक दृष्टिकोण की स्थापना हुई।

अध्याय ३

विधि और परमाधिकार

जेम्स, चार्ल्स और बेकन द्वारा उपदेशित तथा व्यवहृत परमाधिकार द्वारा शासन की पद्धति विधिवेत्ताओं तथा प्योरिटनों के संयुक्त विरोध से छिन्न-भिन्न हो गई। जेम्स का विरोध मुख्यतया विधि वेत्ताओं ने और उसके पुत्र का विरोध प्योरिटनों ने किया था।

(१)

विधिवेत्ताओं के विरोध पक्ष के अग्रणी एडवर्ड कोक (Edwad Coke) ने एलिजाबेथ के शासनकाल में अध्यक्ष (Speaker) तथा महान्यायवादी (Attorney General) के पद पर काम किया था और एसेक्स (Essex), गन पाउडर (Gun Powder) षड़यन्त्रकारियों तथा रैले (Railegh) के राजकीय मुकदमों में योग्यता और सच्चाई के लिए विख्यात हो गया था। उसका स्वभाव उतना ही कर्कश था, जितनी उसकी भाषा; पर यद्यपि उसके कम मित्र थे, विधि पर उसके सर्वमान्य अधिकार ने उसे राज्य के प्रमुख व्यक्तियों में से एक बना दिया। सन् १६०० और १६१५ के बीच उसने अपने सुने हुए मुकद्दमों की ग्यारह भागों में रिपोर्ट्स (Reports) प्रकाशित कीं। इनमें से प्रत्येक रिपोर्ट विधि के किसी-न-किसी पक्ष पर संक्षिप्त पुस्तक बन गई, क्योंकि मुख्य तथ्यों को प्रकाश में लाया गया और उन पर टीका भी संलग्न थी। इन पुस्तकों ने शीघ्रतापूर्वक विधि के अध्ययन में ऐसा स्थान प्राप्त कर लिया, जो अब तक बना हुआ है।

सन् १६०६ में 'कॉमन प्लीज़' (Common Pleas) का मुख्य न्यायाधिपति नियुक्त होने पर कोक के जीवन का द्वितीय और अधिक महत्वपूर्ण अध्याय प्रारम्भ होता है। अब तक वह षड़यन्त्रों के विरुद्ध राजपद के समर्थक के रूप में ही जाना जाता था। अब वह राजा के अतिक्रमण के विरुद्ध सामान्य

विधि (Common Law) के न्यायालयों के दृढ़ समर्थक के रूप में सम्मुख आया। पहला विवाद सन् १६०७ में उठा जबकि राजा के समर्थन से बैंक्रॉफ्ट (Bancraft) और चर्च ने धार्मिक न्यायालयों के लिए स्वतन्त्रता प्राप्त करने की चेष्टा की। आर्कबिशप (Archbishop) ने जेम्स के सम्मुख इस तर्क पर प्रार्थना की, कि न्यायाधीश केवल राजा के प्रतिनिधि हैं और वह विवादों को उनके अधिकार से उठाकर स्वयं ही तय कर सकता है। इस सिद्धान्त का कोक ने पूर्ण रूप से खंडन किया जिसका रोचक वर्णन उसने बारहवीं रिपोर्ट में किया है। राजा का मत था कि विधि का आधार विवेक है और उसके पास विवेक और न्यायाधीश दोनों ही हैं। कोक ने उत्तर दिया कि यद्यपि राजा को प्रकृति ने योग्यता प्रदान की है, पर वह इंग्लैंड की विधियों में पारंगत नहीं है। आगे उसने कहा कि उसकी प्रजा के जीवन और धन से सम्बन्धित मामले प्राकृतिक विवेक से नहीं, विधि के ज्ञान से निर्णीत होते हैं, जिसके लिए अविरल अध्ययन व अनुभव की आवश्यकता है। विधि वह स्वर्णिम मापदंड है, जिससे प्रजा के विवाद निर्णीत होते हैं और जो राजा की सुरक्षा तथा शांति बनाए रखते हैं। "यह उसे बहुत बुरा लगा और उसने कहा कि तब उसे विधि के अधीन होना चाहिए, पर ऐसा कहना देशद्रोह है। इस पर मैंने कहा, 'ब्रैक्टन (Bracton) ने कहा है, "क्वाड वेक्स नॉन डेवेट ऐसे सब होमाइन सैड सब डिओ ऐट लैजी" ("Quod vex non debet esse sube homine sed sube deo at lege.")

तीन वर्ष बाद विधि की सत्ता की पुष्टि और अधिक स्पष्ट रूप से की गई। "दि इन्टरप्रीटर" (The Interpreter) नाम से कैम्ब्रिज के सिविल ला (Civil Law) के रीडर कॉवेल (Cowell) ने बैंक्राफ्ट के संरक्षण में कानूनी शब्दों का एक कोष प्रकाशित किया। किंग (King) शीर्षक के अन्तर्गत कॉवेल ने लिखा है कि अपनी निर्बन्ध सत्ता के कारण वह विधि के परे है "और यद्यपि विधि निर्माण की श्रेष्ठतर पद्धति के लिए वह तीनों वर्गों (Three Estates) को स्वीकार करता है, फिर भी यह उसकी विवशता के कारण नहीं वरन् उदारता के कारण है। और यद्यपि राज्याभिषेक के अवसर पर वह देश की विधियों में परिवर्तन न करने की शपथ ग्रहण करता

है, फिर भी, इस शपथ के बावजूद भी यदि वह जनहित के प्रतिकूल जान पड़ती हैं, तो वह किसी विधि विशेष को परिवर्तित या निलम्बित कर सकता है। "प्रेरोगेटिव" (Prerogative) शीर्षक के अन्तर्गत हम पढ़ते हैं कि "इस राज्य की रीति के अनुसार वह तीनों वर्गों की सहमति के बिना किसी विधि का निर्माण नहीं करता, यद्यपि इनके द्वारा बनाई हुई कोई भी विधि वह भंग कर सकता है। मेरा विचार है कि इंग्लैंड का राजा निरंकुश राजा है।" विश्वास किया जाता है कि कोक द्वारा उत्तेजित किये जाने पर कामन्स सभा ने लार्ड्स को राजा का ध्यान इस पुस्तक की ओर आकर्षित कराने में सहयोग देने के लिए आमंत्रित किया। पर इसी अवसर पर घोषणा की गई कि राजा कॉवेल से स्वयं इस कारण अप्रसन्न है कि विधि के आगे परमाधिकारों का विरोध करके उसने राजा और पार्लमेंट दोनों ही पर आक्रमण किया है। पुस्तक को दबा दिया गया, परन्तु जेम्स ने लेखक को दंडित नहीं होने दिया। यद्यपि संप्रभु ने अपने समर्थक की बिना सोचे-समझे लिखी गई भाषा का खंडन किया, परन्तु उसका उद्देश्य अपनी स्वतंत्रता पर बन्धन लगने देना नहीं था। इस विषय में घोषणाओं द्वारा काफी काम निकल सकता था जिनकी यथार्थ शक्ति अस्पष्ट ही थी। उसी साल सन् १६१० में कोक से यह पूछा गया कि राजा अपनी घोषणा द्वारा लंदन में या उसके निकट नये मकान बनाये जाने और गेहूँ से स्टार्च (Starch) निकालने पर प्रतिबंध लगा सकता है या नहीं। उसने अपने सहयोगियों से परामर्श लेने पर जोर दिया, जिनका संयुक्त मत यह था कि राजा घोषणा द्वारा कोई जुर्म नहीं बना सकता और प्रजा को विधि को मानने के लिए केवल सावधान कर सकता है। उन लोगों ने कहा कि विधि द्वारा स्वीकृत विशेषाधिकारों के अतिरिक्त राजा का कोई अन्य विशेषाधिकार नहीं है। जेम्स ने न्यायाधीशों के इस विचार को गुप्त रखा और कुछ समय के लिए दंड-व्यवस्थापक घोषणाएं बन्द हो गईं। यद्यपि यह रीति पुनर्जीवित कर दी गई परन्तु इसकी अवैधिकता कोक और उसके तीन सहयोगियों के निर्णय द्वारा निश्चित रूप से स्थापित हो गई।

जेम्स ने अब समझ लिया कि कोक उसके स्वत्वों का सर्वाधिक विरोधी है; और बेकन की सलाह स्वीकार करते हुए उसे सन् १६१३ में 'किंग्स बेंच'

(King's Bench) के मुख्य न्यायाधीश के पद पर स्थानान्तरित कर दिया, जिससे कोक को आय और प्रभाव दोनों ही की हानि हुई। परन्तु इस अवस्था में भी उसके अप्रिय व्यक्तित्व ने अपना प्रभाव दिखाया ही और सन् १६१६ में बेंच से उसे पदच्युत कर दिया गया। कोक को ध्यान में रखकर ही राजा ने स्टार चैम्बर के न्यायाधीशों के समक्ष भाषण करते हुए कहा, "राजा के परमाधिकार में हस्तक्षेप न करो। यदि मेरे परमाधिकार व राज्य के रहस्य का कोई प्रश्न उठ खड़ा हो तो राजा या उसकी कौंसिल या दोनों ही से परामर्श के बिना निर्णय मत दो; क्योंकि ये अति महत्वपूर्ण विषय हैं। जहाँ तक राजपद के परमाधिकार का प्रश्न है, यह विषय विधिवेत्ता के क्षेत्र के बाहर है और न इस पर विवाद ही विधिसम्मत है।" फिर भयंकर संघर्ष आरम्भ हुआ। सन् १६२० में कोक ने पुनः पार्लमेंट में प्रवेश किया तथा विरोध पक्ष का प्रमुख नेता बना और उस प्रतिवाद में भाग लेने के कारण जिसे राजा ने १६२१ में कामन्स जर्नल (Commons Journal) से नष्ट कर दिया था, उसे नौ महीने के लिए टॉवर (Tower) भेज दिया गया। पेटीशन आव राइट (Petition of Right) को प्रेरित करने के लिए वह जीवित रहा और सन् १६३४ में बयासी वर्ष की अवस्था में उसकी मृत्यु हुई। उसके अंतिम वर्ष 'इन्स्टीट्यूट्स' (Institutes) की रचना में बीते जिनमें से पहला सन् १६२८ में और दूसरा, तीसरा तथा चौथा उसकी मृत्यु के पश्चात् प्रकाशित हुआ।

साधारण काल में कोक सत्ता का समर्थक हुआ होता, क्योंकि वह संसार के इने-गिने रूढ़िवादी व्यक्तियों में से था। अपने समय के किसी भी राजसमर्थक से अधिक उसे अपने पूर्वजों की बुद्धिमत्ता पर विश्वास था। उसका मत था कि पार्लमेंट का कर्त्तव्य विधि की घोषणा और रक्षा करना है, निर्माण नहीं; और जब नए सिद्धान्तों को प्रयोग में लाना होता, तो वह उन्हें पहले से प्रचलित विधियों का अंश सिद्ध करने का दिखावा करता था। पूर्व-दृष्टान्त (precedent) का अनुसरण करना राजा और पार्लमेंट का परम कर्त्तव्य है। इंग्लैंड की विधि एक धर्म है और राजा उसका सर्वोच्च पादरी, उसके रहस्यों का व्याख्याकार तथा उसकी पुनीतता का रक्षक है। फिर भी विद्रोही व्यक्तित्व और स्वतंत्रता के संकुचित दृष्टिकोण वाला यह पुरुष वैधानिक शासन के संस्थापकों में से एक था। पार्लमेंट

के कार्य-पालिका पर नियंत्रण के दावे को राजा के समक्ष प्रस्तुत करने के लिए अभी समय अपरिपक्व ही था और पूर्णतः असीमित परमाधिकार के रास्ते में एक मात्र प्रभावी बाधा विधि की श्रेष्ठता थी। लैंकास्ट्रियन (Lancastrian) राजतंत्र के अधीन जिस सिद्धांत की घोषणा फोर्टेस्क्यू (Fortescue) ने की थी, उसे उसके प्रशंसक उत्तराधिकारी ने स्टुअर्ट राजाओं के समय में दुहराया। यद्यपि राजा और जनता के बीच ग्रांड अर्बिट्रेटर (Grand Arbitrator) बनने की उसकी महत्वाकांक्षा में व्यक्तिगत अहंकार का अंश था, फिर भी उसके अपरिमित ज्ञान, दृढ़ साहस और उत्कट ईमानदारी ने उसे स्वेच्छाचारिता का सर्वाधिक शक्तिशाली शत्रु बना दिया था। यदि वह अपने देशवासियों को नई स्वतन्त्रताएँ प्राप्त करने में योगदान न दे सका, तो उन सब स्वतन्त्रताओं की सुरक्षा के लिए, जो लोगों को प्राप्त थीं, उसने अन्य किसी व्यक्ति से अधिक बहुत कुछ किया।

कोक का सिद्धान्त संक्रमण काल के लिए उपयागी था, पर उसमें स्थायित्व के तत्वों का अभाव था। सत्रहवीं शताब्दी के प्रारंभ में संप्रभुता के तीन दावेदार थे—राजा, संसद् सहित राजा और विधि। केवल कुछ अतिवादी ही राजा को संप्रभुता से विभूषित करना चाहते थे; शिप मनी (Ship Money) वाले मुकद्दमे में न्यायाधीशों ने केवल इतना ही कहा था कि राजा "आवश्यकीय परिस्थितियों" में विधि का त्याग कर सकता है। दूसरी ओर उस समय पार्लमेंट को संप्रभु मानना किसी के लिए भी संभव नहीं था, क्योंकि राजा के बुलाए जाने पर ही इसकी बैठक होती थी और उसी की आज्ञा से भंग होती थी। संप्रभुता का सबसे उपयुक्त दावेदार पार्लमेंट सहित राजा था; परन्तु इससे भी परम्परा के प्रति कोक की पुनीत भावना को ठेस लगी। कोक स्वयं पार्लमेंट को मुख्य रूप से न्यायालय मानता था। चौथे इंस्टीट्यूट (Fourth Institute) में "ज्यूरिस-डिक्शन आव् कोर्ट्स" (Jurisdiction of Courts) पर पहला अध्याय "हाईकोर्ट आव् पार्लमेंट" (High Court of Parliament) पर लिखा गया है। उस प्रसिद्ध उद्धरण को, जिसमें उसने इसके विधि निर्माण के अधिकार और कार्य के क्षेत्र के विषय में लिखा है कि वे "इतने श्रेष्ठकर और असीमित हैं कि उन्हें विवादों या मनुष्यों के कारण सीमाबद्ध नहीं किया जा सकता"

प्रायः पार्लमेंट के राजनीतिक और व्यवस्थापक संप्रभुता की पुष्टि के रूप में लिया गया; परन्तु इसकी सत्ता विषयक जो उदाहरण वह देता है, वे वैयक्तिक विधि के क्षेत्र के हैं। जहाँ संसदीय दल न्यायपालिका की सर्वोच्चता सम्बन्धी दृष्टांतों का प्रयोग व्यवस्थापिका की संप्रभुता के दावे को बल देने के लिए करता था, कोक ने पार्लमेंट की सत्ता को सदैव सामान्य विधि के अधीन माना। उसके लिए सामान्य विधि ही संप्रभु है; जो राजा और पार्लमेंट, विशेषाधिकार और लिखित विधियों से समान रूप से श्रेष्ठ है। द्वितीय इंस्टीट्यूट (Second Institute) में जो लिखित विधियों के विषय में है, उसने कहा है कि "मैग्ना कार्टा (Magna Charta) ऐसी वस्तु है जो कोई संप्रभु स्वीकार नहीं करेगी।" परन्तु न्यायाधीश लिखित विधि को भी इस आधार पर रद्द कर सकते हैं कि वह विवेक या प्राकृतिक विधि अथवा विशेषाधिकार के विरुद्ध है। यदि उसका यह सिद्धांत स्वीकार कर लिया गया होता, तो विधिवेत्ता विधिदाता बन गए होते। अपने अन्तर्विरोधों के कारण यह वैधानिक सिद्धांत बनने के योग्य नहीं था और इसकी स्वीकृति एक दासता के स्थान पर दूसरी दासता लाद देती। विधि की श्रेष्ठता का अर्थ विधिवेत्ताओं का शासन होता। कोक ने विधि की व्याख्या लोकप्रिय अर्थ में की; परन्तु कोई अन्य इसे स्वेच्छाचारिता के हित में परिवर्तित कर सकता था। विधि की संप्रभुता का विचार, जिसकी व्याख्या व्यावसायिक न्यायशास्त्रियों ने एक गूढ़ विज्ञान के रूप में की, अपने महान जनक के साथ ही समाप्त हो गया और राजा तथा पार्लमेंट में वास्तविक संघर्ष प्रारम्भ हुआ। समस्या पूर्व-दृष्टांत की नहीं, सत्ता की थी और इसका निर्णय प्राचीन इतिहास के पांडित्य से नहीं, तलवार से ही होना था।

(२)

जहाँ कोक ने मुख्यतः इन्स आव कोर्ट (Inns of Court) का प्रतिनिधित्व किया, पार्लमेंट का सर्वप्रथम महान समर्थक देहात का सुसंस्कृत और साधन-सम्पन्न एक भद्र पुरुष था। अभिभेषक बन जाने पर भी सर जान इलियट (Sir John Eliot) ने कभी वकालत नहीं की। युवावस्था में ही पार्लमेंट में प्रवेश करने पर चार्ल्स के पार्लमेंट के बिना शासन करने के दृढ़ निश्चय को प्रेरित

करने का कारण किसी अन्य सदस्य की अपेक्षा वहाँ था। उसने बकिंघम (Buckingham) के विरोध का नेतृत्व असाधारण प्रतिभा के साथ किया और महाभियोग के समय दिए गए अपने सुविख्यात भाषण में उसकी सेजनुस (Sejanus) के साथ तुलना की। इस पर राजा ने कहा, "तब तो मुझे टाइबेरियस (Tilberius) होना चाहिये" और उसे टावर भेज दिया। ड्यूक (Duke) का विरोध केवल एक निन्दित मंत्री पर प्रहार मात्र ही न था, बल्कि यह एक अन्तर्निहित माँग थी कि राजा के परामर्शदाता पार्लमेंट का विश्वास प्राप्त करें। शीघ्र ही मुक्त होकर वह संघर्ष की पंक्ति में आ खड़ा हुआ और उसने १६२८-२९ के भीषण संघर्षों में प्रमुख भाग लिया। उसने भविष्यवक्ता के शब्दों में कहा, "पार्लमेंट को नष्ट करने में कोई भी सफल नहीं हुआ है; अन्ततोगत्वा पार्लमेंट ने ही उनका विनाश किया है।" उसे फिर टावर भेज दिया गया और इस बार बंदी या उसके मित्रों की ओर से की गई कोई भी अपील उसे कारागृह से मुक्त न करा सकी। उसका स्वास्थ्य खराब हो गया और सन् १६३२ में बयालीस वर्ष की अवस्था में उसकी मृत्यु हो गई; इसके लिए उसके प्रति राजा का शत्रुभाव उतना ही उत्तरदायी था जितना कि उसे फाँसी दिए जाने पर होता।

रैले की भाँति इलियट ने भी अपने ऊपर थोपे हुए अवकाश को अध्ययन और लेखन में लगाया। उसकी मुख्य रचनाएँ दो वैधानिक ग्रन्थ हैं, जिन्हें उसने अपने पांडित्य, अनुभव और विचार से समृद्ध किया है। वे इतिहास और साहित्य का विशद ज्ञान अभिव्यक्त करती हैं और उसकी व्यक्तिगत राजनीतिक स्थिति स्पष्टतः बताती है। इनमें पहली, 'डी जुरे मैजिस्ट्रेटिस' (De Jure Magistratis) जो उसके कारावास के प्रारंभिककाल में लिखी गई थी, राजतन्त्र के अधिकारों के प्रति उसका आश्चर्यजनक रूढ़िवादी दृष्टिकोण व्यक्त करती है। उसमें वह राजाओं के प्रति एक प्रकार से अंधभक्ति प्रदर्शित करता है। वह दृढ़तापूर्वक इस विचार को अस्वीकार करता है कि यदि राजा अनुबन्ध को तोड़े तो प्रजा जनविद्रोह कर सकते हैं, क्योंकि वे कोई न कोई बहाना ढूँढ़ ही लेंगे और इस प्रकार अराजकता फैल जाएगी। इसके अतिरिक्त वह कहता है कि अभिषेक के अवसर पर ली गई शपथ अनुबंध नहीं है, क्योंकि राजा प्रजा का पिता है और पिता अपने बच्चों से समझौता नहीं करता। वह

कहता है, कामनवैल्थ राजा की शिष्य है। दूसरी उपमा देते हुए वह राजा की तुलना चिकित्सक से करता है, जो किसी अंग को सम्पूर्ण शरीर की रक्षा के लिए जला या काट सकता है। "आवश्यकता पड़ने पर वह प्रजा पर कठोर व्यवस्था लागू कर सकता है, चाहे वह सकारात्मक या लिखित विधियों के विरुद्ध ही हो।" दूसरी ओर वह यह भी कहता है कि राजा केवल शासक है, देश का स्वामी नहीं और ह्वाइट हाल (White Hall) स्थित अपने निर्दयी शत्रु पर दृष्टि जमाकर वह कहता है कि जब नश्वर प्राणी अभिमान की चरम सीमा पर पहुँच जाता है तो उसका पतन निकटतम ही होता है।

दूसरी पुस्तक "दि मोनार्की आव मैन" (The Monarchy of Man) उसके जीवन के अंतिम महीनों में लिखी गई थी और जिसमें विशेष प्रगति झलकती है। वह आदर्श गणतन्त्र के स्थान पर भी राजतन्त्र की प्राथमिकता को दृढ़तापूर्वक दुहराता है और परमाधिकार का अस्तित्व स्वीकार करता है। पर आगे वह कहता है कि यह "स्थल इतना नाजुक है कि जिसके विषय में कुछ कहा नहीं जा सकता, अन्यथा इसके कारण हम लोगों पर कोई नई आपत्ति न आ पड़े।" विधि सम्बन्धी उसके विचारों में, जो स्वतन्त्रता का रक्षक कहा गया है, कोक का प्रभाव दिखाई देता है। वह कहता है कि विधि के अतिरिक्त जो सब वस्तुओं की "राजा और शासक हैं" अजः और सबसे स्वतन्त्र हैं। वह शाही सत्ता के चाटुकारों के प्रति कटु तिरस्कार व्यक्त करता है। "राजतन्त्र को असीमित बनाने के लिए इतना अधिक परिश्रम हो रहा है, और तथ्यों को इतना तोड़-मरोड़ा जा रहा है कि इसके विरुद्ध चलना धारा के विरुद्ध नाव चलाना है।" यह सिद्ध करने के लिए कि विधि राजा से ऊपर है वह अनेक प्रमाण प्रस्तुत करता है और कहता है कि इसकी सर्वोच्चता से ही शासक सम्मान प्राप्त करते हैं, "सत्ता की अपेक्षा विधि की अधीनता बड़ी है, क्योंकि यही समस्त सत्ता का आधार है।" राजा विधि का प्रतीक है और इसके अधीन रहते हुए वह वास्तव में अपने ही अधीन है। इन रचनाओं से स्पष्ट है कि लेखक मोटे तौर पर ट्यूडर राजाओं के राजतन्त्र के सिद्धांत से संतुष्ट था। वह परमाधिकार को अधिक संकुचित नहीं करना चाहता था और आक्रमण या विद्रोह जैसी संकटकालीन परिस्थितियों का सामना करने के लिए उन सुरक्षित शक्तियों को जिनका स्टुअर्ट राजा दावा करते थे, स्वीकार कर

लेता है। पार्लमेंट के लिए वह परामर्श देने का अधिकार माँगता है, निष्पादन या नियंत्रण का नहीं। वह दोषों का उत्तरदायी राजा को मानता था, राजतंत्र की पद्धति को नहीं। चतुर और युक्तिपूर्ण राजा जो सामरसेट (Somerset) या बकिंघम जैसों को अपना सान्निध्य प्रदान न करके, पार्लमेंट की सहमति से शासन करे, तो कोई कठिनाई उत्पन्न नहीं होगी। उसकी रचनाओं में ऐसे अकाट्य प्रमाण भी पड़े हैं कि फ्रांस की क्रांति के समान इंग्लैंड की क्रांति में भी विरोधी पक्ष शासन की गलतियों तथा भूलों से ही उग्र सिद्धान्तों की ओर झुका।

(३)

सेल्डन (Selden), कोक या इलियट से अधिक रोचक, यद्यपि अपेक्षाकृत कम प्रभावशाली राजनीतिज्ञ, व्यक्ति था। जहाँ कोक ने अपने को इंग्लैंड की विधियों तक ही सीमित रखा, उसकी व्यापक दृष्टि प्राचीन और आधुनिक तमाम राष्ट्रों पर पड़ी। युवावस्था के प्रारम्भिक काल में ही न्यायशास्त्री (jurist) के रूप में ख्याति प्राप्त कर लेने से उसे परमाधिकार के प्रश्नों पर पार्लमेंट को परामर्श देने के लिए प्रायः आमंत्रित किया जाता था और १६२१ के विरोध पक्ष की रचना में भाग लेने के कारण उसे अल्पकाल के लिए कारावास का दंड मिला। चालीस वर्ष की अवस्था में, सन् १६२४ में पार्लमेंट में प्रवेश करके वह बकिंघम का विरोध करने में सम्मिलित हुआ और पेटीशन ऑव राइट (Petition of Right) की रचना में सहायता की। इलियट और अन्य नेताओं के साथ उसे भी सन् १६२९ में टावर भेज दिया गया और सन् १६३१ तक मुक्त नहीं किया गया। उच्च चरित्र और अपने समय के सर्वाधिक अंग्रेज विद्वान की ख्याति ने उसे पार्लियामेंट के विरोधी पक्ष का शक्तिशाली योद्धा बना दिया।

सेल्डन के जीवन की उत्कंठा धर्माधिकारियों के झूठे दावों का विरोध करना था। सन् १६१८ में उसकी हिस्ट्री ऑव टाइथ्स (History of Tithes) प्रकाशित हुई, जिसमें उसकी विद्वत्ता और धारणाओं दोनों की अभिव्यक्ति हुई। विनम्रता के स्पष्ट आवरण में उसने कहा कि यह प्रश्न कि दशांश कर (Tithes) दैवी अधिकार से है, उसकी समझ के परे है और ऐसी समस्याओं को चर्च-विधि में पारंगत विद्वानों (Canonists) पर ही छोड़ देना चाहिए। फिर

भी उसका अपना मत तथ्यों और निष्कर्षों में पर्याप्त स्पष्टता से प्रकाश में आया। उसे ईसा की पहली चार शताब्दियों में उनके साधिकार माँगे जाने का कोई प्रमाण नहीं मिला और उसके बाद वे स्थानीय रीति-रिवाजों के अधीन रहे हैं। इस खोज का निष्कर्ष यह निकला कि राज्य द्वारा निर्धारित सीमाओं के अन्तर्गत ही वे अदा किए जाते थे। ऐतिहासिक गवेषणा के आवरण में उसने चर्च के दावों पर तीव्र चोट की। पादरी विरोध में उठ खड़े हुए और वे गिरजे के अस्तित्व तथा अपनी आय की सुरक्षा के खतरे को भाँप गये। उन्होंने राजा से हस्तक्षेप करने की प्रार्थना की, परन्तु जेम्स ने, जिसका परमाधिकार विवादग्रस्त नहीं था, ऐसे व्यक्ति को जिसकी विद्वत्ता का वह सम्मान करता था दंडित करने की कोई इच्छा नहीं दिखाई। काफी विलम्ब के बाद उसने हाई कमीशन को सेल्डन को दशांश कर के दैवी अधिकार के विरुद्ध तर्क करने के कारण दुःख प्रकट करने की आज्ञा देने की अनुमति दी। उस महान् विद्वान के लिए, जिसे शहीद होने का कोई चाव न था, आज्ञा-पालन के अतिरिक्त कोई दूसरा चारा न था और पुस्तक के विक्रय पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया। इसके अतिरिक्त जब पादरी पक्ष ने उसका खन्डन किया, तो उसे प्रत्युत्तर देने से भी रोक दिया गया।

"हिस्ट्री आव टाइथ्स" के प्रकाशन के साल ही राजा की इच्छानुसार ग्रोशस (Grotius) के "मेअर लायबेरम" (Mare Liberum) के उत्तर में सेल्डन ने "मेअर क्लाजम" (Mare Clausum) लिखा। समुद्र को भूमि की तरह व्यक्तिगत सम्पति मानने का विचार मूर्खतापूर्ण था, परन्तु जेम्स इससे प्रसन्न हुआ और जब सन् १६३६ में यह दुबारा लिखा जाकर फिर प्रकाशित हुआ, तो उसका पुत्र भी इससे प्रसन्न हुआ। उसकी "सीरियन रेलिजन" (Syrian Religion) तथा 'आरुण्डल' (Arundal) की संगमरमर शिलाओं पर अंकित यूनानी लेखों पर लिखी हुई पुस्तकें और अधिक महत्वपूर्ण हैं। उसकी विद्वता और चातुर्य ने उसे अनेक क्षेत्रों में प्रिय बना दिया था, और उसने लैम्बेथ (Lambeth) में लाड (Laud) के अतिथि के रूप में आनन्दपूर्ण समय व्यतीत किया। सेल्डन के प्रभाव की अमिट छाप जो उन लोगों पर पड़ी, जिनका मार्ग उससे पूर्णतः भिन्न था, उसका वर्णन क्लेरेन्डन ने अपनी आत्मकथा में किया है। "मि० सेलडेन ऐसा व्यक्ति था

जिसकी योग्यता और गुण की व्याख्या किन्ही शब्दों में नहीं की जा सकती। उसका ज्ञान सभी क्षेत्रों और सभी भाषाओं में इतना व्यापक था कि कोई भी मनुष्य यही सोचता कि वह पुस्तकों से पूर्णतः भिन्न रहा है और पढ़ने-लिखने के अतिरिक्त तनिक समय भी अन्य कहीं नहीं व्यतीत किया है। फिर भी उसकी मानवीयता, शिष्टाचार और सुशीलता से यह समझा जा सकता था कि उसका पालन-पोषण बड़े से बड़े राजदरबारों में हुआ है, परन्तु अपने शील स्वभाव, अपनी दानशीलता, तथा भलाई करने और अपने ज्ञान को व्यक्त करने में आनन्द लेने के कारण वह ऐसे पालन-पोषण से भी ऊँचा उठ जाता है। हाइड (Hyde) यह कहने का अभ्यस्त था कि वह अन्य किसी कारण से अपना उतना महत्त्व नहीं समझता, जितना इस कारण कि उसे बहुत छोटी उम्र से ही मि० सेल्डन का परिचय प्राप्त था।"

'लाँग पार्लमेंट' (Long Parliament) के लिए ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी से चुने जाने पर सेल्डन ने उन तमाम विधियों का समर्थन किया, जिन्होंने व्यक्तिगत शासन की पद्धति को छिन्न-भिन्न कर दिया; परन्तु उसने स्ट्रेफोर्ड (Strafford) पर चलाए गए महाभियोग का विरोध किया और पार्लमेंट का उत्साहहीन समर्थन किया। सन् १६४२ के प्रारंभ में राजा ने उसे ग्रेट सील (Great Seal) के पद पर नियुक्त करने की सोची, पर हाइड और फाकलैंड ने कहा कि यह व्यर्थ है। क्लेरंडन ने लिखा है कि, "राजा के प्रति मि० सेल्डन के स्नेह में उन्हें संदेह न था, परन्तु इस सब के होते हुए भी वे उसे इतनी अच्छी तरह जानते थे कि उन्हें विश्वास था कि वह इसे पूर्णतया अस्वीकार कर देगा। अनेक वर्षों तक उसने शांतिपूर्ण जीवन का आनन्द लिया, जो उसे बहुत प्रिय था। वह धनवान था और किसी भी पद के लिए यार्क की यात्रा अथवा अपना बिस्तर छोड़ने को तैयार नहीं होता।" इससे भी गंभीर कारण थे, जो उस पद की स्वीकृति में बाधक होते पर जिन्हें क्लेरंडन ने नहीं लिखा है। उसे इसमें किसी प्रकार का संदेह नहीं था कि राजा के व्यवहार ने प्रजा को आज्ञाकारिता से मुक्त कर दिया है और झगड़ा इतना बढ़ गया था कि वह बलप्रयोग से ही सुलझना चाहिए। उसने कहा था—"राजा और पार्लमेंट के बीच कोई समझौता कठिन

है। यदि मैं कहूँ कि मुझे आपको बीस पौंड चाँदी देना है और आप कहें कि मुझे आप को बीस पौंड हीरे देना है, तो हम लोगों के बीच कोई समझौता असंभव है।" परन्तु युद्ध एक ऐसा संघर्ष ज्ञात होता था, जिसमें वह किसी भी पक्ष का पूर्णतः समर्थन नहीं कर सकता था। उसके संसदीय पक्ष के उत्साह रहित समर्थन का एक कारण निरंकुश प्रेसबिटेरियनवाद का विकास था। वेस्टमिनस्टर असेम्बली (Westminster Assembly) के सदस्य की हैसियत से, जिसमें प्रेसबिटेरियनवादियों का बहुमत था, उसको अपनी विद्वता और बुद्धिमता के लिए उत्तम क्षेत्र मिला। यद्यपि वह स्वयं चर्च में विश्वास करता था, पर पादरियों से उसे कोई स्नेह नहीं था और असहमतिवादी (Nonconformist) मंत्रियों के प्रति उसकी भावना और भी कम भिन्नतापूर्ण थी। एन्थोनी वुड (Anthony Wood) लिखता है, "वह उनके बीच में काँटे के समान था, क्योंकि वह अपनी ग्रीक भाषा और पुरातन वस्तुओं के ज्ञान से उन्हें नीचा दिखाने में समर्थ था।" ह्वाइटलॉक (Whitelocke) ने इसका अनुमान करते हुए कि सेल्डन किसी बात को कैसे कहेगा, लिखा है, "आप लोगों की संक्षिप्त बाइबिल में ऐसा लिखा होगा, परन्तु मौलिक बाइबिल तो उससे भिन्न है।" स्काटलैंड के सदस्यों में सबसे अधिक सक्रिय बेली (Baillie) ने उसके प्रतिरोध पर तीव्र असंतोष प्रकट किया है। "सेल्डन और उसके अन्य साथी चर्च में दैवी विधि को जो संसद की स्वतंत्र इच्छा के अधीन न हो, मानने को तैयार न थे।" "हिस्ट्री आव टाइथ्स" की ही भाँति वेस्टमिनस्टर एसेम्बली में भी वह दृढ़ स्थिर और घृणापूर्ण इराशियन (Erastian) था।

सेल्डन की लैटिन भाषा में लिखी गई प्रगाढ़ पांडित्यपूर्ण बृहत रचनाएँ भूली जा चुकी हैं। क्लेरेंडन तक ने भी स्वीकार किया है कि उसकी शैली रूक्ष तथा यदाकदा अस्पष्ट है। "परन्तु वार्तालाप में वह सर्वाधिक स्पष्ट बातचीत करने वाला था और उसमें कठिन विषयों को सरल बना देने का अद्वितीय गुण संसार के किसी भी व्यक्ति से अधिक था। उसकी "टेबुल टाक" (Table Talk) नामक पुस्तक में उसके तीक्ष्ण और रोचक वार्तालाप के अंश कुछ सुरक्षित हैं। इसे जानसन ने अपने ढंग की सर्वोत्तम पुस्तक बताया है और

कॉलरिज (Coleridge) ने इसे किसी प्रेरणाहीन लेखक को उतने ही पृष्ठों की पुस्तक की अपेक्षा, अधिक प्रभावोत्पादक अमूल्य विचारों से परिपूर्ण बताया। सांसारिक विवेक का कोष होने के नाते इसकी तुलना बेकन के 'एसेज' के साथ की जा सकती है। यह टिप्पणियाँ उसके मंत्री मिल्वर्ड (Milward) ने सन् १६३४ और उसकी मृत्यु के वर्ष १६५४ के बीच, लिखीं और इसके पश्चात् शीघ्र ही प्रकाशनार्थ तैयार कीं परन्तु १६८८ की क्रांन्ति तक, जबकि उनका छपना सुरक्षित हो गया था, वे प्रकाशित न की जा सकीं। वार्तालाप के इन अंशों की तिथियाँ निश्चित करने का कोई साधन नहीं है और न हमें यही ज्ञात है कि इस विषय में कुछ अन्य अभिलेख संकलित किए गए या नष्ट कर दिए गए। इसके अतिरिक्त यह भी असंभव सा है कि ये सामयिक कथन (obiter dicta) स्वयं सेल्डन द्वारा संशोधित किए गए होंगे। इनमें तत्कालीन घटनाओं के बहुत कम निर्देश हैं और राजा की फाँसी और क्रामवेल (Cromwell) के शासन काल के विषय में एक भी नहीं। उसने कहा था, "विषम अवस्था में बुद्धिमान पुरुष कुछ नहीं बोलते।" फिर भी "टेबुल टाक" का अधिकांश भाग धर्म और राजनीति पर है और उसके दर्शन का पुनर्निर्माण कर लेना कठिन नहीं है।

राजनीति के क्षेत्र में सेल्डन पूर्णरूपेण विवेकवादी था और उसकी राजपद की विवेचना प्रधानतः यथातथ्य है। अपनी दुरूह शैली में वह कहता है, "राजा आकाश से धरती पर नहीं आया है।" "जिस प्रकार परिवार का एक सदस्य गोश्त खरीदने के लिए नियुक्त कर दिया जाता है, उसी प्रकार राजा एक ऐसी वस्तु है, जिसका निर्माण लोगों ने अपने लिए, अपनी शांति के लिए, किया है।" "राजाओं की कोई अलग जाति नहीं होती। जो राजा अपने देश में इसलिए विशेषाधिकार माँगता है कि अन्य देश के राजाओं के पास ऐसे अधिकार हैं, तो यह माँग ठीक उसी प्रकार है, जैसे कोई बावर्ची अपने स्वामी से विशिष्ट वेतन माँगे, क्योंकि अन्य स्वामी दूसरे बावर्चियों को वैसा वेतन देते हैं। यदि गृह स्वामी यह स्वीकार कर ले, तो बहुत अच्छा है।" राजतंत्र स्पष्टतया एक सांविधानिक प्रणाली है और राजा अनुबन्ध से उतना ही बँधा है, जितना कि प्रजा। "यह जानने के लिए कि किसी राजा की आज्ञाओं का किस सीमा तक पालन

किया जाय, उसके और उसकी प्रजा के बीच हुए अनुबन्ध को देखना चाहिए; जैसे किसी काश्तकार के ऊपर जमींदार का बाकी लगान जानने के लिए पट्टे को देखना पड़ता है। जब अनुबन्ध भंग हो जाता है, और कोई तीसरा आदमी निबटारा करने के लिए नहीं होता, तब फैसला हथियारों से ही होता है।" पर जनसाधारण की अतिरंजित माँगों से भी उसकी घृणा उत्तेजित हो जाती थी। "संसद के सदस्य भी उतने ही बड़े राजा हैं, जितना संसार का अन्य कोई व्यक्ति, और जो कुछ वे चाहें, संसद का विशेषाधिकार हो जाता है। कोई आदमी उनके विशेषाधिकारों की संख्या नहीं जान सकता और जो कुछ वे नापसन्द करें, वही विशेषाधिकार का उल्लंघन है।"

सेल्डन के तीक्ष्णतम तीर पादरियों के विरुद्ध छोड़े गए हैं। वह कहता है, "रोम के पादरियों के केवल दो उद्देश्य रहते हैं—राजा से शक्ति प्राप्त करना और प्रजा से धन।" "जब तक जादूगर की चाल पकड़ी नहीं जाती, हम उसकी प्रशंसा करते है और पैसा देते हैं, परन्तु बाद में हम उसकी चिन्ता नहीं करते। इसी प्रकार यह सब रोम के गिरजे की बाजीगरी का पता लगने तक चला।" प्रोटेस्टेन्टवाद पर आते हुए उसने प्रेसबिटरवादियों को संसार के किसी भी पादरी की अपेक्षा सर्वोच्च शक्ति वाला और जनसाधारण को सबसे अधिक ठगने वाला बताया है। पादरी के शासन को वह सुविधाजनक शासन के रूप में ग्रहण करता है पर इसके दैवी संस्था होने के दावे को तिरस्कारपूर्वक अस्वीकृत करता है। "क्योंकि आरम्भ में बिशप और प्रेसबिटर्स समान थे।" वह "अंतरात्मा द्वारा प्रार्थना" की अपेक्षा प्रार्थना पुस्तक को अधिक महत्व देता है। "आशा की जाती है कि हम लोग अपनी सहज प्रार्थनाओं से उसी प्रकार मुक्त हो सकते हैं जिस प्रकार फल वाले के लड़के की बेर खाने की आदत से—तभी जब उसकी अति हो जाय।" वह कहता है, "पादरियों को दोनों ओर से श्रृंखलाबद्ध कर दो।" वह धर्म सभा (Convocation) की तुलना न्यायालय के पादरियों (Court leet) से करता है, जिनको उप-विधि बनाने का अधिकार प्राप्त है, "कि कोई आदमी कितनी गाय या भेड़ सम्मिलित रूप से रख सकता है; परन्तु वे लोग ऐसा कोई नियम नहीं बना सकते जो राज्य की विधियों के विरुद्ध

हो।" "आध्यात्मिक अधिकार-क्षेत्र जैसी कोई वस्तु नहीं है, सब कुछ राजनीतिक है।" "पादरी के पास ऐसी कोई वस्तु नहीं है जो अनाशवान हो। उसे पादरी-पद उसी प्रकार दे दिया जाता है, जिस प्रकार वकील को वकालत शुरू करने का अधिकार दिया जाता है।" "नास्तिक के विषय में बात करना व्यर्थ है, क्योंकि कोई मनुष्य जो कुछ करता है उसके विरुद्ध नहीं सोच सकता। आदिम काल में विभिन्न विचारधाराएँ होती थीं। इनमें से किसी एक को राजा द्वारा अपनाए जाने पर शेष को नास्तिकता की संज्ञा दे दी जाती थी; और उसके धर्म को शास्त्र-सम्मत (Orthodox) कहा जाता था।"

"धर्म व्यक्तिगत रुचि के समान है। कोई अपनी जाकिट (doublet) को ज्यादा कटा हुआ पहनता है, तो कोई गोटा लगाकर और कोई सादा ही, परन्तु प्रत्येक के पास जाकिट होता जरूर है। हमारा मतभेद उसकी कटाई में ही होता है।" "वे कहते हैं कि पवित्र आत्मा (Holy Ghost) उनकी जनरल कौंसिल की अध्यक्ष है, जब कि सत्य यह है कि अध्यक्ष ही पवित्र आत्मा होता है।" वह पूछता है, "धर्म का निर्णायक चर्च है या धर्मशास्त्र? सत्य यह है कि इनमें से कोई भी नहीं, बल्कि राज्य है। धर्म और ईश्वरीय विधि का आडम्बर करना सब कुछ अव्यवस्थित कर देना है।" यद्यपि सर मैथ्यू हेल (Mathew Hale) का मत है कि सेल्डन गंभीर और दृढ़ ईसाई था, परन्तु इन उद्धरणों से प्रकट होता है कि धार्मिक अनुभूति की ऊँचाई और गहराई उसकी कल्पना के परे थीं।

जीवन के प्रति सेल्डन का दृष्टिकोण असाधारण रूप से आधुनिक था। वह प्रत्येक विचार को उसके परिणाम द्वारा ही देखने तथा सत्ता, सम्पत्ति या विशेषाधिकार के दावे की अलौकिक प्रामाणिकता का तिरस्कार करने वाला दृढ़ उपयोगितावादी (Utilitarian) था। चर्च-संबंधी विषयों में वह पूर्णरूपेण हॉब्सवादी था, और दोनों ही ने, जो एक दूसरे का साथ बहुत पसन्द करते थे, अपनी समकालीन विचारधारा को धर्म-निरपेक्ष बनाने के लिए बहुत कुछ किया। निरंकुशता के सभी रूपों के प्रति अनिच्छा और सांविधानिक राजतन्त्र में विश्वास रखते हुए वह अपनी प्रकृति और आस्था से राजनीति में ट्रिमर (Trimmer)

के समान था। यद्यपि वह कार्य-क्षेत्र का नहीं अध्ययनशील व्यक्ति था, पर उसकी शांत तथा संदेहपूर्ण बुद्धि के अनवरत प्रवाह ने चर्च और राजा के प्रति श्रद्धा कम करने में बड़ी सहायता की और लोगों को परम्परागत संस्थाओं और विचारों पर तर्क और सामान्य बुद्धि के शुष्क प्रकाश में निर्णय करने के लिए उत्साहित किया। सबसे पहला ह्विग (Whig) शैफ्ट्सबरी (Shaftesbury) नहीं, सेल्डन था।

अध्याय ४

पार्लमेण्ट, सेना और जनता

(१)

चार्ल्स और उसके सलाहकारों को, जब वे सन् १६४० में संसद की सभा बुलाने के लिए बाध्य हुए, तो जनमत की वास्तविक स्थिति का बहुत कम ज्ञान था। स्ट्रेफोर्ड (Strafford) ने हाल ही में लिखा था, "जनता बड़ी शांत है, और यदि मैं बहुत गलत नहीं हूँ, तो राजा के गौरवमय शासन और संरक्षण से प्रसन्न नहीं, तो भली प्रकार संतुष्ट है।" सर फिलिप वारविक (Sir Philip Warwick) ने लिखा है, "प्रत्येक व्यक्ति अपने अंगूर की बेल के नीचे शान्तिपूर्वक बैठा था और न्याय का स्रोत निर्विकार और निरंतर प्रवाहित हो रहा था।" सर हेनरी वाटन (Sir Henry Wotton) ने सन् १६३८ में घोषणा की थी, "हम नहीं जानते कि विद्रोह या देशद्रोह क्या होता है; समय के साथ ये नाम भी स्वयं प्राचीन पड़ गये हैं।" ऐसी स्थिति मानते हुए राज-पक्षावलम्बियों (Royalists) ने जो घटनाएँ आगे घटीं, उन्हें स्वभावतः मनुष्य की असाध्य दुष्टता का परिणाम बताया। राजा के सम्मुख एक उपदेश में बिशप हॉल (Bishop Hall) ने कहा, "यह उन लोगों के कारण उत्पन्न हुआ, जो राज्यों को संकट डालने में आनन्द प्राप्त करते हैं।" क्लैरेन्डन ने लिखा है, "शांति, सम्पदा और आदर्श राजा हमें केवल प्रसन्न रहने योग्य बना सकते थे, प्रसन्न रहने के लिए विवश नहीं कर सकते थे। किसी विधि विशेष के उल्लंघन से हर मनुष्य को चार्टर की अन्य सब विधियों के पालन पर प्रसन्नता होने की अपेक्षा अधिक परेशानी हुई। राज्य में इतने अल्प समय में धर्म और आज्ञाकारिता के स्थान पर सम्पूर्ण परिवर्तन और अस्पष्टता सर्व-व्याप्त धर्मपरित्याग द्वारा ही उत्पन्न हो सकती थी।"

जहाँ तक इतिहास के इस अध्ययन ने इस महान विद्रोह के सशक्त कारणों

के अस्तित्व को अस्वीकार किया है, यह मूर्खतापूर्ण है परन्तु उस संकट की बाह्य आकस्मिकता के प्रमाण में यह लगभग सत्य है। राजतंत्र क्या, राजतन्त्र के महत्व-पूर्ण विशेषाधिकारों के विरुद्ध भी कोई आवाज़ नहीं उठाई गई थी। सन् १६४० की 'शार्ट पार्लमेण्ट' (Short Parliament) में या 'लाँग पार्लमेण्ट' (Long Parliament) में एक भी गणतन्त्रवादी न था। उनका उद्देश्य स्ट्रैफर्ड को नीचा दिखाना, प्योरिटनों की लॉड (Laud) के विरुद्ध रक्षा करना और 'स्टार चैम्बर' तथा हाई कमीशन को समाप्त करना था। यहाँ तक सदन में एकमत था; परन्तु राजा के प्रति सुदृढ़ अविश्वास के कारण शनैः-शनैः यह धारणा बन चली, कि नियंत्रण को कामन्स सभा के हाथों में देने के अतिरिक्त कुछ भी उस आधार की रक्षा नहीं कर सकता, जिसे प्राप्त कर लिया गया है। अपने अतिरिक्त किसी अन्य द्वारा अपना विघटन स्वीकार न करने का इसका निश्चय केवल साधारण बुद्धिमत्ता थी। यह जानते हुए कि राजा ने इन परिवर्तनों को दबाव में आकर ही स्वीकार किया है, बहुमत ने पिम (Pym) का कार्यपालिका शक्ति ग्रहण करने का परामर्श स्वीकार किया। इस "ग्रैन्ड रिमोन्स्ट्रैन्स" (Grand Remons-trance) ने वस्तुतः सांविधानिक राजतंत्र का प्रस्ताव किया और उस युग के किसी भी राजा से बिना संघर्ष किए अपनी शक्ति समर्पित करने की आशा नहीं की जा सकती थी। 'पाँच सदस्यों' (Five Members) पर आक्रमण के फलस्वरूप सेना पर नियंत्रण की माँग गई, जिसकी अस्वीकृति हल (Hull) के द्वार राजा के लिए खोले जाने की अस्वीकृति द्वारा अनुसरित हुई। पार्लमेंट के नेता अब विधि और पूर्व दृष्टांतों के समर्थक नहीं थे, क्योंकि उनके दावे राजा के निर्बन्ध विशेषाधिकारों से भी अधिक विचित्र थे, जिनके विरुद्ध उन्होंने संघर्ष किया था। पर घटनाओं को इस रास्ते पर ले आने का प्रमुख उत्तरदायित्व चार्ल्स पर है।

सत्ता के लिए संघर्ष जैसे-जैसे तीव्रतर होता गया, पार्लमेंट के कुछ समर्थकों में इस प्रश्न का उठना स्वाभाविक था कि क्या वास्तव में राजा आवश्यक ही है ? सन् १६४१ में हेनरी मार्टेन ने हाइड से वार्तालाप करते हुए कहा कि उसके विचार में एक व्यक्ति सब पर शासन करने के लिए पर्याप्त बुद्धिमान नहीं होता—इस घटना का उल्लेख करते हुए इतिहासकार लिखता है, "ये पहले शब्द

थे जिन्हें इस विषय में किसी मनुष्य को कहते हुए मैंने सुना था।" परन्तु ऐसा दृष्टिकोण अत्यन्त अपूर्व था और जब सन् १६४३ में पार्लमेंट में इसी वक्ता ने कहा, "बेहतर यह है कि अनेक परिवारों की अपेक्षा एक ही परिवार नष्ट किया जाय" तो उसे 'टावर' (Tower) भेज दिया गया और पार्लमेंट की सदस्यता से दो वर्ष के लिए वंचित कर दिया गया। प्रेसबिटेरियन, जिन्होंने शासन-यंत्र पर अब नियंत्रण प्राप्त कर लिया था, अत्यल्प सीमित राजतंत्र से सन्तुष्ट थे; परन्तु जब राजपक्ष 'न्यू माडेल आर्मी' (New Model Army) द्वारा रणभूमि में कुचल दिया गया, तो इन्डिपेन्डेन्ट्स (Independents) राज्य में प्रमुख शक्ति बन गए और राजपद के नष्ट करने पर खुले आम बहस की जाने लगी। सन् १६४७ में मार्टेन (Marten) के इस प्रस्ताव पर कि राजा के पास आगे कोई प्रार्थनापत्र न भेजा जाय, चौंतीस मतों की प्राप्ति से "कामनवेल्थ पार्टी" (Commonwealth Party) की शक्ति का पता लगता है, जिसकी धारणाओं और कार्यकलापों का वर्णन लडलो (Ludlow) के सजीव संस्मरणों में किया गया है। पर अब संघर्ष राजा और पार्लमेंट के बीच नहीं, पार्लमेंट और सेना के बीच था।

सेना का राजनीतिक इतिहास सन् १६४७ से प्रारम्भ होता है। बैक्स्टर (Baxter) कहता है, "वे सोचते थे कि ईश्वरीय कृपादृष्टि ने धर्म और राज्य की धरोहर विजेता के रूप में उन्हीं के हाथ सौंपी थी;" और सेना-भंग के प्रस्ताव से तहलका मच गया। जहाँ अधिकारियों ने 'कौंसिल' (Council) स्थापित की, सैनिकों ने अपने प्रतिनिधि अथवा आन्दोलनकारी चुन लिए और दोनों अंग सेना की 'जनरल कौंसिल' (General Council) के रूप में संयुक्त हो गए और उन्होंने जब तक भविष्य के लिए सुरक्षा प्राप्त न हो जाय, भंग न होने की प्रतिज्ञा की। उन्होंने घोषणा की, "हम लोग किराए पर रखे गए सैनिक नहीं, अपितु अपने और जनता के उचित अधिकारों और स्वतन्त्रताओं की रक्षा के लिए नियुक्त किए गए हैं।" समझौते के निष्फल हो जाने पर सेना ने लन्दन पर कब्जा कर लिया और प्रेसबिटेरियन नेताओं को भगा दिया। तब तक सेना में एकता थी; परन्तु उसके पश्चात् फूट आरम्भ हुई। मुख्यतः आयरटन (Ierton) द्वारा तैयार किया गया प्रस्ताव-पत्र (Heads of the Propos-

als) साधारण सैनिकों को सन्तुष्ट करने में असफल रहा। आन्दोलनकारी और कुछ छोटे अफसर अपने नेताओं से अधिक जनतांत्रिक थे, जिन पर उन्होंने जनता के अधिकारों की रक्षा करने में उदासीन होने का आरोप लगाया। अब सेना के अग्रिम दल ने बाहर के प्रजातन्त्रवादियों से सहयोग करना प्रारंभ कर दिया, जो दृढ़तापूर्वक कहते थे कि देश पर पार्लमेंट, या सेना का नहीं बल्कि जनता का शासन होना चाहिए। लैवलर्स (Levellers) की संज्ञा का प्रचलन चार्ल्स अथवा क्रामवेल द्वारा किया हुआ जान पड़ता है। राजपक्षावलम्बी हीथ (Heath) लिखता है, "विधि के निराकरण तथा उन्मूलन करने, सारी संपत्ति के अतिक्रमण करने तथा उग्र समानता द्वारा सब वस्तुओं को सार्वजनिक बना देने का उनका इरादा राक्षसी था।" यहाँ तक कि क्लेरेंडन ने भी यह विश्वास दिलाने की चेष्ठा की है कि वे भू-सम्पत्ति (estates) की समानता का प्रचार करते थे। प्रेसबिटेरियन एडवर्ड्स ने लिलबर्न (Lilburne) को अनाबैपटिस्ट जॉन आव् लीडेन (John of Leyden) के अनुरूप बताया, "मानों कि वह उसके मुँह से ही निकला हो।" प्राइन (Prynne) ने उन्हें विधियों के पूर्ण निराकरण करने की इच्छा रखने वाला बताया है। फिर भी नए दल ने दृढ़तापूर्वक ऐसे आरोपों का खंडन किया और कहा कि वे लोग अत्याचार के किसी भी रूप के विरोध करने की सीमा तक ही लैवलर्स हैं। "समान न्याय सभी को बिना भेद-भाव के बराबर मिले, यही "लैवलिंग" का उद्देश्य है।" क्रांतिकारी सिद्धान्तों की उनकी अस्वीकृति वास्तविक थी, क्योंकि न तो वे समाजवादी थे, न साम्यवादी, बल्कि इंग्लैण्ड के सबसे पहले उग्रतावादी (radicals) थे।

उनका नेता जॉन लिलबर्न (John Lilburne) असहमतिवादियों (Non-Conformist) में से 'स्टार चेम्बर' का शिकार बन चुका था, और हालैन्ड में देश निष्कासित रह चुका था। युद्ध छिड़ने पर वह सेना में भर्ती हो गया, जहाँ वह लेफ्टिनेन्ट कर्नल के पद तक पहुँचा और बन्दी बना लिया गया। मुकदमे के दौरान में उसने अपने अभियोग के विरुद्ध बहस करने से उस आधार पर इन्कार किया कि उसने राजा के विरुद्ध शस्त्र नहीं उठाया था। व्यक्तिगत अनुभवों के प्रभाव में उसका राजनीतिक दर्शन शीघ्रता से विकसित हुआ। मैनचेस्टर के अर्ल (Earl of Manchester) का विरोध करने के कारण लार्ड्स सभा

द्वारा जेल भेजे जाने पर वह कामन्स सभा की संप्रभुता पर बल देने की ओर झुका। परन्तु राजा का विरोध करने के कारण 'लोअर हाउस' द्वारा बन्दी बनाए जाने पर उसने शांतिपूर्वक संप्रभुता सम्पूर्ण राष्ट्र के हवाले कर दी। अब तक जिन निष्कर्षों पर वह पहुँचा, और जिनसे वह कभी डिगा नहीं, वे सन् १६४५ में न्यूगेट (Newgate) के कारावास की अवधि में लिखी गई पुस्तिकाओं में निहित हैं। यह कहना कि पार्लमेंट, जिनकी सेवा के लिए वह बनी है उनसे अधिक समर्थ है, इसी प्रकार है कि राजा की अपेक्षा उसके द्वारा नियुक्त राजदूत को अधिक अधिकार प्राप्त हैं।

जब युद्ध समाप्त हो गया और सैनिकों के पास सोचने के लिए अवकाश था, तब, जन साधारण की संप्रभुता का यह विचार सेना में प्रचंड अग्नि के समान फैल गया। लिलबर्न के प्रजातंत्रतीय सिद्धांतों का अनेक अधिकारियों ने भी स्वागत किया, जिन्हें पार्लमेण्ट से एक सन्निकट संघर्ष की गंध मिली तथा जो इसकी सत्ता को न्यून किए जाते देखकर प्रसन्न थे। परन्तु आर्मी कौंसिल (Army Council) में हुए वाद-विवाद से नेताओं और सैनिकों के बीच मूलभूत मतभेद शीघ्र ही स्पष्ट हो गया। जब राजा के साथ समझौते की बात वातावरण में फैल रही थी, तो सेना के अन्दर और बाहर लैवलर्स ने 'एग्रीमैन्ट ऑव् दि पीपुल' (Agreement of the People) में वयस्क मताधिकार, समान चुनाव क्षेत्र तथा द्विवार्षिक पार्लमेण्ट की माँगें प्रस्तुत कीं। भूमिका में घोषणा की गयी है कि इन प्रस्तावों का उद्देश्य दूसरे युद्ध को रोकना अथवा दासता की पुनरावृत्ति का निवारण करना है। पार्लमेण्ट की सत्ता केवल उन्ही की अपेक्षा कम है, जिन्होंने इसे चुना है, और धार्मिक स्वतंत्रता तथा विधि के सम्मुख समानता जैसे कुछ 'प्राकृतिक अधिकारों' का अतिक्रमण करना इसकी क्षमता के परे है। लगभग साथ ही साथ प्रकाशित "दी केस ऑव दि आर्मी" ने कुछ और विशिष्ट माँगों की अभिव्यक्ति की। एकाधिपत्य तथा ऐसे पद जहाँ वेतन तो मिले परन्तु काम न करना पड़े समाप्त कर दिए जायँ, विधियों का संहिताकरण होना चाहिए और कुछ अपहरित विशेषाधिकार जैसे सार्वजनिक भू भागों को वापस कर दिया जाय।

जब ये दस्तावेज कामन्स के सम्मुख उपस्थित किए गए तो उन्हें तुरन्त पार्लमेंएट की सत्ता और शासन के आधार का विनाशमूलक करार दिया गया। दूसरी ओर आर्मी कौंसिल में लम्बे वाद-विवाद छिड़ गए, जिनकी मंत्री क्लार्क (Clarke) द्वारा लिखित रिपोर्टें आश्चर्यजनक स्पष्टता के साथ उस वातावरण को समझने में हमारी सहायक होती हैं। जब आयरटन (Ireton) ने सर्वमताधिकार का विरोध किया, तो 'लैवलर्स' ने कहा कि कोई भी व्यक्ति ऐसी सरकार से बाध्य नहीं है, जिसका आधिपत्य उसने स्वयं स्वीकार नहीं किया है। मताधिकार के लिए सम्पत्ति का स्वामित्व आवश्यक नहीं है; ईश्वर ने जो विवेक सब को प्रदान किया है, वही इसके लिए पर्याप्त योग्यता है। निर्धनों तक का यह जन्मसिद्ध अधिकार है। क्या यह अनुचित न होगा कि उनका अब तक का समस्त संघर्ष व्यर्थ ही रहे? प्रस्ताव-पत्र (Heads of Proposals) द्वारा राजतंत्र और लार्ड्स सभा का अस्तित्व स्वीकार किया गया था, और उन्हें सेना पर संयुक्त नियंत्रण का अधिकार दिया गया था। "सभी लोगों के लिए स्वतंत्रता की नींव डालने" के स्थान पर दासता का आधार पहले से अधिक दृढ़ कर दिया गया। लम्बे वाद-विवाद के पश्चात् प्रस्ताव-पत्र (Heads of Proposals) की पुनर्घोषणा की गई, यद्यपि 'लैवलर्स' ने नौकरों और भिखारियों के अतिरिक्त सब लोगों तक मताधिकार का विस्तार करा दिया। पर यद्यपि उग्रतावादियों (radicals) ने कौंसिल में वयस्क मताधिकार की योजना स्वीकृत करा ली थी, किन्तु इससे कोई लाभ नहीं हुआ, क्योंकि क्रामवेल (Cromwell) और आयरटन इसको लागू करने का दृढ़ प्रतिरोध करते रहे। कुछ समय तक 'लेवलर्स' यह सोचते रहे कि अधिकारी राजा से मिलकर षड़यंत्र रच रहे हैं, परन्तु सन् १६४८ के आरम्भ में पुनः विश्वास स्थापित हो गया। पर यह क्षणिक ही था। अनेक 'लेवलर्स' सेना से निकाल दिए गए और 'आर्मी कौंसिल' (Army Council) में सैनिकों के प्रतिनिधि लेना बन्द कर दिया गया। एक प्रभावशाली पुस्तिका में ऐसा प्रश्न उठाया गया, जिसे आधा इंग्लैंड अपने आप से पूछ रहा था: "पहले हम राजा, लार्ड्स और कामन्स से शासित होते थे और अब सेनापति, फौजी अदालत व कामन्स से; हम आप से प्रार्थना-

पूर्वक पूछते हैं कि दोनों में अन्तर क्या है ?" कुछ तुच्छ विद्रोहों के दमन के साथ ही सेना के 'लेवलर्स' का संघर्ष समाप्त होता है।

दूसरी ओर लिलबर्न के नेतृत्व में असैनिक लेवलर्स ने अपना संघर्ष निर्भीकतापूर्वक जारी रखा चार्ल्स की मृत्यु के पश्चात् उन्होंने पार्लमेन्ट की वार्षिक सभा और दशांश कर (tithes) के उन्मूलन तथा ऋणग्रस्तता के लिए कारावास दंड की माँग की। निर्धन निर्बल के लिए रोजगार व आरामदेह आजीविका प्रदान किए जाने की मांग की गई। एग्रीमेंन्ट आव दि पीपुल (Agreement of the People) संशोधित किया गया और इसे "शासन के प्रति हमारे समस्त इरादों और इच्छाओं का पूर्ण विस्तार और शीर्ष लक्ष्य जिसमें हम लोग पूर्णरूपेण संतुष्ट रहेंगे", कहा गया। वे आगे कहते हैं कि इससे सभी बुद्धिमान लोगों को संतुष्ट हो जाना चाहिए क्योंकि हम लोग उतने बर्बर-भयंकर और विवेकरहित नहीं है, जितना हमें लांछित किया जाता है।" नौकरों और भिखारियों के अतिरिक्त इक्कीस वर्ष की अवस्था के सभी लोगों द्वारा प्राकृतिक अधिकार से चुनी हुई पार्लमेन्ट में ४०० सदस्य होने वाले थे। कोई पदाधिकारी सदस्य नहीं हो सकता था और कोई भी सदस्य पार्लमेंट का दो बार नहीं हो सकता था। पार्लमेन्ट धार्मिक विषयों पर कोई कानून नहीं बना सकती, और न किसी को एकाधिपत्य की अनुमति ही दे सकती है और न अन्न पर कर लगा सकती है। न्याय के क्षेत्र में विधि के सम्मुख समानता की, निश्चित दंडों की, और ऋण के लिए कारावास दंड के उन्मूलन की माँग की गई। कैदियों को वकीलों की सुविधा दी जाय, सब मुकदमों का छः महीने में फैसला किया जाय, दशांश कर (tithes) का अंत हो तथा प्रत्येक चर्च-प्रदेश अपने पादरियों से उनकी अवधि और वेतन का निजी समझौता कर सके। सभी सार्वजनिक अधिकारियों की नियुक्ति स्थानीय चुनाव द्वारा हो और वे केवल एक वर्ष तक ही पदासीन रहें। यह समझौता (Agreement) किसी पार्लमेण्ट द्वारा अपरिवर्तनीय था और इसके परिवर्तन करने की चेष्ठा का दंड मृत्यु थी।

राष्ट्रीय पुनर्निर्माण की यह अब तक सर्वाधिक विस्तृत योजना थी; परन्तु लिलबर्न के प्रभाव का कारण इस सुधारपत्र की अपेक्षा उसका सफल सरकारों का

विरोध था। सन् १६४६ में क्रॉमवेल और आयरटन पर भीषण प्रहार करने के पश्चात् उस पर मुकद्दमा चला और उसके ओजस्वी भाषण एवं मुक्ति ने ऐसा प्रभाव उत्पन्न किया कि इसकी स्मृति में एक पदक चलाया गया। सन् १६५२ में उसका देश-निष्कासन हुआ, किन्तु "रम्प पार्लमेण्ट" के भंग होने के पश्चात् वह वापस आया, और फिर बन्दी बना लिया गया। उसके दूसरे मुकद्दमे ने तो पहले की अपेक्षा और भी अधिक दिलचस्पी पैदा की। बीस नागरिकों ने दो-दो हजार पौंड की जमानत दी। न्यायाधीश के इस कथन पर कि उसे फाँसी दी जाएगी, उसने उत्तर दिया कि इंग्लैंड के लिए वह अब तक का सर्वाधिक रक्तरंजित दिन होगा। मुकद्दमे के दौरान में सेना की तीन सशस्त्र टुकड़ियाँ तैनात रहीं। लिलबर्न ने अपनी स्वाभाविक दक्षता से सफाई दी। उसकी मुक्ति ने उसकी ख्याति को पहले से भी अधिक बढ़ा दिया। क्लेरेन्डन ने कहा है है कि क्रॉमवेल में इसे युद्ध में हार से बड़ी हार समझा। फिर निष्कासित करके उसे जेर्सी (Jersey) भेज दिया गया। सन् १६५७ में वापस लौटने की अनुमति मिली और वह अपने महान शत्रु प्रोटेक्टेटर (the Protector) की मृत्यु के कुछ दिन पूर्व एक शान्तिवादी (Quaker) के रूप में मरा। दल के अन्य सदस्य राजपक्षावलम्बियों के षड़यंत्रों में फँस गये और अपने नेता की मृत्यु के साथ इतिहास से यह दल भी ओझल हो जाता है।

उस अराजकत्व काल (Interregnum) में किसी भी अन्य संगठन की अपेक्षा अधिक वास्तविकता के साथ 'लेवलर्स' अपने को जनसाधारण का दल कहलाने का दावा कर सकते थे। जहाँ अन्य लोगों के मत में संप्रभुता राजा या पार्लमेण्ट में, सेना या विधि में निहित थी, उनका कहना था यह केवल जनता में ही विहित है। उन्होंने अपने पूर्वजों से उत्तराधिकार रूप में प्राप्त सांविधानिक अधिकारों को बार-बार उद्धृत किया; परन्तु उन्होंने अपने दर्शन को पूर्व प्रमाण पर नहीं, बल्कि प्राकृतिक विधि पर आधारित किया। उनका विश्वास था कि स्वतंत्रता न केवल मौलिक अनुबंध द्वारा प्रत्याभूत है, अपितु मानव के स्वभाव में ही निहित अधिकार है। स्वातंत्र्य से उनका तात्पर्य केवल अन्य लोगों के प्रतिबंधों से मुक्ति ही नहीं, बल्कि समाज द्वारा निर्मित

किसी भी राजनीतिक व्यवस्था में निश्चित रूप में भाग लेने से था। व्यक्ति के सत्ता और उत्तरदायित्व में भाग लेने के इस अधिकार से सार्वजनिक संप्रभुता उत्पन्न होती है। यह कोई आश्चर्य की बात नहीं कि इस सिद्धान्त ने सामान्य नागरिकों को दृढ़तापूर्वक प्रभावित किया, जिन्होंने शासन की एक पद्धति के स्थान पर एक ऐसी दूसरी पद्धति को आते देखा जो सार्वजनिक और व्यक्तिगत स्वातंत्र्य के विषय में समान रूप से स्वेच्छाचारिणी थी। परन्तु, जैसा कि आयरटन ने बताया है, अलिखित विधि का ऐसा तर्क तत्वतः अराजकतामूलक था। प्रेरित करने की दृष्टि से मूल्यवान होते हुए भी, इसे जीवन के सिद्धान्त के रूप में ग्रहण नहीं किया जा सकता था, क्योंकि इस दैववाणी की व्याख्या प्रत्येक व्यक्ति अपने अपने ढंग से करता था। दूसरी ओर लिलबर्न ने मनुष्य को, जितनी बुद्धि उसमें हैं, उससे अधिक बुद्धि वाला बताया। "नैसर्गिक आभिजात्यतंत्र" को, जैसा कि हैरिंगटन आगे कहता है, जो सफल जनतंत्र की जान है, इस पद्धति में कोई स्थान नहीं दिया गया है। उसे मनुष्य के समान अधिकारों की अपेक्षा समान क्षमता में कम विश्वास न था; और उसकी गणना राजनयज्ञों की अपेक्षा उसके युग के सिद्धान्तवादियों में ही की जानी चाहिए।

(२)

सेना में प्रबलतम और सर्वाधिक मौलिक विचारक आयरटन था जिसका चरित्र और विचार दीर्घ काल तक गलत समझे गये। बर्नेट ने कहा था, "इस कैशियस (Cassius) ने यह आशा की थी कि सभी लोग राजतंत्र के स्थायी विरोधी हो जाएँगे और ऐसा कुछ नहीं किया, जिससे इंगलैंड 'कामनवेल्थ' (Commonwealth) में परिणत हो जाता।" सर फिलिप वारविक उस मरणासन्न व्यक्ति के अंतिम शब्दों की किंवदन्ती का उल्लेख करता है, "मैं अभी और बदला लूँगा।" अन्ततोगत्वा क्लार्क के पेपर्स (Clarke Papers) ने उस आवरण को हटा दिया है, जिसने कॉमीसारी जनरल (Commissary General) को अंशतः आवृत्त कर रखा था। उनके प्रकाशन के पूर्व किसी गणराज्यवादी द्वारा प्रस्ताव-पत्र (Heads of Pro-

posals) में राजतंत्र के तत्वों के समावेश की निन्दा संभव थी। अब हमें ज्ञात है कि राजा के सम्मुख रखे गये उसके प्रस्तावों में आर्मी कौंसिल में दिये गये उसके भाषणों का समावेश है। अपने सहअधिकारियों की अपेक्षा विधियों का अधिक ज्ञान रखने और अपने विचारों को मूर्त रूप देने में अधिक दक्ष होने के कारण आयरटन को लिलबर्न ने सेना के "आदि और अन्त" की संज्ञा दी थी। ह्वाइटलॉक (Whitelocke) ने उल्लेख किया है कि ओलिवर (Oliver) पर न तो कोई उतना अधिक हावी ही हो सकता था और न ही उतना हुक्म चला' सकता था। एक तीसरे पर्यवेक्षक ने कहा है कि क्रॉमवेल केवल वही तीर छोड़ता था जो आयरटन की कार्यशाला में तैयार होते थे।

सन् १६४७ ई० के ग्रीष्म काल में प्रकाशित प्रस्ताव-पत्र (Head of Proposals) से ज्ञात होता है कि आयरटन के विचार किसी प्रकार भी क्रांतिकारी नहीं थे। इस बात की सुरक्षा करते हुए कि स्वेच्छाचारिता की पुनरावृत्ति न हो, वह राजा, लार्ड्स और कामन्स द्वारा शासन के पुनः परीक्षण के लिए तैयार था। द्विवर्षीय पार्लमेण्ट की बैठक प्रति वर्ष चार मास से आठ मास तक होना चाहिए और सदस्यों के चुनाव के लिए चुनाव-क्षेत्र समान हों। पार्लमेण्ट का सेना पर दस वर्ष तक नियंत्रण रहे; नए पीअर्स (Peers) को पदग्रहण करने के पूर्व कामन्स सभा की अनुमति लेना आवश्यक था। चर्च की लौकिक सत्ता समाप्त कर दी जाय किन्तु समझौते (Covenant) को लागू नहीं करना चाहिए। आयरटन की सम्बन्धी, मिसेज हचिन्सन (Mrs. Hutchinson), ने लिखा है, "आयरटन का अपने श्वसुर की तरह मत में इतना विश्वास न था (जब तक इसका परीक्षण करके उसने इसे ठीक विपरीत न पाया) किन्तु उसके मत में राजा-प्रजा के सार्वजनिक हितों को स्वीकार करने को किसी प्रकार राजी हो गया था।" यद्यपि कामन्स या सेना को इतने निश्चयात्मक रूप से संप्रभुता हस्तांतरित करने वाला कोई व्यक्ति वैधानिकतावादी नहीं कहा जा सकता, परन्तु आयरटन को सेना के वैधानिकतावादी दल का नेता कह सकते हैं। जब तक राजतंत्र को बचाया जा सकता था, वह उसे बचाने के लिए उत्सुक था। 'लैवलर्स' के साथ तर्क करते हुए

उसने कहा कि "वर्तमान संविधान को हमें कायम रखना चाहिए, क्योंकि यह अत्यन्त मौलिक है तथा यह इतने विवेक, न्याय और दूरदर्शिता से युक्त है कि मैं यह कहने का साहस कर सकता हूँ कि इसके कायम रखने की अपेक्षा इसे परिवर्तित करने से अनेक नई बुराइयाँ उत्पन्न हो जाएँगी।"

इसी प्रकार आयरटन ने प्राकृतिक अधिकारों के सिद्धान्त का प्रबल विरोध किया। मताधिकार के प्रश्न पर बहस करते हुए उसने अपने सम्पत्ति के सिद्धान्त का स्पष्टीकरण किया। मनुष्य को संपत्ति न तो ईश्वर ने दी है और न प्राकृतिक विधि ने ही; यह मानवीय संस्था है। लैवलर सेक्सबी (Sexby) ने इसका तीव्र विरोध करते हुए कहा कि सैनिकों ने अपने जन्मसिद्ध अधिकारों को पुनः प्राप्त करने के लिए अपने प्राणों की बाजी लगा दी थी, परन्तु, यदि इसका कथन सत्य है, तो उनका ऐसा कोई अधिकार नहीं है। आयरटन ने उत्तर दिया कि वायु के उपयोग, राजपथों के प्रयोग की स्वतंत्रता तथा संविधान के मौलिक अंश के अतिरिक्त अन्य जन्मसिद्ध अधिकारों का कोई अस्तित्व नहीं है। यदि किसी समय राजकीय विधियों का उलंघन प्राकृतिक विधियों अथवा जन्मसिद्ध अधिकारों की दुहाई देकर किया जाय तो सुरक्षा कायम नहीं रह सकती। "जब मैं लोगों को इस निरर्थक विचार के पीछे कि प्रत्येक व्यक्ति के अनुसार क्या उचित अथवा अनुचित है, सब कार्यों का परित्याग करते सुनता हूँ तो मैं इसके अनन्त परिणामों को सोचकर काँप जाता हूँ।" अधिकारों का एक मात्र आधार देश का कानून है। इस तर्क का कि कोई मनुष्य, जिसने सरकार की अधीनता स्वीकार नहीं की है, उससे बाध्य नहीं है, उसने यह उत्तर दिया कि लोगों को विधियों का पालन अवश्य करना चाहिए, चाहे उन्होंने सहमति दी हो या नहीं। यदि लोग उनसे असंतुष्ट हों, तो देश छोड़ दें।

आयरटन की राजनीति पूर्णतया अनुभूतिमूलक थी। लैवलर्स (Levellers) से उसने कहा, "मेरे लिए यह प्रश्न कि इंग्लैंड में राजा रहे या नहीं आप लोगों की तरह इतना व्यर्थ और सरल नहीं है।" "उसने उसे संविधान का समर्थन करना छोड़ दिया जब उसकी मान्यता जाती रही। और सेना में उग्रतावादियों के इस विचार को मान लिया कि उन सब लोगों को

मताधिकार दिया जाय, जिन्होंने राजा के विरुद्ध सेना की खुलेआम सहायता की थी। परन्तु लोकप्रिय माँगों के प्रति उसकी अरुचि में कोई अन्तर नहीं आया। उसने कहा, "मनुष्य, मनुष्य के रूप में, भ्रष्ट हैं और ऐसे ही रहेंगे।" और मानवस्वभाव तथा मनुष्य की आदिम अवस्था के प्रति हॉब्स के दृष्टिकोण से सहमति रखने वाले तमाम लोगों की भाँति उसने भी समाज की उत्पत्ति का एक मात्र कारण सुरक्षा की आवश्यकता ही बताया। "शांति बनाए रखने की आवश्यकता के कारण ही, मनुष्य राजनीतिक समझौते तथा अनुबंध और कामनवेल्थ (Commonwealth) की ओर जाता है।" इसी कारण दंडनायक का क्षेत्र किसी विशेष विभाग तक ही सीमित नहीं है, बल्कि जीवन का प्रत्येक क्षेत्र है। बहस में आमंत्रित अनेक 'इंडिपेन्डेन्ट' (Independant) मंत्रियों की सहायता पाकर जब लैवलर्स ने इस बात पर जोर दिया कि धर्म सम्बन्धी विषय शासक के अधिकार-क्षेत्र से बाहर रहने चाहिए, तो उसने इसका प्रबल विरोध किया। उसने कहा कि ऐसी अनेक चीजें हैं जिन्हें मनुष्य धर्म की आड़ लेकर कर सकता है। मानवस्वभाव जब तक अपरिवर्तित रहेगा, उसके लिए सशक्त शासन अपेक्षित है। राजतंत्र में सशक्त शासन के सब रूपों का समावेश मानते हुए आयरटन ने लिखा है, "मुझे विश्वास है कि पृथ्वी पर राजतंत्र की सत्ता समाप्त करना मनुष्य के वश के बाहर की बात है; यदि कभी इसका नाश होगा, तो तभी जब ईश्वरीय शक्ति मानव में समाविष्ट होकर ऐसे सब संगठनों को अनावश्यक बना दे।" यदि वह दो वर्ष और जीवित रहता, तो अपने मित्र को, जो सेना में उससे ऊँचे पद पर था और राजनीति में उसका शिष्य था, सर्वोच्च सत्ता पर आसीन होते देखता।

क्लार्क के 'पेपर्स' (Papers) के प्रकाशन ने क्रॉमवेल के दर्शन के विकास का पुनर्गठन और उसके विचारों पर रूढ़िवादी प्रभाव की छाप को पहचानना संभव बना दिया है। सन् १६४७ में इस बहस में, कि पार्लमेंट को आतंकित करने के लिए सेना को लंदन जाना चाहिए या नहीं, बोलते हुए उसने कहा, "मुझे प्रायः ऐसा समझा गया है, जो अतिशीघ्रगामी हो।" "मुझे यह कहने की अनुमति दीजिए। जिसे आप लोग बलाधिकार से प्राप्त करते

हैं, उसे मैं तुच्छ समझता हूँ।" 'लैवलर्स' के प्रति उसका दृष्टिकोण पार्लमेंट के रोषपूर्ण व्यवहार के मध्य भी उसके संयम का प्रतिरूप ही है। 'एग्रीमेंट आव दि पीपुल' (Agreement of the People) में प्रस्तावित परिवर्तनों की मात्रा व गुरुता से वह बहुत विचलित हो गया था। "जब से राज्य राष्ट्र बना उसकी शासन-व्यवस्था के अत्यधिक परिवर्तन इस प्रपत्र में सन्निहित हैं। हम यह कैसे जान सकते हैं कि जब हम इन विषयों पर विचार कर रहे हैं मनुष्यों का एक अन्य समूह एकत्रित होकर इसी प्रकार का कोई दूसरा लोकप्रिय प्रपत्र प्रस्तुत नहीं कर देगा? और न केवल ऐसा एक और ही बल्कि इस प्रकार के अनेक? क्या यह पूर्णरूपेण भ्रांति नहीं होगी?" उसने सर्व-मताधिकार का प्रस्ताव अभद्रतापूर्वक अस्वीकृत कर दिया। "ऐसे शासन के परिणाम अराजकता की ओर ले जाते हैं।" यदि केवल प्राणों की रक्षा चाहने वाले सभी मनुष्यों का चुनावों में बोलबाला रहे तो उसमें कोई सीमा या बंधन कहाँ रहा?" राजतंत्र के प्रति भी उसका दृष्टिकोण उतना ही उदार है। वह इसका परित्याग करने के लिए तभी तैयार था, यदि उसे विश्वास हो जाता कि अब कोई दूसरा रास्ता नहीं है। राजा से समझौते पर पहुँचने के प्रयासों से उसने सेना में अपनी लोकप्रियता संकट में डाल दी और उत्कट गणतंत्रवादी हेनरी मार्टेन (Henry Marten) ने उसे "राज-प्रभावित" की उपाधि दी।

द्वितीय गृहयुद्ध के पश्चात् ओलिवर ने हैमन्ड (Hammond) को लिखे गए एक महत्वपूर्ण पत्र में अपने विचारों को स्पष्ट किया। "अधिकार और सत्ता ईश्वरीय आदेश हैं; परन्तु इससे सभी सहमत हैं कि ऐसी भी स्थितियाँ होती हैं जिनमें प्रतिरोध विधिसम्मत है। प्रश्न यह है कि हमारी स्थिति भी ऐसी है या नहीं। मेरे प्यारे दोस्त, हमें दैवयोगों पर ध्यान देना चाहिए; उनका अवश्य ही कुछ न कुछ अर्थ होता है। वे सदैव एक साथ विद्यमान रहते हैं; वे अत्यन्त स्थिर, स्पष्ट और अनावृत्त रहे हैं। ईश्वर के संत कहलाने वाले भक्तों के प्रति भयंकर घृणा भाव है; तो भी ये लोग शस्त्रास्त्र पाते हैं और अपने को अधिकाधिक धन्य समझते हैं। उसने अनिच्छापूर्वक राजा की फाँसी के लिए सहमति दी; परन्तु बर्नेट ने लिखा है कि जब स्काटलैंड के आयुक्त राजा

न हो कि सुव्यवस्था स्थापित कर सके, हम लोगों का विनाश रुकना असंभव होगा।" ह्वाइटलॉक ने कहा कि जब पार्लमेंट को सर्वोच्च सत्ता स्वीकार कर लिया गया है, तो उनको अवरुद्ध कैसे किया जा सकता है? इसके उत्तर में क्रॉमवेल ने दूसरा प्रश्न प्रस्तुत किया, "यदि कोई व्यक्ति अपने को राजा समझे तब क्या होगा?" ह्वाइटलॉक के प्रतिवाद करने पर उसने कहा, "निश्चय ही राजा की सत्ता इतना महान व उच्च है और इस राष्ट्र की जनता द्वारा इतनी सर्वमान्य तथा पूज्य है, कि आजकल के समय में यह बड़ी लाभदायक सिद्ध होगी।" छः महीने पश्चात 'रम्प' पार्लमेंट भंग कर दी गई और प्रोटेक्टोरेट (Protectorate) का प्रारम्भ हो गया।

यह जान कर कि कामन्स अपनी सत्ता को स्थायी करने के लिए एक विधेयक पारित करने वाले हैं, ओलिवर कोई कदम उठाने के लिए उत्तेजित हो उठा। इस घटना के बाद अपने प्रथम भाषण में उसने कहा, "यह तो हम विश्वास ही नहीं कर सकते थे कि ये लोग इतने नीच निकलेंगे। हमें निरंकुश व अविराम शासन करती हुई कौंसिल ऑफ स्टेट तथा पार्लमेंट का निर्माण करना चाहिये था।" आगे उसने कहा कि प्रत्येक शासन में 'मैग्नाकार्टा' (Magna Charta) जैसी कुछ अपरिवर्तनीय वस्तु अवश्य होनी चाहिए। "पार्लमेंट अपने को स्थायी न बनाए यह एक मौलिक सिद्धान्त है। अंतःकरण की स्वतन्त्रता भी एक मौलिक बात है। सेना पर अधिकार की ऐसी व्यवस्था रहे कि पार्लमेंट के अन्दर या बाहर के किसी दल विशेष को इस पर हुक्म चलाने का अधिकार न हो, यह भी एक मौलिक बात है।" परन्तु इन मौलिक तत्वों की रक्षा के लिए पार्लमेंट पर विश्वास नहीं किया जा सकता, और संकट काल में जनता की रक्षा करने के लिए कोई व्यक्ति विशेष उपलब्ध होना चाहिये। उसके स्थान की व्याख्या उसने पुलिस के कॉंस्टेबिल की तुलना देकर की। इस शंका को दूर करने के लिए कि वह अपने अधिकारों का दुरुपयोग न करे, उसने घोषणा की, कि यदि इस अधिकार को उसके परिवार के लिए पुश्तैनी बनाए जाने का प्रस्ताव किया जाय तो वह उसे स्वीकार नहीं करेगा।

ओलिवर को शीघ्र ही पता चला कि एक विशाल राष्ट्र का भाग्य-निर्देशन किसी व्यक्ति विशेष की शक्ति के बाहर है और उसके दूसरे भाषण में स्वतंत्र

पार्लमेंट की इच्छा प्रकट की गई। परन्तु ऐसी संस्था केवल उन्हीं योग्य व्यक्तियों से बने, जो राज्य के विरोधी रहे हों और सम्पत्तिवान हों। फिर भी नई पार्लमेंट उसके हृदय में विश्वास उत्पन्न न कर सकी और वह चारों ओर, यहाँ तक कि राजपक्षावलम्बियों से परामर्श लेता रहा। यह दृढ़ पुरुष अपने पुराने साथियों द्वारा की गई आलोचना के प्रति अत्यन्त संवेदनाशील था। थार्लो (Thurloe) ने माँक (Monk) को लिखा, "मैं जानता हूँ कि मेरे स्वामी को इससे कष्ट होगा यदि कोई संत पुरुष उनसे पीड़ित अथवा असंतुष्ट हो।" वह शासन को अधिक सांविधानिक आधार पर व्यवस्थित करने का इच्छुक था। जब एक प्रचार-वादी लेखक ने यह विचार प्रकट किया कि सत्ता का एक मात्र आधार सम्पत्ति अधिकार है, तो उसने उस पुस्तक को जला देने की आज्ञा दी। राजपद ग्रहण करने की उसकी इच्छा विधिसम्मतता के प्रति तिरस्कार से नहीं, उसके प्रति सम्मान के कारण उत्पन्न हुई। उसने पार्लमेंट को बताया कि उसके द्वारा प्रस्तावित किसी भी नाम को ग्रहण कर लेगा, पर उसके बिना किसी पद के लिए तैयार न होगा। उसकी कम से कम परिवर्तन करने की यह दृढ़ता चर्च से उसके सम्बन्धों में भी दृष्टि-गोचर होती है। आश्रितों का चर्च से निष्कासन तो उसकी दृष्टि से पूर्णतः सम्पन्न हो चुका था, परन्तु जो बच गये थे, उनको उसने रहने दिया। ऐंग्लिकन चर्च में प्रार्थनाएँ सार्वजनिक होने लगीं और राजधानी में फुलर (Fuller) और अन्य धर्मशास्त्रियों के उपदेशों के समय भीड़ लग जाती थी। अश्शर (Usher) को उसका पुस्तकालय वापस कर दिया गया, और उसको बताया गया कि धर्माध्यक्षों से सारे प्रतिबन्ध हटा लिए जाएँगे, यदि वे केवल राजनीति से अलग हो जायँ। उत्पीड़न (persecution) के संकट में पड़े व्यक्तियों व संप्रदायों की रक्षा के लिए उसने हस्तक्षेप किया और यहूदियों को इंग्लैंड वापस आने की अनुमति दी। उसकी इच्छा न्याय, उदारता और वैधानिक ढंग से शासन करने की थी, पर यह परिस्थितियों का दोष था कि उसे स्वेच्छाचारी की भाँति शासन करने के लिए बाध्य होना पड़ा।

अध्याय ५

मिल्टन और हैरिंगटन

सत्रहवीं शताब्दी का प्रमुख अंगरेज साहित्यकार एक बड़ा देशभक्त भी था; जिसने अपने देश की समस्याओं और संकटों के बीच अपनी पूर्ण शक्ति के साथ प्रवेश किया। लाँग पार्लमेंट (Long Parliament) की बैठक के बाद के व्यस्त बीस वर्षों तक "ले' ऐलेग्रो" (L'Allegro), "इल पैन्सेरोसो" (Il Penseroso), "कॉमस" (Comus) और "लिसिडास" (Lycidas) के रचयिता ने अपनी वीणा अलग रख दी और राजनीतिक तथा धार्मिक विवादों में जिनमें इङ्गलैंड विभक्त था, बिना सोचेसमझे डूब गया। उसका पहला आन्दोलन धर्माध्यक्षता (episcopacy) के समर्थक बिशप हॉल (Bishop Hall) के विरुद्ध चला और एक के बाद दूसरी शीघ्रता से प्रकाशित पाँच प्रचार-पुस्तकों ने उस श्रेष्ठ वक्तृत्व और तीव्र इच्छा का प्रदर्शन किया, जिससे उसकी समस्त गद्य रचनाएँ सुशोभित और विरूपित हैं। इसी स्थिति में वह प्रेसबिटरबाद की ओर झुका; परन्तु इस मत की पूर्वगामिता ने उसे यह बता दिया कि नवीन प्रेसबिटर पुराने पुरोहित (Old Priest) का विशाल रूप मात्र ही है।

प्रकाशकों और पुस्तक-विक्रेताओं पर नियंत्रण लगाने के निमित्त सन् १६३६ में जारी किए हुए और गृहयुद्ध काल में उपेक्षित कठोर कानून को सन् १६४३ में लॉर्ड्स और कामन्स (Commons) सभा के अध्यादेश द्वारा पुनः ज्यों का त्यों लागू किया गया। मिल्टन विरोधपत्र लिखने बैठ गया और 'एरीओपोजिटिका' (Areopagitica), जो पार्लमेंट के लिए एक भाषण के रूप में लिखी गई थी, सन् १६४४ में प्रकाशित हुई। इसकी भूमिका में स्वतन्त्र आलोचना के अधिकार का समर्थन इस आधार पर किया गया है कि यह नागरिकता का एक विशेषाधिकार है और साथ ही राज्य के लिए लाभदायक है। पुस्तकों से शत्रुता के विरुद्ध वह दृढ़ विरोध करने की ओर अग्रसर होता है। "क्योंकि वे पूर्णतया मृत वस्तुएँ नहीं हैं, बल्कि उनमें उस आत्मा के समान ही, जो उन्हें जन्म

देती है, सक्रिय होने की जीवन शक्ति है। किसी श्रेष्ठ पुस्तक का विनाश करना मनुष्य की हत्या करने के समान हैं। जो मनुष्य की हत्या करता है वह विवेक-शील जीव की हत्या करता है; परन्तु जो पुस्तक को नष्ट करता है वह ईश्वर की प्रतिमूर्ति स्वयं विवेक की हत्या करता है। अनेक मनुष्य पृथ्वी पर भार बन कर जीते हैं; परन्तु एक श्रेष्ठ पुस्तक एक महान आत्मा के जीवन की अमूल्य रक्त बूँद के समान है, जो इस जीवन से परे दूसरे जीवन के आशय से सुरक्षित की गई है।" अनेक पुस्तकों की बुराइयों को स्पष्टतया स्वीकार करते हुए वह "किसी ऐसी प्रभावहीन व छिपे हुए गुण" की प्रशंसा करने से इन्कार करता है "जो कभी अपने प्रतिद्वंदी पर आक्रमण या उसका सामना नहीं करता।" एक चतुर व्यक्ति, एक अच्छे शोधक की तरह, अशुद्ध धातु में से सोना निकाल सकता है, और वह किसी पुरानी पुस्तिका का धर्मग्रन्थों का उपयोग करने वाले किसी मूर्ख की अपेक्षा अधिक सदुपयोग करेगा। जब ईश्वर ने मनुष्य को विवेक दिया, तो उसने उसे वरण करने की स्वतन्त्रता भी दी, क्योंकि विवेकशीलता वरणमात्र ही तो है। ग्रन्थकार को इटली में, "जहाँ पिछले अनेक वर्षों में चाटुकारिता और अतिशयोक्ति के अतिरिक्त और कुछ लिखा ही नहीं गया," पता लगा कि जिस पर सेन्सर की छाया पड़ी उसे नष्ट कर डाला। "वहीं पर मैंने फ्रान्सिसकन (Fransiscan) तथा डॉमिनिकन (Domincan) निर्णायकों के विरुद्ध ज्योतिष का मनन करने के कारण इनक्यूजीशन (Inquisition) द्वारा बन्दी किये गए प्रसिद्ध गैलीलियो को, जो अब वृद्ध हो चुका था, पाया और मैं उससे मिला।" इंग्लैंड, यद्यपि वहाँ इनक्यूजीशन (Inquisition) का अभिशाप नहीं था, चर्च के शासन भार से कराह रहा था—और उस समय उसे यह आशा करने का साहस नहीं हुआ कि "वहाँ वे योग्य व्यक्ति जीवित होंगे जिन्हें देश के ऐसे उद्धार का जो समय के किसी परिवर्तन में भुलाया नहीं जा सकता, अग्रणी बनना चाहिए था।" जब मुक्ति का समय आया, तो उसने स्वप्न में भी कभी ऐसी आशा नहीं की, कि अपने देश में भी उसे वही शिकायतें सुननी पड़ेंगी, जो उसने विदेश के विद्वानों से सुनी थीं। यह स्पष्ट होता जा रहा था कि बिशप और प्रेसबिटर दोनों ही समान रूप से विद्या पर दासत्व आरोपित करने के लिए दृढ़ हैं।

मिल्टन आगे कहता है कि हमारे विश्वास और ज्ञान शरीर के अंगों की तरह अभ्यास द्वारा विकसित होते हैं। "यह प्रकाश जो हमने प्राप्त किया है सदैव टकटकी लगा कर देखने के लिए नहीं, बल्कि हमारे ज्ञान से परे स्थित वस्तुओं के अन्वेषण के लिए प्रदान किया गया था।" यदि कोई व्यक्ति कुछ वस्तुओं में इसलिए विश्वास करता है कि पादरी वैसा करने को कहता है या असेम्बली (Assembly) भी यही निर्धारित करती है तो "चाहे उसका यह विश्वास ठीक ही हो, परन्तु यह विश्वास जिसे वह धारण किए है, उसका अमान्य विचार बन जाता है।" दमन की नीति देश और काल के प्रतिकूल थी। इंग्लैंड की लॉर्ड्स (Lords) और कामन्स (Commons) सभा के सदस्यों, आप यह सोचें कि जिस राष्ट्र पर आप शासन करते हैं, वह क्या है—वह राष्ट्र जो मन्द गति और मूढ़ नहीं अपितु सजीव, प्रतिभावान और तीव्र भावना से युक्त तथा चतुर आविष्कारक, शिक्षा ग्रहण करने में योग्य तथा शक्तिवान तथा मानव क्षमता के उच्चतम, शिखर तक पहुँचा हुआ देश है। ऐसी उर्वरा भूमि को पैगम्बरों, मुनियों, और सुयोग्य व्यक्तियों का देश बनाने के लिए विवेकपूर्ण और सच्चे परिश्रम के अतिरिक्त अन्य किस वस्तु की कमी है? मुझे ऐसा प्रतीत होता है कि मैं अपने मस्तिष्क में निद्रा के पश्चात् जागते हुए शक्तिशाली मनुष्य की भाँति इस चरित्रवान तथा सशक्त राष्ट्र को उठते हुए तथा अटूट बन्धनों को तोड़ते हुए देख रहा हूँ। मुझे ऐसा लगता है कि मैं उसे एक गरुड़ की भाँति अपनी प्रचंड शक्ति को नवीनीकृत करते हुए तथा मध्याह्न के प्रकाश से अपनी अचकित नेत्रों को प्रज्ज्वलित करते हुए देख रहा हूँ, जो स्वर्गीय आभापूर्ण निर्झर के उद्गम स्थल पर लम्बे समय से कलंकित की हुई अपनी दृष्टि के निष्पाप बना रहा है, जब कि सांध्य काल को चाहने वाले और भीरु पक्षी आश्चर्यान्वित और उद्विग्न हैं कि वह क्या चाहता है। क्या आप लोग तो भी ज्ञान की इस बढ़ती हुई सम्पदा का दमन करके पुनः हमारी बुद्धि के भंडार को रिक्त करेंगे?"

अपने देशवासियों की इस चिरस्थाई वन्दना के पश्चात् मिल्टन अंत में सत्य की भूरि-भूरि प्रशंसा करता है। "सर्व-शक्तिमान ईश्वर के बाद सत्य ही शक्तिशाली है। उसे अपनी विजय के लिए किसी नीति, छलबल या अनुज्ञा की आवश्यकता नहीं होती। किसी स्वतन्त्र तथा अबाधित संघर्ष में सत्य को बुरी परिस्थिति में

किसने देखा है ?" स्वतन्त्रता के ऐसे उत्कट समर्थन के पश्चात् यह जानकर बड़ा खेद होता है कि वह "पोपवाद और प्रकट अंधविश्वास" के प्रति सहिष्णुता नहीं चाहता "क्योंकि यह सम्पूर्ण धार्मिक तथा राजनीतिक श्रेष्ठताओं को आमूल नष्ट करते हैं, इसलिए इन्हें भी नष्ट किया जाना चाहिए, बशर्ते कि दुर्बल और पथ-भ्रष्ट व्यक्तियों को समझाने और सही राह पर ले आने के लिए पहले समस्त उदार और सहानुभूतिपूर्ण साधनों का प्रयोग कर लिया जाय।" कैथोलिकवाद को वह मूल सूत्रों का समूह नहीं, उत्पीड़न और दमन का विशाल यंत्र समझता था और स्वतन्त्रता के नाम पर उसने इसे स्वतन्त्रता देने से इन्कार कर दिया। धार्मिक सहिष्णुता के क्षेत्र में मिल्टन अपने अनेकों समकालीन व्यक्तियों से पीछे था। फिर भी पुस्तक की प्रवृत्ति इस अपवादों के विरुद्ध है, और "मुझे सब स्वतन्त्रताओं से बढ़कर जानने, कहने और अपनी अंतःकरण के अनुसार स्वतन्त्रता-पूर्वक बहस करने की स्वतन्त्रता दो" पुस्तक की यह गुरु गंभीर आवाज सदियों से गूँजती रही है।

निर्बन्ध प्रकाशन की दलील यदि उसके अधिकांश समकालीनों के लिए सबसे बड़ी विरोधाभास थी, तो तलाक पर उसकी पुस्तक ने जो एक निराश पति का दारुण क्रन्दन थी, उस काल में भी सनसनी उत्पन्न कर दी, जब लोग अपने पुराने विश्वासों से अलग हट रहे थे। इस प्रकार अन्त में जब मिल्टन राजनीतिक शिक्षक के रूप में सम्मुख आया, तो इसके पूर्व ही वह ईश्वर या मनुष्य के प्रति किसी दायित्व को स्वीकार न करने वाला स्वतन्त्रतावादी माना जा चुका था। ह्वाइटहॉल (White Hall) में घटित दुःखान्त दृश्य के एक पखवाड़े के पश्चात् प्रकाशित "दि टेन्योर आव किंग्स ऐण्ड मैजिस्ट्रेट्स" (The Tenure of Kings & Magistrates) पुस्तक इस बात की घोषणा थी कि उसने नृप-हंताओं से अपना तादात्म्य स्थापित कर लिया। आब्रे (Aubrey) ने कहा है कि मिल्टन के गणतन्त्रवादी होने की जड़ लिवी (Livy) और रोमन लेखकों के ग्रन्थों में निपुण होने और उसकी दृष्टि में रोमन गणराज्यों (Roman Commonwealths) की महानता में है;" और द्वितीय गृह युद्ध के परिणाम पर कालचेस्टर (Colchester) के घेरे के समय फेअरफैक्स (Fairfax) पर लिखे गए सानेट में उसने संतोष प्रकट किया है। परन्तु यद्यपि वह स्वीकार

करता है कि वह मृत्यु के आज्ञापत्र पर भी हस्ताक्षर करने को तैयार हो जाता परन्तु इस ओर कोई भी संकेत नहीं मिलता कि शासन के किसी अन्य रूप की अपेक्षा उसने गणतांत्रिक पद्धति को प्राथमिकता दी, और उस समय भी वह ऐसे राजा की कल्पना कर सकता था जो अत्याचारी न हो। वह कहता है कि ईश्वर की प्रतिच्छाया रूप में मनुष्य स्वतन्त्र पैदा हुए थे परन्तु ऐडम के पाप से उत्पन्न अधर्म और हिंसा के फलस्वरूप उन्होंने पारस्परिक अनिष्ट के विरुद्ध एक दूसरे को बाधित करने के लिए एक समझौता किया। सामाजिक विषयों का शासन एक या अनेक व्यक्तियों को, स्वामी के रूप में नहीं वरन् उत्तरदायी अधिकारी के रूप में, सौंपा गया। सत्ता जनता में रही और उसके जन्म-सिद्ध अधिकार को भंग किए बिना इसका अपहरण नहीं किया जा सकता था। यह कहना कि राजा केवल ईश्वर के प्रति ही उत्तरदायी है, तमाम विधियों के विरुद्ध पड़ता है; क्योंकि यदि वे ईश्वर से नहीं डरते, और उनमें से अधिकांश डरते भी नहीं हैं, तो लोगों का जीवन और उनकी सम्पत्ति अनिश्चित ही रहेंगे। इसलिए जनता स्वतन्त्र जन्म लेने के कारण, अपनी इच्छानुसार शासित होने के अधिकार से, उन्हें जब चाहे अस्वीकृत एवं पदच्युत कर सकती हैं। और यदि किसी अच्छे राजा को पदच्युत कर देना उनकी स्वतन्त्रता के अन्तर्गत है तो एक अत्याचारी राजा को राज्याधिकार से हटा देना उनका पुनीत कर्त्तव्य है। प्राकृतिक विधि यदि एक मनुष्य को राजा के विरुद्ध ही अपनी रक्षा की अनुमति देती है, तो क्या एक राज्य की आत्म-रक्षा को वह और अधिक न्यायसंगत नहीं ठहराती? फिर तो वे लोग सम्मान के पात्र हैं जिन्होंने संसार को यह शिक्षा देने का साहस किया कि "भविष्य में कोई राजा अपने ऊपर विपदा डाले बिना मनुष्य के सम्पूर्ण संगठनों को उलटपलट कर देने की कल्पना नहीं कर सकेगा।"

आइकन बासिलाइक (Eikon Basilike) अथवा किंग्स बुक (King's Book), जो राजतन्त्रवादी धर्मशास्त्री गॉडेन (Gauden) की एक कुशल जालसाजी थी, लगभग उसी समय प्रकाशित हुई जिस समय "दि टेन्योर ऑव किंग्स ऐण्ड मैजिस्ट्रेट्स", और प्रतिक्रिया की उत्ताल तरंगों के शिखर पर उन्नत होती हुई वह कौंसिल आव स्टेट (Council of State) को इतनी भया-

वह प्रतीत हुई कि उसका उत्तर देना आवश्यक समझा गया। यह कार्य मिल्टन को सौंपा गया, जिसे नृप-हत्या के समर्थन में लिखने पर "लैटिन सेक्रेटरी" नियुक्त किया गया था। यह प्रत्युत्तर सन् १६४६ के शरद्काल में "आईकोनोक्लास्टस" (Eikonoklastes) के उग्र पृष्ठों में दिया गया है। यह रचना उस लम्बे संघर्ष की घटनाओं के बीच राजा "अथवा उसके चारण" का कदम-कदम पर पीछा करती है। राजा द्वारा अपने पिता के हत्या की दंतकथा सहज विश्वास से स्वीकार करने और आइरिश नरसंहार से उसके सम्बन्धों का और चार्ल्स को अपने पादरियों के लिए की गई व्यर्थ प्रार्थनाओं के प्रति उसके सहानुभूति-रहित उपहास के रूप में इन पृष्ठों में नवीन तीखापन है। स्वयं राजतन्त्र के प्रति भी दृष्टिकोण बदल गया है। वह आक्रामक ढंग से कहता है—"हम धार्मिक और राजनीतिक इतिहास से जानते हैं कि संसार के राजा सदैव चर्च से घृणा करते और स्वभावतया भय खाते रहे हैं।" राजा यद्यपि सेना की दृष्टि से शक्तिशाली परन्तु तर्क में कमजोर होते हैं, "क्योंकि वे अपने जन्म से हमेशा अपनी इच्छा को दाहिने और बुद्धि को बायें हाथ के रूप में प्रयोग करने के अभ्यस्त रहे हैं।" उसके विचारों में एक और अधिक महत्वपूर्ण परिवर्तन हुआ। राजा की मृत्यु से केवल राज-समर्थक क्षेत्रों में ही नहीं बल्कि सभी को धक्का पहुँचा था और पुर्नस्थापन की ओर पहले से ही प्रबल धारा बहनी प्रारम्भ हो चुकी थी। मिल्टन को लगा कि उसने राष्ट्र के व्यक्ति समूह की बुद्धिमत्ता और योग्यता को अधिक आँका था। स्वतन्त्रता के लिए अन्तःप्रेरणा रखने वाले और अलौकिक उत्पत्ति वाले स्वतन्त्र व्यक्तियों के देश ने प्रार्थनाओं के समय राजा की ओछी युक्ति से मोहाविष्ट "दासता के निमित्त उत्पन्न चपल, बुद्धिहीन और अभागे जनसमूह" को स्थान दे दिया है। इसके पूर्व ही हम लोग आभिजात्य-गणतन्त्रवाद (Aristocratic republicanism) की ओर जा रहे हैं, जो कवि के कठोर स्वभाव को पूर्णतः प्रतिबिम्बित करता है।

चार्ल्स की फाँसी योरोप और इंग्लैंड की एक ऐतिहासिक घटना थी जिस पर राजतान्त्रिक सिद्धान्त के समर्थकों ने स्पष्ट शब्दों में अपना भय प्रकट किया था। सर्वाधिक भयानक आक्रमण लीडेन (Leyden) के प्रोफेसर सैलमेशियस (Salmasius) द्वारा हुआ, जिसने चार्ल्स द्वितीय के हेग (Hague) से किए

गए अनुरोध से "डिफेन्सिओं रेजिओ प्रो केरोलोवन" (Defensio Regio Pro Carolo I)" की रचना की तथा जिसे योरोपीय विद्वानों में प्रभावशाली स्थिति के कारण उसकी रचनाओं को विस्तृत प्रचार प्राप्त था। अपनी ख्याति और लैटिन भाषा पर अधिकार के कारण मिल्टन ही संसार की दृष्टि में अपने देश को दोषमुक्त प्रमाणित करने योग्य था, और कौंसिल आव स्टेट के निमंत्रण पर उसने यह चुनौती स्वीकार कर ली। इस घोषणा-पत्र की रचना के परिश्रम में उसे अपनी दृष्टि से हाथ धोना पड़ा; यह एक ऐसा बलिदान था जिसका उल्लेख उसने अपने एक श्रेष्ठतम सानेट में गौरव के साथ किया है। "डिफ्रेन्सियो पॉपुली ऐंग्लिकानी" (Defensio Populi Anglicani) में काफी अश्लील कटाक्ष है जिसमें सत्रहवीं शताब्दी के शिष्ठतम आलोचकों ने भी आनन्द लिया; परन्तु यह देदीप्यमान और ओजपूर्ण रचना भी हैं। "आप लोग एक ईश्वर द्वारा संसार के शासन की अपेक्षा राजतन्त्र पसन्द करते हैं। मेरी आपसे प्रार्थना है कि आप लोग मुझे इसका उत्तर दें कि क्या आप सोंचते हैं कि पृथ्वी पर ऐसे व्यक्ति के अतिरिक्त जो अन्य व्यक्तियों में असीमित रूप से श्रेष्ठ हो, कोई दूसरा ऐसा है जिसे ईश्वर की सत्ता के अनुरूप सत्ता से विभूषित किया जा सके ?" जब उसका विरोधी प्राकृतिक विधि की आड़ लेता है, तो मिल्टन प्रसन्नतापूर्वक उसकी दलील का विरोध करने लगता है। यह सिद्ध करना सरल है कि अत्याचारी को दंडित करने की अपेक्षा अन्य कोई वस्तु प्राकृतिक विधि के अधिक अनुकूल नहीं हैं; क्योंकि मानव जाति के कल्याण का ध्यान रखना मनुष्य के मस्तिष्क में एक अंकित सिद्धान्त हैं। कोई राजा अपकार करने के किसी अधिकार का दावा नहीं कर सकता। शासन का आनुवंशिक अधिकार प्राकृतिक विधि के विरुद्ध है; क्योंकि किसी व्यक्ति को जब तक वह अन्य सबसे बुद्धि और साहस में श्रेष्ठ न हो, राजा होने का अधिकार नहीं है। प्रकृति की व्यवस्था के अनुसार बुद्धिमान मनुष्यों को मूर्खों पर शासन करना चाहिये न कि, दुष्टों को भले आदमियों पर; और जो लोग ऐसे अयोग्य व्यक्ति से शासन छीन लेते हैं वे प्राकृतिक विधि के अनुकूल कार्य करते हैं। इसी प्रसिद्ध विवाद के विषय में, जिसने सम्पूर्ण योरोप में असाधारण अभिरुचि उत्पन्न कर दी थी, हॉब्स ने लिखा था, "दोनों ही अच्छी लैटिन भाषा में लिखे गये हैं; और किस

की भाषा अच्छी है यह निर्णय करना कठिन है; और दोनों ही में गलत तर्क दिए गए हैं, परन्तु यह निर्णय करना कठिन है कि कौन ज्यादा बुरी है।"

सैलमेशियस को मिल्टन के उत्तर में कॉमनवेल्थ (Commonwealth) के शासन का ऐसे शासन के रूप में वर्णन है, जिसे "हमारी वर्तमान कठिनाइयाँ स्वीकार करें, न कि जैसी इच्छित की जाय।" सन् १६५४ में प्रकाशित उसकी "पुस्तक सेकेन्ड डिफ़ेन्स आव दी इंगलिश पीपुल" (Second Defence of the English People) प्योरिटन कवि द्वारा प्योरिटन प्रोटेक्टर के प्रति स्नेहपूर्ण प्रशंसा अभिव्यक्त करती है। "उसने उन समस्त झूठी आशाओं, भयों और मनोविकारों को, जो आत्मा को कष्ट देते हैं, या तो विनष्ट कर दिया है या उसने उन्हें अधीन करना सीख लिया है।" ओलिवर को प्रत्यक्ष रूप से संबोधित करते हुए वह आगे कहता है, "जब आप हम लोगों के बीच हैं, तो वह मनुष्य जो इंग्लैंड की सुरक्षा के विषय में चिन्तित है ईश्वर में समुचित विश्वास नहीं रखता। प्रतिष्ठा के आकांक्षी उन कुछ लोगों को छोड़कर जो उसकी रक्षा नहीं कर सकते, जो अपने से अधिक योग्य व्यक्ति को प्रदान की गई प्रतिष्ठाओं से ईर्ष्या करते हैं, या जो लोग यह नहीं जानते कि ईश्वर को इससे अधिक प्रिय या बुद्धि के अनुकूल और कुछ भी नहीं है कि सर्वोच्च सत्ता सर्वोत्तम और सर्वाधिक बुद्धिमान पुरुष को ही दी जानी चाहिये, हम सभी लोग सम्प्रभुता आपकी अतुलनीय योग्यता व गुण को सहर्ष समर्पित करते हैं।" पार्लमेंट की बुद्धिमता में उसे ऐसा कोई ऐसा विश्वास नहीं था, जिसके कारण लडलो (Ludlow) और वेन (Vane) जैसे व्यक्तियों के लिये प्रोटेक्टरेट की धारणा दृष्टिकोण गणतन्त्रवाद से असंगत हो जाती। फिर भी इस ओर स्पष्ट संकेत है कि क्रॉमवेल का शासन उसे अपर्याप्त राष्ट्रीय जान पड़ा। उस सर्वशक्तिशाली प्रोटेक्टर से वह आग्रहपूर्वक कहता है, "इस पर प्रायः विचार कीजिये कि देश ने आपकी देख-रेख में कितनी बहुमूल्य अमानत रखी है। जिस स्वतन्त्रता को प्रतिभा और सद्गुण सम्पन्न व्यक्तियों से प्राप्त करने की आशा करना था, उसे अब वह केवल आप ही से, और केवल आपके द्वारा प्राप्त करने की आशा करता है। स्वतन्त्रता की अब तक रक्षा करने वाले आप भी अब यदि इस पर आक्रमण कर बैठें तो धर्म-निष्ठा और साधुता के व्यापक हित को इससे ठेस पहुँचेगी। संकट और

कष्ट के समय के अपने साथियों को अपनी साथ रखने के अतिरिक्त आप हमारी स्वतन्त्रता को इतनी प्रचुर और सुरक्षित किसी अन्य मार्ग द्वारा नहीं बना सकते।" उसकी इच्छाएँ शासन के आधार को व्यापक करने से भी आगे थीं। क्रॉमवेल पर लिखे गये सॉनेट के मुख्य भाग में चर्च का राज्य से सम्बन्ध विच्छेद करने की माँग सम्मिलित थी। जब तक धर्म शासनाधिकारियों से सम्बन्धित रहा स्वातन्त्र्य मन्दिर अपूर्ण ही रहा; और वह अधिकाधिक आश्वस्त होता गया कि जनता के अधिकारों को देने या वापस लेने की सत्ता एक व्यक्ति के हाथ में नहीं होनी चाहिये, चाहे वह कितना ही निःस्वार्थ और पुन्यात्मा क्यों न हो।

कामनवैल्थ के समर्थकों (Commonwealthsmen) से भिन्न, मिल्टन यह नहीं कहता कि स्वतन्त्रता का भव्य प्रसाद पार्लमेंट पर टिक सकता है। उसकी पहले की रचनाओं में कहीं भी हम जनतन्त्र के सिद्धान्तों की ऐसी उपहासात्मक निंदा नहीं पाते। व्यक्ति को स्वतन्त्रता का जन्मसिद्ध अधिकार है, सत्ता का नहीं। वह लगभग रूढ़ से शब्दों में पूछता है, "आप लोगों के निर्बन्ध मताधिकार की रक्षा केवल इसलिए कौन करेगा कि आप लोग अपने गुट के लोगों को या उस व्यक्ति को चुन सकेंगे, जिसमें योग्यता कुछ भी न हो पर जो आप लोगों को खर्चीली दावतें देगा और अधिक से अधिक मदिरा पान करा सकेगा? क्या इस गणतन्त्र का नेतृत्व उन लोगों के हाथों में सौंप देना चाहिये, जिन्हें कोई अपने व्यक्तिगत व्यापार का प्रबंध भी नहीं सौंपेगा? कौन ऐसी कल्पना करेगा कि ऐसे अधिकारों के समूह द्वारा वह थोड़ा सा भी अधिक स्वतन्त्र हो सकेगा?" इस प्रकार मिल्टन एक शोकजनक अवस्था पर पहुँचता है। प्रोटेक्टर के प्रति उसकी प्रशंसा के बावजूद भी वह अप्रकट रूप से एक व्यक्ति के शासन से असंतुष्ट था। जनता की सम्प्रभुता में आस्था होते हुए भी उसे शासन के प्रातिनिधि के रूप में विश्वास नहीं था।

कवि ने कामनवैल्थ (Commonwealth) का समीप आता हुआ पतन चिंतामग्न क्रोध से देखा; और जब पुनर्स्थापन संभव हो गया, तो उसने "रेडी-ऐंड ईजी वे टू एस्टैब्लिश ए फ्री कॉमनवेल्थ" लिखना प्रारम्भ किया। फरवरी सन् १६६० में प्रकाशित यह प्रचार-पुस्तिका उसके द्वारा लिखी गई अन्य रचनाओं

में सर्वाधिक साहसपूर्ण और भावनापूर्ण थी। राजपद अनावश्यक, कष्टकारक और खतरनाक है और एक व्यक्ति के शासन के प्रत्येक रूप का तिरस्कार किया गया है। "वे लोग या तो आवश्यक रूप से पागल हैं या मोहाविष्ट हैं जो अपने सामान्य सुख और सुरक्षा की मुख्य आशा किसी एक व्यक्ति पर निर्मित करते हैं, जो यदि भला निकला तो अन्य मनुष्यों की अपेक्षा अधिक भला नहीं हो सकता और यदि बुरा हुआ, तो बिना किसी रोकटोक के अधिक दुष्टता "करने की शक्ति उसके हाथों में होती है।" संप्रभु का कार्य "अधम जनता के सतत अभिवादन और चापलूसी के बीच अपने को पूर्णतः वैभवशाली बनाए रखना—है।" राजनीतिक अवस्था की ओर दृष्टिपात करने पर वह तीव्र वेदना में जोर से विलाप कर उठता है, "राष्ट्र युद्ध भूमि में अपनी स्वतन्त्रता को प्राप्त करने के लिए इतना साहसी हो और उसे प्राप्त कर लेने के बाद यह न जानता हो कि उसका प्रयोग या सम्मान कैसे किया जाये, बल्कि नीचता और मूर्खतापूर्वक अपनी गरदन पुनः उसी जुए के नीचे डाल दे, जिससे उसने छुटकारा पाया था और अपनी विजय के फल पराजित के चरणों में डाल दे तो यह एक ऐसा उदाहरण होगा कि राजा और अत्याचारी तक भी इसकी बराबरी करने की डींग नहीं मार सकते।" वह पुनः मानवीय विधियों से उच्च विधि-संहिता का सहारा लेता है। "हम लोग पहले की पार्लमेंट के किसी विधान से नहीं बल्कि केवल प्राकृतिक विधि से बँधे हैं, जो सम्पूर्ण मानवजाति के लिए प्रामाणिक और उचित मूलभूत विधि है।"

अपने देश के इस महान संकट के काल में मिल्टन का क्या सुझाव था? वह शांतिपूर्वक मान लेता है कि "समस्त प्रतिभावान और चतुर व्यक्ति" उससे सहमत हैं कि एक अधिनायक या हाउस आव लार्ड्स रहित स्वतन्त्र कामनवैल्थ (Commonwealth) सरकार निश्चय ही सर्वोत्तम शासन है। यह सच है कि ऐसा शासन कभी स्थापित नहीं हुआ था, परन्तु अब इसे बिना किसी कठिनाई या विलम्ब के हमेशा के लिए स्थापित किया जा सकता है। यदि जनता अपने पूर्वाग्रहों (Prejudices) को त्याग कर और अपने हित को ध्यान में रखते हुए सुयोग्य सैन्य-अधिकारी (Knights) और जिला अधिकारी (Burgesses) चुने, तो यह उद्देश्य पूर्ण हो जायेगा। यहाँ यह लेखक अद्भुत नूतनता

का सृजन करता है, "ग्रैंड कौंसिल" (Grand Council) स्थायी बनी रहेगी। जलपोत हमेशा चलता रहता है, और यदि चालक अच्छी तरह से पतवार चलायें, तो उन्हें क्यों बदला जाये ? "परिवर्तनशील तथा अस्थायी पार्लमेंटों से हम लोग कैसे लाभान्वित हो सकते हैं ? यदि उनके पास कोई काम न होगा तो वे उसका सृजन कर लेंगी।" फिर भी उसे लगता है कि यह स्थायित्व सहन न किया जा सकेगा। "यदि उन लोगों की आकांक्षाओं को, जो यह सोचते हैं कि वे शासन में भाग नहीं ले पाते, इससे चोट पहुँचे और वे अपने सामने चुने गए लोगों की निरन्तरता सहन न कर सकें, या यदि उन्हें यह भय हो कि सत्ता पर दीर्घकालीन आधिपत्य अत्यन्त ईमानदार आदमी को भी भ्रष्ट कर सकता है, तो हाल ही में प्रतिपादित उपकरण उपस्थित है कि प्रति वर्ष सिनेट के एक-तिहाई सदस्य हटा दिए जायें।" परन्तु उसने यह बात अशोभनीय रूप से ही स्वीकार की है। यह क्रम बहुत कुछ भाग्य-चक्र जैसा है। एक अस्थिर आधार से किसी प्रकार की आशा करना व्यर्थ है और सबसे सुरक्षित मार्ग यही है कि अपराध में दंडित होने के अतिरिक्त अन्य किसी कारण से किसी को न हटाया जाय।

मिल्टन की अन्तिम महान प्रचार-पुस्तिका में उसके अपने समस्त राजनीतिक विचारों का खंडन मिलता है। उस युग के स्वतन्त्रता के उस महानतम समर्थक ने, उस दासत्व की अपेक्षा जिसके विरुद्ध वह इतने उत्साह से लड़ा था, एक अधिक भारी दासत्व का प्रतिपादन किया। 'एरीओपेजिटिका' (Areopagitica) को स्वयं उसके रचयिता के विरुद्ध ही उद्धृत करने की इच्छा होती है। "दुनिया से अपने को अलग करके काल्पनिक (Utopian) राजनीति में पड़ने से, जिसे प्रयोग में नहीं लाया जा सकता, हमारी दशा कभी नहीं सुधरेगी।" एक शताब्दी के बाद जॉन एडम्स (John Adams) ने प्रश्न किया कि "क्या इसे कोई भय से काँपे बिना पढ़ सकता है?" "एक ऐसी सभा जिसके सदस्य जीवन भर के लिए हों ? जब शासन की अन्य कोई श्रेष्ठतर पद्धति प्रस्तावित नहीं की गई, तो इसमें आश्चर्य ही क्या कि जनता ने राज-परिवार को वापस बुलाया।" फिर भी इस पुस्तिका की रचना का कारण समझना असंभव नहीं है। संघर्ष के प्रारम्भिक काल में उसने प्रबल और शक्तिशाली राष्ट्र को निद्रा के पश्चात् जागते हुए मनुष्य की भाँति देखा था। इंग्लैंड में स्वतन्त्रता की विजय उसे

सम्पूर्ण संसार के लिए एक महत्वपूर्ण घटना प्रतीत हुई। सन् १६५४ में उसने लिखा था, "मैं पृथ्वी पर के तमाम राष्ट्रों को उनको दीर्घ काल से खोई हुई स्वतन्त्रता को पुनः प्राप्त करते देखता हूँ; मैं उन्हें स्वतन्त्रता और सभ्यता का वरदान संसार के राज्यों में प्रसार करते हुए देखता हूँ।" राष्ट्र के लिए उच्चतर सभ्यता की ओर चरण रखने के अपूर्व अवसर और अपने सहवासियों की अपरिपक्वता में परस्पर विरोध ही वह कारण था जो उसे स्थायी सभा के (Senate) के निराशाजनक विरोधाभास की ओर ले गया। मिल्टन एक पैगम्बर था, दार्शनिक नहीं। अब तक अन्य किसी व्यक्ति ने स्वतन्त्रता को इतने पवित्र और निःस्वार्थ भाव से प्यार नहीं किया है। परन्तु ऐसे राजनीतिक शिक्षक बहुत कम हुए हैं जिन्होंने इन विषयों को, कि कैसे स्वतन्त्रता प्राप्ति होती है और कैसे इसकी रक्षा की जाती है, इतना कम समझा।

(२)

'ओशियाना' (Oceana) के लेखक, जेम्स हेरिंगटन ने चार्ल्स प्रथम के यहाँ जैन्टिलमैन आव दि बैडचैम्बर (Gentleman of the Bedchamber) के रूप में नौकरी शुरू की। वुड (Wood) लिखता है, "उसके प्रतिभावान होने के कारण सम्राट को उसका साथ बड़ा प्रिय था, औरचैम्बर (Chamber) के अन्य सदस्यों की अपेक्षा वह उससे बातचीत करना पसन्द करता था। शासन के विषय में वे प्रायः वाद-विवाद किया करते थे। परन्तु जब वे कॉमनवेल्थ (Commonwealth) के विषय में बात करते, तो ऐसा मालूम होता था कि राजा इसे सहन नहीं कर पाता है। जिस मनुष्य ने राजा के कारावास के उदास समय में भी उससे कॉमनवेल्थ के विषय में बात की और फिर भी उसका स्नेह पाया और बदले में उसे अपना स्नेह दिया, वह अद्भुत आकर्षण का व्यक्ति है। उसने सन् १६११ में कुलीन परिवार में जन्म लिया। सामान्यता ऑक्सफोर्ड में रहते हुए उसने अनेक बार महाद्वीपीय योरोप की यात्रा की तथा लगभग आधे दर्जन देशों के राजदरबारों और मंत्रिमंडलों से संघर्ष रखते हुए उनकी भाषा, साहित्य और संस्थाओं का अध्ययन किया। अपने जीवन के अन्तिम वर्षों में वह कहा करता था कि इंग्लैंड छोड़ने के पूर्व वह राजतंत्र और

आभिजात्यतन्त्र, जनतन्त्र, धनिकतंत्र को केवल शब्दकोष में देखे जाने वाले कठिन शब्द समझता था। नीदरलैंड्स, डेनमार्क और फ्रांस का भ्रमण करने के पश्चात् वह इटली गया; वह वेनिस में अधिकांश समय तक ठहरा जहाँ उसके जीवन की वास्तविक राजनीतिक शिक्षा प्रारम्भ होनी थी। उसके द्वारा वेनिस की शासन पद्धति के अध्ययन का इतना विशेष महत्व केवल इसीलिए नहीं है कि वह इसका प्रथम अध्ययनकर्त्ता था, बल्कि इसलिये भी कि उत्तकाल के प्रतिष्ठित विचारकों में केवल उसने अपने अनेक सुझावों को इससे लिया।

हैरिंगटन इंग्लैंड में गणतंत्रवाद में पूर्ण विश्वास प्राप्त करके लौटा और उसके विचारों ने उस महान संघर्ष में जो शीघ्र ही देश में फूट पड़ा, उसे किसी दल में स्वतंत्रतापूर्वक शामिल होने से रोका। फिर भी सन् १६४७ में उसने बन्दी राजा के अधीन एक पद स्वीकार कर लिया। राजा को, जैसा "उसे बताया गया था उससे पूर्णतया भिन्न व्यक्ति पाकर" वह उसका उत्कट स्नेहिल हो गया और चाहे जैसे लोगों के बीच हो, उसने राजा के समर्थन के लिए प्रत्येक अवसर का लाभ उठाया। उनकी राजनीतिक वाद-विवाद की बात विदेशों में भी पहुँची। कर्त्तव्यपरायण राज पक्षावलम्बियों ने घोषणा की कि राजा ने एक बहस में उसे परास्त कर दिया था। दोनों पक्षों का विश्वास प्राप्त होने के कारण स्वभावतः उसने समझौता कराने के लिए अपने प्रभाव का प्रयोग किया, यद्यपि उसके अपने सिद्धांत पूर्णतया अप्रभावित रहे। परन्तु अपने स्वामी की ओर से उसके द्वारा किये गए हस्तक्षेपों को गलत समझा गया और वह अपने पद से हटा दिया गया। गणतंत्रवादियों की मित्रता और दैवी अधिकार का समर्थक दोनों को समान सम्मान करता है। वे फिर कभी नहीं मिले, और आब्रे (Aubrey) ने हैरिंगटन को प्रायः यह कहते हुए सुना था कि "राजा की मृत्यु के अतिरिक्त उसके अन्तर में और कोई चीज उतनी गहरी नहीं उतरी।"

जब राजतंत्र का अन्त हो गया तो वह उस राजनीतिक व्यवस्था के निर्माण में लग गया, जिसने उसका नाम अमर कर दिया। हमें इस बात का विश्वास दिलाने के लिए कि सन् १६५६ में प्रकाशित 'ओशियाना' लेखक का गौरव-ग्रंथ था, 'अपहृत बालक (Stolen child) के लिए अपने पिता के साथ

लेडी क्लेपोल के विवाद वाली आकर्षक कथा की आवश्यकता नहीं है। निस्संदेह यह उसकी पूर्ण व्यवस्था की पूर्ण व्याख्या है। इसकी शैली प्रभावशाली नहीं है, और इसलिए यह पुस्तकों की उस बृहद् कोटि में जा पड़ी है, जिनका उल्लेख तो प्रायः होता है, परन्तु जिन्हें पढ़ा बहुत कम जाता है। हम इसमें मिल्टन की भाषा जैसी गर्जना, हॉब्स की सारगर्भित संक्षिप्तता, हैलीफैक्स के प्रभावशाली सूत्र नहीं पाते; फिर भी हैरिंगटन इनमें किसी से भी अधिक मौलिक है।।

वह यह निर्देश करते हुए पारम्भ करता है कि शासनों के मूल्यांकन का वास्तविक सिद्धान्त शक्तियों के संतुलन का सिद्धान्त है जो वेनिस-राष्ट्रमंडल (Commonwealth) के संस्थापकों का आविष्कार है। शासन का परमोत्कर्ष वहाँ है जहाँ सम्प्रभुत्व सीमित नहीं, अपितु "संतुलित" होता है। प्रथम दृष्टि में हमें यह प्रतीत हो सकता है कि यह हमें मिश्रित शासन के परिचित उपकरण के निकट ले आता है। परन्तु यह सादृश्य केवल शक्ति विभाजन के तथ्य तक ही सीमित है। राज्य में सम्पूर्ण सत्ता दो प्रकार की होती है—बाह्य तथा आंतरिक–जो एक ओर धन से प्राप्त होती है और दूसरी ओर बौद्धिक ख्याति से। भौतिक सत्ता का कर्तव्य आधारभूत समता सुरक्षित करना है तथा ऊपरी ढाँचे में नवीनता सुरक्षित करना बौद्धिक सत्ता का कर्तव्य है।

परन्तु ये निष्कर्ष कैसे प्राप्त किये जायेंगे? राजनीतिक चिन्तन में हैरिंगटन का प्रमुख अनुदान इसमें है कि वह यह बताता है कि सत्ता का विभाजन आगे चलकर सम्पत्ति के विभाजन के अनुरूप होना चाहिये। इस परिणाम पर वह अंशतः अपने देश की अनुभूतियों द्वारा पहुँचा। उसने कहा की हेनरी सप्तम के राज्यारोहण के समय से भूमि उत्तरोत्तर अधिकाधिक मात्रा में सामन्तों (nobility) से जनता के हाथों में आती गई है और सत्ता को आवश्यक रूप से इनका अनुसरण करना चाहिये। बड़ी रियासतों के टुकड़े करने की प्रवृत्ति को एक भूमि विषयक विधि से प्रत्येक व्यक्ति को प्रतिवर्ष २००० पौन्ड के मूल्य की भूमि रखने की सीमा बाँधने और सम्पत्ति का सब बच्चों में विभाजन द्वारा गतिवान किया जाना चाहिये। यद्यपि उसने भूमि के सम्बन्ध में ही चिन्तन किया और लिखा पर उसने अनुभव किया कि हालैंड और जेनेवा

के व्यावसायिक समुदायों में सत्ता पूँजी के विभाजन का अनुसरण करेगी। आधुनिक विचारकों में राजनीतिक व्यवस्था और कार्य-प्रणाली पर आर्थिक वातावरण के निश्चित प्रभाव को स्वीकार करने वाला वह पहला व्यक्ति था।

इसके बाद, जीवन की नवीनता, जिससे राज्य उन्नति करता है, क्रमिक परिवर्तन (rotation) से प्रभावित होती है। क्रमिक परिवर्तन इस बात को निश्चित कर देता है कि, जिस प्रकार शरीर में रक्त प्रवाहित होता रहता है और हृदय द्वारा उद्वेलित होने के कारण स्थिर नहीं हो पाता, उसी प्रकार कॉमनवेल्थ के शासन में समाज का प्रत्येक सदस्य भाग ले। क्योंकि इसका पूरा लाभ केवल वहीं उठाया जा सकता है जहाँ मताधिकार द्वारा वास्तविक इच्छा व्यक्त हो, यह आवश्यक है कि निर्णय की यह स्वतंत्रता मतदान द्वारा सुरक्षित की जाय। इन सिद्धातों को ध्यान में रखने पर शासन-यन्त्र का निर्माण सरल हो जाता है। कोई से बीस व्यक्ति ले लो; उनमें व्याप्त विभिन्नता स्वयं को तुरन्त अभिव्यक्त कर देगी। इनमें से छः किसी न किसी मात्रा में अन्य लोगों की अपेक्षा कम मूर्ख होंगे और ये लोग ही नेतृत्व करेंगे। दूसरे शब्दों में "स्वाभाविक अभिजात्यतंत्र" समस्त मानव समाज में व्याप्त है। इसके सदस्यों का कर्त्तव्य जनता का परामर्शदाता बनना होता है; उनका कार्य वाद-विवाद करना और मंत्रणा देना। यदि वे लोग इससे अधिक कर सकें तो सम-शासन नहीं होगा; फलस्वरूप निर्णय करने के लिये एक और कौंसिल होनी चाहिये। क्योंकि सिनेट समाज की बुद्धिमत्ता का प्रतिनिधित्व करेगी जो आभिजात्यतंत्र में निहित है, उसी प्रकार असेम्बली (assembly) को समाज के हित का प्रतिनिधित्व करना चाहिये, जो समस्त जनसमूह में निहित होता है। असेम्बली का कर्त्तव्य सिनेट के प्रस्तावों को स्वीकार अथवा अस्वीकार करना है। शासनाधिकारियों के चुनाव के पश्चात् पूर्ण होकर शासन-तन्त्र को संक्षेप में "प्रस्तावित करने वाली सिनेट, निर्णयकारी जनता और निष्पादन करने वाली कार्यकारिणी" कहा जा सकता है।

वास्तविक शासन-तन्त्र अनुनय पर आधारित होने के कारण, संविधान की व्याख्या करने के लिये साप्ताहिक कक्षाओं की व्यवस्था की जानी चाहिये और सहस्रों पदाधिकारी जनता को मतदान के रहस्यों के विषय में प्रारम्भिक शिक्षण

देते हुए सारे देश का दौरा करें, क्योंकि स्थानीय और साधारण सभी निर्वाचन इसी सिद्धान्त पर व्यवस्थित होंगे। यहाँ तक कि राजकवि (Poet Laureate) भी लोकमत द्वारा चुना जाना चाहिये। काॅमनवेल्थ का सार समानता है। भूमि सम्बन्धी कानून के लागू हो जाने पर कुलीन और प्रतिष्ठित वर्ग सम्पदा के कारण नहीं, बल्कि अपनी शिक्षा और जनसेवा करने की क्षमता द्वारा राज्य में प्रतिष्ठा प्राप्त करेगा। जनता के निर्णय द्वारा निर्धारित, जब उसकी अन्तर्निहित योग्यता ही, सम्मान और प्रतिष्ठा का एक मात्र साधन रह जाएगी, तो धन संग्रह करने की आकांक्षा अधिक प्रचलित नहीं रहेगी।

राष्ट्र का धार्मिक जीवन एक राष्ट्रीय कौंसिल के नियंत्रण में रहेगा। किसी धर्माधिकारी का पद रिक्त होने पर दोनों विश्वविद्यालयों में से एक के दो प्रतिनिधि जाएँ—विश्वविद्यालयों का बुद्धिमत्तापूर्वक सुधार किया जाना चाहिए—तथा वे वाइस-चान्सलर व 'कनवोकेशन' से एक 'प्रोबेशनर' की नियुक्ति के लिए प्रार्थना करें। विश्वविद्यालयों द्वारा चुना हुआ उम्मीदवार अपने पैरिश (Parish) में जाए और एक वर्ष बाद उक्त पैरिश के निवासियों का मत बैलट द्वारा लिया जाए। यदि मतदाताओं में से दो-तिहाई अपनी स्वीकृति प्रकट करें, तो 'प्रोबेशनर' मान्यता प्राप्त रूप से मिनिस्टर का पद ग्रहण करेगा। योग्य उमीदवारों को पादरी-वर्ग (ministry) में आने के लिये प्रोत्साहित करने के लिये राष्ट्र में प्रत्येक पादरी को वृत्ति में प्रति वर्ष सौ पौंड की वृद्धि कर दी जाए। अंतःकरण की स्वतंत्रता सुरक्षित रखने के लिये किसी व्यक्ति विशेष अथवा उनके संगठन द्वारा दबाव न डाला जाये। धार्मिक स्वतंत्रता केवल सहिष्णुता में नहीं अपितु अयोग्यताओं के पूर्ण अभाव में भी निहित है; विवादास्पद प्रश्नों का निबटारा दोनों विश्वविद्यालयों के धर्मशास्त्रियों (divines) के परस्पर वादविवाद परन्तु स्वतंत्र निर्णय द्वारा होगा। पादरी अपने कर्त्तव्यों की उपेक्षा करने का कोई कारण न पा सकें, इसलिये वे किसी दूसरे पद की नियुक्ति के लिये अयोग्य होंगे। इस प्रकार जनता की स्वतंत्रता और राज्य के अनन्यतम विद्वान पुरुषों का निरीक्षण संयुक्त किया गया है। अन्य किसी राजनीतिक लेखक ने राज्य के कल्याण और जीवन के लिए शिक्षा के महत्व पर अधिक स्पष्टता से विचार नहीं किया है। शिक्षा की एक

श्रेष्टतर पद्धति "डिफेन्सिओ सेकेन्डा" (Defensio Seconda) में प्रोटेक्टर को संबोधित मिल्टन के प्रार्थना पत्रो म थीं और "लैटर टु हार्टलिब" (Letter to Hartlib) में एक योजना की रूपरेखा प्रस्तुत की गई थी; परन्तु हैरिंगटन राज्य के नियंत्रण में सार्वलौकिक और अनिवार्य शिक्षा की आधुनिक पद्धति का प्रभावशाली रूप में पूर्व-ज्ञान करते हुए व्यावहारिक प्रस्तावों के साथ सम्मुख आया।

हैरिंगटन द्वारा अपने विचारों के लिये काल्पनिक पृष्ठभूमि का संकलन प्रोटेक्टरेट के कठोर प्रतिबंध द्वारा अनुप्रेरित था। उसकी राजनीतिक रचनाएँ काल्पनिक विनोद मात्र नहीं, बल्कि अपने देशवासियों के लिये सच्चा और व्यावहारिक उपदेश थीं। 'ओशियाना' (Oceana) स्वप्नलोकवादी रचनाओं (Utopia) में न्यूनतम काल्पनिक है और राजनीतिक मनन में ऐतिहासिक पद्धति के प्राचीनतम उदाहरणों में से एक है। उसने कहा है, "कोई व्यक्ति यदि वह सर्वप्रथम इतिहासविज्ञ और पर्यटक नहीं हैं तो राजनीतिज्ञ नहीं बन सकता। क्योंकि यदि उसे इतिहास का ज्ञान नहीं है तो वह नहीं बता सकता कि अतीत में क्या रहा है, और यदि वह पर्यटक नहीं है, तो वह नहीं बता सकता कि वर्तमान समय में क्या है। परन्तु वह जो न यही बता सकता है कि क्या हो चुका है और न यही कि अब क्या हो रहा है वह कदापि नहीं बता सकता कि क्या होना चाहिये अथवा क्या हो सकता है।" जैसा कि उसको सह-राजसेवी ने लिखा है, उसकी जानकारी में "हैरिंगटन विभिन्न इतिहासों का सर्वश्रेष्ठ विद्वान था।" सन् १६५६ के संकटकाल में उसने "माडेल आव ए कॉमनवेल्थ फिटेड टू दी प्रैजेन्ट स्टेट आव दिस नेशन" (Model of a Commonwealth fitted to the Present State of this Nation) के प्राक्कथन में सात प्रमुख ऐतिहासिक गणतांत्रिक संविधानों की रूपरेखा दी गई है। यद्यपि वह विवेक अथवा प्राकृतिक विधि के विचारों का दृढ़तापूर्वक समर्थन करता है; पर "ओशियाना" का प्रत्येक सिद्धान्त स्वीकृत करने के पूर्व-इतिहास की कसौटी पर कसा गया है।

फिर भी यह अस्वीकार करना व्यर्थ होगा कि इसमें अति सिद्धान्तवादिता के चिह्न हैं जिस प्रकार पिट (Pitt) ने गॉडविन (Godwin) की

पुस्तक 'पॉलिटिकल जस्टिस' (Political Justice) को इसलिए दबाने से अस्वीकार कर दिया कि तीन गिन्नी की वह पुस्तक कोई हानि नहीं कर सकती। उसी प्रकार क्रॉमवेल ने 'ओशियाना' (Oceana) के प्रचार की अनुमति इसलिए दे दी कि खतरनाक होने के लिये यह बहुत अव्यावहारिक थी। 'ले' एस्ट्रेन्ज' (L' Estrange) में काफी तथ्य के साथ कहा गया था, "स्वतन्त्र राज्य के हमारे उत्कट समर्थक आसामान्य एकता, असामान्य ईमानदारी और असमान्य निर्मलता की पूर्वकल्पना कर लेते हैं।" हैरिंगटन क्रम (rotation) के सिद्धान्त का समर्थन करता है, क्योंकि उसका विश्वास है कि शासन के नाटक में अभिनय करने के लिये योग्य और सक्षम व्यक्ति विपुल मात्रा में प्राप्त हैं। वह निर्वाचन की सार्वलौकिकता के सिद्धान्त का समर्थन करता है क्योंकि बेक्सटर (Baxter) के शब्दों में, उसे विश्वास है कि बुद्धिमान लोगों को चुनने के लिये लोग पर्याप्त बुद्धिमान हैं और भले लोगों के चुनने के लिये वे काफी भले हैं। उसका विश्वास है कि शासन-तन्त्र के विभिन्न अंग संविधान में उनके लिये निर्धारित कार्यों से संतुष्ट रहेंगे। वह दृढ़ता से घोषित करता है कि, "इस संविधान की कौंसिल में आवश्यक रूप से राष्ट्र की बुद्धिमता और उसका कल्याण सान्निहित होना चाहिये।" परन्तु स्पार्टा और वेनिस की संस्थाओं द्वारा प्राप्त परिणाम के प्रति उत्साह में वह भूल जाता है कि स्वतन्त्रता उनके जाल में लगभग खो सी गई थी। ह्यूम ने कहा था, हम स्वतन्त्रता की पर्याप्त सुरक्षा या कष्टों का निवारण किसी ऐसी योजना से नहीं हो सकते, जिसमें सिनेट किसी प्रस्ताव को जन-मत तक पहुँचने के पूर्व ही अस्वीकार कर दे।

फिर भी हैरिंगटन की इन रचनाओं में विचारों की व्यापकता है जो मिल्टन के समान ही ध्यानग्राही है, और वे सविस्तार वर्णन के चातुर्य से संयुक्त हैं जो उसकी अपनी निजी वस्तु है। अपने किसी भी समकालीन की अपेक्षा उसने अधिक स्पष्टता से देखा कि शासन सावयविक है, और इसे समाज की सामाजिक तथा आर्थिक परिस्थितियों में से ही विकसित होना चाहिये। वह उन विचारकों की अग्रिम पंक्ति में है जिन्होंने प्रजातांत्रिक सिद्धान्तों को प्रगति के हितों के समान ही व्यवस्था के हितों से संश्लिष्ट किया है। यह महान् विचारक थोड़े समय के लिये अपने देश में सम्मानित हुए बिना नहीं रहा इस विषय में और एथोनी वुड

(Anthony Wood) की प्रामाणिकता पर विश्वास करना कठिन नहीं है कि "ओशियाना" (Oceana) आतुरता से खरीदी जाती थी। उसने ऐसी अभिरुचि उत्पन्न की कि सन् १६५६ में 'रोटा क्लब' (Rota club) की, जो शायद इंग्लैंड के इतिहास में वादविवाद का सबसे पहला क्लब है, पुस्तक के प्रस्तावों पर बहस करने के लिये नींव डाली गई। यह सौभाग्य की बात है कि हमें इस प्रसिद्ध क्लब की कार्यवाहियों का इसके एक सदस्य ऑब्रे (Aubray) द्वारा सजीव वर्णन प्राप्त हैं। वह हमें सूचित करता है कि उस समय यह मत अधिक व्यापक था कि मानवीय दृष्टि में राजा की वापसी की कोई सम्भावना नहीं थी। वार्तालाप बहुत ही सजीव और विद्वतापूर्ण थे; ऐसे न तो उसने कभी सुने थे न सुनने की आशा करता था। निस्संदेह उनके आगे पार्लमेंट के वादविवाद नीरस थे। प्रति दिन सायंकाल कमरा खचाखच भर जाता था। मतदान की पेटी का प्रयोग एक विशेष आकर्षण था, जिसका प्रयोग वादविवाद समाप्त होने पर किया जाता था। पेपीज़ (Pepys) कई बार उस ओर घूम पड़ा था और वहाँ वह 'भद्र-पुरुषों का महान् संगम और प्रशंसनीय वार्तालाप" था। रिचार्ड क्रामवेल (Richard Cromwell) की राजच्युति और डिक्लेरेशन ऑव ब्रेडा (Declaration of Breda) के बीच प्रकाशित अनेक संक्षिप्त रचनाएँ हैरिंगटन की व्याख्या के जनता के मस्तिष्क पर पड़े प्रभाव को अन्यान्य प्रमाण हैं। लगभग एक वर्ष तो उसका नाम प्रत्येक व्यक्ति की जबान पर था। परन्तु राष्ट्र प्रयोगों से ऊब चुका था, और काल्पनिक रचनाएँ (Utopias) चाहे वे कितनी ही प्रशंसनीय क्यों न रही हों, राजा, लार्डस और कामन्स के ऐतिहासिक संगठन के सम्मुख अस्वीकृत कर दी गईं। पुनर्स्थापन ने उसकी प्रगति अवरुद्ध कर दी और कुछ दिनों के कारावास ने उसके विवेक को अंशतः हिला दिया। यद्यपि वह कई वर्ष जीवित रहा परन्तु उसने लिखना बन्द कर दिया और उसकी मृत्यु एक अनाकर्षित घटना ही रही।

परन्तु हैरिंगटन की शिक्षाएँ उसकी मृत्यु के साथ ही समाप्त नहीं हो गईं। ह्यूम ने 'ओशियाना' (Oceana) को कामनवेल्थ का एक मात्र विवेक पूर्ण नमूना घोषित किया और कॉलरिज (Coleridge) ने उसके रचयिता को थ्यूसीडाइड्स (Thucydides), मैकियावेली (Machiavelli) और बेकन

(Bacon) की श्रेणी में रखा। ब्रिटिश संग्रहालय में सुरक्षित एक हस्तलिखित लेख मतदान प्रणाली के सर्व प्रथम महान् समर्थक के प्रति ग्रोटे (Grote) द्वारा की गई प्रशंसा प्रकट करता है। अटलांटिक सागर के उस पार उसकी रचनाएँ और अधिक प्रचलित थी और वहाँ उनकी खूब प्रसंशा होती थी। कैरोलिना (Carolina), न्यू जेर्सी (New Jersey) और पैनसिलवेनिया (Pennsylvania) के संविधानों में उसके विचारों का समावेश है और एक शताब्दी पश्चात् अमेरिकी संविधान के निर्माण के पूर्व और पश्चात् के विवादों में उसकी प्रामाणिकता उद्धृत की गई। उसको रचनाएँ ओटिस (Otis) और जॉन (John Adams) के लिये प्रमुख राजनीतिक ग्रंथ बन गईं और जैफ़रन (Jefferson) की प्रति कांग्रेस (Congress) के पुस्तकालय में सुरक्षित हैं। क्रान्ति के काल में फ्रेंच भाषा में अनुवादित होकर उन्होंने स्ये (Sieyes) को उसके अनेक विचार प्रदान किए। इस प्रकार हैरिंगटन का नाम आधुनिक संसार की तीन महान् क्रांतियों में हमारा ध्यान आकर्षित करता है।

——

अध्याय ६

विंस्टनले और साम्यवादी

यद्यपि श्रमिक वर्ग इस विशाल संघर्ष से पृथक रहे, परन्तु वे भी इस सामान्य आशा से पूर्ण थे कि गणराज्य (Republic) की स्थापना सुधार-युग का प्रारम्भ करेगी। बहुमूल्य धातुओं की प्राप्ति के नवीन स्रोतों की खोज के परिणामतः हुई मूल्य-वृद्धि की परिणति पारिश्रमिक की वृद्धि में अति मंद गति से हुई और जीवन की कई आवश्यक वस्तुओं पर एकाधिकारी मूल्यों के माँगे जाने के कारण कठिनाई और अधिक बढ़ती गई। इन पुरानी अनिष्टकर बातों के साथ उस शताब्दी के पाँचवे दशक में असाधारण रूप से खराब फसलों की शृंखला भी सम्मिलित हो गई। युद्ध भी अपने साथ करों में विशाल वृद्धि और सैनिकों को मुफ्त आश्रय देने की असाध्य पीड़ा लाया। यद्यपि निर्धनों की दयनीय स्थिति पर सदैव बहस होती थी पर उस समय की प्रचार-पुस्तिकाएँ और समाचार-पत्र इस शोकोद्‌गार से भरे पड़े हैं कि परिस्थिति में कोई सुधार नहीं किया जा रहा था।

दिसम्बर सन् १६४८ ई० में प्रकाशित एक पुस्तिका में साम्यवाद के नए सिद्धांत की रूपरेखा प्रस्तुत की गई। "दी लाइट शाइनिंग इन बकिंघम शायर" (The Light Shining in Buckinghamshire) अपने उपशीर्षक में संसार में दासता के मुख्य कारण की विवेचना की घोषणा करती है। ईश्वर के अनुदान के द्वारा सब लोग एक समान थे, और कोई व्यक्ति अपने अन्य साथियों पर शासन करने के लिए नहीं बनाया गया था। "परन्तु मनुष्य अपनी इन्द्रियों की दासता में पड़कर एक अवरोधक बन गया, जिससे सम्पूर्ण भूमि कुछ लोभी हाथों में आ गयी और अन्य लोग उनके दास बन गये।" इन लुटेरों में उद्दंडतम दूसरों की दुःष्कर्म करते समय रक्षा करने के लिये राजा बनाया गया। प्रत्येक मनुष्य को समुचित अंश मिलना चाहिये, ताकि किसी को अभाव में भीख

माँगना या चोरी न करना पड़े। शासन-कार्य जनता द्वारा चुने गये उन वृद्ध व्यक्तियों द्वारा चलाया जाना चाहिये, जो प्रत्येक कस्बे और गाँव के समस्त प्रश्नों का झंझट बढ़ाए बिना निपटारा करें। मगर इस वक्त हम कुलीनों और पुरोहितों द्वारा अनुशासित थे। हमारा कुलीन और भद्र वर्ग प्रारम्भ में ही विजेता विलियम (William the Conqueror) का सेवक था; उनके उत्थान से उनके देश का विनाश हुआ और उनके दमन से जनता के अधिकारों की पुनर्स्थापना होगी। "नीच पुरोहित हमारे समस्त अधिकारों और संविधान को दैवी विधि बताते हैं। इन विध्वंसकारियों को नष्ट कर दो और अब इनसे और न ठगे जाओ; इन घृणास्पद धोखेबाजों को अलग हटा दो।"

"टु योर टेन्ट्स्, ओ इजराइल" (To your tents, O Israel) की उद्घोषणा, जिससे यह अनोखी पुस्तिका समाप्त हुई थी, चार मास पश्चात् प्रतिफलित हुई। १६ अप्रैल १६४६ को कौंसिल ऑव स्टेट (Council of State) को निम्नलिखित गुप्त सूचना प्राप्त हुई। "पिछले सप्ताह रविवार को, कोई एवरार्ड (Everard) नामक व्यक्ति जो किसी समय सेना में था, पर पदच्युत कर दिया गया और जो अपने को पैगम्बर कहता है, तथा चार अन्य व्यक्ति सरे (Surrey) में सेंट जार्ज हिल (St. George's Hill) पर आये और खोदना शुरू किया और जमीन में चुकन्दर, गाजर और सेम बो दिया। अगले सोमवार को वे और अधिक संख्या में वहाँ पर उपस्थित थे। शुक्रवार को वे बीस-तीस की संख्या में फिर आये और उन्होंने पूरा दिन खुदाई करते हुए व्यतीत किया। वे सभी उद्यानों की सीमाओं को तोड़कर नष्ट कर देने और उन्हें समतल कर देने की धमकी देते हैं और उनमें बुआई करना चाहते हैं। वे कहते हैं कि "दस दिन के भीतर वे चार या पाँच हजार हो जायँगे और पड़ोस के लोगों को धमकी देते हैं कि वे पहाड़ियों पर उन सबको आने और काम करने के लिये विवश कर देंगे।" यह पत्र ब्रैडशॉ (Bradshaw) द्वारा फेयर फैक्स (Fairfax) के पास इस प्रार्थना के साथ प्रेषित कर दिया गया कि वह कुछ घुड़सवारों को उस अव्यवस्थित जनसमूह को तितर-बितर करने के लिये भेज दे। तुरन्त फौज की एक टुकड़ी भेज दी गई और तीन बार फेयर फैक्स को सूचना दी गई कि मामला ध्यान देने योग्य नहीं है। बीस से अधिक

खोदने वाले कभी नहीं आये। अगले दिन नेता एवरर्ड और विंस्टनले, कौंसिल ऑव स्टेट (Council of State) के सम्मुख उपस्थित हुए और उन्होंने अपने कार्यों के बारे में जवाब दिया ? एवरर्ड ने घोषणा की कि जनता की समस्त स्वाधीनताएँ विजेता विलियम (Conqueror) के आगमन के पश्चात् समाप्त हो गई है। मुक्ति का समय अब समीप है और ईश्वर पृथ्वी के वैभव का उपभोग करने के लिये उन्हें उनकी स्वतंत्रता वापस लौटा देगा। उसे एक दैवी स्वप्न दिखाई पड़ा था और एक वाणी ने उसे पृथ्वी को खोदने, जोतने तथा उसकी उपज को प्राप्त करने आज्ञा दी थी। वे सम्पत्ति से उलझना या किन्हीं सीमाओं को तोड़ना नहीं चाहते थे, बल्कि समान अधिकार वाली और बिना जोती हुई भूमि को लेना और उसे लाभदायक बनाना चाहते थे। वे अपने पूर्वजों की भाँति खेमों में रहने के लिये तैयार थे। वक्ता ने सेनापति की उपस्थित में यह करते हुये अपना हैट अपने सिर पर ही रखा कि वह भी उन्हीं जैसा जीव है। उस समय सरकार की ओर से और कोई कदम नहीं उठाये गए। शायद उन्होंने यह अनुभव किया कि अफ़वाह ने खोदने वालों की महत्ता अतिरंजित कर दी थी, जिन्हें एवरर्ड के भाषण के पश्चात् वे लोग संकटहीन हठधर्मी मान लेने के लिये प्रवृत्त थे। फिर भी जाँच-पड़ताल के एक सप्ताह बाद एक घोषणापत्र में इस तथ्य पर प्रकाश डाला गया कि उनकी सीधी-साधी स्वीकारोक्ति के पीछे, जिसे उन लोगों ने सुना था, एक दर्शन था, जिससे प्रत्येक वर्तमान संस्था को संकट था।

"ट्रू लेवलर्स स्टैन्डर्ड अड्वॉन्स्ड, ऑर दि स्टेट आव कम्युनिटी ओपेन्ड ऐन्ड प्रेजेन्टेड टु दी सन्स आव मैन" "(True Levellers Standard advanced or the State of Community opened and presented to the Sons of Man)" इंग्लैंड और संसार की सत्ताओं के लिये इस बात की घोषणा थी "कि सामान्य लोगों ने सेंट जार्ज हिल पर खुदाई क्यों आरम्भ की।" घोषणापत्र में कहा गया है कि "प्रारम्भ में महान स्रष्टा विवेक (Reason) ने पृथ्वी को पशुओं और मनुष्यों के समान उपयोग के लिये बनाया।" परन्तु मनुष्य अज्ञान में पड़कर बंधन में पड़ता गया और जानवरों की उसके प्रति दासता से अधिक वह स्वयं अपने समान लोगों का दास

बन गया। पृथ्वी खरीदी और बेची जाती थी और वह शासकों द्वारा सीमाओं में बाँध ली गई। कुछ समय के लिये स्रष्टा, विवेक, ने स्वयं का अस्वीकृत होना सहन किया; वहीं से अधिराज्य और सम्पत्ति की रक्षा के लिये युद्ध शुरू हुए। परन्तु जब पृथ्वी पुनः सामान्य सम्पत्ति बन जाएगी, जो इसे अवश्य ही होना चाहिये क्योंकि विवेक और धर्मग्रन्थ (scriptures) इसी ओर इंगित करते हैं, तो शत्रुता समाप्त हो जाएगी; क्योंकि कोई भी व्यक्ति दूसरे से बड़ा भाग लेने की इच्छा नहीं करेगा। उनके दर्शन का स्पष्टीकरण करने के पश्चात् उनके आचरण का औचित्य दर्शाते हुए, लेखक घोषणा करते हैं कि उन्हें इस कारण विरोध का सामना करना पड़ रहा है कि वे सार्वभौमिक स्वतंत्रता का उद्घोष करते हैं, जो न केवल उनका जन्म-सिद्ध अधिकार है, वरन् जिसे उन्होंने युद्ध में अपने धन और रक्त का मूल्य देकर प्राप्त किया है। सभी भूस्वामी, 'तुम चोरी नहीं करोगे' इस धर्मादेश का उल्लंघन करके जीवित रहे हैं। उन लोगों ने सरल-हृदय निर्धनों को अपने लिए कम मजदूरी पर काम करने के लिए तैयार कर लिया, और उनके काम से अतुल धनराशि एकत्र कर ली। स्वयं अपने परिश्रम द्वारा ही निर्धनों ने अपने उपर शासन करने के लिए अत्याचारी उत्पन्न किए। स्वप्नों में उन्हे यह बताया गया था कि वे कहाँ खोदना प्रारम्भ करें और यद्यपि वह जमीन बंजर हो सकती है, उन्हें सृष्टा का आशीर्वाद प्राप्त होगा। "ऐ बादशाहों, तुम्हारे पास मूल्यवान कपड़े हैं और तुम्हारे पेट भरे हुए हैं; तुम्हारे पास सम्मान और सुख है; पर जान लो कि निर्णय दिवस (day of judgment) उदित हो गया है और तुम इससे देर तक बचे नहीं रह सकते हो। वे गरीब लोग जिनका तुम उत्पीड़न करते हो, पृथ्वी के मुक्तिदाता होंगे। यदि तुम अनुकम्पा के भागी होना चाहते हो, तो पृथ्वी को मुक्त हो जाने दो; सम्पत्ति की श्रृंखलाओं को छिन्न-भिन्न कर दो।"

सेंट जार्ज हिल (St. George's Hill) पर खुदाई करने वाले चुपचाप तब भी अपने काम में लगे रहे। मई के अन्त में गिल्फोर्ड (Guildford) से लंदन जाते हुए रास्ते में फेयरफैक्स (Fairfax) ने उक्त स्थान का निरीक्षण किया और उनमें से बारह को परिश्रम से काम करते पाया। सेनापति की एक हल्की सी फटकार का उन्होंने यह उत्तर दिया कि राजकीय जमीन

खोद रहे हैं तथा नार्मन विजय के द्वारा जिस राजा का इस पृथ्वी पर अधिकार था, उसकी मृत्यु के कारण वह फिर सामान्य जनता की हो गई। सेनापति के निरीक्षण के एक दिन बाद दल का एक और घोषणापत्र मैनर्स के लार्डों (Lords of Manors) को संबोधित करते हुए प्रकाशित हुआ, जो सार्वजनिक भूमि पर के वृक्षों को काट और बेंच रहे थे। "ईश्वर ने हमारे हृदय को यह समझने के लिये प्रकाश दिया है कि पृथ्वी आप लोगों को स्वामी और हम लोगों को आप का दास बनाने के लिये ही नहीं बनाई गयी थी।" परन्तु उन्होंने पुनः घोषणा की कि उनका बलप्रयोग करने का तनिक भी विचार नहीं था। इस प्रार्थना का कोई प्रभाव न पड़ने पर फेयरफैक्स को एक पत्र भेजा गया। दरबार में, और जब वह इन्हें देखने आया था, तो उनसे उसने बड़ा कोमल और संयत व्यवहार किया था। और इससे खोदने वाले उससे न्याय की प्रार्थना करने के लिये प्रोत्साहित हुए थे। राजतंत्र के समय बनाई गई विधियों ने मध्य वर्ग और पादरियों को स्वतंत्रता दी थी। परन्तु जनता के लिये कुछ नहीं किया था।

जुलाई में विंस्टनले और उसके दो साथी किंग्स्टन न्यायालय के सम्मुख, जिसके पंच ऐसे लोग थे, जो नार्मन सत्ता के दृढ़ समर्थक थे अनधिकार प्रवेश के अपराध के कारण लाए गए। उनके बोलने पर प्रतिबन्ध लगा दिया गया और उन पर भारी जुर्माना किया गया। उन्होंने अपनी गिरफ़्तारी और दंड का विवरण उन घृणित बुराइयों में से कुछ की एक सूची के साथ जो विजेता विलियम (William the Conqueror) ने इंग्लैंड में प्रचलित की थीं, कामंस सभा के पास भेजा। सूची में वकील और दशांश कर (tithes) की बुराइयाँ भी सम्मिलित थीं। शरद् काल में इस लघु समुदाय पर एक अपेक्षाकृत अधिक गम्भीर आक्रमण किया गया, जब सैनिकों की एक टुकड़ी ने उन दोनों घरों को ध्वस्त कर दिया, जिसमें वे रह रहे थे, और लकड़ियों को एक गाड़ी में लाद कर लेते गए। तदुपरांत विंस्टनले का एक लम्बा और प्रभावशाली पत्र आया। पार्लमेंट ने उनसे लगभग यह कह ही दिया था, "हमें कर, निःशुल्क आवास, उत्पादन कर दो, आततायी को निकाल फेंकने में हमारे साथ अपने जीवन का दाँव लगा दो और हम तुम्हें स्वतंत्र मनुष्य बना देंगे।"

वे इससे सहमत हुए थे, विजय प्राप्त हुई और लाभ बराबर-बराबर विभाजित होना चाहिये। राजा के ऊपर विजय के कारण वे सार्वजनिक भूमि के स्वतंत्र उपयोग की माँग करते थे, क्योंकि इसे उन्होंने अपने रक्त और धन का मूल्य देकर खरीदा था। यदि सरकार ने उनकी प्रार्थना स्वीकार न की, तो उसे उनके पालन के लिए धन जुटाना पड़ेगा, जब कि यदि उन्हें वंध्या भूमि को उपजाऊ बनाने दिया जाय, तो इंग्लैंड समृद्ध होगा। किसी ईसाई राष्ट्र के लिए यह कलंक का विषय है कि इतनी अधिक बन्ध्या भूमि होते हुए भी इतने अधिक लोग भूखों मरें। ऐसा प्रतीत होता है कि उन मकानों के ध्वस्त किए जाने से वह छोटी बस्ती समाप्त हो गई। परन्तु खोदने वालों का नेता हताश होने वाला, अथवा अपने सिद्धान्तों को किंचित भी परिवर्तित करने वाला नहीं था। "ए न्यू इयर्स गिफ्ट फॉर दी पार्लमेंट ऐंड आर्मी" (A New Year's Gift for the Parliament and Army) में वह यह सिद्ध करने की चेष्ठा करता है कि शाही सत्ता की शाखाएँ अभी विद्यमान थीं। विलियम ने पादरियों को दशांश कर (Tithes) दिलाने का वादा इस शर्त पर किया था कि वे "अपने उपदेशों से उसकी महत्ता बढ़ाएँगे।" विधि की प्राचीन पुस्तकों का अब भी प्रयोग होता है और उन्हें जला देना चाहिए। यदि नई सरकार बननी है, तो विधियाँ भी नई होनी चाहिए। क्योंकि इंग्लैंड एक जेल है; उसकी विधियों की सूक्ष्मताएँ उसके सीखचे हैं और वकील उसके जेलर। "आज भी गरीब चार पेंस पर दिन भर काम करने के लिए मजबूर किए जाते हैं और अन्न मँहगा है। और दशांश कर लेने वाला पादरी उनका मुँह बन्द कर देता है और उन्हें बताता है कि "गरीब ही समस्त सुखों का भागी होगा"—इस घोषणा का अर्थ "मस्तिष्क के आन्तरिक संतोष" से है। मैं आप लोगों से कहता हूँ, कि धर्मग्रन्थ की बातों को वास्तविक और भौतिक रूप में पूरा करना है। आप 'लेवलर' नाम का उपहास करते हैं। मैं आपसे कहता हूँ ईसा मसीह प्रधान 'लेवलर' (Leveller) हैं।"

जेरर्ड विंस्टनले ने धीरे-धीरे इंग्लैंड के साम्यवादियों के मान्य नेता का पद प्राप्त कर लिया था। वह अपनी आत्मकथा के कुछ वाक्य "वाचवर्ड टु दि सिटी आफ लंदन" (Watchword to the City of London) के

प्राक्कथन में देता है। "किसी समय मैं स्वतंत्र मनुष्य था, परन्तु क्रय और विक्रय की चोरी भरी कला में धोखेबाज़ों द्वारा हार कर अपनी जायदाद और व्यवसाय से हाथ धो बैठा। इसलिए मैं देहाती जीवन व्यतीत करने को विवश कर दिया गया, परन्तु यहाँ भी उसी प्रकार के करों के कारण मेरी निर्बल पीठ ने इस बोझ को जितना मैं सहन कर सकता था, उससे अधिक पाया।" जब उसकी सांसारिक सफलता की आशा अतिक्षीण थी। उसे एक अप्रत्याशित स्रोत से सांत्वना मिली। "एक वर्ष भी नहीं हुआ कि मेरा हृदय मधुर विचारों से भर गया और कई ऐसी वस्तुओं का मुझे अलौकिक शक्ति द्वारा रहस्योद्घाटन हुआ जिनके बारे में न तो मैंने किसी पुस्तक में पढ़ा था और न किसी मनुष्य के मुँह से ही सुना था। तब मैंने अपना फावड़ा उठाया और सेंट जार्ज हिल पर खोदना आरम्भ किया।" इस प्रयोग में अवरोध उत्पन्न किया गया था, और विंस्टनले अब अपने दर्शन के सृजनात्मक पक्ष को पूर्ण करने में लग गया। सन् १६५२ में "दि ला ऑव फ्रीडम" (The Law of Freedom) प्रकाशित हुई जिसे 'पृथ्वी के समस्त राष्ट्रों' को समर्पित किया गया था।

समर्पण क्रॉमवेल को सूचित करता है कि उसने और उसके अधिकारियों ने अकेले अपनी चेष्ठाओं से ही नहीं बल्कि सामान्य जनता की सहायता से विजय प्राप्त की, जिनका इस विजय में हिस्सा लेने का अधिकार था और जिन्हें केवल नामावली का परिवर्तन मात्र कभी संतुष्ट नहीं करेगा। दशांश कर (Tithes) अभी भी गरीब की बचत निगल जाता है। जहाँ विधियाँ अच्छी भी हैं, उनमें दण्डनायक दखल देता है। सबसे बुरी बात यह है कि जमींदार अब भी अत्याचारी के रूप में देश का शासन करते हैं। यह पूछा जा सकता है कि यदि दशांश कर और सेवाएँ समाप्त कर दी जाएँ, तो पादरी और जमींदार कैसे जीवित रहेंगे। परन्तु नये समाज में न तो कोई क्रय होना चाहिए और न विक्रय, क्योंकि मोल-भाव के साथ छल आया और छल दमन का आविर्भाव हुआ। क्रय और विक्रय के विलुप्त हो जाने के पश्चात् वकील नहीं रहेंगे। परन्तु क्या एक व्यक्ति दूसरे की अपेक्षा अधिक धनवान नहीं हो सकेगा ? दो कारणों से ऐसा नहीं हो सकता। सर्वप्रथम, समृद्धि मनुष्य को अपने साथियों का उत्पीड़न करने और युद्ध की ज्वाला भड़काने की

शक्ति प्रदान करती है। दूसरे, सचाई के मार्ग से ऐश्वर्य संभव नहीं हैं। मनुष्य केवल मात्र अपनी चेष्टाओं से धनवान नहीं हो सकता, और यदि उसे दूसरों से सहायता मिलती है, तो संयुक्त परिश्रम के परिणाम में उनका भी हिस्सा होता है। भूमि के निर्विघ्न उपयोग से ही स्वतंत्रता संभव है। सम्पत्ति अवश्य हो; परन्तु वह सब की हो। सभी पदाधिकारी निर्वाचित हों, और कोई भी एक पद पर एक वर्ष से अधिक आसीन न रहे। उत्पादन व्यक्तिगत और सहकारी दोनों ही प्रकार के प्रयत्न से हो। प्रत्येक व्यक्ति, जो कुछ वह उत्पादित करे, सार्वजनिक भंडार में ले आवे और जितनी उसे अपने पोषण अथवा कार्य के लिए आवश्यकता हो ले जाय। प्रत्येक से एक विशिष्ट मात्रा अपेक्षित होगी और यदि वह पूर्ण न हो तो श्रमिक निरीक्षण में रखा जाय, और यदि आवश्यक हो तो उसे दंड भी दिया जाय। शिक्षा के साथ, जो सार्वजनिक होगी, प्राविधिक शिक्षा दी जायेगी। चालीस वर्ष से कम के सब व्यक्तियों के लिए काम करना अनिवार्य हो और अपनी इच्छा पर उसके बाद भी काम जारी रखा जा सकता है। जो व्यक्ति साठ वर्ष के हो गए हैं, वे समस्त समाज के कल्याण की देख-रेख करेंगे। नगर और काउन्टी के अधिकारी काउन्टी पार्लमेंट और न्यायालय का निर्माण करें। विशेष रूप से प्रसिद्ध लोगों के अतिरिक्त राष्ट्रीय पार्लमेंट के सदस्य चालीस वर्ष से अधिक आयु के हों और वे सभी बीस वर्ष से अधिक आयु के सब लोगों द्वारा निर्वाचित हों। पादरी वर्ग का मुख्य कार्य साप्ताहिक अवकाश के दिन सप्ताह में हुई घटनाओं का सम्बन्ध बताना, देश की विधियों को समझाना और सामान्य अभिरुचि के विषयों पर भाषण के रूप में शिक्षा देना होगा। विवाह नागरिक अधिकार है और पर्याप्त कारणों पर एक अधिकारी और साक्षियों की उपस्थिति में दोनों पक्षों के द्वारा घोषणा करने पर भंग किया जा सकेगा। क्रय और विक्रय के लिए मृत्यु दंड मिलेगा। और भूमि किसी एक व्यक्ति की सम्पत्ति है, ऐसी घोषणा करने पर वक्ता को कठोर दंड दिया जाएगा।

विंस्टनले के विषय में कहने को अब कम ही रह गया है। अपने विचारों को लेखबद्ध करने के पश्चात् शीघ्र ही वह 'क्वेकर्स' (Quakers) से जा मिला ज्ञात होता है। सन् १६५८ में प्रकाशित उसकी अन्तिम रचना

"दि सैन्ट्स पैरेडाइज (The Saints Paradise) उसकी विचारों की व्यापकता को शांतिप्रियता से जो अधिकांशत एक नवीन तत्व हैं, सम्मिलित करती है। "जिस हृदय में यह भाव है कि वह धन, भूमि, मनुष्य और जीवों की सहायता के बिना जीवित नहीं रह सकता, वह असत्मार्ग की ओर बढ़ चुका है; विशुद्ध आत्मा अथवा अन्तःकरण की पवित्र विधि हृदय को बताती है कि इसे इन सबसे मुक्त होना चाहिए और अपनी जीविका के लिए सृष्टा पर भरोसा रखना चाहिए।" अपने अंग्रेज समकालीनों में एक मात्र उसने ही जनसाधारण के कल्याण को न केवल राजनीतिक संस्थाओं, अपितु सामाजिक और आर्थिक दशाओं का मापदंड बताया। वह इस बात के बारे में आश्वस्त था कि उनके अधिकार समाज की वर्तमान अवस्था में प्राप्य नहीं हैं, और वह साम्यवाद की पूर्ण योजना को विकसित करने की ओर अग्रसर हुआ। उसका विश्वास था कि यदि विशिष्ट परिवर्तन कर दिये जायें और प्राकृतिक विज्ञानों का अध्ययन "मनमौजी कल्पनाओं" का स्थान ले सके तो मानव स्वभाव में परिवर्तन किया जा सकता है। परन्तु अपनी समस्त अपरिक्वताओं के होते हुए भी विंस्टनले यह समझ सकने का कि मानव जाति की अन्तरात्मा द्वारा नाम मात्र के लिए स्वीकृत कुछ विचारों में पर्याप्त गम्भीर सामाजिक और आर्थिक परिवर्तन अन्तर्निहित हैं, और यह घोषणा करने का कि जब तक समाज नैतिक आधार पर संगठित नहीं किया जाता, कोई भी राजनीतिक परिवर्तन आशान्वित परिणाम उत्पन्न नहीं कर सकता, दावा कर सकता है।

अध्याय ७

विभिन्न सम्प्रदाय

प्रथम दो स्टुअर्ट राजाओं का विरोध राजनीतिक कारणों की अपेक्षा धार्मिक कारणों से अधिक उत्पन्न हुआ; और नए तथा पुराने, दोनों ही सम्प्रदायों ने उस राजनीतिक विवाद में भाग लिया, जिससे संघर्ष के वर्ष पूर्ण रहे थे।

(१)

जिस प्रकार स्काटलैंड द्वारा अपने धार्मिक जीवन पर आक्रमण के सफल विरोध के परिणामस्वरूप सन् १६४० में पार्लमेंट को आमंत्रित किया गया, उसी प्रकार सन् १६४३ में स्काटलैंड के निवासियों की सहायता 'सॉलेम लीग' (Solemn League) तथा कॉवनेन्ट (Covenant) और प्रेसबिटेरियन विचारों के अस्थायी प्रभुत्व द्वारा क्रय कर ली गई। जहाँ जेम्स और एलिजाबेथ के समय के अधिकांश प्रेसबिटेरियन सहमतिवादी थे, वहाँ उनके स्काटलैंड के भाई, जिनका अपना चर्च था, अधिक उग्र वर्ग के थे। उनके ऐंग्लिकन इतिहासकार हेलिन (Heylin) ने शोक प्रकट किया कि जनसाधारण का संप्रभुत्व और राजा के पदच्युत करने का अधिकार ऐसे अधिकार थे, जिनके बारे में कोई भी सच्चा स्काटलैण्डवासी तब तक शंका करने का साहस नहीं करेगा, जब तक उसे अपने देश के साथ गद्दारी करने वाला न समझ लिया जाय। हाथॉर्न्डेन (Hawthornden) के साधुप्रकृति गायक ड्रमंड (Drummond) तक ने घोषणा की कि प्रत्येक राजा को अपने तथा जनता के हित के लिए बकनन (Buchanan) और मेरिआना (Marriana) का अध्ययन करना चाहिए। एंग्लिकन राजसमर्थकों ने प्रेसबिटरवादियों के प्रति अपनी विशेष घृणा संचित रखी, जिन्हें वे उनके शाही सत्ता के तत्पर शत्रु होने के कारण जेसुइटों की श्रेणी में रखते थे। सुधार आन्दोलन (Reformation) ने रोम के पोप के लौकिक सरकारों पर प्रभुत्व के दावे को उलट फेंका था, परन्तु प्रोटेस्टेन्टवाद

के आश्रय में वही माँग पुनः दृष्टिगोचर हुई । राज्य चर्च का सेवक है और उसकी आज्ञाओं का इसे पालन करना चाहिये । प्रजा का कर्त्तव्य चर्च की आज्ञा का पालन करना और दंडनायक की आज्ञा का पालन उसी सीमा तक करना है, जहाँ तक वह चर्च के आदेशों को कार्यान्वित करता है ।

रुदरफोर्ड (Rutherford) की रचनाओं में ही हम उत्तरवासी प्रेसबिटेरियनों के राजनीतिक विचारों की पूर्णतम व्याख्या पाते हैं । कोई समकालीन ऐँग्लिकन लिखता है, "रुदरफोर्ड की नई पुस्तक 'लेक्स रेक्स' (Lex Rex) प्रत्येक व्यक्ति के हाथों में थी, जो ऐसे प्रश्नों से भरपूर थी, जिन्हें शांतिकाल में निन्दनीय देशद्रोह समझा जाता, परन्तु अब वह इतने अधिक सम्मानित बना दिए गए कि जहाँ प्रारम्भ में बकनन के विचारों को देववाणी के रूप में समझा जाता था, वहाँ अब उसे अपर्याप्त राजतन्त्र-विरोधी कहकर निंदित किया गया ।" उसने घोषणा की, कि "समस्त अधिकार-क्षेत्र कृत्रिम है, जिसका स्वरूप सामयिक-आवश्यकता से निर्धारित किया जाता है । यदि राजतन्त्र ही चुना जाय, तो जनसाधारण को राजा के अधिकारों को इस शर्त पर कठोरतम मापदण्ड से माप लेना चाहिये कि यदि शर्तें तोड़ी गईं तो वह फिर से इन्हें अपने हाथ में ले लेगा । इस समझौते का एक पक्ष बन जाने पर वस्तुतः राजा प्रजा का सेवक ही रहा । राजा को चुनना, राजा बनाना है । वंश के आधार पर कोई दावा नहीं किया जा सकता, क्योंकि राजतन्त्र का उद्गम निर्वाचन से हुआ है । इसी प्रकार, राजा की भाँति पार्लमेंट भी जनसाधारण का विरोध नहीं कर सकती । इसकी शक्ति पूर्णतया विश्वास पर आधारित है और जनता इसके द्वारा बनाए हुए कानूनों को रद्द कर सकती है । फिर भी, जनता सामूहिक इकाई के रूप में अपनी बात स्वीकृत करवा सकें, यह कहने का अर्थ यह नहीं है कि उसके विभिन्न अंग जैसा चाहें, करने लगें ।"

जब संघर्ष प्रारम्भ हुआ, प्रेसबिटेरियनों में सर्वाधिक प्रसिद्ध प्राइन (Prynne) था । सन् १६३२ में अपनी नाटकों की आलोचना में सम्राज्ञी पर प्रहार करने के कारण जेल जाने के बाद हाई कमीशन की आज्ञा से उसे अपने कानों से वंचित होना पड़ा और उसने लॉड (Laud) से प्रतिशोध लेने की शपथ ली, जिसे एक दिन उसने मृत्यु द्वार तक पहुँचा कर छोड़ा । बैक्सटर (Baxter)

हमें बताता है कि सन् १६४३ में कामन्स सभा की आज्ञा द्वारा प्रकाशित उसकी संविधान संबंधी महान् पुस्तक "दी सावरेन पावर्स आव पार्लमेंट्स" (The Sovereign Powers of Parliaments) ने उन लोगों पर अमित प्रभाव डाला, जो डगमगा रहे थे। वह इस घोषणा से आरम्भ करता है कि यद्यपि यह विरोधाभास खतरनाक मालूम हो सकता है, पर पार्लमेंट राजा से उच्च है और सामान्य हित के लिए आवश्यक विधेयक पर उसे सहमति देने के लिए विवश कर सकती है, तो वह स्पष्टतया राजा से उच्च हैं। क्योंकि जब पार्लमेंट राजा की उद्घोषणा (Proclamation) को रद्द कर सकती है, तो वह स्पष्टतया राजा से उच्च है। प्राकृतिक और अन्तर्राष्ट्रीय दोनों ही विधियों के अनुसार जनता अत्यन्त न्यायपूर्वक उन अधिनियमों का विरोध कर सकती है, जो उसके अहित के लिए बनाए गए हैं, और अधिकारियों को बन्दी बना सकती है; क्योंकि राजा राज्य का सार्वजनिक सेवक मात्र है। इसी अवस्था में युद्ध न तो देशद्रोह ही है, न राजद्रोह ही, क्योंकि जब कुलीन अपनी पुरातन स्वतन्त्रताओं की रक्षा के लिए कामन्स (Commons) से आ मिले, तो उन्हें विद्रोही नहीं कहा जा सकता। फिर भी इस दृष्टिकोण में राजतन्त्र के प्रति दुर्भाव निहित नहीं है, क्योंकि लेखक राजाओं और राजत्व का सदैव सम्मानकर्ता और रक्षक रह चुका था और सदैव रहेगा। यह प्रमाणित करने के लिए कि उसके सिद्धान्त की कार्यरूप में परिणति से केवल बुरे शासक की हानि होगी, प्राइन अपने पाठकों को वेन्सेस्लास (Wenceslas), मेरी स्टुअर्ट (Mary Staurt) और फिलिप द्वितीय (Philip II) का स्मरण कराता है। इस पुस्तक में पूर्व-दृष्टान्तों के उद्धरण द्वारा पार्लमेंट के पक्ष को वैधिकता का जामा पहना देने की निरंतर चेष्टा की गई है। परन्तु पुरानी न्यायिक श्रेष्ठता पुनः एक बार नवीन वैधानिक श्रेष्ठता का आधार बनाई गई और सेवा तथा राजमुद्रा (Great Seal) पर नियंत्रण की माँग करने में वह परम्परा की सीमाओं को लाँघ गया। एक महत्व-पूर्ण दिशा में वह अपने सभी प्रेसबिटेरियन साथियों से अलग था। वह अधिकांश विधिवेत्ताओं की भाँति 'इरास्शियन' (Erastian) था; उसने स्वयं अपने चर्च की स्थापना का विरोध किया और राज्य की श्रेष्ठता का समर्थन किया।

सेना द्वारा प्रेसबिटेरियन प्राधान्य की समाप्ति किये जाने के पश्चात् प्राइन

का अन्तर्भूत रूढ़िवाद सामने आ गया। सन् १६४८ में पुनः युद्ध आरम्भ होने पर भी पार्लमेंट में प्रेसबिटेरियन बहुमत चार्ल्स से समझौता करता रहा। यद्यपि उसने सैकड़ों पृष्ठ यह सिद्ध करने के लिए लिखे थे कि एक राजा को पदच्युत करना और दूसरे का निर्वाचन करना विवेक और पूर्वदृष्टान्त द्वारा अधिकृत है, पर अब उसने यह अस्वीकार किया कि राजा पदच्युत किया जा सकता है, अथवा उसका पुत्र उत्तराधिकार से वंचित किया जा सकता है। उसने सत्तारूढ़ दल से कहा, "आप लोगों के द्वारा बनाया हुआ कोई अधिनियम राजा की वापसी के विरुद्ध वैध अवरोध नहीं हो सकता। उसने राजा की शर्तों को स्वीकृत करने के लिए भी प्रयत्न किया। उसने लार्ड सभा का जोरों से समर्थन किया, उसकी उपयोगिता के आधार पर नहीं, बल्कि इसलिए कि उनके वंशानुगत अधिकार को स्वीकृत न करना अन्याय की चरम सीमा होगी।" राजतन्त्र और लार्ड सभा की समाप्ति के प्रश्न पर उसने अपनी शक्ति 'ऑलीगार्की' (Oligarchy) और 'प्रोटेक्टरेट' (Protectorate) के विरुद्ध लगाई। पुस्तक और पुस्तिकाओं के उस अनन्त क्रम में आद्योपान्त इंग्लैंड की विधि ही सभी वस्तुओं का मापदंड है। चार्ल्स वैध उत्तराधिकारी था और यह अब प्राइन के लिए पर्याप्त था। किसी राजपक्षावलम्बी ने लिखा है, "वह राजा के अधिकारों को इतना दृढ़तापूर्वक समर्थन करता है कि उसे अपने युग का केटो (Cato) कहा जा सकता है।" समस्त सम्प्रदायों में प्रेसबिटेरियन राजनीतिक दृष्टि से सर्वाधिक रूढ़िवादी थे; और प्राइन, जो कभी भी सीमित राजतन्त्र के आदर्श के परे एक इंच भी नहीं हटा, पुनर्स्थापन का स्वागत करने और चार्ल्स द्वितीय की पार्लमेंटों में बैठने तक जीवित रहा।

इसी के अनुरूप, यद्यपि कानूनी साँचे की अपेक्षा किंचित धार्मिक साँचे में ढला हुआ, एक और रूढ़िवाद इंगलिश प्रेसबिटेरियनों में महानतम् बैक्सटर की रचनाओं में मिलता है। राजकीय चर्च के अधिकांश पादरियों से भिन्न रूप में, उसने पार्लमेंट का पक्ष ग्रहण किया और नेसबी (Naseby) के पश्चात् सेना का पादरी बना। सन् १६५० में उसने "दि सैन्ट्स रेस्ट" (The Saints Rest) में लिखा, "इंग्लैण्ड में चार पाँच वर्षों में हमने क्या ही अभूतपूर्व और शक्तिशाली काम होते देखे।" "शत्रु का कैसा विनाश! कैसी आश्चर्यजनक

घटनायें घटीं और कैसे अप्रत्याशित रूप में !" मगर संघर्ष की उत्तरकालीन घटनायें उसके लिए बड़ी ही अरुचिकर रहीं। वह कभी किसी दल का दृढ़ समर्थक नहीं था। काफी बाद में लिखी गई अपनी आत्मकथा में वह दोनों पक्षों को अपराधी घोषित करता है, "परन्तु कोई भी गलती पर क्यों न हो, जनता की स्वतन्त्रता और सुरक्षा समाप्त नहीं होनी चाहिए।" उसने पादरियों के अधिकारों के उन्मूलन का विरोध किया, यद्यपि इससे उसका विश्वास उठ गया था और उसने राजहत्याओं की तीव्र निन्दा की। यद्यपि उसने 'आलीगार्की (Oligarchy) का विरोध नहीं किया; परन्तु वह उन लोगों से सहानुभूति रखता था, जो ऐसा करते थे। पुनः, अपने एकमात्र धर्मोपदेश के पश्चात्, जो उसने प्रोटेक्टर (Protector) के सम्मुख दिया था, जब वह उससे मिला, तब उसे बताया कि वह पुरातन राजतन्त्र को देश के लिए वरदान मानता है और उससे पूछा कि इंग्लैण्ड ने उसे कैसे समाप्त कर दिया। उसने अपनी आत्मकथा में लिखा है, "मैंने क्राम-वेल और उसके सहयोगियों को खुल्लमखुल्ला देशद्रोह और राजद्रोह का अपराधी घोषित किया। दूसरी ओर यद्यपि राजा के अतिरिक्त अन्य किसी भी शासक के प्रति राजभक्ति की शपथ लेना अवैध है, पर अधीनता स्वीकार करना अवैध नहीं है; और उसका विश्वास था कि ओलिवर की इच्छा मुख्यतः भला करने की ही थी। उसने पुनर्स्थापन का स्वागत किया, चार्ल्स द्वितीय का धर्मोपदेशक बना, और बिशप का पद अस्वीकृत कर दिया; परन्तु 'ऐक्ट आव यूनिफार्मिटी (Act of Uniformity) के अनुसार वह चर्च से निकाल दिया गया और जेफ्रीज (Jeffreys) द्वारा अपमानित होने तथा जेम्स द्वितीय के निष्कासन पर प्रफुल्लित होने के लिए जीवित रहा।

बैक्सटर की राजनीतिक विचारधारा की 'होली कॉमनवैल्थ (Holy Commonwealth) में व्याख्या हुई है। भूमिका की यह दृढ़ घोषणा, "मैं प्रजातान्त्रिक पद्धतियों को नहीं चाहता हूँ" पुस्तक का सारांश है। सरकार के निर्माण के लिए जनता की सहमति सदैव आवश्यक नहीं है। संप्रभु, वह ऐसे शब्दों में लिखता है जो उस पर हॉब्स का प्रभाव दर्शाते हैं, कामनवैल्थ की समस्त वास्तविक विधियों के ऊपर है क्योंकि जो सर्वोच्च है, उसके लिए कोई ऐसा उच्चतर व्यक्ति नहीं है जिसकी आज्ञा का उसे पालन करना हो। विधियाँ विधि-

दाता की इच्छा मात्र है। प्रजातन्त्रात्मक सरकार सब पद्धतियों में निकृष्टतम है। शासक को योग्य और बुद्धिमान होना चाहिए, परन्तु क्योंकि ऐसे लोग कम हैं, इसलिए योग्य व्यक्ति के बाद शीघ्र ही अयोग्य व्यक्ति आयेगा। उत्तरदायी पदों के लिए जनसाधारण की अयोग्यता किसी भी दरबार पर एक दृष्टि डाल देने से सिद्ध होती है। "मैंने प्रजातन्त्र की महानता के विषय में तब सोचा है, जब मैंने किसी विद्वान न्यायाधीश को जूरी के सम्मुख किसी कठिन मुकदमे को प्रस्तुत करते देखा है और वे लोग सारे समय खड़े रहते हैं, जैसे वह ग्रीक या हीब्रू बोल रहा है और इसके पूर्व कि वे मुकदमे को तनिक भी समझ सके हों, जो कुछ भी मुंह में आता है वही निर्णय दे देते हैं, बशर्ते कि उनमें से कोई धूर्त व्यक्ति न हो, नहीं तो वह शेष व्यक्तियों का नायक हो जाता है।" वह आगे लिखता है कि प्रायः पासा फेंकना भी वैसा ही होगा। "हमारे कानून बनाने के लिए घूरे पर से लाए गए व्यक्तियों", "मूर्ख और अधर्मियों के समूह", के प्रति वह कटु शब्दों का का प्रयोग करता है। यद्यपि सरकार निरंकुश नहीं होनी चाहिये, पर प्रभावशाली अवरोध नैतिक नियमों के प्रभाव में ही मिल सकते हैं। अत्यन्त फूहड़ सरकार ही ऐसी शांतिप्रिय प्रजा को सतायेगी। प्रतिक्रियावाद का उन्माद इस घटना से सशक्त रूप में प्रकट होता है कि "होली कामनवैल्थ" मिल्टन और अन्य व्यक्तियों की रचनाओं के साथ, जिनके राजनीतिक सिद्धान्त इसके लिए अभिशाप थे, आक्सफोर्ड में सन् १६८३ में जलाई गई।

राजा की अंतिम पराजय के पश्चात् प्रेसबिटेरियन अपने द्वारा किये गये कार्य को नष्ट करने में लग गये, और प्रेसबिटेरियनवाद के लिए तीन वर्ष के वास्ते रियायत के बदले शाही सत्ता को पुनः स्थापित करने का सुझाव रक्खा। किसी को विश्वास नहीं हुआ कि वास्तव में उनके भाव बदल गए हैं, और चार्ल्स ने स्वयं उन्हें राजतंत्र का शत्रु घोषित किया। बिशप ब्रैमहाल (Bishop Bramhall) ने तीखेपन से कहा कि यदि राजा उनका प्रेसबिटेरियनवाद स्वीकार नहीं करेगा, तो वे लोग जनता का पक्ष लेंगे और जब जनता उनकी इच्छा का विरोध करती, तो वे लोग राजा के पक्ष में हो जाते। राजपक्षावलम्बी कहा करते थे कि प्रेसबिटेरियन राजा को मृत्युस्थल तक ले गये और 'इंडिपेन्डेन्ट्स' (Independents) ने उसका सिर काटा।

हेनरी मोर (Henry More) ने उनके चर्च की उसे "प्रजातांत्रिक पोपशाही" कह कर निंदा की। उन लोगों को जिन्होंने यह अनुभव नहीं किया कि उनकी राजनीति पर धार्मिक आकांक्षाओं का प्रभुत्व है, वे स्वभावतः 'धूर्त और विश्वासघाती" प्रतीत होते थे। प्रेसबिटेरियन विचारों की विजय की तुलना में वे संविधान की रक्षा या नये अधिकारों की प्राप्ति के लिए लेश मात्र चिंता नहीं करते थे। यह बात कि यह अंग्रेजी भावनाओं के विरुद्ध था, इसके अत्यन्त उत्कट समर्थकों द्वारा भी खेदपूर्वक स्वीकार की गई है। पार्लमेंट 'इरास्शियन (Erastian), सेना 'इंडिपेन्डेन्ट' और जनता उदासीन थी अथवा शत्रु-भाव रखती थी। रूदरफोर्ड को किसी सुधार की आशा न रही और बैक्सटर ने अपने जीवन के अन्तिम दिनों में शोक प्रकट किया कि "प्रेसबिटेरियन पद्धति यहाँ के लिए अजनबी ही है।" सन् १६४३ में इसे दबाव के कारण स्वीकार किया गया था, और इंग्लैंड का 'प्योरिटनिज्म' कभी भी यथार्थ में प्रेसबिटेरियन नहीं था।

स्काटलैंड के प्रेसबिटेरियन इंग्लैंड के अपने साथियों की अपेक्षा बहुत कम राजसमर्थक थे। वे राजतंत्र का कितना कम सम्मान करते थे, यह तब प्रकट हुआ जब राजा की फाँसी के बाद चार्ल्स द्वितीय उनके वश में था। अपने पिता तथा अपने पितामह के पापों के वास्ते सार्वजनिक रूप से शोक प्रकट करने के लिए विवश किये जाने पर उसने तीखे किंतु धीमे स्वर में कहा, "मैं सोचता हूँ, मुझे इसके लिए भी पश्चाताप करना चाहिए कि मैं पैदा हुआ।" अपने राज्याभिषेक के समय उसे राजा की शक्तियों की सीमाओं पर एक लम्बा व्याख्यान सुनने के लिए विवश किया गया। 'डन्बर' (Dunbar) की पराजय का क्लेश अंशतः इस विचार द्वारा कम हो गया कि वह कुछ अंशों में प्रेसबिटेरियनों श्रृङ्खलाओं से स्वतंत्र है। दस वर्ष बाद जब वह, मुख्यतया प्रेसबिटेरियनों द्वारा, पुनः सिंहासनारूढ़ हुआ, तो वह बिना उनकी शर्तें स्वीकार किए उनका समर्थन प्राप्त करने के लिए पर्याप्त शक्तिशाली था।

(२)

कुछ अपवादों के अतिरिक्त, जहाँ प्रेसबिटेरियन सीमित राजतंत्र का अनुमोदन करते थे, वहाँ 'इंडिपेन्डेन्ट्स' (Independents) ही गणतंत्रवाद

के प्रधान समर्थक थे। उनकी धार्मिक पद्धति उन्हें शासन पद्धति के प्रजातंत्रात्मक दृष्टिकोण के अनुकूल बनाती थी। जो लोग अपना पादरी चुनते हैं, वे अपने दंडनायक चुनने की भी कामना कर सकते हैं। उनके संस्थापक, राबर्ट ब्राउन (Robert Brown) ने शिक्षा दी थी कि ईसाइयों का कोई भी समूह चर्च बन जाता है और यद्यपि उसने नागरिक विषयों में "दंड नायकों का आदर, सम्मान और उनकी सेवा" करना कर्तव्य ठहराया, पर यह बात इस पूर्वकल्पना पर आधारित थी कि वे जनता द्वारा निर्वाचित होंगे। इस उपदेश का भाव तुरन्त समझ लिया गया और अनेक लोग उसकी रचनाओं को रखने के कारण मृत्यु-दंड के भागी हुए। ब्राउनवादियों के, जिस नाम से प्रारम्भिक 'इंडिपेन्डेन्ट्स' (Independents) पुकारे जाते थे, विचार प्रजातांत्रिक भावनाओं से परिपूर्ण थे। उनके दूसरे संस्थापक बैरो (Barrow) ने विभिन्न समुदायों के बीच संसर्ग और सहयोग की वांछनीयता पर जोर दिया। एक पीढ़ी तक 'कांग्रीगेशनवादियों' (Congregationalists) ने कम ही प्रगति की, परन्तु लगभग तीसरे दशक के मध्य से उनकी संख्या तेजी से बढ़नी आरम्भ हुई। न्यू इंग्लैंड (New England) में प्योरिटन उपनिवेशों की स्थापना ने 'इंडिपेंडेन्सी' (Independency) में अन्तर्भूत प्रजातांत्रिक विचारों के विकास का रास्ता दिखाया। ऐंग्लिकन धर्मशास्त्री शोक प्रकट करते थे कि उनके देशवासी, बेबीलोन (Babylon) की भाँति इंग्लैंड से बाहर भाग रहे हैं। हुकर (Hooker) के नेतृत्व में धर्मशासित मैसाचुसेट्स" (Massachusetts) छोड़ने वालों के लिए बनाये गये "फंडामेंटल आर्डर्स आव कानेक्टीकट" (Fundamental Orders of Connecticut) में नागरिकों की जनरल असेम्बली का संप्रभुत्व और पदाधिकारियों का वार्षिक निर्वाचन सम्मिलित था। सम्पत्ति विषयक किसी योग्यता की माँग नहीं की गई थी और गवर्नर के अतिरिक्त अन्य किसी पद के लिए कोई कोई धार्मिक कसौटी नहीं रक्खी गई थी। यह बात महत्वपूर्ण है कि आधुनिक प्रजातंत्र के प्रथम लिखित संविधान के जनक 'इंडिपेन्डेन्ट्स' (Independent) ही थे।

वेस्टमिंस्टर असेम्बली (Westminster Assembly) के अधि-

वेशनों में पाँच 'इंडिपेन्डेन्ट' (Independent) सदस्यों ने ध्यान आकर्षित किया और सहिष्णुता के ओजपूर्ण समर्थन द्वारा अनेकों को अपना शत्रु बना लिया। बेली (Baillie) ने घोषणा की कि कुछ सदस्य किसी भी दंडनायक की विधिसम्मतता अस्वीकार करते हैं और निस्संदेह विधि-विरोधियों (antinomians) से श्रेष्ठ नहीं हैं। इन आलोचनाओं के उत्तर में उनका नेता सम्मुख आया। जॉन गॉडविन (John Godwin) ऐंग्लिकन पादरी होते हुए भी अपनी धार्मिक और सैद्धान्तिक विचित्रताओं और विरोधों के कारण लॉड के ध्यान में लाया गया और उसके आत्मिक बंधनों ने उसे उन पदों को त्याग देने के लिए अग्रसर किया, जो कैम्ब्रिज में उसकी विद्वता के कारण उसे प्राप्त हुए थे। युद्ध छिड़ने पर उसने उसकी वैधता और आवश्यकता पर एक पुस्तिका लिखी। उसने दृढ़तापूर्वक कहा कि जनता राजा का विरोध नहीं कर रही है, अपितु पतित परिजनों द्वारा संकट में डाले गये उसके शाही व्यक्तित्व, सम्मान और उसकी सम्पत्ति की रक्षा कर रही है। इसके लिए ईश्वर के स्पष्ट नियम और प्रकृति के प्रकाश ने उससे अनुरोध किया है। प्रजा का यह कर्तव्य और साथ ही साथ अधिकार है कि वह अपने से श्रेष्ठ व्यक्तियों के आदेशों का परीक्षण करे। यदि पादरियों ने इसके विपरीत उपदेश देने के बदले इसी सिद्धान्त का उपदेश दिया होता, तो इतिहास में राजाओं का श्रेष्ठतर उल्लेख होता। "किन्तु जहाँ तक राजा पर हिंसा करने और उसका जीवन लेने की चेष्टा का प्रश्न है, मैं उस मार्ग की ओर कभी किसी इच्छा या विचार से अग्रसर नहीं हुआ। राजा को, कैसी ही अवस्था क्यों न हो, मनुष्य की हिंसा से सुरक्षित रहने, और उसके जीवन के अन्न की भाँति केवल ईश्वर के ही हाथों कटने और एकत्रित होने का उचित विशेषाधिकार प्राप्त है।" परन्तु घटनाएँ शीघ्रता से घटीं और गॉडविन भी उनके साथ बदला। राजा के मुकदमे के दौरान में उसने अपनी 'माइट एंड राइट वैलमैट' (Might and Right Well Met) पुस्तिका प्रकाशित की। क्रांतिकारी सिद्धान्त अब स्वयं सिद्ध-सिद्धान्त कहे गये हैं। "किसी पागल व्यक्ति के हाथ से हिंसा द्वारा भी तलवार ले लेना विधिसम्मत है, यद्यपि यह कानूनी तौर पर कभी उसकी नहीं होगी।" यह बेहूदा विरोध है कि सर्वप्रधान आव-

श्यकता के कार्य के लिए जनसाधारण से आदेश नहीं लिया गया है। "सेना, किसी भी सत्ता की अपेक्षा बहुत बड़ी सत्ता की विधि, यही नहीं देश के समस्त कानूनों से भी श्रेष्ठ विधि का अनुसरण करती है; वह विधि है प्राकृतिक आवश्यकता तथा देशप्रेम की विधि, जो ईश्वरीय विधि होने के कारण समस्त मानवीय संगठनों पर अधिकार-क्षेत्र रखती है। निस्संदेह, ईश्वर द्वारा बनाई गई अनेक विधियाँ स्वयं ही अपनी बड़ी बहुत आवश्यकता की विधि को स्थान देना अपमान नहीं समझतीं।" ईश्वरीय और प्राकृतिक विधियों को मानवीय विधियों के ऊपर बताना कई प्रजातांत्रिक लेखकों का सामान्य कार्य था; परन्तु ईश्वरीय विधियों को "आवश्यकता की विधि" के अधीन कर देना कल्पना संबंधी साहसिक कार्यों के उस युग में भी नवीनता ही थी।

गॉडविन के बाद के कथनों में दर्शनीय अपेक्षाकृत अधिक उग्र तत्व सब से अधिक ह्यू पीटर्स (Hugh Peters) के द्वारा जिसे प्रेसबिटेरियन एडवर्ड्स ने ओल्ड और न्यू इंग्लैंड के 'इंडिपेन्डेट्स का अग्रणी नेता' कहा है, लाया गया था। हालैंड और अमेरिका में प्रारम्भिक प्रशिक्षण के पश्चात् वह इंग्लैंड आकर पार्लमेण्ट की सेना का पादरी बना। उसका ओजपूर्ण व्यक्तित्व उसे असाधारण रूप से प्रभावशाली पद तक ले गया और कहा जाता था कि यदि स्वर्ग की कुंजियाँ पीटर के पास है, तो पीटर्स के पास 'ग्रैंडीज़' (प्रमुख अधिकारियों) की अन्तरात्माओं की कुंजियाँ हैं, जिन्हें वह अपनी इच्छानुसार खोलता और बन्द करता है। उसकी प्रारंभिक रचनाएँ असंयत नहीं थी, परन्तु वह रूखे और लगभग क्रूर स्वभाव वाला जान पड़ता है। यदि हम सर फिलिप वारविक (Sir Philip Warwick) का विश्वास कर सकें, तो उसने कारावास से फांसी के तख्ते तक सारे रास्ते भर लॉड (Laud) को चिन्तित रखा और जब राजा का सिर कट कर गिर गया, तो उसने तीक्ष्ण स्वर में "नन्क डिमिटिस" (Nunc Demittis) दुहराया। यदि लिलबर्न (Lilburne) का विश्वास किया जाय, तो पीटर्स ने घोषणा की थी कि तलवार और जो कुछ वह दे, वही विधि है।

(३)

सन् १५२५ के कृषक विद्रोह और मंस्टर (Munster) के दुःख-सुखान्त

नाटक से उनका संबंध उतने ही स्वाभाविक रूप से बपतिस्मावादियों के शत्रुओं द्वारा घोषित किया जाता था, जितना वह स्वयं उनके द्वारा अस्वीकृत किया जाता था। वस्तुतः वह स्रोत जिससे इंगलिश बपतिस्मावादी प्रेरणा ग्रहण करते थे भिन्न था। सत्रहवीं शताब्दी के प्रारंभ में ऐमस्टर्डम (Amsterdam) में स्मिथ (Smayth) और हेलविसे (Helwisse) इंडिपेन्डेन्ट शरणार्थियों से अलग हो गए और मेनो (Menno) के विचारों को ग्रहण कर लिया, जिसने 'एन्टीपीडोबेप्टिज्म' (antipaedobaptism) के साथ, यह भी सीख दी कि कोई भी ईसाई न तो शपथ और न शस्त्र ग्रहण कर सकता है और ईश्वर के निर्णय के विरुद्ध न पड़ने वाली दंडनायक की सब बातों में आज्ञापालन होना चाहिए। इस झंडे के नीचे सन् १५३६ में वेस्टफिलिया (Westphalia) में योरोप के अनाबपटिस्टों के विशाल अधिवेशन के पश्चात् उसने 'माडरेट पार्टी' (Moderate Party) का नेतृत्व किया था और तब से उन लोगों ने विधि-विरोधियों (antinomians) से कोई संबंध नहीं रखा। इसलिए जब हेलविसे ने सन् १६११ में लन्दन में अपना चर्च स्थापित किया, तो उसने अराजकतावादी या साम्यवादी नहीं संयत या मेनोवादी (Mennonite) मत प्रचलित किया। अन्य असहमतिवादी संगठनों के समान बपतिस्मावादियों ने धार्मिक विषयों में दंडनायक का अधिकार अस्वीकृत किया; परन्तु अन्य बातों में उनकी राजनीतिक रूढ़िवादिता निर्दोष थी। सन् १६११ में प्रकाशित पहली घोषणा में "उन लोगों के विषय में बुरे भाव से बोलना, जो प्रतिष्ठित हैं, अथवा सरकार से घृणा करना भयानक अपराध घोषित किया गया है। सन् १६१४ में आत्मिक स्वतंत्रता के प्रतिपादन में बार-बार यह तर्क दुहराया गया है कि इसकी स्वीकृति शांति और व्यवस्था को खतरे में नहीं डालेगी। कुछ वर्ष बाद राजा के प्रति एक निवेदन में उन्हें केवल भय के कारण ही नहीं, बल्कि अपने अंतःकरण से राजभक्त प्रजाजन" कहा गया है। सन् १६४० के संकट के पूर्व के उनके समस्त घोषणा-पत्र और प्रार्थनाएँ इसी प्रकार की हैं।

युद्ध प्रारम्भ होने के साथ इस समुदाय ने तीव्रता से अपनी संख्या में वृद्धि कर ली और इसके कुछ सदस्यों के बीच कम शांतिवादी भावना दृष्टिगोचर

हुई। सन् १६४५ में बेली (Baillie) लिखता है, "सभी सम्प्रदायों में विशेषकर 'अनाबपटिस्टों में वर्तमान दंडनायकों और विधियों के प्रति आज्ञाकारिता और सरकार के मूल तत्वों को नए आकार में निर्मित करने के लिए बार-बार की गई चेष्टाओं के प्रति निश्चित विपरीत भाव है। वे राजतंत्र के प्रति अपने दुर्भाव को अब नहीं छिपाते।" फुलर (Fuller) ने इस उपदेश का दाता उन्हीं को बताया कि कोई राजा अच्छी विधि नहीं बना सकता, यदि वह पूर्णरूपेण सुधरा हुआ न हो। ये शत्रु के द्वारा प्रचलित कथाएँ हैं और इस संप्रदाय के आधिकारिक घोषणापत्र मुखयतया रूढ़िवादी बने रहे। पर बपतिस्मावादियों के हृदय में राजतंत्र के लिए कोई सैद्धांतिक अनुराग नहीं था और उन्होंने राजा की फाँसी भावनाहीन बन कर देखी। सम्प्रदाय के रूप में उन्होंने गणतंत्रवाद कभी ग्रहण नहीं किया; परन्तु कुछ अतिवादी (radical) सदस्यों के विचार "दी गोल्डेन रूल ऑव जस्टिस एडवांस्ड" (The Golden Rule of Justice Advanced) नामक पुस्तिका में अभिव्यक्त हैं। इसका रचयिता केने (Canne) एम्स्टर्डम में पादरी रह चुका था और वापस आने पर उसने ब्राडमीड चैपेल (Broadmead Chapel) की स्थापना की। उसकी पुस्तिका में लोकप्रिय संप्रभुता के सिद्धांत का जनप्रिय रूप वर्णित था। संत पॉल ने आज्ञाकारिता का उपदेश केवल इसलिए दिया था कि कहीं ईसाई यह न सोचें कि गैर-ईसाई दंडनायक के प्रति आज्ञापालन का उसका कोई कर्त्तव्य नहीं है। इस बात से सबको सहमत मानते हुए कि आततायी राजा की हत्या की जा सकती है, केने प्रश्न करता है कि उस पर मुकदमा क्यों न चलाया जाय। वैध कार्यवाही के पश्चात् राजा की फाँसी यदि नवीन बात है, तो यह दुराचारिता नहीं औचित्य और न्यायसंगत आचरण के विचार की ओर संकेत करती थी, जो नई बात थी। प्रोटेक्टरेट (Protectorate) काल में जहाँ तक सम्प्रदाय में कोई क्रान्तिकारी पक्ष था, वह आयरलैंड में नियुक्त सेना में वर्तमान था, जहाँ सन् १६५२ ई० में एक अनाबपटिस्ट को सेनापति नियुक्त करने के लिए बड़ा षड्यंत्र रचा गया था। हेनरी क्रॉमवेल ने शिकायत की कि वे लोग खुल्लमखुल्ला उसके पिता की स्थिति को अस्वीकृत करते और उसके सेवकों के लिए बुरी तरह गाली देते थे। इस अपवाद के अतिरिक्त

उनके विरुद्ध कोई बात नहीं है। बैक्सटर ने, यद्यपि वह उनका मित्र नहीं था, स्वीकार किया कि "उनमें से अधिकांश धर्म और ईश्वर के अनुरागी गंभीर लोग हैं और दूसरों से केवल बच्चों के बपतिस्मा के विषय में मतभेद रखते हैं।" इसके अतिरिक्त यद्यपि जैरमी टेलर (Jeremy Taylor) उन्हें ऐसे अपवाद के उदाहरण के रूप में लेता है, जिसे "उपदेश की स्वतंत्रता" में मानना पड़ेगा परन्तु इसका कारण यह था कि उन्होंने अस्त्र प्रयोग को अवैध माना, और ऐसे सिद्धांतों को माना जो शीघ्र ही शांतिप्रिय लोगों के लक्षण बन गए।

(४)

बपतिस्मावादियों में उग्र व्यक्तियों को पंचम राजतंत्रवादियों (Fifth Monarchy man) का साथ अधिक उपयुक्त लगा। जोसेफ मेडे (Joseph Mede) की योग्यता और विद्वत्ता ने मिलेनैरियन (Millenarian) विचारों का सत्रहवीं शताब्दी के तीसरे दशक में ही प्रचलन कर दिया था, परन्तु १६४० के संकट के पूर्व वे विद्वानों तक ही सीमित रहे। इस सम्प्रदाय का नाम ही एक राजनीतिक दर्शन की रूपरेखा ध्वनित कर देता है। चतुर्थ राजतंत्र समाप्ति के निकट था और संतपुरुषों के शासन द्वारा अनुसरित होने वाला था। इस परिवर्तन की दृष्टि से सभी वर्तमान राजनीतिक व्यवस्थाएँ आवश्यक रूप से अस्थायी हो जाती हैं। यहाँ तक सब सहमत थे। परन्तु इंग्लिश क्रांति के मिलेनैरियन, जर्मनी के सुधार आन्दोलन के मिलेनैरियनों की भाँति, तत्कालीन व्यवस्था की ओर दृष्टिकोण पर पृथक हो गए। क्या उन्हें निष्क्रिय बन कर स्वर्गीय राज्य के आगमन की प्रतीक्षा करनी चाहिए अथवा उसके शीघ्र आगमन के लिए प्रयत्न करना चाहिए ?

सन् १६५५ में थर्लो (Thurloe) ने हेनरी क्रॉमवेल को लिखा, "यह निश्चित है कि पंचम राजतन्त्रवादी, मेरा मतलब उनमें से कुछ से है, हमें रक्त-पात में डालने की इच्छा करते हैं।" इस प्रकार निर्देशित दो पक्षों में नैसबी (Naseby) के नेतृत्व में चलने वाले गुट को अधिक संयत पाया जा सकता है। हैरिसन (Harrison), ओवर्टन (Overton) और अन्य अधिकारियों ने मिलेनैरियन विचार अपना लिया, और फ्लीटवुट (Fleetwood) पर सहानुभूति

से कुछ अधिक की शंका की जाती थी। राजा की मृत्यु के पश्चात् एक सामयिक पुस्तिका-लेखक ने घोषणा की, कि राजतन्त्र का रूप, न कि उसका अधिकार नष्ट हो गया है; और पार्लमेंट भी कम अत्याचारिणी नहीं है। दूसरे ने कहा कि कुलीन तथा शक्तिशाली व्यक्ति शीघ्र ही संत पुरुषों के अधीन होने वाले हैं; और ईसा मसीह के शत्रुओं का तलवार से सामना करना विधिसंगत था। दल का मुख्य लेखक जॉन रोजर्स (John Rogers) क्रमशः ऐंग्लिकन और प्रेस-बिटेरियन रह चुका था। "सैग्रिर (Sagrir) ऑर डोम्सटे ड्राइंग नाइ" में चौथे राजतन्त्र की अधार्मिक विधियों का भडाफोड़ तथा पाँचवें के आगमन की घोषणा करने की बात कही गई थी। अच्छी विधियों का उद्गम जनसाधारण हैं, परन्तु उत्तरोत्तर विजयों ने उनके अधिकार का अपहरण कर लिया है। इसके पूर्व कि ईसा मसीह के चर्च का सुधार हो सके, राष्ट्र के दो कटंक, पादरी और विधिवेत्ता हटा दिए जायँ। चतुर्थ राजतन्त्र शीघ्रता से नष्ट हो रहा है और सहसा गिर जायगा। सन् १६६६ तक पाँचवा राजतन्त्र दिखाई देने लगेगा और शताब्दी के अन्त तक व्याप्त हो जायगा। इसलिए यह देखते हुए कि दुनिया में यह कितने पागलपन का काम होगा, लोगों को अब और भूमि या जायदाद नहीं खरीदनी चाहिए। एक और पुस्तिका ने संत पुरुषों से किसी धार्मिक संगठन में सम्मिलित न होने का अनुरोध किया। कर्म या चिन्तन पर कोई दबाव नहीं डालना चाहिए; और दंडनायक अनावश्यक हैं।

रोजर्स की प्रोटेक्टर (Protector) से आशाजनक प्रार्थना के साथ, रम्प (Rump) के निष्कासन में हैरिसन का भाग तथा इस सम्प्रदाय के प्रति ऑलिवर के सम्मानित संकेत सिद्ध करते हैं कि इस सम्प्रदाय ने नए शासन का विरोध नहीं किया। उन्होंने बेयरबोन्स पार्लमेंट (Barebones Parliament) पर अपनी आशाएँ केन्द्रित कीं, जो मुख्यतया उन्हीं के समर्थकों से बनी थी। असेम्बली ने भी उनकी आशाओं को विफल नहीं किया। इसने पादरी वर्ग का विरोध किया, 'चान्सरी' (Chancery) की समाप्ति की माँग की और कुलीनता को प्राकृतिक विधि के विरुद्ध ठहराया। एक राजसमर्थक इतिहासकार ने घोषणा की, "उनकी बकवास पृथ्वी पर ईसा मसीह के राजतन्त्र का पथ निर्मित करने के लिए है।" परन्तु पार्लमेंट के भंग होने पर यह दल प्रोटेक्टर

(Protector) से अलग हो गया। हैरिसन ने षडयन्त्र करना आरम्भ किया और गिरफ्तार हो गया। रोजर्स ने ओलिवर की, उसे ईसा-विरोधी, पापात्मा, महान् शैतान कह कर, भर्त्सना की। कई लोगों का विश्वास था कि सन् १६५६ में ईसा मसीह प्रकट होंगे, क्योंकि 'जेनेसिस' में पितरों की आयु जोड़ने से यही संख्या निकलती थी। युद्ध के दल का नेता फ़ीक (Feake) था। उसने प्रार्थना की, "देवता! तुम्हीं ने उस सिर को काट देने की आज्ञा दी है, जिसने हमारे ऊपर शासन किया और तुम्हीं ने दुम को ऊपर आ लगने और सिर के स्थान से हमारे ऊपर शासन करने की आज्ञा दी।" वह गिरफ्तार कर लिया गया, परन्तु जब सरकारी गुप्तचर फिर ब्लैक फ्रायर्स (Blackfriars) की सभा में आया तो उस स्थान पर उसे भीड़ लगी मिली—"उसका मन उत्तेजित हो रहा था और सदैव की भाँति दुर्भावना निकल रही थी।" फीक ने अपने मुकदमे में घोषणा की कि ईश्वर न केवल अवैध, बल्कि वैध सरकार को और न केवल इसके दुरुपयोग को बल्कि इसके उपयोग को भी नष्ट कर देगा। एक सभा में इस बात पर बहस हुई कि बेबीलोन (Babylon) को नष्ट करने का कब ठीक समय रहेगा, किसे यह प्रारम्भ करना चाहिये और कैसे इसे किया जाय। सभा ने निश्चित किया कि संत पुरुषों को इसे करना चाहिए, "इसी समय और तलवार के द्वारा।" यह प्रस्ताव शीघ्र कार्यरूप में परिणत किया गया, क्योंकि सन् १६५७ में उनका पहला विद्रोह प्रारम्भ हुआ। थर्लो ने कौंसिल को बताया, "इसमें भाग लेने वालों की संख्या और योग्यता वास्तव में अत्यन्त नगण्य और निस्संदेह तुच्छ है। यद्यपि वे संतों के राज्य के विषय में बड़ी-बड़ी बातें करते हैं और केवल पवित्र आत्मा को आमंत्रित करते जान पड़ते हैं, फिर भी वे जनता को फँसाने के लिये जो प्रलोभन देते हैं, उससे कर, उत्पादन कर, राजस्व और दशांशकर (tithe) पर असर पड़ रहा है।" फिर भी जनमत पूर्णरूप से चौकन्ना हो गया था। हेनरी क्रॉमवेल ने लिखा है, "ये उपद्रवी बड़े खतरनाक और अत्यधिक हठीले स्वभाव के हैं।" ऐसे नामों की सूची प्राप्त हुई जिनका नाश किया जाना था। कई लोगों ने उपदेश दिया कि सभी ईश्वर-विरोधी मार दिए जायँ और कि उनके राज्य में दुष्टों के लिए कोई सम्पत्ति नहीं होगी। शीघ्र ही संत पुरुष दुष्टों की सम्पत्ति हस्तगत कर लेंगे

और ईसा मसीह का राज्य प्रारम्भ हो जायेगा। ऐसे लोग स्वाभाविक रूप से संविधान निर्माण की तुच्छ बातों से अपने को कष्ट नहीं पहुँचाते थे।

सभी सम्प्रदायों में केवल पंचम राजतंत्रवादियों ने पुनर्स्थापन (Restoration) को बिना संघर्ष स्वीकार करने से इन्कार किया। हैरिसन यह आस्था लिए मरा कि वह शीघ्र ही ईसा मसीह के दाहिनी ओर अपने न्यायाधीशों पर फैसला देने के लिए वापस आएगा। इस भावना से, राजा के गद्दी पर वापस आने के कोई नौ महीने बाद, उनमें से कुछ लोग संत पाल के गिरजे में सब से पहले व्यक्ति से, जिससे वे मिले, यह पूछते हुए कि वह किसके पक्ष में है, बलात, घुस गये। उत्तर था, "राजा चार्ल्स के पक्ष में" जिस पर विद्रोहियों द्वारा उसे इन शब्दों के साथ गोली मार दी गई, "हम लोग राजा ईसा मसीह के पक्ष में हैं।" पर वेनर (Vanner) का विद्रोह शीघ्र ही दबा दिया गया और सक्रिय मिलेनैरियनवाद अंग्रेजी इतिहास से लुप्त हो जाता है। अव्यवस्था के इन वर्षों में केवल पंचम राजतंत्रवादी ही स्पष्टतया विस्फोटक सम्प्रदाय थे; और उनका इतिहास अत्यन्त स्पष्ट रूप से धर्म और राजनीति की अनिस्तारणीय अस्पष्टता प्रकट करता है।

(५)

क्रांति के वर्षों में जो सम्प्रदाय उत्पन्न हुए, उनमें से निस्संदेह सब से महत्वपूर्ण 'क्वेकर्स' (Quakers) थे, जिनके विषय में समालोचकों के सम्मुख प्रारम्भ में समस्या खड़ी हो गई कि उनका कैसे वर्गीकरण करें। कुछ ने उन्हें अनाबपटिस्टों की एक शाखा घोषित किया। 'रेन्टर्स' (Ranters) का वर्णन करने और सरलता से यह कहने के बाद कि वे इतने कम हैं कि उसने उनमें से एक को भी नहीं देखा है, बैक्सटर कहता है कि 'क्वेकर्स' (Quakers) भी दूसरे नाम से उसी सम्प्रदाय के लोग हैं। एक और आलोचक ने यह घोषणा कर के स्वयं को तृप्त किया कि 'रेन्टर्स' (Ranters) और 'क्वेकर्स' (Quakers) "मुख्यतया एक ही मिट्टी के गन्दे पशु हैं।" वस्तुतः इस नये आन्दोलन का मेन्नोवादी चर्च (Mennovite Church) से सर्वाधिक साम्य था, जहाँ से बपतिस्मावादी पहले ही उत्पन्न हो चुके थे। सचमुच "जनरल बैप्टिस्ट्स", "फ्रैंड्स" (Friends) से लगभग सामूहिक रूप से जा मिले और

उन बहुत कम अवसरों पर जब 'क्वेकर्स' (Quakers) ने उनकी संगति त्याग दी, तो वे बपतिस्मावादियों से पुनः जा मिले। फिर भी यह प्रगति नई थी, क्योंकि 'क्वेकर्स' (Quakers) किन्हीं सुनिश्चित विचारों और व्यवहार विधानों के लिए वचनबद्ध नहीं थे। जैसा कि फाक्स (Fox) ने वर्णन किया है कि किसी यात्री ने 'पैपिस्ट्स' (Papists), 'कॉमन प्रेयरमेन' (Common Prayermen), प्रेसबिटेरियन, (Presbyterians) 'इंडिपेन्डेन्ट्स' (Independents) और बपतिस्मावादियों से भेंट की, परन्तु किसी ने उसे यह नहीं बताया कि सच्चा धर्म आत्मा और सत्य का धर्म है। यह दृष्टिकोण इतना नया था कि ऐंग्लिकन थार्नडाइक (Thordike) ने घोषणा की कि 'क्वेकर्स' (Quakers) को ईसाई माना ही न जाय।

यह आश्चर्यजनक नहीं है कि इस आन्दोलन ने निम्न वर्ग को इतना प्रभावित किया, जितना अन्य किसी सम्प्रदाय ने नहीं किया था। किसी अन्य संगठन के विरुद्ध यह आक्षेप नहीं लगाया गया था कि वह "साधारण लोगों के कूड़े से बनाया गया" है। एक मित्रवत आलोचक ने संकेत किया कि ऐसी बात कह कर "जिसे न दंडनायक और न धर्मोपदेशक ही कहते थे" इसने कानून की महत्वपूर्ण सेवा की है। वर्ग की भाँति, लिंग भेद को भी समाप्त कर दिया गया। स्त्रियाँ इस सम्प्रदाय की इतनी बड़ी संख्या में सदस्य थीं कि पहिले पहल यह अफवाह फैल गई कि यह सम्प्रदाय उन्हीं तक सीमित है। "क्या स्त्रियाँ पुरोहित हैं?" फाक्स ने प्रश्न किया, और उत्तर दिया, "हाँ, स्त्रियाँ पुरोहित हैं।" एक और अप्राकृतिक विभेद समान रूप से अस्वीकार्य था। क्लार्कसन (Clarkson) कहा करता था कि फाक्स दास प्रथा का सार्वजनिक रूप से विरोध करने वाला पहला अंग्रेज था और दासों के अनेक स्वामियों को इस चेतावनी के साथ पत्र मिले कि ईश्वर व्यक्तियों का आदर करने वाला नहीं है। प्रत्येक अनुयायी का पुरोहित-पद अन्तर्ज्योति की प्रधानता के साथ संयुक्त कर देने पर यह आन्दोलन प्रजातांत्रिक ही हो सकता था; परन्तु इसके संस्थापक की विशेषता ने इसके व्यक्तिवाद को भ्रष्ट होकर अराजकता में परिणत होने से बचाए रखने में बड़ी सहायता की। फाक्स ने, यद्यपि वह मुख्यतया रहस्यवादी था, हर प्रकार के विधि-विरोधवाद का विरोध किया।

ऐसे सब लोग बेलिअल (Belial) की संतान हैं, जो कहते हैं "अपने कानून दूर रखो, हमें तुम्हारे कानून की आवश्यकता नहीं है।" उसने उग्रतापूर्वक राजनीतिक विद्रोह के अभियोग का खंडन किया। "आप लोग 'क्वेकर्स' (Quakers) को राजद्रोही पुस्तकें और कागजात फैलाने वाला कहते हैं। मेरा उत्तर है, हमारे पास कोई राजद्रोही पुस्तकें और कागजात नहीं हैं। हमारी पुस्तकें, राजद्रोह, राजद्रोहियों और राजद्रोही मार्गों के विरुद्ध हैं।" फाक्स और उसके सन्निकट अनुयायियों द्वारा प्रस्तुत 'क्वेकरिज्म' (Quakerism) में नागरिकता के सामान्य कर्तव्यों के पालन में बाधा पहुँचाने वाली कोई बात नहीं थी। क्रॉमवेल धर्मोपदेशकों के उपद्रव से बहुत क्रुद्ध हुआ था और उसने दंड की धमकी देते हुए एक घोषणा जारी की। इसके अतिरिक्त उसे दंडनायकों और अन्य अधिकारियों के प्रति प्रथा के अनुसार आदर दिखाने से इन्कार करना पसन्द नहीं था। परन्तु उसने फाक्स को अपनी उपस्थिति में छिपा रहने दिया। और वह अच्छी तरह जानता था कि उन लोगों से अधिक अच्छी प्रजा और कोई नहीं है, जिन्होंने सामाजिक और नैतिक बुराइयों के विरुद्ध युद्ध के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया है। केवल एक अवसर पर फाक्स ने प्रत्यक्ष रूप से राजनीति में हाथ डाला। जब यह खबर विदेशों में पहुँची कि ऑलिवर राजा बनेगा तो "मैंने उसे अनेक संकटों की चेतावनी दी, जिनसे यदि उसने अपने को नहीं बचाया तो वे स्वयं उसके और उसकी संतानों के लिए अपमान और दुःख के कारण होंगे। यह बात उसे ठीक लगी, ऐसा प्रतीत हुआ, और उसने मुझे धन्यवाद दिया। प्रोटेक्टर (Protector) जानता था कि उसका यह मित्र तथा आलोचक इस भय के कारण इस परिवर्तन का विरोध कर रहा है कि उसे व्यक्तिगत गौरव के विचारों की ओर ले जाने से आध्यात्मिक क्षति पहुँच सकती है।"

फिर भी, इस सम्प्रदाय के कुछ उग्र व्यक्तियों से ही युग ने 'क्वेकर' (Quaker) आन्दोलन को संबंधित किया। स्वयं संस्थापक के व्यवहार और विचार में हठधर्मी जैसी उमंग का प्रवाह था! उसने अपना दैविक कार्य एक धर्मोपदेश में अवरोध करते हुए आरम्भ किया। लिचफील्ड (Lichfield) पर एक ऐसा "खूनी नगर" होने का दोष लगाया गया जहाँ "डायोक्लेशियन" (Dioclatian) के नेतृत्व में बलिदान हुए थे। परन्तु यद्यपि ऐसी अति-

शयताएँ शीघ्र ही समाप्त हो गई थीं, बपतिस्मावादियों और मिलेनैरियनों के प्रवेश ने इस आन्दोलन को कुछ वर्षों तक बदनाम कर दिया। सन् १६५४ में सरकार को मिडलैन्ड्स (Midlands) में 'क्वेकर्स' (Quakers) नाम के लोगों द्वारा अनेक उपद्रवी सभाओं के किए जाने की खबर मिली। यद्यपि उन्हें कभी हाथ में अस्त्र लिए नहीं देखा गया था, फिर भी उनमें से कुछ को अपनी पोशाक के भीतर पिस्तौल लिए हुए पाया गया। एक उन्माद-ग्रस्त क्वेकर पार्लमेंट के द्वार पर तलवार लेकर यह घोषणा करते हुए खड़ा हो गया कि उसे सदन में बैठे प्रत्येक व्यक्ति को मार डालने की प्रेरणा मिली है। सन् १६५५ में हेनरी क्रामवेल को विश्वास हो गया कि उसे एक गंभीर समस्या का सामना करना है। उसने आयरलैंड से थर्लो को लिखा था "हमारे सर्वाधिक विचारणीय शत्रु 'क्वेकर्स' (Quakers) हैं। हमारे सैनिकों में से कुछ उनके द्वारा बहकाए गए हैं और मैं उनके सिद्धान्तों और व्यवहारों को नागरिक शासन के बहुत अनुरूप नहीं समझता हूँ, और सेना के शासन से तो बहुत ही कम। कुछ लोग समझते हैं कि उनका कोई प्रयोजन नहीं है, परन्तु मेरा यह विचार नहीं है। उनकी कृत्रिम सरलता उन्हें और खतरनाक बना देती है।" उनकी काफी बड़ी संख्या ने स्काटलैंड की सीमा पार की, और बेली का विश्वास था कि उनके ऊपर शैतान सवार है। "वे उद्वेग से दंडनायक और पादरी-पद की निन्दा करते हैं और उनकी विवेकहीन उत्तेजनाएँ तथा वास्तविक उपद्रव अत्यन्त गुरु हैं।" जनसाधारण को इस कारण अस्त्रग्रहण करने के लिए कहा गया कि 'क्वेकर्स' (Quakers) आ रहे हैं। कभी-कभी मूर्खतापूर्ण आतंक छा जाता था। एंथनी वुड (Anthony Wood) लिखता है, "जब कभी विशाल आँधी उठती थी, कुछ लोग सोचते थे कि अनाबपटिस्ट और 'क्वेकर्स (Quakers) उनका गला काटने आ रहे हैं।" कई बार 'क्वेकर्स' (Quakers) ने सार्वजनिक स्थानों में वस्त्रहीन दशा में उपस्थित होकर जनमत को उत्तेजित कर दिया। उनका विधि-विरोध सर्वाधिक स्पष्ट रूप से अमेरिकी उपनिवेशों में दर्शनीय था। कॉटन मैथर (Cotton Mather) लिखता है, "जब वे सन् १६५७ में आए, तो उन्होंने श्रेष्ठ धार्मिक और राज-नीतिक व्यवस्था का विरोध करने के लिए अनेकों को उभाड़ा।" उन्होंने सत्ता

के प्रति असह्य घृणा अभिव्यक्त की। फिर भी ये उग्र लोग शीघ्र अपेक्षाकृत अधिक शांत प्रकृति के लोगों द्वारा अनुसरित हुए और सम्प्रदाय की अनिष्ट-हीनता धीरे धीरे स्वीकार कर ली गई।

इस आन्दोलन के किसी वामपक्षी सदस्य ने ऐसा विस्मय उत्पन्न नहीं किया, जैसा गहन धार्मिक भावना के व्यक्ति जेम्स नेलर (James Naylor) ने, जो पार्लमेंट की ओर से लड़ा था और फाक्स का भाषण सुनने पर अत्यधिक प्रभावित हुआ था। भ्रमणशील उपदेशक के रूप में उसकी सफलता ने उसे भ्रमित कर दिया। ब्रिस्टाल (Bristol) के निकट उसके आवास काल में उसकी अनुयायिनी कुछ स्त्रियों को एक झूठा विश्वास हो गया। नेलर को मसीहा, इजरायल का राजा, कहकर सम्मानित किया गया और उसने इस उपाधि को स्वीकार किया। यद्यपि वस्तुतः वह पागल नहीं था पर उसका मस्तिष्क अस्थायी रूप से अस्थिर हो गया था। उसका आत्म-खंडन भी उसके न्यायाधीशों को शान्त करने में असफल रहा और वह बर्बरतापूर्वक दंडित किया गया। ब्रिस्टाल के इस हर्ष-दुखान्त नाटक तथा इसके नायक की असफलता ने 'क्वेकारिज्म' (Quakerism) की क्रांतिकारी धारा को विवेकपूर्ण अवरोध प्रदान किया। कुछ लोगों ने राजा की वापसी के विरुद्ध प्रार्थना-पत्र प्रस्तुत किया और कुछ लोगों ने कॉमनवेल्थ की रक्षा के लिए अपनी भूमि तक बेच डाली; परन्तु उन्होंने शीघ्र ही अवश्यम्भावी को स्वीकार कर लिया। सन् १६७६ में बार्कले (Barclay) की एपॉलोजी (Apology) के प्रकाशन के साथ जब क्वेकर दर्शन ने क्रमबद्ध रूप ग्रहण किया, तो राजनीतिक आज्ञाकारिता के इस सिद्धान्त ने वह स्थान ग्रहण किया, जहाँ से वह कभी नहीं हटाया गया है।

अध्याय ८

पुनरस्थापन

(१)

साधु-प्रकृति राजपक्षावलम्बी एवलिन ने अपनी डायरी में, लन्दन में राजा के प्रवेश के दिन, लिखा है "ऐसा पुनस्थापन यहूदियों की वापसी से आज तक नहीं देखा गया है।" कामन्स सभा ने घोषणा की, "हम लोग आप के सम्मुख हमेशा के लिए स्वयं को और अपनी संतानों को आप के अधीन करते हैं और अपने को अनुगृहीत पाते हैं।" कन्वेंशन पार्लमेंट (Convention Parliament) ने कैवेलियर पार्लमेंट (Cavalier Parliament) के लिए शीघ्र ही पथ प्रस्तुत किया और मुख्यतया प्रेसबिटरवादी सभा का स्थान ऐंग्लिकन सभा (Anglican Chamber) ने लिया। प्रतिक्रिया की लहर तेजी से उठी। हैरिंगटन को टावर (Tower) के कारावास में भेज दिया गया, और मिल्टन की रचनाएं जला दी गई। रोजर ले एस्ट्रेंज (Roger L' Estrange) द्वारा सफलतापूर्वक प्रेस का मुँह बन्द कर दिया गया और बटलर (Butler) की तीक्ष्ण कल्पना शक्ति और विषैले व्यंग वाली पुस्तक 'हुडिब्रास' (Hudibras) का आनन्दपूर्ण स्वागत हुआ। राजपक्षावलम्बी क्षेत्रों में यह स्वयं-सिद्ध सत्य माना जाता था कि प्रत्येक असहमतिवादी विद्रोही है, और कॉमनवेल्थ की पुनर्स्थापना के अवसर की प्रतीक्षा में रहता है।

चार्ल्स रक्त संबंध से आधा फ्राँसीसी और स्वभाव तथा अपने राज-सत्ता संबंधी दृष्टिकोण में आधे से भी अधिक फ्राँसीसी था। यद्यपि उसने सीमित राजतंत्र का सिद्धान्त अस्वीकृत किया, फिर भी उसने अलोकप्रिय विधेयकों का दोष किसी मन्त्री के मत्थे डालना सुविधाजनक पाया, और कोई कठिन कार्य अकेले फिर कभी न करने का दृढ़ निश्चय किया। धर्म की ओर उसकी उदासीनता

ने उसे सहिष्णुता की ओर प्रवृत्त किया, यद्यपि राजकीय मान्यता प्राप्त चर्च (Established Church) का महत्व उसने स्वीकार किया। उत्कट राजभक्ति के उस युग में वह मध्य-मार्ग के पक्ष में था। वह नए विचारों के प्रति जागरूक था और क्लेरेंडन ने कुछ तीक्ष्णता से कहा कि वह "पुरातन का इतना कम सम्मान और श्रद्धा करता था तथा प्राचीन व्यवस्था, पद्धतियों और संस्थाओं की इतनी निन्दा करता था कि किसी प्रस्ताव पर नवीनता का आक्षेप करना उसको अवरुद्ध करने की अपेक्षा आगे बढ़ाना है।" इसके अतिरिक्त, यद्यपि देश पुनः व्यवस्थित सरकार पाकर वस्तुतः आनन्दित था, परन्तु वातावरण अब गृह-युद्ध के पूर्व जैसा नहीं रह गया था। ह्वाइटहाल (Whitehall) के बाहर का दृश्य भुलाया नहीं जा सका। राजा अपनी सत्ता की सीमाओं से भिज्ञ था और जनता अपनी शक्ति के प्रति सचेत थी। यहाँ तक कि कैवेलियर पार्लमेंट ने कोष के नियंत्रण को अपने अधिकार में रखने की सावधानी बरती। क्लेरेंडन को जिसने अपने स्वामी को बताया कि पार्लमेंट कम या अधिक शक्तिशाली अथवा शक्तिहीन जैसा वह बनाना चाहेगा, वैसी ही होगी, ज्ञात हुआ कि वह किसी शक्तिशाली मंत्री को उतार फेंकने के लिए पर्याप्त शक्तिशाली है। ऐंग्लिकन चर्च ने बोर्बन्स (Bourbons) की भाँति दुर्भाग्य के उन वर्षों में न कुछ सीखा ही था और न कुछ भुलाया ही था; परमाधिकार पर इसके विचार उतने ही सारहीन थे और असहमतिवादियों के प्रति उसकी घृणा सदैव की भाँति ही शक्तिशाली थी। 'कारपोरेशन ऐक्ट' (Corporation Act) ने सभी पदाधिकारियों को यह शपथ लेना आवश्यक कर दिया कि राजा के विरुद्ध "किसी बहाने भी" शस्त्र उठाना अवैध है। 'दि एक्ट आव यूनिफार्मिटी' ने दो हजार पादरियों को निकाल बाहर किया और चर्च को हमेशा के लिए विभक्त कर दिया। लन्दन में वेनर (Venner) के नगण्य विद्रोह ने इस पूर्वाग्रह को परिपुष्ट किया कि असहमतिवादी राजद्रोह पर तुले हुए हैं। लोगों की शिराएँ उन उपद्रवों से तंग आ चुकी थीं, जिनको उन्होंने देखा था और पुनस्र्थापन की ज्यादतियों का कारण आतंक को भी उतनी ही मात्रा में बताया जा सकता है, जितना असहिष्णुता को।

जैसे-जैसे राजत्वकाल बढ़ता गया, पार्लमेंट 'कोर्ट' (Court) और 'कन्ट्री' (Country) नामक दो दलों में विभक्त हो गई। जनसाधारण के लिए

ऐसे राजा पर श्रद्धा रखना असंभव था, जिसने 'ह्वाइटहाल' को 'वेनिटी फेयर' में परिणत कर दिया; शीघ्रता से बढ़ते हुए, मुख्यतया असहमतिवादी विश्वास वाले, औद्योगिक और व्यवसायिक वर्ग में राजतंत्र के प्रति उस भक्ति भावना का पूर्णतया अभाव था, जिससे ऐंग्लिकन क्षेत्र परिपूर्ण थे। 'पोपिश प्लाट' (Popish Plot) तथा 'राक्स क्लूजन बिल' के प्रस्थापन ने राजनीति में अत्यन्त उत्तेजना ला दी। कैथोलिक उत्तराधिकारी के अपवर्जन पर विवादों ने संप्रभुता के निर्धारण पर बहस को पुनः जारी कर दिया। और संगठित ह्विग तथा टोरी दलों के शीघ्र उदय ने साहित्यिक विवाद को बल दिया। क्योंकि टोरी दल के पास ले एस्ट्रेंज (L' Estrange) के अतिरिक्त और कोई ओजपूर्ण किन्तु अशिष्ट लेखक नहीं था, इसलिए उन्हें फिल्मर (Filmer) का आश्रय लेना पड़ा, जो सन् १६५३ में मर चुका था। यद्यपि गृहयुद्ध के समय उसे कारावास का दंड भोगना पड़ा था, पर उस विशाल नाटक में उसने नगण्य सा ही भाग लिया और प्रचार पुस्तिकाओं की उस भारी बाढ़ में, जो हर ओर से निकल रहे थे, उसकी रचनाएँ कठिनाई से ध्यान में आईं। उसकी सर्वाधिक महत्वपूर्ण रचना "पैट्रिआर्का ऑर दी नैचुरल पावर ऑव किंग्स" (Patriarcha, or the Natural Power of Kings) थी, जो सन् १६८० के पूर्व प्रकाशित नहीं हुई थी। इस पुस्तक की प्रसिद्धि मुख्यतया इस कारण हुई कि उसका प्रत्युत्तर अलजेरनान सिडनी (Algernon Sidney) और लॉक (Locke) ने दिया, परन्तु यह उस सिद्धान्त के वक्तव्य के रूप में भी महत्व-पूर्ण है, जिसे उस पूर्ण शताब्दी में अनेक अनुयायी प्राप्त हुए।

फिल्मर ने लिखा है, "मैंने पर्याप्त तृप्ति सहित मि० हॉब्स की पुस्तक 'डी साइव' पढ़ी। शासन करने के लिए अधिकारों के प्रयोग के विषय में मैं उससे सहमत हूँ, परन्तु इसे प्राप्त करने के साधनों के विषय में मैं उससे सहमत नहीं हो सकता। न तो आरम्भ में मानव जाति स्वतंत्र थी और न उसे अपनी सरकार बनाने की स्वतंत्रता ही थी। यह विचार "स्कूलमैन" द्वारा आरम्भ किया गया तथा धर्मशास्त्रों द्वारा स्वीकृत और सामान्य जनता द्वारा स्वतंत्रता में उसका भी कुछ अंश होने की स्वीकृति के रूप में अभिनन्दित किया गया। फिर भी चर्च-पिताओं अथवा धर्मग्रन्थों, प्राचीन इतिहास और प्राकृतिक

विधि में ऐसी आदिम स्वतंत्रता का कोई चिन्ह नहीं है। प्राकृतिक स्वतंत्रता, और मनुष्य की परस्पर समानता राजद्रोह का आधार है, क्योंकि यदि सर्वोच्च सत्ता प्रारम्भ में जनसाधारण के हाथों में थी, तो केवल प्रजातंत्र ही वैध होगा। जब यह त्रुटि दूर कर दी जाएगी, तो देशद्रोह का दुर्ग नष्ट हो जाएगा। तो फिर आदिम समाज का क्या रूप था ?" फिल्मर उत्तर देता है कि सरकार का उद्‌गम प्राकृतिक अधिकारों का परित्याग नहीं, परिवार के आकार का परिवर्तन है। राज्य परिवार का विस्तृत रूप है, जिसमें राजा पिता तुल्य और प्रजा उसकी संतान के समान है। चूँकि आदम और कुटुम्बपतियों (Patriarchs) ने अपनी संतानों पर शाही अधिकारों का प्रयोग किया था, इसलिए मानव जाति की प्राकृतिक अवस्था समानता नहीं पैतृक शासन थी। राजतंत्र दैवी संस्था है और साथ ही प्रकृति की शिक्षा के अनुरूप है। राजा और जनसाधारण के बीच उसी प्रकार किसी अनुबंध की आवश्यकता नहीं, जिस प्रकार पिता और उसकी संतानों के बीच उसकी आवश्यकता नहीं है। "पिता अपने पुत्रों और नौकरों की इच्छा तथा विधियों द्वारा नहीं, अपनी इच्छा से शासन करता है।" एक मात्र अहस्तांतरणीय प्राकृतिक अधिकार पैतृक सत्ता, प्रत्येक राजतांत्रिक राज्य में सुरक्षित है। इसके अतिरिक्त यह सत्ता उतनी ही स्वतंत्र है, जितनी व्यक्तिगत अधिकारों के समकालिक त्याग द्वारा प्रदत्त होकर हुई होती। "क्योंकि राजकीय सत्ता ईश्वरीय विधि है, इसलिए इससे निम्न इस पर प्रतिबंध लगाने वाली अन्य कोई सत्ता नहीं है।" राजा को प्रायः अपनी प्रजा के पिता रूप में वर्णित किया गया है; परन्तु इस रूपक को निरंकुशता के पक्ष में एक तर्क के रूप में प्रस्तुत करना फिल्मर का ही कार्य था। पार्लमेंट में बनाए गए कानून केवल उसी को ज्ञात कारणों से शमित अथवा निलम्बित किए जा सकते हैं। राज्याभिषेक के अवसर पर ली गई शपथ केवल उत्तम विधियों का पालन करने के लिए ही बाध्य करती है, जिसका वही निर्णायक है। प्रत्येक प्रजाजन को विधियों के विरुद्ध, और यहाँ तक कि किन्हीं अवस्थाओं में दैवी विधियों के भी विरुद्ध, उसकी आज्ञाओं का पालन करना चाहिए। पार्लमेंट केवल परामर्शदायी संस्था है और दोनों सदनों में कामन्स सभा सबसे छोटी हैं। लार्ड्‌स (Lords) परामर्श देते हैं, कामन्स

(Commons) सहमति प्रदान करते हैं और राजा आज्ञा देता है। राजतंत्र का विकल्प अराजकता अथवा सैनिक तानाशाही है। इसके अतिरिक्त केवल यही धर्म और साथ ही साथ व्यवस्था की रक्षा कर सकता है,—हॉलैंड और वेनिस को देखिए, पहले में प्रत्येक धर्म है और दूसरे में कोई नहीं। यदि कोई उत्तराधिकारी न हो, तो नया शासन श्रेष्ठ परिवारों के प्रधान व्यक्तियों द्वारा चुना जाना चाहिए; और "जो इस प्रकार चुना जाता है, वह अपनी सत्ता जनता से दान रूप में नहीं, ईश्वर द्वारा नियुक्त प्रतिनिधि के रूप में प्राप्त करता है।"

सरकार की उत्पत्ति सम्बन्धी फिल्मर का सिद्धान्त यदि सही भी हो, तो इसका अर्थ यह नहीं होता कि आदिम समाज में पिता के निर्बन्ध अधिकार में उत्तरकालीन और पर्याप्त भिन्न युग में निरंकुशता अन्तर्भूत है। वह स्वीकार करता है कि आदम के उत्तराधिकारी का पता नहीं लग सकता, और यह सिद्ध करने का कोई प्रयत्न नहीं करता कि स्टुअर्ट राजे कुटुम्बपतियों के वंशज हैं। राजापहरण और निर्वाचन इतने अधिक हुए हैं कि वंश परम्परा का तर्क अमान्य होने के कारण त्याग दिया जाता है। इस प्रकार वह हॉब्स की सी भयानक परिस्थिति में फँस जाता है। "प्रत्येक समुदाय पर सर्वोच्च सदस्य का प्राकृतिक अधिकार है, यद्यपि कई लोग प्रारम्भ में इसका अत्यन्त अनुचित ढंग से प्रयोग प्राप्त कर लेते करते हैं।" इसलिए अपहरणकर्ताओं के वंशजों के लिए ईश्वरीय नियुक्ति की माँग की गई है। परन्तु जहाँ पैतृक परिकल्पना की स्टुअर्ट राजाओं और उनकी प्रजा के विवाद से कोई यथार्थ अनुरूपता नहीं थी, वहाँ यह विचार अपने प्रतिद्वंदी सामाजिक अनुबंध के सिद्धान्त की अपेक्षा स्वयं कम नहीं, अधिक ऐतिहासिक था। रक्त-सम्बन्ध कई समुदायों का आधार रहा है और प्रधान का पद प्रायः एक ही परिवार में पैतृक हो गया है। पुनः यह कहना कि राजतंत्र मानवीय सम्बन्धों से विकसित हुआ है, यह ध्वनि देता है कि राज्य, कोई यांत्रिक आविष्कार नहीं, विकास की संभावना से युक्त सावयव है। पर इस सिद्धान्त के इन गूढ़तर पक्षों की कम ही विवेचना हुई और लॉक ने रूक्षता से कहा कि सुरुचिकर अंग्रेजी में एक साथ इतना अधिक बकवादी प्रलाप कभी व्यक्त नहीं किया गया।

लॉक के 'सिविल गवर्नमेंट' पर निबन्ध (Essays on Civil Government) लिखने के पूर्व ही अलजेर्नान सिडनी ने फिलमर द्वारा दी गई चुनौती को स्वीकार कर लिया था। यह गणतंत्रवादी आभिजात्य अपने युग के अत्यन्त रोचक व्यक्तियों में से था और उसके दुखान्त अन्त ने उसे स्वतंत्रता के शहीदों की सूची में सम्मिलित कर दिया। लीसेस्टर के अर्ल (Earl of Leicester) और एक 'पर्सी' (Percy) के पुत्र तथा वैलर के सैकरिसा (Waller's Sacharissa) का भाई सिडनी शिष्ट और सम्मानजनक वातावरण में बड़ा हुआ। यद्यपि उसका पिता राजपक्षावलम्बी था, अलजेर्नान ने पार्लमेंट का पक्ष लिया और मार्स्टन मूर (Marston Moor) में बड़ी वीरता से लड़ा। उसने अपनी मृत्यु के दिन कहा था, "अपनी यौवनावस्था से मैंने मानव जाति के सामान्य अधिकारों, इस देश के कानूनों तथा वास्तविक प्रोटेस्टेन्ट धर्म का भ्रष्ट सिद्धान्तों, स्वेच्छाकारी सत्ता तथा पोपशाही के विरुद्ध रक्षण करने का प्रयत्न किया।" परन्तु पार्लमेंट के पक्ष का हार्दिक समर्थन करते हुए भी उसने राजा की फाँसी का विरोध किया। उसके मुकदमे के लिए आयुक्त नियुक्त होने पर उसने घोषणा की कि राजा पर किसी भी न्यायालय में मुकदमा नहीं चलाया जा सकता और प्रभावहीन विरोध करने के बाद वह उस कक्ष के बाहर चला गया। ऐसा प्रतीत होता है कि उसकी अभिरुचि पदच्युति के पक्ष में थी। रम्प (Rump) के निष्कासन के कुछ समय पूर्व 'कौंसिल आव स्टेट' के लिए निर्वाचित होकर उसने हिंसा का वह दृश्य देखा और प्रोटेक्टर (Protector) को अत्याचारी घोषित किया। सन् १६५६ में जब 'लाँग पार्लमेंट' (Long Parliament) पुनः बुलाई गई, तो वह अपने स्थान पर वापस आया और कार्यकारिणी में ले लिया गया।

सिडनी ऐसे राजा को स्वीकार करने और यहाँ तक कि उसकी सेवा करने के लिए प्रस्तुत था, जिसे पार्लियामेंट ने स्वीकार किया हो। परन्तु गिरफ्तारी के खतरे में जीवित रहने की उसकी इच्छा नहीं थी और उसने पश्चाताप प्रगट करके कृपापात्र बनकर काम निकालना अस्वीकार कर दिया। वह डेनमार्क में राजदूत रहने के कारण पुनर्स्थापन के समय अनुपस्थित था।

और योरोप में कई वर्षों तक इधर-उधर भ्रमण करता रहा। अपने जीवन के विरुद्ध षड्यंत्रों के कारण कटु होकर उसने लुई चतुर्दश से इंग्लैंड में विद्रोह खड़ा करने के लिए आर्थिक सहायता देने के लिए निवेदन किया, परन्तु फ्रांसीसी राजा ने किसी उपयोग के योग्य लेने के लिए अत्यन्त लघु राशि देने की सहमति प्रदान की। सन् १६७७ में अन्तिम रूप से उसने व्यक्तिगत कार्य के लिए वापस आने की अनुमति प्राप्त की। केवल तीन मास रुकने का उसका इरादा बदल गया, क्योंकि वहाँ परिस्थिति संकटमय हो रही थी, और सार्वजनिक कार्यों से अलग रहने का उसने कोई वादा नहीं किया था। यद्यपि पार्लमेंट में प्रवेश पाने की उसकी चेष्टाएँ असफल हुई, फिर भी वह अवशिष्ट गणतंत्रवादियों तथा अधिक आगे बढ़े हुए ह्विग दल वालों द्वारा नेता के रूप में मान लिया गया। उसने फ्रांस के राजदूत से धन लिया, जिसके स्वामी को उसने यह विश्वास दिलाने की चेष्टा की, कि आरेंज वंश के राजा (Prince of Orange) की अपेक्षा गणतंत्र फ्रांस का कम विरोधी होगा। इंग्लैंड की स्वतंत्रता के प्रति अपने मन की उत्तेजना में उसने योरोप में लुई की शक्ति बढ़ाने के संकट की ओर से आँख मूँद ली। उसने रसेल (Russell) और एसेक्स (Essex) से विद्रोह के विषय में बात-चीत की, और वह 'राई हाउस प्लाट' (Rye House Plot) के पश्चात् गिरफ्तार कर लिया गया। देशद्रोह के अपराध में जेफ्रीज (Jeffreys) के सम्मुख मुकदमा चलाए जाने के बाद सन् १६८३ में उसे टावर हिल पर कत्ल कर दिया गया।

उस पर आरोपित देशद्रोह के आरोप का एक आधार यह था कि उसने एक ऐसी पुस्तक लिखी थी जिस में राजा की पार्लमेंट के प्रति अधीनता और शासकों को पदच्युत करने की वैधता का समर्थन किया गया था। कैदी ने जवाब दिया कि यह फिल्मर की कल्पनाओं का उत्तर मात्र था और इसे प्रकाशित करने का उसका कोई विचार नहीं था। "डिसकोर्सेज कन्सर्निङ्ग गवर्नमेंट" (Discourses Concerning Government) सन् १६९८ में छपी और सम्पूर्ण अठारहवीं शताब्दी में पुरानी तथा नई दुनियाँ में मौलिक रूप में और फ्रेंच में अनुवादित होकर उत्सुकतापूर्वक पढ़ी

गई। इस प्रसिद्ध रचना को इस बात से क्षति पहुँचती है कि यह अंशतः खण्डनात्मक उत्तर और साथ ही साथ दार्शनिक निबंध भी है और उसके विचारों की प्रगति क्षुद्र विवादों के समूह से अवरुद्ध हुई है; परन्तु इसका व्यापक दृष्टिकोण पर्याप्त स्पष्ट है। इसका बुनियादी सिद्धान्त यह है कि सभी विधिसम्मत सरकारें सहमति पर आधारित होती हैं। यहूदियों, यूनानियों, रोमन और आधुनिक योरोपीय राज्यों के इतिहास से यह सिद्ध करने के लिए उदाहरण दिए गए हैं कि जहाँ अधिकार और स्वतंत्रताएँ सुरक्षित हैं, वहीं राष्ट्र को सुख प्राप्त हो सकता है। ईश्वर ने हमारे हृदयों में स्वतंत्रता का सिद्धान्त रोपित किया है—वह करने की स्वतंत्रता नहीं, जो मनुष्य को प्रिय और ईश्वर को अप्रिय हो, बल्कि ऐसी विधियों के प्राधिकार से मुक्ति पाने की, जिनके लिए जनसाधारण ने कभी सहमति प्रदान न की हो। जनता के अधिकार प्रकृति-दत्त होते हैं और मनुष्यों का ईश्वर द्वारा उन्हें दिए गए बुद्धि-विवेक का उन विधियों और सरकारों पर विचार करने में प्रयोग उचित है, जिनके अधीन वे रहते हैं। राजा देवता नहीं, मनुष्य होते हैं। क्या हम अधम शासक को तब तक सहन करें, जब तक समस्त सद्भावना और सदाचार समाप्त न कर दिए जायँ? इसकी अपेक्षा कि जनता राजा की इच्छा के अधीन रहे, यह कहना क्यों बुरा है कि राजा को जनता के निषेधों के अधीन रहना चाहिए? जनता राजा को बनाती है, या राजा जनता को? मानव जाति की व्यावहारिक बुद्धि ने बहुत पहले इन प्रश्नों का उत्तर दे दिया है। युगों से अत्याचारी शासक घृणा के पात्र रहे हैं और मुक्तिदाताओं की प्रशंसा की गई है। यदि यह सर्वत्र स्वीकार कर लिया जाय कि राष्ट्र को अपने कानून बनाने का अधिकार है और यह कि जिसे वह चुने, वह अपनी व्यवस्था का विवरण अवश्य दे, तो निरंकुशता समाप्त हो जाएगी।

यदि यह आक्षेप किया जाय कि तर्क का यह ढंग ईश्वर को प्रजातंत्र का प्रवर्तक बना देता है, तो सिडनी उत्तर देता है कि ईश्वर ने व्यक्ति या समूह विशेष को सत्ता प्रदान नहीं की है। यहूदियों में राजाओं के दैवी अधिकार का कोई चिन्ह नहीं है। वह अरागॉन (Aragon) में राजभक्ति की शपथ को अपनी सहमति के साथ उद्धृत करता है। "हम, जो उतने ही अच्छे

हैं जितने आप, आप को अपना राजा बनाते हैं, इस शर्त पर कि आप हमारी स्वतंत्रताओं और हमारे विशेषाधिकारों को बनाए रखेंगे।" प्राचीन इंग्लैंड में राजा जनता की सहमति द्वारा बनाए जाते थे। किसी भी प्रकार की सरकार दैविक नहीं है, और मनुष्य स्वतंत्रतापूर्वक वही पसंद करता है, जो उसे सर्वश्रेष्ठ मालूम होता है। इसलिए निरंकुश शासक तो दूर, इसका सर्वोत्तम रूप वंशानुगत राजतंत्र जो एक ऐसी प्रणाली है जिसमें आयु, गुण और योग्यता का विचार किए बिना सत्ता क्रम से प्राप्त होती जाती है, तर्क-संगत समर्थन के अयोग्य है। कोई भी मनुष्य असीमित सत्ता सौंपे जाने के लिए पर्याप्त भला नहीं है। वास्तविक स्थायित्व वहीं रहता है, जहाँ राजा विधियों से नियंत्रित रहते हैं और उनकी कमियाँ पार्लमेंट द्वारा पूरित होती हैं। सर्वश्रेष्ठ सरकार राजतंत्र, अभिजात्यतंत्र और प्रजातंत्र की मिश्रित सरकार है। विशुद्ध राजतंत्र अत्यधिक निरंकुश, विशुद्ध अभिजात्यतंत्र अत्यधिक अपवर्जी और मात्र प्रजातंत्र छोटे नगरों के ही उपयुक्त होता है।

यद्यपि यह पुस्तक मुख्यतया शास्त्रीय है, पर राजनीतिक दशा के बारे में लेखक के विचार यदा-कदा दिखाई दे जाते हैं। वह पूछता है कि क्या हाइड (Hyde) और क्लिफोर्ड (Cliford) अर्लिंगटन (Arlington) और डेनबी (Danby) मुख्य पदों पर पहुँचे होते, यदि एक स्वतंत्र पार्लमेंट ने उनसे छुटकारा पा लिया होता! क्या क्लीवलैंड और पोर्ट्समाउथ के डयूकों की पत्नियों और उसी प्रकार के अन्य लोगों ने अपनी सम्पत्ति और प्रतिष्ठा राज्य की सेवा द्वारा प्राप्त की है? ये बुराइयाँ और अधिक शोचनीय हैं, क्योंकि हमारा संविधान अपने साररूप में लोकप्रिय है। हमारे राजाओं का निर्बन्ध अधिकार अपहृत है, क्योंकि पार्लमेंट उतनी ही प्राचीन है जितना यह राष्ट्र। "ऐसा समय कभी नही था, जब कौंसिल और असेम्बलियों ने अपनी इच्छानुसार विधियों का निर्माण और विनाश न किया हो।" राजा अपनी प्रजा से उच्च था, परन्तु कानून राजा से भी उच्च था। इजरायली (Israelists) जिन्होंने जेरोबोम (Jeroboam), अहब (Ahab) तथा अन्य दुष्ट शासकों की आज्ञाओं का पालन किया, ईश्वर के प्रति अवज्ञा के कारण दंडित हुए। वही राजा विधिसंगत है, जिसे जनता स्वीकार करे।

यदि कोई राजा पार्लमेंट की सभा बुलाना अस्वीकार करता है, तो जन साधारण को उसकी सभा अवश्य बुलानी चाहिए, क्योंकि पार्लमेंट के बिना हम लोग पतवार विहीन जलपोत के समान हैं। परन्तु पार्लमेंट को भी कुछ लोगों के व्यक्तिगत उद्देश्यों की पूर्ति के लिए अवनत होने के बदले अपने द्वारा बनाए गए कानूनों से बाधित होना चाहिए। वह कटु होकर कहता है कि चार्ल्स द्वितीय के मंत्रियों को दुराचारी नवयुवकों से भरी पार्लमेंट मिली और उन्होंने उन्हें जान-बूझकर भ्रष्ट किया। यद्यपि इस पुस्तक में राजद्रोह का एक शब्द भी नहीं है, पर इसके पृष्ठों ने वैयक्तिक शासन पद्धति के विरुद्ध, जो सन् १६५० ई० में पुनः स्थापित हुई थी, अनवरत और शक्तिशाली तर्क प्रस्तुत किया।

सिडनी की राजनीतिक विचारधारा न तो अत्यधिक मौलिक है और न पूर्णतया तर्कपूर्ण ही; परन्तु उसकी रचनाएँ विश्वास से दमकती हैं और सचेत मनन की परिणाम हैं। 'डिसकोर्सेज' (Discourses) की एक विशेषता उनकी पांडित्यपूर्णता है। बर्नेट कहता है कि उसने शासन के इतिहास का अध्ययन किसी भी ऐसे मनुष्य से अधिक किया था, जिसे वह जानता हो; और वास्तव में हम प्राकृतिक विधि की अपेक्षा बहुत अधिक ऐतिहासिक प्रमाणों के विषय में सुनते हैं। स्वेच्छाचारिता के विरुद्ध उसकी आलोचना का प्रधान मंत्र सहजवृत्ति और अनुभूति की मंत्रणा की सहमति है। परन्तु, जैसा बर्नेट ने कहा, "सभी गणतंत्रवादी सिद्धान्तों के प्रति दृढ़ और राजतंत्र जैसी दिखाई देनेवाली प्रत्येक वस्तु का शत्रु" होने की अपेक्षा उसने लचीलेपन की आवश्यकता स्वीकार की। वह कभी नहीं भूला कि वह अभिजात्यवर्ग का है; और वह मनुष्य मनुष्य के बीच वास्तविक असमानता पर बल देता है। "वे जो नीच, मूर्ख, पतित, आलसी और कायर हैं, स्वाभाविक अथवा अर्जित गुणों में उदार, बुद्धिमान्, निर्भीक और परिश्रमी लोगों के न तो समान हैं और न जिस समाज में वे रहते हैं, उसके लिए ही समान रूप से उपयोगी हैं; इसलिए वे उसके शासन में समान भाग नहीं प्राप्त कर सकते।" गुण ही के द्वारा सत्ता पर दावा किया जा सकता है। सर विलियम टेम्पिल ने कहा कि "डिसकोर्सेज का केवल एक अंश सारी पुस्तक को स्पष्ट कर देता है।" सिडनी ने लिखा था

कि यदि दैवी अधिकार जैसी कोई वस्तु है, तो यह वहीं है, जहाँ एक व्यक्ति अन्य लोगों पर शासन करने के लिए स्वयं उनकी अपेक्षा अधिक योग्य हो।" टेम्पिल ने कहा, "मैं आप को विश्वास दिलाता हूँ, वह व्यक्ति स्वयं अपने को शेष मानव जाति पर शासन करने योग्य उचित व्यक्ति के रूप में देखता है।" यह दुर्भावनापूर्ण उक्ति अधिक गंभीरतापूर्वक नहीं ली जानी चाहिए। स्वतंत्रता सिडनी की इष्ट थी और उसने इतिहास के अध्ययन से यह जाना कि इसे विभिन्न वैधानिक आवरणों में पाया जा सकता है। वह मुख्य रूप से मध्यमार्गी था और पुनर्स्थापन व्यवस्था का दोष इससे पर्याप्त स्पष्ट हो जाता है कि ऐसे व्यक्ति का सूली पर अंत हुआ।

सिडनी आजीवन अपने सिद्धान्तों पर दृढ़ रहा और उसने लोगों पर स्थायी प्रभाव छोड़ा, जो उसके संसर्ग में आए। योग्यता के अच्छे निर्णायक, चार्ल्स द्वितीय ने उसे 'अन होमी दि केयोर एत दे एस्प्रित' (un homme de cœur et d'esprit) बताया परन्तु यह भी कहा वह इंग्लैंड से अधिक दूर नहीं रह सकता, "जहाँ इतनी योग्यता और साहस वाले व्यक्ति की घातक भावनाएँ अधिक क्षति पहुँचा सकती हैं।" बर्नेट ने उसे "अत्यन्त साहसी, अपने हठ की सीमा तक दृढ़, परन्तु रूक्ष और उत्तेजनापूर्ण स्वभाव वाले व्यक्ति के रूप में, जो विरोध सहन न कर सके" वर्णित किया है। वह आगे लिखता है कि वह ईसाई जान पड़ता था "परन्तु स्वयं अपनी प्रकार का। उसका विचार था कि धर्म को मन में दैवी दर्शन की भाँति होना चाहिए; परन्तु वह सार्वजनिक आराधना और ऐसी प्रत्येक वस्तु के, जो चर्च की भाँति लगती थी, विरुद्ध था।" सिडनी की रचनाओं से जो कुछ प्रकट होता है, वह कैथोलिकवाद और असहिष्णुता के प्रति घृणा है। यद्यपि वह हॉब्स, हैरिंगटन और हैलीफैक्स की भाँति प्रथम श्रेणी के राजनीतिक विचारकों में नहीं आता है, परन्तु पुनर्स्थापन के अंधकारपूर्ण दिनों में स्वतन्त्रता की ज्योति-शिखा प्रज्ज्वलित रखने के कारण वह अपने देश के आवश्यकता के अनुरूप था।

(२)

'एक्सक्ल्यूजन' (Exclusion) संकट ने धार्मिक और सामान्य आलोचकों

को मैदान में ला खड़ा किया। इन उग्र पादरियों में सबसे अधिक प्रभावशाली लार्ड विलियम रसेल था जो सैमुअल जानसन का धर्मोपदेशक था। लार्ड मेयर के सम्मुख एक धर्मोपदेश द्वारा सन् १६७६ में जिसमें पोपशाही की आलोचना के आवरण में उसने परोक्ष रूप से 'एक्सक्ल्यूजन बिल' (Exclusion Bill) का समर्थन किया, वह राजनीतिक जीवन में आ गया। जब विद्वान ऐंग्लिकन हिक्स (Hickes) ने, जो शीघ्र ही 'नॉन जूरर' (non-juror) होने वाला था, संप्रभु सत्ता पर एक भाष्य प्रकाशित किया, तो जानसन ने अपनी सर्वाधिक विख्यात रचना "जूलियन दी एपास्टिल" (Julian the Apostle) द्वारा कठोर उत्तर दिया। प्रत्येक पाठक को यह स्पष्ट था कि कैथोलिकवाद आधुनिक मूर्ति पूजावाद (paganism) है और यार्क का ड्यूक धर्मत्यागी सम्राट है। उसने कहा कि ऐसे शासन के प्रति असीमित आज्ञाकारिता की बात करना हास्यास्पद है। उसने दृढ़ता के साथ कहा कि प्रारम्भिक ईसाइयों ने अप्रतिरोध का सिद्धान्त न तो प्रतिपादित किया और न ही उसका व्यवहार किया; उन्होंने जूलियन का राज्यारोहण रोकने की चेष्टा की और उन्होंने ईसाई धर्म पर उसके प्रहारों का विरोध किया। धर्म की रक्षा करने के लिए सत्रहवीं शताब्दी में विरोध इतना ही विधिसम्मत है, जितना वह चौथी शताब्दी में था। संत पाल ने निरंकुश शासकों के विषय में कुछ भी नहीं कहा था और देश की विधि रोमवासियों के तेरहवें अध्याय की सर्वश्रेष्ठ व्याख्या है। मनुष्य स्वभावतया स्वतन्त्र हैं और केवल अपने कार्यों और प्रलेखों से बाध्य हो सकते हैं। एक ऐंग्लिकन धर्मशास्त्री द्वारा उस सिद्धान्त की जिसका समर्थन उसके चर्च ने लगभग एक शताब्दी तक किया, आलोचना के दृश्य ने प्रबल अभिरुचि उत्पन्न की, और 'जूलियन' उत्साहपूर्वक पढ़ी जाती थी तथा उसने अनेकों को प्रत्युत्तर लिखने की प्रेरणा दी। यह पुस्तक सार्वजनिक रूप से जलाई गई, तथा उसे यार्क के ड्यूक पर अपमानजनक लेख लिखने के कारण कारावास का दंड मिला। राजपक्षावलम्बी उससे घृणा करते थे और ड्रायडेन (Dryden) ने उसे "एब्सलोम ऐंड एकिटोफेल" (Absalom and Achitophel) में दुर्वचनों से अपमानित किया—

"हीब्रान (स्काटलैंड) नहीं-नहीं नरक, ऐसा मनुष्य उत्पन्न तो करे,

जो बेन जाकनन की भाँति बुराई करने के लिए बना हो।"

जब बर्नेट ने लार्ड विलियम रसेल से अवज्ञा के सिद्धान्त का त्याग करके जीवन बचाने के लिए अनुनय किया, तो जानसन ने अपने पुराने स्वामी को दृढ़ रहने के लिए प्रोत्साहित किया।

जेम्स के राज्यारोहण के अवसर पर जानसन एक पुस्तिका चोरी से कारावास के बाहर भेजने में सफल हुआ, जिसने महत्ता और लोकप्रियता में 'जूलियन' की बराबरी की। उसकी "एड्रेस टु दी प्रोटेस्टेन्ट्स इन किंग जेम्सेज आर्मी" (Address to the Protestants in King James's Army) ने पदाधिकारियों और सैनिकों से देश की दासता या राष्ट्रीय धर्म के विनाश में सहायता न देने के लिए आग्रहपूर्वक प्रार्थना की। यह पुस्तिका अपनी प्रभावपूर्ण शैली के कारण महत्वपूर्ण थी; और सरकार ने लेखक को क्रूरता पूर्वक दंडित करके उसे पुरस्कृत किया। जब एक हजार प्रतियाँ वितरित हो चुकी थीं, शेष जब्त कर ली गईं। परन्तु यद्यपि लेखक को न्यूगेट (New gate) से टाईबर्न तक कोड़े लगाए गए, पर उसका उत्साह अखंड रहा। सन् १६८७ ई० में "डिक्लेअरेशन ऑव इंडल्जेन्स" (Declaration of Indulgence) द्वारा अपनी खोई स्वतन्त्रता की प्राप्ति कर उसने उसका प्रयोग कैथेलिकों के विरुद्ध अपनी आलोचना फिर से आरम्भ करने और चर्च से असहमतिवादियों के लिए अपने द्वारा खोल देने की सलाह देने के लिए किया। वस्तुतः कैलमी (Calamy) उल्लेख करता है कि वह सामान्यतया सन् १६८८ की क्रांति का मार्ग प्रशस्त करने के लिए किसी अन्य व्यक्ति की अपेक्षा अधिक कार्य करने वाले के रूप में माना जाता है। साहसहीन ह्विग दल वालों की औपचारिकताओं का तिरस्कार करते हुए उसने दृढ़ता से कहा कि विलियम के पास एक मात्र अधिकार जनता का प्रदेय है। ह्विग दलीय इस दोष स्वीकार करने वाले के लिए पार्लमेंट द्वारा प्रतिफल की घोषणा की गई, फिर भी उसे वह पदोन्नति नहीं मिली, जिसे वह अपना उचित अधिकार समझता था। जिसे स्विफ्ट (Swift) ने जूलियन जानसन कहा है, वह व्यक्ति अशिष्ट आलोचक था; परन्तु उसके ओजपूर्ण प्रहारों ने राजकीय आंदोलन को करारी हार देने में सहायता दी, और उसे इतनी दृढ़ता से कैथोलिक राजा के विरुद्ध

खड़े होने वाले प्रथम ऐंग्लिकन धर्मशास्त्री होने का गौरव प्राप्त है। अपने दल के लिए उसका कार्य ऐसे युग में विशेष महत्व का था, जब राजपक्षावलम्बी अनवरत रूप से बाइबिल के प्रमाण की ओर ध्यान दिलाते थे। कॉलरिज ने कहा है, "मैं नहीं जानता हूँ कि इतनी बुद्धिमत्तापूर्ण और गम्भीर वैधानिक सिद्धान्तों वाली पुस्तक मुझे कहीं मिल सकती है, जैसी जॉनसन की रचनाओं के इस पतले संग्रह में।"

वह भयानक संघर्ष जो सिडनी और जानसन को मैदान में लाया, एक और प्रभावशाली व्यक्ति शाही पक्ष की सहायता के लिए सामने आया। अनेक वर्ष वीरतापूर्ण नाटकों की रचना में संलग्न रहने के उपरान्त ड्रायडन पुनः कविता की ओर झुका और उसने ऐसे पद्यात्मक विवादग्रन्थों और घोषणापत्रों की रचना की, जो उसे अंग्रेजी भाषा का महानतम व्यंगकार बना देते हैं। यह राजकवि बहुत बड़ा अवसरवादी व्यक्ति था। उसकी पहली महत्वपूर्ण पुस्तक क्रॉमवेल की प्रशस्ति और दूसरी चार्ल्स की पुनर्स्थापना के अवसर पर उसका अतिपूर्ण जयघोष है। सरकार के प्रोत्साहन पर उसने हालैंड वासियों के विरुद्ध राष्ट्र को उत्तेजित करने के लिए दुःखान्त 'एम्बॉयना' (Amboyna) की रचना की। जब 'पोपिश प्लॉट' (Popish plot) ने श्रद्धालु प्रोटेस्टेन्टों को आतंक से किंकर्तव्यविमूढ़ कर दिया, तो उसने "दी स्पैनिश फ्रायर" (The Spanish Friar) में कैथोलिक पादरियों पर कटु प्रहार किया। जैसे ही धारा ने मोड़ लेना आरम्भ किया, उसने "दी ड्यूक आव गाइज़" (The Duke of Guise) में मॉनमाउथ (Monmouth) और उसके समर्थकों को हास्य का विषय बना दिया।

सन् १६८१ के शरद काल में, जब शैफ्ट्सबरी पर शीघ्र ही देशद्रोह का मुकदमा चलाया जाने वाला था, "एब्सलोम और एकिटोफेल" प्रकाशित हुई। यद्यपि 'लन्दन नगर' की दृढ़ ह्विगवादी विचारधारा के कारण ह्विग नेता के विरुद्ध प्रस्तुत किए गए विधेयक को पारित नहीं होने दिया और इस प्रकार कविता के तात्कालिक उद्देश्य को विफल कर दिया, फिर भी संघर्ष का परिणाम राजा के पक्ष में करने के लिए इसने अन्य किसी भी पुस्तक से अधिक सहायता दी। वृद्ध पुस्तक विक्रेता, डा० जानसन् के पिता ने अपने पुत्र को बताया कि

तीस साल बाद प्रकाशित डा० सैशवेरैल (Dr. Sacheverell) के मुकदमें के वर्णन के अतिरिक्त अन्य किसी पुस्तक के इतना सफल होने की उन्हें स्मृति नहीं है। "एन्सलोम" और "मानमाउथ" का सादृश्य इतना स्पष्ट था कि ड्रायडेन के लिखने के पूर्व ही प्रयोग किया जाने था। अनुभवी नाटककार की सहज प्रवृत्ति वाले ड्रायडेन ने राजद्रोह और देशद्रोह की अमूर्त भर्त्सना के स्थान पर यहूदियों के इतिहास के स्पष्ट आवरण में सेना के नेताओं की वास्तविक स्थिति का चित्रण किया। कविताओं के अद्वितीय ओज ने मित्र और शत्रु को समान रूप से चकाचौंध कर दिया। ऐसा भयंकर आक्षेप, ऐसी सजीवता, मर्मभेदी व्यंग की ऐसी क्षमता इसके पूर्व अज्ञात थी। यद्यपि वह राजनीतिज्ञ नहीं था, पर ड्रायडेन अपने युग का सर्वाधिक प्रभावशाली टोरी आलोचक था।

'मानमाउथ' का चित्रण क्रोध की अपेक्षा शोक में अधिक किया गया है। ड्रायडन को ड्यूक और ड्यूक की पत्नी से अनेक बार कृपा प्राप्त हुई थी, और वह अपने पुत्र के प्रति चार्ल्स की कोमल भावनाओं को जानता था।

कितना निष्कलंक जीवन (महत्वाकांक्षा से हीन),
क्रूरता और गर्व दोनों से रहित,
वह कितना सुखी होता यदि दैव,
उसे और ऊँचे कुल में जन्म देता, अपना इतने में भी नहीं।

उसके राजनीतिक दुस्साहसों का सारा दोष प्रलोभनकारी शैफ्ट्सबरी पर आरोपित किया जाता है। "स्वयं ईश्वर के मन के अनुरूप" राजा के समस्त विरोधियों में इस महान ह्विग नेता को उन केन्द्रीकृत उद्वेगों की दिशा में निष्कृष्टतम कहा गया है, जो दो शताब्दियों तक जाग्रत रहती हैं।

इनमें से झूठा एचिटोफेल प्रथम था,
जिसका नाम आने वाली सभी पीढ़ियों के लिए अभिशप्त रहा;
जो गुप्त षड्यंत्रों और धूर्ततापूर्ण मंत्रणाओं के लिए उपयुक्त,
एवं चतुर, साहसी तथा वाक्पटु था।
जो विकल तथा सिद्धान्तों और स्थान दोनों की दृष्टि से अस्थिर था,
जो सत्ताधारी होने पर असंतुष्ट रहता था और मानहानि सहन नहीं कर सकता था,

वह एक ऐसा साहसी नाविक था जो अतिशयता पसन्द करता था,
प्रचंड लहरों में वह संकटों से प्रसन्न रहता था और तूफानों की खोज करता था।

जहाँ शैफ्ट्सबरी कवि की अत्यन्त कठोर आलोचना का लक्ष्य बिंदु है, वहाँ प्रमुख पात्रों का चित्रण भी कम शक्ति और कौशल से नहीं किया गया है। चार्ल्स प्रथम के कृपापात्र के पुत्र और चार्ल्स द्वितीय के बाल्यकाल के साथी बकिंघम (Buckingham) का प्रसिद्ध चित्रण इस कुलीन व्यक्ति को जिसने राजनीति और साहित्य में मन लगाया। कुछ प्रखर प्रहारों द्वारा ही चित्रित कर दिया गया है।

वह विविधताओं से इतना पूर्ण था कि एक मनुष्य नहीं समस्त मानवता
का साररूप प्रतीत होता था।

अपने विचारों में दृढ़ और सदैव गलती ही पर रहता था,
हर कार्य को आरम्भ करने को तत्पर रहता था, परन्तु अधिक समय तक
कुछ नहीं करता था।
एक ही मास की अल्पावधि में उसे रसायनशास्त्री, संगीतज्ञ, राजनयज्ञ और
विदूषक के रूपों में देखा जा सकता था।
और फिर वह स्त्रियों को रिझाने, चित्रकारी, गायन मद्यपान में लग जाता था।
एवं इसके अतिरिक्त हजारों शरारतें उसके मस्तिष्क में रहती थीं, जो कभी
पूरी नहीं होती थीं।

जिमरी के तीक्ष्ण वैपरीत्यक आयु के साथ सम्मान से भी विभूषित "आरमंड" (Ormond) के सत्पुरुष बार्जिलाई (Barzilai) को दिखाया गया।

निष्कासन काल में अपने देवतुल्य नरेश के साथ उसने शोक मनाया;
उसके लिए उसने कष्ट सहे और उसके साथ ही वह स्वदेश वापस लौटा।
वह दरबार में रहा परन्तु दरबारियों की कला से दूर रहा;
उसकी सम्पत्ति विशाल थी परन्तु हृदय उससे भी अधिक विशाल था।

अन्य छोटे पात्रों में किसी का चित्र उतने स्पष्ट कौशल से प्रस्तुत नहीं किया गया है, जितना लंदन के गणतंत्रवादी "शैरिफ" स्लिंग्सबी बेटल (Slingsby Bethel) का।

शिमई, जिसकी तरुणाई ईश्वर के प्रति भक्ति और राजा के प्रति घृणा का संदेश लेकर आई।

वह बुद्धिमत्तापूर्वक व्ययसाध्य पापों से दूर रहा, और
लाभ की संभावना के अतिरिक्त, उसने धार्मिक नियमों को कभी नहीं तोड़ा।
और न कभी उसे कोई शपथ अथवा शाप व्यक्त करते सुना गया,
केवल शासन के विरुद्ध शपथें और शाप इसके अपवाद थे।
नगर (लन्दन) ने उसे उसकी अपने स्वामी के प्रति
पवित्र घृणा के पुरस्कार स्वरूप दंडनायक चुना।
यदि उसके किसी धूर्त मित्र ने कभी कोई शिकायत की
तो वह असहमतिवादी यहूदियों को जूरी बनाता था;
जिनकी दैवी कार्य के लिए सहकार भावना,
उस कष्ट पाते संत को मानवीय विधियों से युक्त कर देती।
क्योंकि विधियाँ केवल राजा की सेवा करने वालों को
दंड देने तथा उसके शत्रुओं की रक्षा करने के लिए हैं।
उसका कार्य अपनी रचनाओं से लोगों को यह विश्वास दिलाना था,
कि राजा लोग व्यर्थ हैं और व्यापार के लिए अवरोध हैं।

शैफ्ट्सबरी के जीवन की रक्षा नगर के 'ग्रान्डजूरी' (Grand Jury) द्वारा हुई और सबूत पक्ष की असफलता की यादगार के लिए एक पदक की घोषणा द्वारा सम्पन्न की गई। ड्रायडेन ने शीघ्रता से एक छोटी कविता "दी मेडल, ओर ए सेटायर अगेन्स्ट सेडिशन" (The Medal, or a Satire Against Sedition) में पुनः अपना अभियोग प्रस्तुत किया। शैफ्ट्सबरी के विरुद्ध घृणा यहाँ भी सदैव की भाँति ही उग्र है—

कितना अच्छा मनुष्य, कितना प्रियदर्शी,
हृदय का कितना नीच, झूठा और उथला।
वह जनसमूह को यह उपदेश देता है कि
सत्ता कुछ समय के लिए सौंपी जाती है,
और राजतंत्र को अर्पित कभी नहीं की जाती,

जो यह कहता है कि जनसमूह कभी गलती नहीं कर सकता,
और जो जनता को पोप के आसन पर आरूढ़ कर देता है।

अनेक ह्विग नेताओं में, जिन्होंने यह चुनौती स्वीकार की, एक प्रतिद्वन्दी नाटककार, शैडवेल (Shadwell) था, जिस पर ड्रायडेन ने तीसरी व्यंग-रचना "मैक्फ्लेक्नो" (MacFlecknoe) में क्रूरतापूर्वक प्रहार किया। फ्लेकनो निकट काल में ही मृत एक सनकी सा असहत्वपूर्ण कवि था, जो—

मूर्खता के सम्पूर्ण जगत में, गद्य और पद्य दोनों में ही,
निर्विवाद रूप से अपनाया गया।

और जिससे शैडवेल को अपना उत्तराधिकारी और पूर्ण प्रतिरूप घोषित करवाया गया है। परन्तु इसमें और इसके बाद प्रकाशित "ऐब्सलोम ऐड एचिटोफेल" के दूसरे भाग में इतने छोटे लक्ष्य के विरुद्ध निर्दिष्ट इतने भारी तोपखाने में कुछ असंगति है।

ड्रायडेन की रचना "रेलिजिओ लाइसी" (Religio Laici) ने, जो कैथोलिकवाद और असहमतिवाद के विरुद्ध घोषणा-पत्र था, उसकी प्रोटेस्टेन्ट आस्थाओं को व्यक्त किया और अपवर्जनवादियों (Exclusionists) के विरुद्ध उसका संघर्ष प्रोटेस्टेन्ट शिविर से जारी रहा। परन्तु जेम्स द्वितीय के शासन के प्रारम्भिक काल में कवि कैथोलिक हो गया; यद्यपि इस परिवर्तन को महत्वाकांक्षा अथवा लाभ की आशा से सम्बन्धित करने की कोई आवश्यकता नहीं है। सन् १६८७ में प्रकाशित अन्तिम महान् कविता "दी हिन्ड ऐन्ड दी पैन्थर" (The Hind and the Panther) में उसने अपने नए दृष्टिकोण को स्पष्ट करने और उसका औचित्य सिद्ध करने का त्वरत प्रयत्न किया। रोमन चर्च कवि के अनुरागों में स्वभावतया प्रथम स्थान ग्रहण करता है—

अमर और स्थिर दूध जैसा श्वेत मृग,
बाहर से बेदाग़ और हृदय से बेलाग;
वह किसी संकट से भय नहीं खाता था,
क्योंकि वह पाप से अपरिचित था।

अपेक्षाकृत मित्र-भाव से वह अपने पुराने समुदाय की बात करता है—

बाघ, जो कि निश्चित रूप से मृग के पश्चात्,
सर्वाधिक पवित्र हृदय जीव होता है,
और चित्तीदार जीवों में सर्वाधिक श्रेष्ठ।
कितना अच्छा होता यदि उसके जन्मजात दाग धुल सकते,
वह इतना श्रेष्ठ था कि उसे शिकारी जीव नहीं होना चाहिए था।

पहले भाग में असहमतिवादियों के प्रति अत्यन्त कठोरतापूर्वक व्यवहार किया गया है; परन्तु जब रचयिता को सामान्य 'इन्डलजेन्स' (Indulgence) द्वारा उन्हें शान्त करने की इच्छा का पता लगा, तो उसने तुरत तीसरे भाग और आमुख में सुधार करने की चेष्टा की। कविता में अन्यून ओज प्रगट हुआ और इसमें कई सुन्दर अंश हैं; परन्तु जन मत या नीति पर इसने कोई प्रभाव नहीं डाला और उसने एक टोरी प्रचारक के रूप में अपनी सनसनीखेज सफलता का दंड भोगते हुए क्रांति के साथ राज-कवि पद और पेंशन को खो दिया।

जेम्स को राज्याधिकार से अपवर्जित करने की चेष्टा भयानक भूल थी। ह्विग दल वालों की हिंसात्मकता ने राजा की सहायता की, जिसने अपने को अपनी किसी योग्यता के कारण नहीं, किसी अन्य समय की अपेक्षा शासन के अंतिम काल में दृढ़तर स्थिति में पाया। द्वितीय गृह-युद्ध की सन्निकटता के भय के कारण राष्ट्र में राजभक्ति की धारा फूट पड़ी और ऐसी भाषा का प्रयोग किया गया, जो चार्ल्स प्रथम के समय के बाद सुनी नहीं गई थी। दास भावना की उच्चतम सीमा सन् १६८३ में आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय की आज्ञाप्तियों में दृष्टिगोचर हुई, जब 'कन्वोकेशन' ने सत्ताइस प्रस्तावों की निन्दा की, जिनमें एक यह भी था कि राजनीतिक सत्ता जन साधारण से उद्भूत होती है, शासक और उसकी प्रजा के बीच एक पारस्परिक अनुबन्ध वर्तमान है और राजा की आज्ञा का लार्डस् और कामन्स सभाओं द्वारा अति-क्रमण हो सकता है। मिलेनैरियनों और 'क्वेकर्स' (Quakers) के सिद्धान्तों को मिल्टन और बैक्सटर, ओवेन और जानसन के सिद्धान्तों के साथ रखा गया और हॉब्स को जो अपने को ऐसे संसर्ग में पाकर आश्चर्यान्वित हुआ होता, इस शिक्षा के लिए दोषी घोषित किया गया कि आधिपत्य आज्ञाकारिता प्राप्त करने का अधिकार प्रदान कर देता है।

जब तक चार्ल्स राज्य सिंहासन पर था, तब तक ऐसे विद्वत्तापूर्ण बिजान्टाइनवाद (Byzantinism) का कोई अर्थ नहीं था; परन्तु जब उसके कैथोलिक भाई ने उत्तराधिकार प्राप्त किया, तो राजा के विशेषाधिकार के उत्कर्ष ने और भी डरावना रूप धारण किया। अंग्रेजों के अधिकारों के खतरे की अभिव्यक्ति एक चमक में एडवर्ड हेल्स (Edward Hales) के विरुद्ध धोखे से चलाए गए मुकदमे में माननीय मुख्य न्यायाधीश के निर्णय से हुई, जिन्हें राजा ने टेस्ट ऐक्ट (Test Act) का उल्लंघन करते हुए डोवर कैसिल (Dover Castle) का गवर्नर नियुक्त किया था। उन्होंने कहा, राजा निर्बन्ध शासक है; विधियाँ उसकी हैं और उनका निर्माण कार्य उसी से सम्बन्धित है। राजा अपने विशेषाधिकारों के किसी अंश का परित्याग नहीं कर सकता, न पार्लमेंट, उसकी सहमति से भी नहीं, उसे अपने सेवकों के विकल्प को ही सीमित कर सकती है। "चाहे कोई भी विधि क्यों न हो, केवल सर्वश्रेष्ठ विधि निर्माता द्वारा उसी प्रकार हटाई जा सकती है, जिस प्रकार ईश्वरीय विधि केवल ईश्वर के द्वारा हटाई जा सकती है।" यह निर्णय बज्र की तरह आया और टोरी दल वाले ह्विग दल वालों से सहमत थे कि यदि ऐसे सिद्धान्त अनाविरोधित निकल गए, तो प्रोटेस्टेन्टवाद का प्रासाद शीघ्र ही नष्ट हो जायगा। राष्ट्रीय आस्था के लिए ऐसे संकट के सम्मुख निर्विरोधिता का सिद्धान्त बादल की भाँति ओझल हो गया। एक शताब्दी के विकास का अन्त कन्वैन्शन पार्लमेंट के उस प्रस्ताव में स्थापित हुआ कि राजपद का अधिकार राजा और जनता के बीच एक प्रारम्भिक अनुबन्ध से प्राप्त हुआ था, कि यह अनुबन्ध जेम्स द्वारा भंग किया गया, और कि राज्यसिंहासन रिक्त है। राजाओं की दैविकता, जिसने इंगलैंड में जेम्स प्रथम के साथ प्रवेश किया था, उनके पोते के साथ सदैव के लिए यहाँ से चली गई।

अध्याय ९

हैलीफैक्स

पुनर्स्थापन युग का सर्वाधिक तीव्र बुद्धि वाला और मौलिक मनीषी ह्विग और टोरी दलों के भयानक संघर्ष से पृथक रहा और उसने उन अस्त्रों की, जो हर कोने से उस पर बरसाए जा रहे थे, वर्षा से भयभीत होकर रुके बिना अपने पथ का अनुसरण किया। यद्यपि मैकाले (Macaulay) ने उसकी राजनयज्ञता का समर्थन किया, पर आधुनिक काल ही में 'प्रिंस आव ट्रिमर्स' (Prince of Trimmers) की रचनाओं को राजनीतिक साहित्य की उच्च कोटि में उचित स्थान प्राप्त हुआ।

जार्ज सेवाइल (George Savile) अपनी सदी के अनेक सर्वाधिक प्रसिद्ध व्यक्तियों, स्ट्रैफर्ड और सिडनी, शैफ्ट्सबरी और संडरलैंड से रक्त या विवाह से सम्बन्धित था। यद्यपि उसके पिता ने राजा के पक्ष में युद्ध किया था, पर सन् १६४३ में भावनाओं के कटु होने के पूर्व उसकी असामयिक मृत्यु ने उसकी विशाल भू-सम्पत्ति को जब्त होने से बचा लिया; और जब सन् १६५४ में उसका पुत्र वयस्क हुआ, तो उसने अपने को राज्य के सबसे अधिक धनाढ्य व्यक्तियों में से एक पाया। 'कैवेलियर पार्लमेंट' में उसने अपने चाचा कावेन्ट्री (Coventry) और मित्र बकिंघम (Buckingham) का उस प्रहार में साथ दिया, जिसका परिणाम क्लेरेंडन के पतन के रूप में हुआ और उसकी सेवाएँ वाइकाउन्ट आव हैलीफैक्स (Viscount of Halifax) की पदवी से पुरस्कृत की गईं। 'कैबल' (Cabal) को सामान्य समर्थन प्रदान करते हुए उसने 'टेस्ट ऐक्ट' का स्वागत किया, जिसने उस मिश्रित मन्त्रिमन्डल को भंग कर दिया और यार्क के ड्यूक को उसके नौ सेना के पद से हटा दिया। प्रोटेस्टेन्ट भावना के प्रभाव से आश्चर्यचकित होकर राजा ने इंग्लैंड के धर्म परिवर्तन के 'महान कार्य' (La Grande affaire) का

परित्याग कर दिया। जब कैबल मन्त्रिमन्डल के बाद डैनबी (Danby) ने सत्ता प्राप्त की तो हैलीफैक्स विरोधीपक्ष में शैफ्ट्सबरी से जा मिला और सन् १६७६ में उक्त मंत्री के पतन के बाद पहली बार एक पद प्राप्त किया। इस स्थल पर उसके जीवन का सर्वाधिक महत्वपूर्ण समय प्रारम्भ होता है। इस ह्विग नेता का उद्देश्य यार्क के ड्यूक को उत्तराधिकार से इस आधार पर वंचित करना था कि वह माना हुआ कैथोलिक था। दूसरी ओर हैलीफैक्स ने, यद्यपि वह कैथोलिक धर्म को अपने चाचा जितनी हार्दिकता से ही घृणा करता था, इस योजना का इस आधार पर दृढ़ता से विरोध किया कि इसके कारण गृहयुद्ध होगा, और प्रोटेस्टेन्टवाद के विरुद्ध सभी खतरों का निवारण राजा पर प्रतिबंध लगा देने से हो सकता है। बर्नेट के अनुसार, वस्तुतः, उसने ह्विग नेताओं को व्यक्तिगत रूप से बताया कि उसकी स्थिति दूसरों से आगे है, क्योंकि जिन शर्तों पर वह जेम्स के उत्तराधिकार को मान्यता देने को प्रस्तुत था, वह वस्तुतः गणतंत्रवादी सरकार की स्थापना करना जैसा ही है। सन् १६७६ में राजा को पार्लमेंट भंग करने की उसकी सलाह ने कंट्री पार्टी (Country Party) को उसे गद्दार घोषित करने की ओर अग्रसर किया; और अर्ल के पद पर उसकी पदोन्नति ने उस पर बढ़ती हुई राजकृपा की अभिव्यक्ति की। परन्तु यद्यपि उपाधियों के लिए उसके मन में दुर्बलता थी, राजा के हित का उसके द्वारा किया गया समर्थन गहन आस्था का परिणाम था। जब सन् १६८१ में 'एक्सक्ल्यूजन बिल' (Exclusion Bill) लार्ड सभा में पहुँचा और देश उत्तेजना से पूर्ण था, तो शैफ्ट्सबरी के साथ उसके वाक्‌द्वंद के फलस्वरूप न्यून बहुमत से उसकी अस्वीकृति हुई। यह महान सेवा उसकी मारक्विस (Marquis) के पद पर पदोन्नति से पुरस्कृत की गयी।

उस भयानक दलगत संघर्ष में, जो चार्ल्स द्वितीय के शासनकाल के उत्तर भाग में परिव्याप्त था, हैलीफैक्स ने नियमितता लाने का काम किया। उसका स्वभाव से रूढ़िवादी मस्तिष्क, समय की आवश्यकताओं और गति के प्रति जागरूक अत्यन्त संतुलित उपकरण था। वह शिष्ट और दार्शनिक प्रकृति का व्यक्ति था, तथा हिंसा, क्रूरता और प्रतिशोध से घृणा करता था। उसने लार्ड स्टेफर्ड और अलजर्नान सिडनी दोनों की फाँसी का विरोध किया। इस कारण

कि उसने विभिन्न व्यक्तियों के साथ काम किया और कभी विरोध पक्ष में और कभी पदारूढ़ रहता था, उग्रस्वभावी दलीय व्यक्तियों को यह विश्वास हो गया कि वह डूबते जलपोत को छोड़ भागने वाला तथा उगते सूर्य की पूजा करने वाला अवसरवादी था। अपने चरित्र और मत की पुष्टि के लिए उसने सन् १६८४ ई० के अन्तिम दिनों में "दी कैरेक्टर ऑफ ए ट्रिमर" (The Character of a Trimmer) नामक पुस्तक लिखी। क्योंकि अनुमति मिलने की आशा नहीं थी, इसलिए सन् १६८८ में इसके छपने तक इसकी हस्तलिखित प्रतियाँ लेखक का नाम दिए बिना ही प्रचलित रहीं। इसकी रचना का तत्कालीन कारण "दी आबजर्वेटर" (The Observator) में रोजर ले एस्ट्रेंज (Roger L.' Estrange) की संयम को नीति की झंकृत आलोचना था। उक्त प्रसिद्ध टोरी पत्रकार ने घोषणा की थी "एक ट्रिमर (Trimmer) राजनीति तथा धर्मशास्त्र दोनों ही में समान रूप से स्वतन्त्र मनुष्य होता है; वह उस प्रकार का ईसाई होता है जो चर्च की एकता की रक्षा करने की अपेक्षा उसमें मतभेद को प्रश्रय देने में अधिक सदाचार अनुभव करता है। संविधान की अपेक्षा अपराध और उसे पालन करने की अपेक्षा भंग करने वालों के प्रति वह अधिक दयालु होता है। जब कोई प्रजाजन कहता है कि वह समर्पण नहीं करे, तो 'ट्रिमर' कहता है कि सरकार अवश्य समर्पण करे। वह विधि को इस कारण हटा लेता है, कि "जनता उसे तोड़ न सके।" पुस्तक के जिस नाम ने ले' एस्ट्रेंज की घृणा को उत्तेजित किया था, वह मारक्विस द्वारा प्रसन्नतापूर्वक ग्रहण कर लिया गया, जिसकी पुस्तिका केवल अभियोगों का खंडन करने के लिए ही नहीं बल्कि एक नये राजनैतिक कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत करने के लिए लिखी गई थी। उसकी एक प्रति राजा के पास भेजी गई और उसके कई अंश यह स्पष्ट करते हैं कि वह राजकृपा प्राप्त करने के लिए लिखी गई थी।

पुस्तिका का प्रारम्भ उसके अरुचिकर परिचय पत्र का औचित्य सिद्ध करने के प्रयत्न से होता है। "इस निर्दोष शब्द ट्रिमर का अर्थ इससे अधिक कुछ नहीं है कि यदि कई लोग एक साथ किसी नाव में हों और उनमें से कुछ उसके एक तरफ भार डाल दे और दूसरा भाग उसके विपरीत इसे हल्का बना दे, तो

यह शिष्ट पर स्पष्ट चेतावनी उस तूफान के लिए थी, जो सन् १६८८ में उठने वाला था। हैलीफैक्स आगे लिखता है, "हमारा 'ट्रिमर' स्वतन्त्रता की प्रबल इच्छा रखता है, फिर भी वह इतनी परिमित होती है कि इससे उसकी राजभक्ति तनिक भी क्षीण अथवा दूषित नहीं होती। वह इस बात को अत्यन्त कठिन समझता है ऐसा कोई मनुष्य जो स्वतन्त्रता को प्रेम न करता हो कभी अपना परलोक सुधार सकेगा। वह उसे समस्त गुणों का आधार और एकमात्र ऐसी वस्तु के रूप में मानता है, जो "जीवन में स्वाद ला देती है। यद्यपि मानव जाति के अधिक स्थूल और इहलौकिक भाग के लिए दासत्वपूर्ण पराधीनता के आलस्य के अपने आकर्षण होते हैं, परन्तु श्रेष्ठतर मनुष्यों को संसार जो कुछ दे सकता है, वह स्वतंत्रता के बिना स्वादहीन है।" सारी शक्ति लगाकर जयध्वनि करने के पश्चात् लेखक पुनः संविधान की ओर मुड़ता है, जिसमें प्राधिकार और स्वातंत्र्य का आनन्दप्रद सामंजस्य उपस्थित किया गया है। "यह राजा को स्वतन्त्र मनुष्य को आज्ञा देने की गौरवपूर्ण शक्ति देता है और प्रजा को सत्ता को इस प्रकार अवस्थित होते देखने का संतोष कि उसके अधिकार सुरक्षित रहते हैं। यह नाशकारक शक्ति को नहीं, पोषक और रक्षक शक्ति को मान्यता प्रदान करता है। यद्यपि कुछ परिस्थितियों में राजा पर प्रतिबन्ध रहता है, परन्तु उसके बिना शासन का कोई कार्य नहीं हो सकता। विधियाँ पराधीनता और आज्ञाकारता तथा नाशकारक परमाधिकारों और पातकी स्वतन्त्रता के बीच यथार्थ भेद करती हैं।" "हमारा 'ट्रिमर' पार्लमेंट की उन गलतियों और ज्यादतियों के होते हुए भी, जो इन दिनों विरोध का इतना अधिक कारण बनी हैं, उसका मित्र है। वह पार्लमेंट के तुरन्त बुलाये जाने का समर्थन करने के लिए आगे बढ़ता है, क्योंकि यह संविधान का मुख्य भाग है और क्योंकि अन्य कोई चीज राष्ट्र को एकीकृत और व्याधिमुक्त नहीं कर सकती।

यद्यपि हैलीफैक्स को प्रायः नास्तिक कहा गया है, परन्तु समाज और व्यक्ति के लिए धर्म के महत्व पर अन्य कोई उससे अधिक बल देकर नहीं बोल सका। "इसके बिना मनुष्य एक परित्यक्त जीव, प्रकृति द्वारा उत्पन्न निकृष्ट पशुओं में से एक, केवल भेड़िए और भालुओं के समाज में रहने योग्य होता है; इसलिए यह सब युगों में शासन का आधार रहा है। बिना इसकी सहायता के विधियाँ

मनुष्य की इच्छाओं की कुटिलता को अधीन करने योग्य न हो सकेंगी, जिनको दबाने के लिए जंगली पशुओं की भाँति दोहरी जंजीर की आवश्यकता है।" परन्तु धर्म के प्रति उसकी श्रद्धा उसे चर्च की कुछ तीक्ष्ण आलोचना करने से रोक न सकी। "हमारा ट्रिमर पादरियों का उनके समस्त विधिसंगत अधिकारों के लिए समर्थन कराएगा; फिर भी वह सोचता है कि संभवतः उनमें से कुछ में धार्मिक अधिकारक्षेत्र को विस्तृत करने की अत्यधिक उत्सुकता है, जो दैवी उत्साह से इतना भिन्न है कि लोग इससे ऐसे निष्कर्ष निकालते हैं, जिनसे चर्च की कोई सेवा नही होती।" दूसरा बाण उनकी असहिष्णुता के विरुद्ध चलाया जाता है। "जिस प्रकार यह क्षीण शारीरिक गठन का चिन्ह है कि प्रकृति अच्छे पथ्य सहित किसी वाह्य औषधि की सहायता के बिना हानिकारक रोगों को दूर न कर सके, उसी प्रकार चर्च में यह स्वास्थ्य के अभाव के समान लगता है कि वह राजनैतिक सत्ता का सतत सहारा ले।" तीसरा बाण और अधिक तीक्ष्णता के साथ पादरी वर्ग पर लक्षित है, "जो ईश्वर की पोशाक टावर के उन पहरेदारों के समान पहनते है, जो वेतन लेते हुए भी ऐसा कुछ नहीं करते जो उनके अपने पद से सम्बन्धित है, पर केवल राजा द्वारा प्रदत्त वर्दी धारण करते हैं।"

'ट्रिमर' असहमतिवादियों के प्रति सहिष्णुता की सलाह देता है, यद्यपि उनसे उसे किंचित् ही सहानुभूति है। "यहाँ तक कि उन लोगों में भी, जो अच्छे अभिप्राय वाले हैं और गलत रास्ते पर पड़ गए हैं, वह उसे ऐसे रोग के रूप में देखता है, जिसने उनके मस्तिष्क को जकड़ लिया है।" वह केथोलिकों पर अधिक व्यापक रूप से विचार करता है, क्योंकि यह एक ऐसा विषय था, जिस पर उसके विश्वास दृढ़ थे। "यदि कोई व्यक्ति इस धर्म के विषय में द्वेषपूर्वक भाव प्रकट करे, तो वह कह सकता है कि यह उन रोगों के समान है, जिनमें यदि संक्रमण की एक बूँद भी शेष रह जाती है, तो इसके द्वारा सम्पूर्ण रक्त के भ्रष्ट होने का संकट वर्तमान रहता है।" एक बुद्धिमत्ता-पूर्ण और कटु अंश में वह इस बात पर आश्चर्य व्यक्त करता है कि तमाम झुर्रियों के होते हुए भी रोमन चर्च रूपी वृद्धा महान् राजाओं को अपने आकर्षण द्वारा वश में कर लेने में समर्थ है। "सुन्दरता से इतनी दूर, फिर भी इतना

अधिकार जतानेवाली; इतनी सजी-धजी, फिर भी इतनी आडम्बरपूर्ण; इतने अधिक प्रेमियों को दुर्वचन कहने, पदच्युत करने और उनकी हत्या करने के पश्चात् वह अब भी अपनी नई श्रृङ्खला पर प्रसन्न और अहम्मन्य—अन्य नए-नए प्रेमी ढूँढ़ लेती है। वह अपनी दूकान में बैठती है और महँगे भावों पर अपनी बकवास और लकड़ी के घोड़े बेचती है, जबकि विमुग्ध संसार अब भी उसके लिए ग्राहक जुटाता है।" यह गृहयुद्ध के भयंकर परिणामों में से एक था कि इंग्लैंड के राजवंशी प्रोटेस्टेन्टों द्वारा विदेश भगा दिये गये और उनका कैथोलिकों द्वारा सादर स्वागत किया गया। इस समस्या पर कि सरकार को क्या करना चाहिए, वह दृढ़ता और मृदुता के मिश्रण का समर्थन करता है। "पोप के अनुयायी हमारे बीच अवश्य हों, और यदि उनका धर्म उन्हें मधुकोष में मधु ले आने से रोके, तो सरकार को कम से कम सरल साधनों द्वारा उनका डंक उनसे छीन लेने की चेष्टा करनी चाहिए।" वह दोनों पक्षों से आत्म-संयम को प्रयोग में लाने की प्रार्थना करता है। यह कामना करनी चाहिए कि प्रोटेस्टेन्ट इतने द्वेषी न हों कि उस बारूद को स्पर्श करें, जो राजा और दोनों पार्लमेंट की सभाओं को उड़ा देनेवाली थी; और दूसरी ओर पोप के अनुयायी किसी आशा पर बढ़कर ऐसी बढ़ी-चढ़ी बातें कहने की ओर अग्रसर न हों, जो लोगों को उनके प्रति कम उदार होने के लिए उत्तेजित करें। यह कैथोलिकों को पदों से अलग रखकर कैथोलिकवाद को सहन करने की नीति थी, जिसका उसने अपने सम्पूर्ण राजनैतिक जीवन में प्रतिपादन किया।

पुस्तिका के अंतिम भाग में वैदेशिक नीति पर विचार किया गया है। फ्रांस और स्पेन की प्रतिद्वंदिता के कारण उनके बीच संतुलन स्थापित रखना हमारे हित में था; परन्तु वह समता, जिसे हम सदैव सुरक्षित रख सकते थे, दुर्भाग्यकाल में क्रामवेल द्वारा दुर्बल राज्य के विरुद्ध शक्तिशाली राज्य का समर्थन करने से नष्ट हो गई। 'ट्रिमर' फ्रांस के पक्ष या विपक्ष में कोई पूर्वाग्रह नहीं रखता, क्योंकि स्पेन अपने सर्वश्रेष्ठकाल में भी उससे किसी प्रकार अच्छा न था। वह किसी अतिविकसित शक्ति के यथार्थ भय से आतंकित है, क्योंकि महत्वाकांक्षा सर्व भक्षी पशु है। फ्रांस का समर्थन करना उसे अपने ही ऊपर आक्रमण करने के लिए शक्तिशाली बनाना है। एक प्रसिद्ध अंश में शांत और संयमी

हैलीफैक्स केवल एक बार हार्दिक उत्साह से लिखता है। "हमारा ट्रिमर अन्य बातों में मूर्तिपूजा से काफी दूर है; केवल एक बात में वह इसके निकट है—उसका देश कुछ अंशों में उसका इष्ट है। क्योंकि इंग्लैंड की धरती में उसके लिए देवत्व है, और वह इंग्लैंड की धरती में उत्पन्न घास की एक टहनी को किसी विदेशी अनाधिकारी द्वारा कुचले जाने देखने के पूर्व मर जाना चाहेगा।" पुस्तिका एक सारगर्भित अनुच्छेद से समाप्त होती है, जिसमें ईश्वर और प्रकृति का न्यायपूर्ण युग का सुसंदेश पुनः प्रवर्तित करने के लिए आवाहन किया गया है। "संसार के उस भाग जिसमें मनुष्य भूने जाते हैं, तथा दूसरे भाग, जिसमें मनुष्य बर्फ में जमा दिए जाते हैं, के बीच हमारी जलवायु एक 'ट्रिमर' है। मनमानी कल्पनाओं और पोपवादी स्वप्नों के आलस्यपूर्ण उन्माद के बीच हमारी चर्च एक 'ट्रिमर' है। असीमित सत्ता की ज्यादतियों और अपर्याप्त रूप से प्रतिबंधित स्वतन्त्रता की स्वेच्छाचारिता के बीच हमारी विधियाँ 'ट्रिमर' हैं। यथार्थ गुण को सदैव एक 'ट्रिमर', तथा दो चरम सीमाओं के बीच अवस्थित माना गया है। स्वयं सर्वशक्तिमान ईश्वर तक अपने दो गुणों, क्षमाशीलता और न्यायपरता, के बीच विभक्त है। किसी भी संसर्ग में हमारा ट्रिमर अपने नाम के कारण लज्जित नहीं होता और दोनों में से किसी चरमसीमा के दृढ़ समर्थकों को प्रकृति, धर्म, स्वतन्त्रता बुद्धिमत्ता, मानवता और व्यावहारिक बुद्धि जैसे विरोधियों का सामना करने का सम्मान इच्छापूर्वक प्रदान करता है।"

सारगर्भित तथा सुभाषित, विचार और निरीक्षण से परिपूर्ण, यह रचना सत्रहवीं शताब्दी की महानतम राजनीतिक पुस्तिका थी। जहाँ लॉक शीघ्र ही व्यापक सामान्य बुद्धि की दिशा में सीमित राजतन्त्र के पक्ष में तर्क प्रस्तुत करने वाला था, हैलीफैक्स अपने लक्ष्य की ओर चातुर्य्य और हास्य, दृष्टान्त तथा सारपूर्ण कहावतों के सहयोग से आगे बढ़ता है। ऐसे समय पर, जब देश ह्विग और टोरी दलों में प्रचण्डता से विभक्त था, वह दो स्थायी परस्पर विरोधी गुटों की सृष्टि का घोर प्रतिवाद करता है। एक ओर शासकों को स्पष्ट चेतावनी दी जाती है कि यदि वे अति करेंगे, तो उनका नाश कर दिया जायगा। दूसरी ओर वह प्राकृतिक विधि और सामाजिक अनुबन्ध के तर्क की शान्तिपूर्वक उपेक्षा कर जाता है। यह चेतावनी अनसुनी कर दी गई। ब्रिटिश राजतन्त्र पर सन्

१६८८ में प्राणघातक प्रहार हुआ और प्रथम दो जार्जों ने इसकी शक्ति और अधिक घटा दी। जब राजपद वास्तविक कार्यपालिका नहीं रहा, तो दलगत शासन, जिसके विरुद्ध इस 'ट्रिमर' का जीवन और उसकी रचनायें सतत प्रतिवाद थीं अवश्यम्भावी हो गया। वह कुशल निरीक्षक और तेजस्वी विचारक था, पर भविष्यद्रष्टा की प्रतिभा उसमें नहीं थी।

यद्यपि 'एक्सक्ल्यूज बिल' (Exclusion Bill) को रद्द करा के उसने यार्क के ड्यूक के लिए राजपद सुरक्षित कर दिया, पर कैथोलिकवाद के प्रति उसकी अजेय घृणा ने जेम्स द्वितीय के शासनकाल में उसे विरोध पक्ष में पहुँचा दिया। सहिष्णुता के सिद्धान्तों से अनुराग रखते हुए भी उसने 'डिक्लेरेशन आव इंडलजेन्स' (Declaration of Indulgence) का खुले हृदय से विरोध किया, जिसका असहमतिवादियों के लिए द्वार खोल देने के पीछे, कैथोलिकों को प्रविष्ट करने का अभिप्राय था। कैथोलिकों के प्रति सहिष्णुता तभी संभव है, जब वे पद से अलग रखे जायँ। इस 'डिक्लेरेशन' की प्रारम्भिक आलोचनाओं में से "लैटर टु ए डिसेन्टर" (Letter to a Dissenter) भी था जो बिना लेखक का नाम दिए प्रकाशित किया गया था। इसकी सहस्रों प्रतियाँ तत्काल बिक गईं और इसका महत्व उन प्रत्युत्तरों की संख्या द्वारा प्रमाणित हुआ, जो इसके विरोध में सामने आए। रोम से उपहार स्वीकार करने का खतरा इसका संदेश था। इस प्रकार राष्ट्रीय अधिकारों के मूल्य पर कुछ क्षणिक सहायता क्रय की जायगी। धार्मिक उत्पीड़न की जननी के विरुद्ध समस्त प्रोटेस्टेन्टों को संयुक्त मोर्चा बनाए रखना चाहिए। "इन नए मित्रों ने आपको स्वेच्छा से नहीं चुना वरन् उन्होंने आपको अपना आश्रय बनाया है। स्वतन्त्रता और अभ्रान्तिवाद की मैत्री संसार की दो सर्वाधिक विपरीत वस्तुओं को एक साथ मिलाती है। रोम का चर्च न केवल स्वतन्त्रता देना पसंद नहीं करता है, बल्कि अपने सिद्धान्तों से वह ऐसा कर ही नहीं सकता। एक चरम सीमा से इतनी शीघ्रतापूर्वक हट आना इतनी अस्वाभाविक क्रिया है कि आप लोगों को सावधान रहना चाहिये। कल तक तो आप लोग बेलियल (Belial) की संतान थे, आज आप लोग ज्ञान के दूत हैं।" अधिष्टाता शक्ति का जब वह सहिष्णुता दिखाए, समर्थन करना प्रोटेस्टेन्टवाद की रक्षा के निमित्त बनी प्रत्येक विधि

के निमूलन का मार्ग सुगम करना है। "इस मिथ्या आत्मिक स्वतंत्रता के लिए आपको अपनी वास्तविक स्वतन्त्रता का बलिदान करना पड़ेगा।" यदि प्रोटेस्टेन्ट संगठित रहेंगे, तो यह खतरा ओले की बौछार के समान समाप्त हो जाएगा। "हमको स्थिर, शांत और अविभक्त तथा साथ ही साथ अपने धर्म, भक्ति और नियमों पर दृढ़ रहना चाहिए।" किसी प्रोटेस्टेन्ट शासक द्वारा दी गई सुविधा चिरस्थायी होगी; एक कैथोलिक द्वारा, खेल की एक चाल मात्र।

एक साल बाद दुर्घटना के ठीक पूर्व हैलीफैक्स ने एक अपेक्षाकृत लम्बी पुस्तिका में पुनः यही दोषारोपण किया। पार्लमेंट के आमंत्रण की घोषणा करने वाली राजा की आज्ञा ने 'टेस्ट ऐक्ट' और दंड विधान के रद्द किए जाने के बदले में राजकीय चर्च (Established Church) की प्रत्याभूति की पूर्व सूचना दे दी। यही वह प्रस्तावित सौदा था, जिसकी हैलीफैक्स ने अपनी 'एनाटॉमी ऑव ऐन इक्विवैलेन्ट' (Anatomy of an Equivalent) नामक पुस्तिका में आलोचना की। यह पुस्तिका "लैटर टु ए डिसेन्टर" (Letter to a Dissenter) के तर्कों को कम लोकप्रिय रूप में विकसित करती है। निस्संदेह, यह एक पुस्तिका की अपेक्षा वृहत् निबंध है। तथापि इसमें कैथोलिकवाद के प्रति सतत रूप से जाग्रत संदेह दृश्य है। जैसी रोम की शिक्षा थी कि नास्तिकों का कोई विश्वास न किया जाय, वैसा ही हैलीफैक्स उत्तर देता है कि रोम से किसी ईमानदारी की आशा नहीं की जा सकती। "प्रारम्भ में ही वह अपने को बाँधने और मुक्त करने की उस शक्ति का दावा करके, जिसका उपयोग प्रायः संधिपत्रों और पापों के संबंध में किया गया है बराबरी की शर्तों पर व्यवहार करने के अयोग्य बना लेता है। अपतनशीलता के साथ कोई सौदा नहीं कर सकता क्योंकि वह समता से इतना ऊपर होने के कारण, किसी बराबरी सत्ता को स्वीकार करने की मानहानि सहन नहीं कर सकता।" ऐसे पक्ष के साथ कोई अनुबन्ध करना पागलपन है, क्योंकि उसका पालन नहीं हो सकता। कोई वादा, राजा तक का वादा, इसके क्रियान्वय की प्रतिभूति नहीं है। "जहाँ अविश्वास क्रोध उत्पन्न करे और विश्वास सर्वनाश ला दे वहाँ चुनाव करना सरल है।"

किसी निश्चय की आवश्यकता कैथोलिक राजा के निष्कासन से टल गई। यद्यपि हैलीफैक्स ने किसी भी अन्य व्यक्ति की अपेक्षा उसकी प्रोटेस्टेन्ट दुर्ग

को जड़ समेत नष्ट करने और खोदने की योजना को व्यर्थ करने के लिए अधिक कार्य किया था, फिर भी उसने क्रांति करने के उत्तरदायित्व में भाग लेना अस्वीकार किया। तो भी, वह टोरी की अपेक्षा ह्विग अधिक था, यद्यपि, दोनों ही मतों के प्रति उसमें मृदु तिरस्कार का भाव था। स्टुअर्ट राजाओं के प्रति भक्ति-भावना और वंशगत सिद्धांत के प्रति श्रद्धा का उसके हृदय में पूर्ण अभाव होते हुए भी उसने एक प्रोटेस्टेन्ट राजा के स्थान पर कैथोलिक राजा को सहर्ष स्वीकार किया। इसके अतिरिक्त विलियम हालैंड से मित्र-भाव का प्रतीक था, जिसका उसने आजीवन समर्थन किया था। उसने शीघ्र ही ऐसे राजा की प्रशंसा करना सीख लिया, जिसने ईमानदारी से अपने को 'ट्रिमर' घोषित किया और जिसने ह्विग शर्यूज़बरी (Shrewsbury) और टोरी बकिंघम को ऊँचे पद पर नियुक्त करके दलों से ऊपर रहने की इच्छा दिखाई। स्वयं मारक्विस, जो रीजेन्सी (Regency) के प्रस्ताव को रद्द करानेवाला मुख्य पात्र था, विलियम के शासनकाल के प्रथम वर्ष में उसका प्रमुख परामर्शदाता था। परन्तु राजा स्वयं अपना प्रधान मंत्री था और सन् १६६० में हैलीफैक्स अपने पद से हट गया और उसके स्वामी ने यह विश्वास दिलाया कि वह अब भी एक 'ट्रिमर' है और 'ट्रिमर' ही रहेगा। यद्यपि जैकबवादियों (Jacobites) ने उससे बातचीत की और उसने उसका शिष्ट उत्तर दिया, फिर भी सेंट जरमेन्स (St. Germains) से चोंचलेबाजी से अधिक उसने कभी कुछ नहीं किया। वह जेम्स की वापसी को असंभव नहीं मानता था और नए राजा के प्रति राजद्रोह का दोषी हुए बिना और पुराने राजा के प्रति उत्तरदायित्वों को ग्रहण किए बिना वह सस्ती सुरक्षा प्राप्त करना चाहता था। सन् १६६५ में अपनी मृत्यु के पहले कुछ वर्षों में उसने तटस्थ निरीक्षक के दृष्टिकोण से घटनाओं का पर्यावलोकन किया।

इस महान् 'ट्रिमर' ने अपने जीवन के अन्तिम दिनों का अवकाश अन्य राजनीतिक पुस्तिकाओं की रचना में लगाया। सन् १६६४ में प्रकाशित उसका संक्षिप्त पर सारगर्भित लेख "ए रफ ड्राफ्ट आव ए न्यू माडेल ऐट सी" (A Rough Draft of a New Model at Sea) नौसेना की शक्ति के प्रति उसके दृष्टिकोण को स्पष्ट करने के कारण महत्वपूर्ण है। "इस प्रश्न

का कि "इस संसार में अपनी रक्षा के लिए हम क्या करेंगे, इसके अतिरिक्त कोई अन्य उत्तर नहीं हो सकता कि अपनी सुरक्षा के उपकरणों का ध्यान रखो। एक अंग्रेज की राजनीतिक आस्था का पहला सिद्धान्त अवश्य ही यह होना चाहिए कि वह नौसेना की शक्ति में विश्वास करता है; उसके बिना उसे मुक्ति के अयोग्य घोषित करने के लिए जनरल कौंसिल की आवश्यकता नहीं है।" "हम लोग सर्वशक्तिमान ईश्वर द्वारा दंड रूप में नहीं, बल्कि मानव जाति को प्रदान की जानेवाली महानतम कृपा के रूप में एक द्वीप में ही सीमित रखे गए हैं।" इस कारण नौसेना इतनी महत्वपूर्ण है कि इसे शासन के जीवन और आत्मा से कम कोई संज्ञा देना इसका निरादर करना होगा। अपने जीवन के अन्तिम सप्ताहों में "काशन टु इलेक्टर्स" (Caution to Electors) में उसने पुनः अपने पुराने शत्रु दल प्रणाली, पर आक्रमण किया। उसकी व्यंगात्मक उक्ति का तीखापन ह्विग तथा टोरी और जैकबवादी तथा गणतंत्रवादी सब ने समान रूप से अनुभव किया। समस्याओं को उनकी योग्यता पर ही निर्धारित करने की दृढ़ता वाले स्वतंत्र सदस्यों को उत्साही व्यक्तियों की अपेक्षा प्राथमिकता दी जानी चाहिए। आवारों, शराबी, वृति-भोगी सरकारी नौकरों, गुप्तचरों, अपव्ययी, बकवासी ये तथा अन्य अनेक अवांछनीय वर्गों के व्यक्तियों पर विचार किया गया है और उन्हें उपयुक्त प्रताड़ना प्रदान की गई है। कुछ अन्य अपवर्जनों का समर्थन करने के बाद लेखक स्वयं अपने विषय में लिखता है। वह "ऐसे लोगों को पार्लमेंट में भेजने" की कुप्रथा की, "जो साधारण विश्वविद्यालयों में भी भेजे जाने के लिए पर्याप्त वयस्क नहीं हैं," शिकायत करता है, "जो प्रतिदिन बढ़ती जाती है।" यदि उसकी बात चले, तो वह तीस वर्ष से कम आयु के किसी व्यक्ति को सदस्य न होने दे। ख्याति प्राप्त प्रतिभावालों के अतिरिक्त अन्य विधिवेत्ता नहीं चुने जाने जाने चाहिए और कामन्स सभा में पदाधिकारियों के लिए कोई स्थान न होना चाहिए। पुस्तक का सर्वाधिक महत्वपूर्ण भाग दल-प्रणाली की आलोचना है। "मैं किसी दल से संबद्ध व्यक्तियों के सम्मुख किसी कक्ष में रहना सहन नहीं कर सकता। ऐसा व्यक्ति कठिनाई से ही स्वतंत्र अभिकर्ता कहा जा सकता है और अपनी स्वतन्त्रता का परित्याग कर चुकने के बाद जनसाधारण की स्वतन्त्रता का संरक्षक बनने

के अत्यन्त अयोग्य है।" "दलगत उष्णता ज्वर की जलन के समान होती है।" अपनी अन्य रचनाओं की भाँति वह इस पुस्तक में भी दल-प्रणाली के मूल्यवान तत्वों को पहचानने में पूर्णतः असफल रहा। ऐसे उम्मीदवारों पर जिन्हें निर्वाचित नहीं करना चाहिए, विस्तृत विचार करने के पश्चात् वह इस परामर्श के साथ समाप्त करता है, "अंग्रेजों को चुनो। और जब मैं यह कहता हूँ तो मैं यह अनुमान नहीं करूँगा कि वे सरलता से प्राप्य हैं।" पुस्तक तीव्रतायुक्त तथा सनकपूर्ण भी है; और ऐसी पार्लमेंट ही जिसमें सब सदस्य हैलीफैक्स जैसे ही हों उसकी अतिपरिमार्जित रुचि को संतुष्ट कर सकती है।

मारक्विस की मृत्यु के बहुत बाद सन् १७५० ई० में उसकी "थाट्स ऐण्ड रिफ्लेक्शन्स" (Thoughts And Reflections) प्रकाशित हुई; परन्तु यह सिद्ध करने के लिए कोई प्रमाण प्राप्य नहीं है कि यह संग्रह लेखक द्वारा व्यवस्थित किया गया था। अंग्रेजी में ला रोचेफोकाल्ड (La Rochefau-cauld) के "मैक्सिम्स" के निकटतम ये बुद्धिपूर्ण सूत्र लेखक का व्यक्तित्व और साथ ही साथ उसके विचार प्रकट करते हैं। वह मानव स्वभाव को हीन मानता है और उसकी पैनी बुद्धि मनुष्य की मूर्खता और भ्रांतियों पर प्रकाश डालती है। "पोलिटिकल थाट्स" (Political Thoughts) में, जिससे यह लेखमाला आरम्भ होती है, वह विवाद के पुराने रीति-रिवाजों पर तिरस्कार प्रकट करता है। "जिस प्रकार लोग अपने मित्र का प्रयोग करते हैं, जब उनकी आवश्यकता होती है; तो प्रशंसा की जाती है और जब वे लड़ते हैं, तो उनके सैकड़ों दोष ढूँढ लेते हैं, वैसे ही मूल सिद्धान्त का प्रयोग होता है।" राजा की सत्ता के विषय में वह प्रशंसनीय रीति से बुद्धिमत्तापूर्ण है। "यदि राजा केवल ईश्वर के प्रति उत्तरदायी है, तो यह बात उसे इस संसार में भी सुरक्षित नहीं करती, क्योंकि यदि ईश्वर प्रार्थना करने पर भी रुकना उचित नहीं समझता, तो जनसाधारण को वह अपना उपकरण बनाता है।" "राजे परमाधिकारों के दावे कर जनता को भी ऐसा करने की शिक्षा देते हैं।" मंत्रियों से सम्बन्धित सूत्रों में व्यक्तिगत अनुभव के स्पष्ट प्रयोग हैं। "संसार मंत्रियों से वाद्य बजानेवालों की भाँति ही व्यवहार करता है, गलत बजाने पर लात मारकर उन्हें नीचे गिरा देने के लिए तैयार रहता है; यद्यपि दोष निकालने

वालों में से कुछ ही उनके संगीत का अच्छे निर्णायक होने योग्य ज्ञान रखते हैं।" "वहाँ सेवा करना संकटपूर्ण है, जहाँ स्वामी को दोषी न ठहराए जाने का विशेषाधिकार प्राप्त है।" "राजा से यह पूछना चाहिए कि वह अमुक कार्य क्यों करेगा, यह नहीं कि उसने ऐसा क्यों किया है।"

जनता के प्रति हैलीफैक्स करुणा अनुभव करता है जो तिरस्काररहित नहीं है। "जब जनता अपनी स्वतन्त्रता की रक्षा के लिए प्रयत्न करती है, तो वह अपनी विजय से नए शासकों के अतिरिक्त कदाचित ही कोई और चीज प्राप्त करती है।" "साधारणतया जनता का अधिकांश भाग या तो इतना निष्प्राण होता है कि कुछ कर ही नहीं सकता या इतना पागल होता है कि उसका सुधार नहीं किया जा सकता। न तो सम्पूर्णतया ज्वाला और न बिलकुल शांत होने के लिए विशाल जन समूह जितना विवेक कभी प्राप्त कर सकता है उससे कहीं अधिक की आवश्यकता है।" मानव जाति इस प्रकार की है ही कि उसको व्यवस्थित रखना दुष्कर कार्य है। यह एक विशाल जलस्रोत के समान है जहां अधिकारियों को निरंतर प्रबन्ध करना पड़ता है। "राष्ट्र गीले आटे के समान है, सरकार ही इसे गूंथकर आकार देती है।" फिर भी सरकार उतनी ही अविश्वसनीय है, जितनी जनता। "सत्ता में धृष्ट और स्वतन्त्रता में अविनीत होने की इतनी अधिक प्रवृत्ति होती है कि दोनों कदाचित ही अच्छे सम्बन्ध रह सकते हैं।" शासन की कठिनाइयाँ दल प्रणाली के अभ्युदय से बढ़ गई हैं; जिस पर हैलीफैक्स एक बार पुनः बाण वर्षा करता है। "सर्वोत्कृष्ट दल भी शेष राष्ट्र के विरुद्ध एक प्रकार का षड्यन्त्र है।" "मुख्यतया अज्ञान ही लोगों को किसी दल में सम्मिलित होने की प्रेरणा देता है और लज्जा उन्हें उससे निकल आने से रोकती है।" इस दुख भरे संसार में कम ही लोग अच्छे हैं और बुद्धिमान तो बहुत ही कम।

हैलीफैक्स और हॉब्स सत्रहवीं शताब्दी के इग्लैंड के सर्वाधिक प्रेरणादायक राजनीतिक लेखक हैं जिनकी किसी अन्य से तुलना नहीं की जा सकती। यद्यपि उनकी शिक्षा मौलिक रूप से भिन्न थी—एक निरंकुश शासन का प्रचारक था, दूसरा सीमित शासन का—फिर भी वे दोनों ही ऐसा कोई दल या संगठन न पाने में जो उनके दृष्टिकोणों का समर्थन करता एक समान थे। हैलीफैक्स के एकाकीपन का मुख्य कारण, निस्संदेह, दलों के प्रति उसकी अरुचि थी; परन्तु एक और

कारण उसके विचार की आधुनिकता भी था। जहाँ उसके समकालीन व्यक्तियों ने आधारभूत सिद्धान्तों और प्राकृतिक विधि, धर्मशास्त्र तथा दृष्टान्त का आश्रय लिया, वहाँ उसने राजनीति पर पूर्णतया अनुभूतिमूलक दृष्टिकोण से विचार किया। उसने सिद्धान्तों का उनके व्यवहार और दावों का उनके परिणामों के आधार पर परीक्षण किया। उसका जीवन बताता है कि वह केवल उपदेश देने वाला राजनीतिज्ञ ही नहीं था और मैकाले ने कहा है कि उसके निर्णय अगली पीढ़ी के निर्णयों के सर्वाधिक निकटतम पूर्वज्ञान से परिपूर्ण थे। यद्यपि उसने कभी कोई व्यापक पुस्तक नहीं लिखी, पर उसकी पुस्तिकाओं में इंग्लैंड के राजनीतिक साहित्य में उतने ही स्थान में किसी अन्य विचारक की अपेक्षा अधिक विचार और पर्यावलोकन मिलता है। उसके व्यक्तित्व ने प्रत्येक व्यक्ति को जो उसके संसर्ग में आया, अनुकूल या प्रतिकूल ढंग से प्रभावित किया। विचारक के रूप में यदि इस संदेहवादी अभिजात्य में कोई दोष था, तो यह कि उसने सामान्य अशिक्षित नागरिक की बुद्धिमत्ता और विचार शक्ति के कोष का लगभग नगण्य सा ही अनुभव किया।

अध्याय १०

राज्य और धर्म

(१)

सत्रहवीं शताब्दी में राज्य और धर्म के सम्बन्ध की समस्या से अधिक अन्य कोई समस्या राजनीतिक विचारकों के मस्तिष्क में व्याप्त नहीं रही। यद्यपि प्रत्येक मत के प्रोटेस्टेन्ट, पोप की महत्वाकांक्षाओं का खंडन करने के लिए संयुक्त हो गए थे, तथापि वे इस विषय में कि किस व्यक्ति अथवा संगठन को धार्मिक विश्वास और व्यवहारों पर प्राधिकार प्राप्त होना चाहिये, असहमत थे। लूथर (Luther) ने इसे लौकिक शासकों को हस्तान्तरित किया और उसका अविच्चल 'इरास्शयनिज्म' (Erastianism) साधारणतया प्रोटेस्टेन्ट राज्यों द्वारा अनुसरित किया गया। दूसरी ओर काल्विन (Calvin) और उसके शिष्यों ने यह शिक्षा दी कि चर्च को राज्य पर अधिकार और उसके सदस्यों पर नियंत्रण रखना चाहिए। न तो विटेनबर्ग (Wittenberg) में और न जेनेवा (Geneva) में ही अल्पसंख्यकों के प्रति सहिष्णुता को कोई स्थान प्राप्य था। धार्मिक स्वतंत्रता के संस्थापक सुधारवादी नहीं बल्कि अद्वैतवादी (Unitarians) थे, जिन्होंने अपनी दासता के विरुद्ध विद्रोह किया। सन् १६०५ में प्रकाशित रैको (Rakau) की सोसिनसवादी प्रश्नोत्तरियों ने सर्वप्रथम धार्मिक स्वतन्त्रता को ईसाइयों के संगठित समुदाय में धर्मनिष्ठा के अंश के रूप में प्रतिपादित किया। अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष में वे संसार की आध्यात्मिक स्वतन्त्रता के लिए संघर्ष कर रहे थे। यह मुक्ति-कार्य आर्मिनियस और एपिस्कोपियस के द्वारा नीदरलैंड के कठोर काल्विनवाद विरुद्ध धर्मयुद्ध में जारी रखा गया।

इंग्लैंड में सत्रहवीं शताब्दी के पूर्व सहिष्णुता के किसी उल्लेखनीय समर्थक का उदय नहीं हुआ। यद्यपि टामस मोरे (Thomas More) ने इसे अपने स्वप्नलोक की वस्तु निर्धारित किया, पर उसका व्यवहार उसके युग

का व्यवहार था। एलिजाबेथ के बन्दोबस्त में, यद्यपि वह समग्रता के लिए प्रचलित था, अल्पसंख्यकों के लिए कोई स्थान नहीं मिला। हालैंड से अपेक्षाकृत अधिक उदार विचार प्रविष्ट हुए। सन् १५८२ में प्रकाशित "लाइफ एन्ड मैनर्स आव ऑल ट्रू क्रिश्चियन्स" (Life and Manners of all True Christians) में उस समय मिडिलबर्ग (Middleburg) में रहनेवाले राबर्ट ब्राउन (Robert Brown) ने किसी अंग्रेज द्वारा पूर्ण धार्मिक स्वतन्त्रता का प्रथम समर्थन प्रस्तुत किया, और दंडनायकों की प्रत्येक प्रकार की धार्मिक सत्ता से इनकार किया। आर्मिनिया के बप्तिस्मावादी लघु समुदाय को, जिन्होंने सन् १६११ में अपने पुरोहित हेलविसे (Helwise) का लन्दन तक अनुसरण किया, ग्रेट ब्रिटेन में प्रथम बार धार्मिक स्वतन्त्रता की सामूहिक घोषणा करने का श्रेय प्राप्त है। सन् १६११ में प्रकाशित उनकी पुस्तक "कान्फेशन आव फेथ" (Confession of Faith) और सन् १६१४ में प्रकाशित लघु पुस्तक "रेलिजस पीस ऑर ए प्ली फॉर लिबर्टी आव कान्शेन्स" (Religious Peace or a Plea for Liberty of Conscience) में इस सिद्धान्त का स्पष्टतापूर्वक उल्लेख किया गया है। इसका लेखक लियोनार्ड बुशर (Leonard Busher) संभवतः हेलविसे के समुदाय का सदस्य था। वह राजा और पार्लमेंट को स्मरण दिलाता है कि किसी मत को तोप और तलवार के द्वारा लादना ईसामसीह के दयालुतापूर्ण नियम के सर्वथा विपरीत है। ईसा मसीह मनुष्यों के जीवन को नष्ट नहीं, उनकी रक्षा करना चाहते हैं। न राजा और न बिशप ही उतने से अधिक किसी विश्वास को मानने को विवश कर सकते हैं जितना वे वायु को नियंत्रण में रख सकते हैं। जिस प्रकार वायु वहीं बहती है जहाँ वह चाहती है, उसी प्रकार ईश्वरीय आत्मा मनुष्य की आत्मा के साथ व्यवहार करती है। "मैंने सुना है कि कांस्टैंटिनोपिल में यहूदी, ईसाई और तुर्कों के प्रति सहनशीलता दिखाई जाती है और वहाँ सभी एक साथ शान्तिपूर्वक रहते हैं। यदि ऐसी बात हो, तो ईसाइयों को दूसरे धर्मों को अधीन करने से कितना अधिक अलग रहना चाहिए? इससे अधिक न केवल निर्दयता बल्कि अधिक अस्वाभाविक और घृणास्पद और कोई बात नहीं हो सकती कि एक ईसाई दूसरे ईसाई पर अत्याचार और अन्याय करे।"

कुछ वर्षों के पश्चात् मेफ्लॉवर (Mayflower) के प्रस्थान के अवसर पर 'इंडिपेन्डेन्ट' धर्मोपदेशक जॉन रॉबिन्सन द्वारा एक महत्वपूर्ण भाषण दिया गया। "यदि ईश्वर किसी अन्य साधन द्वारा तुम्हें कोई और बात बताए, तो तुम उसे सदैव स्वीकार करने के लिए उसी प्रकार तत्पर रहो जिस प्रकार मेरे धर्मोपदेश द्वारा तुम कोई सत्य स्वीकार करने के लिए तैयार रहते हो; क्योंकि मैं वस्तुतः आश्वस्त हूँ कि ईश्वर को अपनी पवित्र वाणी द्वारा अभी अनेक सत्य प्रकट करना हैं। लूथरवादी, जो कुछ लूथर ने कहा है, उससे आगे नहीं लाये जा सकते और काल्विनवादी दृढ़तापूर्वक वहीं जमे हुए हैं, जहाँ उन्हें उस महान ईश्वरीय पुरुष ने छोड़ कर प्रस्थान किया, जिसने तब तक सभी बातों को नहीं समझा था।" यह उदार उपदेश, जो संभवतः संवाददाता द्वारा कुछ परिष्कृत किया गया है, इस विचार के अति प्रारम्भिक वक्तव्यों में से एक को धारण किए हुये है कि धार्मिक सत्य उत्तरोत्तर प्रकट किया जाता है, और विभिन्न मतों और चर्चों को एक दूसरे से सीख लेनी चाहिये। फिर भी यद्यपि कुछ एक एकाकी स्वर सहिष्णुता के लिये उठाए गए पर राष्ट्र इसे अधिकांशतः दुष्टतापूर्ण तथा संकटकारी मानता रहा। 'गनपाउडर प्लॉट' (Gunpowder Plot) द्वारा कैथोलिकवाद के प्रति घृणा पुनः उभरी और जेम्स प्रथम के समय में ट्रिनिटेरियनों के विरोधी, (anti-Trinitarian) लैगेट (Leggat) और वाइटमैन (Wightman) जला दिए गए। तथापि ऐंग्लिकन चर्च में एक अधिक शिष्ट प्रवृति उभरनी आरम्भ हुई। हुकर (Hooker) की रचनाओं में सहिष्णुता का पूर्ण सिद्धान्त अन्तभूत था। उसने यह सुझाया था कि बुद्धि और धर्मशास्त्र दोनों ही की उत्पत्ति दैविक है और धर्माधारित शासन मुख्यतः सुविधा की बात है। अगली पीढ़ी के 'हाई चर्च' आन्दोलन (High Church Movement) को शंकालु काल्विनवादियों द्वारा आर्मिनियनवाद (Arminianism) कह कर निंदित किया गया; किन्तु यद्यपि लॉड कैथोलिकवाद के प्रति सहिष्णु था, पर प्रोटेस्टेंट असहमतिवादियों के लिए उसके हृदय में कोई दया न थी।

जहाँ लॉड और प्योरिटन मतावलंबी स्पष्टतया युद्धरत थे, ऐंग्लिकन चर्च में एक महत्त्वपूर्ण सम्प्रदाय धार्मिक विचारों को अल्पसंख्यकों के प्रति उदार

दृष्टिकोण से संयुक्त करते हुए, उदय हुआ। इन विवेकशील धर्मशास्त्रियों में सर्वप्रथम "चिरस्मरणीय" जॉन हेल्स (John Hales) था। सन् १६१६ में वह डॉर्ट (Dort) की धर्म सभा (Synod) में उपस्थित था, जब काल्विनवादी बहुमत द्वारा 'आर्मीनियन्स' निष्कासित किए गए थे; और वह भयानक संघर्ष एक अरुचिपूर्ण स्मृति सदैव के लिए छोड़ गया। स्वयं उसके ही शब्दों में उसने जॉन काल्विन से विदा ले ली और ईटन के फैलो (Fellow of Eton) के रूप में अपने शान्त जीवन में, आर्मिनियनों से मौलिक और आमौलिक सिद्धांतों का गम्भीर अन्तर ग्रहण कर, व्यापक ईसाई धर्म की ओर अग्रसर हुआ। सन् १६३६ में प्रकाशित धर्मभेद (Schism) पर उसकी पुस्तिका से लॉड को चोट पहुँची और उसके लेखक ने भयवश क्षमा-याचना की। फिर भी उसकी रचनाओं और उसके प्रभावशाली व्यक्तित्व ने यह शिक्षा देने में काफी सहायता की कि मतभेद के कारण चर्च की एकता नहीं तोड़नी चाहिये। धर्म ईश्वरीय है, धर्म-शास्त्र मानवीय। "निर्णय की स्वतन्त्रता" प्रत्येक ईसाई का अधिकार एवं सत्य और दोष व्यक्ति का उत्तरदायित्व है। उसके मत की अपेक्षा यह भावना अधिक महत्वपूर्ण थी। उसके मित्र क्लेरेंडन ने लिखा "उसका विचार था कि जो लोग गलती करते हैं, उनकी अपेक्षा उनके प्रति दुर्भाव रखने वाले अन्य लोग अधिक दोषी हैं, और अभिमान और दुर्भाव, अन्तरात्मा की अपेक्षा कहीं अधिक पारस्परिक संगति न होने देने के कारण हैं, और उसने बार-बार कहा कि केवल इसी कारण से संसार को उपासना के किसी ऐसे रूप पर सहमत होने से रोक रखा है, जो उसे एक संगति में ले आवे।" अमान्य विचार (Heresy) और मतभेद दो धार्मिक विभीषिकाएँ हैं। केवल व्यक्ति ही नहीं बल्कि कौंसिलों (Councils) और धर्म सभाओं (Synods) तक ने प्रायः गलती की है। क्लेरेंडन इस कथन का उल्लेख करता है कि यदि वह उसे इस बात पर विश्वास करने को बाध्य करे कि किसी अन्य ईसाई को कष्ट दिया जाना चाहिए, तो वह इंग्लैंड के चर्च (Church of England) के धर्म का परित्याग तुरन्त कर देगा। सहिष्णुता का यह सौम्य देवदूत यद्यपि जनसाधारण के बीच अपरिचित ही रहा परन्तु वह मित्रों और विद्वानों के एक विशाल समूह द्वारा सम्मानित था और उसकी पुस्तिका 'ट्रैक्ट आन शिज्म' उदारपंथियों (Latitudinarians) के लिए, जो चर्च

के नियंत्रण के विषय में आंग्ल-कैथोलिकों के उत्तराधिकारी होने वाले थे, नियामक बन गई।

हेल्स की अपेक्षा बहुत अधिक ख्याति प्राप्त उसका मित्र चिलिंगवर्थ (Chillingworth) था, जिसने रोमन चर्च में संक्षिप्त प्रवास के बाद सन् १६३६ में प्रसिद्ध पुस्तक "दि रेलिजन ऑव प्रोटेस्टेन्ट्स" (The Religion of Protestants) लिखना प्रारम्भ किया। वह फाकलैंड (Falkland) का अभिन्न मित्र और संभवतः ग्रेट-ट्यू (Great Tew) की मंडली का योग्यतम सदस्य था और उसने अपने मित्रों और शत्रुओं को विवाद-संबन्धी योग्यता द्वारा समान रूप से प्रभावित किया। क्लेरेंडन ने उसकी महान् मर्मज्ञता, तर्क को अतुलनीय शक्ति और उसकी "युक्ति की तीक्ष्णता तथा तत्परता" की मुक्तकंठ से सराहना की है। अपने जेसुइट प्रतिद्वन्द्वी के प्रत्युत्तर में वह कहता है कि, केवल बाइबिल ही प्रोटेस्टेन्टों का धर्म है। धर्मशास्त्रों और धर्म के महान् सिद्धान्तों का अर्थ पर्याप्त स्पष्ट है। वे समस्याएँ जिन्होंने ईसाइयों को, कम से कम प्रोटेस्टेन्टों को तो अवश्य ही, विभक्त किया, वे विश्वास-संबंधी नहीं कल्पना सम्बन्धी हैं। धर्मशास्त्र से किसी भी पावन मत वाले व्यक्ति द्वारा लगभग स्थिरतापूर्वक निश्चयात्मकता प्राप्त की जा सकती है और जहाँ यह असंभव है, वहाँ यह अनावश्यक है। धार्मिक उदारता सुधार आन्दोलन (Reformation) का तर्कयुक्त परिणाम है। ईसा मसीह का मत ईसाई धर्म का सरलतम वक्तव्य होने के कारण सर्वोत्कृष्ट है। "मनुष्य ईश्वर से भी अधिक कठोर क्यों हो? कोई त्रुटि किसी मनुष्य को चर्च की संगति से क्यों बहिष्कृत करे, जब वह उसे शाश्वत मुक्ति से वंचित नहीं कर सकती? स्वर्ग की राह, अब उससे अधिक सँकरी नहीं हो गई है जितनी वह ईसा मसीह के समय थी। ईश्वर इससे अधिक कुछ अपेक्षा नहीं करता और मनुष्य को भी इससे अधिक अपेक्षा नहीं करनी चाहिए कि धर्मशास्त्र को ईश वचन माना जाय, इसका यथार्थ ज्ञान प्राप्त करने की चेष्टा की जाय, और इसके अनुसार जीवन व्यतीत किया जाय।"

किसी भी अंग्रेज धर्मशास्त्री ने अब तक इतनी दृढ़ता से सहिष्णुता के सिद्धान्तों का उल्लेख नहीं किया था। वह इसे असंगत मतभेदों को ईर्ष्यापूर्वक

दी गई रियायत के रूप में नहीं, बल्कि चर्चों के जीवन और शासन के नियम के रूप में सम्मुख रखता है। धार्मिक उदारता, समझौता मात्र नहीं है स्वयं अपने में एक पवित्र वस्तु है। अपनी व्याख्याओं को देवतुल्य बनाना और उन्हें दूसरों पर क्रूरतापूर्वक आरोपित करना, सभी धार्मिक भेद-भावों का स्रोत रहा है। "मनुष्य के शब्दों को ईश्वरीय वाणी न मानने के लिये यह अत्याचार करना, जलाना, सताना, और बहिष्कृत करना बन्द करो। अत्याचार बंद करो। ईसाइयों से केवल ईसा मसीह पर विश्वास करने की अपेक्षा करो।" वह ऐंग्लिकन पादरियों से चर्च को धार्मिक आस्था का स्वरूप और उसकी सीमा निश्चित करने वाला न मानने के कारण और प्योरिटनों से अत्यावश्यक लगने वाली अनेक बातों को त्याग देने के कारण भिन्न रहा। वह सभी ईसाइयों को अपने उदार बाहुपाश में बाँध लेता है। धर्मशास्त्र की सर्वश्रेष्ठता ने लोगों को विरोधी चर्चों के अत्याचारों से मुक्त किया। यह बात कि वे लोग जिनका बाइबिल का अध्ययन उन्हें ईसाई सम्प्रदाय के परे अग्रसर करे, उन्हें भी स्वतंत्रता मिलनी चाहिए, उस व्यक्ति को नहीं सूझी जो बाइबिल की परम्परागत व्याख्या को स्वतः-सिद्ध स्वीकार करता था। इसके अतिरिक्त, इस बात ने उसके अपतनशील चर्च के समर्थक को दिए गए उत्तर की शक्ति को कम कर दिया होता। बाइबिल को अभ्रान्तिशीलता की कल्पना करते हुए उसे विवेकवादी (Rationalist) नहीं कहा जा सकता; परन्तु उसने ईसाई चर्च के आधार के रूप में बौद्धिक त्रुटि को नैतिक वक्रता से पृथक करके और एकरूपता के स्थान पर दयालुता प्रतिस्थापित करके असहिष्णुता के दुर्ग को उड़ा दिया।

जहाँ हेल्स और चिलिंगवर्थ ने प्रसंगवश ही सहिष्णुता के व्यावहारिक प्रश्न पर विचार किया, अंगरेजी चर्च के क्राइसोस्टम (Chrysostam) ने स्पष्ट रूप से धार्मिक व्यापकता के लिये अपनी आवाज उठाई। अपनी नियुक्ति के कुछ ही समय पश्चात् जेरेमी टायलर (Jeremy Taylor) ने लॉड का ध्यान आकर्षित किया, जिसने उसे अपना धर्म-पुरोहित बनाया, और उसे यद्यपि वह कैम्ब्रिज में शिक्षित हुआ था, ऑक्सफोर्ड की 'फैलोशिप' दिलवा दी, जहाँ उसने चिलिंगवर्थ से घनिष्ठ मित्रता स्थापित कर ली। पर जहाँ "रेलिजन ऑव प्रोटेस्टेन्ट्स" रोम को सम्बोधित करके लिखा गया था, दस साल बाद प्रका-

शित "दि लिबर्टी ऑव प्रोफेसीइंग" (The Liberty of Prophesying) इंग्लिश प्रोटेस्टेन्टवाद की अव्यवस्थित अवस्था शान्त करने के लिये किया गया एक प्रयत्न था। लॉड (Laud) टॉवर हिल पर मर चुका था, एंग्लिकनवाद को सत्ता से वंचित कर दिया गया था, प्रेसबिटरवादी इंडिपेंडेन्टों के विरुद्ध संघर्ष के लिए प्रस्तुत थे। पूरा देश कराह रहा था और कष्टप्रद स्थिति में था, क्योंकि अति उत्साही व्यक्ति बलपूर्वक आग्रह कर रहे थे कि प्रत्येक मनुष्य को एक ही राह से स्वर्ग प्राप्त करना चाहिए।

टायलर ने धार्मिक मतभेद के मानवीय स्वभाव में निहित होने की दृढ़तापूर्वक घोषणा की। वास्तविक दोष विचार के पार्थक्य में नहीं, बल्कि मन की संकीर्णता में है। "प्रत्येक मत को विश्वास का विषय बना दिया जाता है, प्रत्येक विषय को विवाद का एक कारण; प्रत्येक विवाद गुटों की सृष्टि करता है, प्रत्येक गुट उत्तेजनापूर्ण होता है और उत्तेजना में ईश्वर का झूठा दम भरा जाता है। इस प्रकार हम सोचते हैं कि हम तब तक ईश्वर को प्रेम नहीं करते जब तक हम, अपने बन्धुओं से घृणा नहीं करते हैं और हममें तब तक धार्मिक गुण नहीं है, जब तक हम अपने धर्म के अतिरिक्त अन्य सभी धर्मों पर अत्याचार न करें।" ईसा मसीह पर ईश्वर और मुक्तिदाता के रूप में विश्वास ही ईसाई धर्म है। यही आरम्भिक चर्च के लिये पर्याप्त था और आज भी यही पर्याप्त है। ईसा के मत में जो कुछ आवश्यक है वह सब सन्निहित है। कोई मनुष्य इससे अपने लिये "उपसिद्धियाँ" निकाल सकता है, परन्तु उन्हें दूसरों पर लादने का उसे कोई अधिकार नहीं है। कोई भी चर्च, कोई कौंसिल इसमें अभिवृद्धि नहीं कर सकती और जो उसमें कुछ अभिवृद्धि करने की चेष्टा करते हैं, वे ही नास्तिकता और मतभेद के वास्तविक प्रवर्तक हैं। उसे विश्वास था कि ईसा मसीह ने धर्माध्यक्षता का आदेश दिया था, परन्तु उन्होंने इसे चर्च के कल्याण से सम्बन्धित माना, इसके स्वत्व से नहीं। यदि उन सब को, जो ईसा मसीह के मत को स्वीकार करते हैं, एक संगति में समाविष्ट करने का समय निकल गया है, तो युद्धरत मतों के बीच शान्ति स्थापना अभी भी सम्भव होनी चाहिए। उसका यह तर्क स्वयं अपने तथा साथ ही साथ अन्य चर्चों को संबोधित करके प्रस्तुत किया गया है और वह इस विचार को तिरस्कारपूर्वक

अस्वीकृत करता है कि प्रतिद्वंदी संगठनों के सदस्य मूर्ख और दुष्ट हैं। "इन समस्त सम्प्रदायों में अवश्य ही अनेकानेक बुद्धिमान और अच्छे व्यक्ति हैं।"

विश्वास के पश्चात् अमान्य विचार (heresy) की विवेचना करते हुए वह 'न्यू टेस्टामेन्ट' (New Testament) से सिद्ध करता है कि यह शब्द न तो शंकाजनक काल्पनिक वक्तव्यों पर और "न साधु व्यक्तियों पर" प्रयुक्त हो सकता है। जिस प्रकार नैतिक परिणामों से पृथक विश्वास का कोई महत्त्व नहीं है, उसी प्रकार अमान्य विचार तब तक त्रुटि नहीं है, जब तक कि यह महत्त्वाकांक्षा या किसी अन्य अवगुण से उत्पन्न न हो। यदि कोई अपने विचार में परिवर्तन करने का कोई कारण नहीं देखता, तो उसको बनाए रखना उसका कर्त्तव्य और साथ ही साथ अधिकार है। प्रारम्भिक चर्च ने धर्मशास्त्र की व्याख्या करने की व्यापक स्वतन्त्रता की स्वीकृति दी थी। यह युग 'नाइसेन क्रीड' (Nicene Creed) द्वारा समाप्त कर दिया गया, जिसे उसने मूल धर्म के समकक्ष मानने से इन्कार किया। एक कौंसिल ने दूसरी कौंसिल का खंडन किया है, पोप की अभ्रान्तिशीलता धोखा है, विभिन्न चर्च-पिता (Fathers) एक दूसरे से असहमत रहे हैं। केवल धर्मशास्त्र (Scripture) ही सर्वश्रेष्ठ है और व्यक्तिगत निर्णय द्वारा ही इसकी व्याख्या होनी चाहिये। यदि हमसे त्रुटि हो जाये, तो यह पर्याप्त है कि हमने उससे बचने की चेष्टा की है। परिपृच्छा दोष नहीं, कर्त्तव्य है। इस प्रकार टायलर, चिलिंगवर्थ की भाँति मूलधर्म (Apostle's Creed) को चर्चों को एकसूत्रता प्रदान करने वाली लड़ी, और ईसाई धर्म की कसौटी के रूप में प्रस्तुत करता है, और न केवल प्रेसबिटरवादियों और 'इंडिपेन्डेन्ट्स' (Independents) बल्कि पोपानुयायी और अनाबपटिस्टों (Anabaptists) के लिये भी स्थान पाता है। इनमें से अन्तिम के विषय में एक विशेष अध्याय, एक ऐसे मत के प्रति सहिष्णुता निडरता से प्रतिपादित करता है, जिसके मित्र बहुत कम थे। "स्वर्ग जाने के लिये ईश्वर द्वारा बनाए गए मार्ग की अपेक्षा कोई अधिक सीधा मार्ग बनाना, उन लोगों के प्रति जो अपने ही धर्म के हों, प्रेम भावना इसलिये न रखना कि वे हमारे सब विचारों से सहमत नहीं हैं, अपवित्र और धार्मिक मतभेदों को बढ़ानेवाली बात है। यह प्रशंसनीय पुस्तक ऐंग्लिकन सहिष्णुता की उच्चतम

सीमा का प्रतिनिधित्व करती है। उसकी उदारता इस सत्य द्वारा निस्सन्देह और अधिक व्यापक हो गई कि स्वयं उसका सम्प्रदाय कुछ समय के लिये अल्प संख्यकों का चर्च था; परन्तु उसकी यथार्थ प्रेरणा स्वभाव की मधुरता में निहित है, जो कर्कश विवाद और भद्दे आक्षेपों के युग में उसे औरों से पृथक् कर देती है। यद्यपि वह केवल ईसाइयों के लिये सहिष्णुता की माँग करता है, परन्तु एक भी शब्द उस सीमा के बाहर वालों को इससे अपवर्जित करने के लिए नहीं हैं। उसकी उदारता के एकमात्र अपवाद राजद्रोह और अनैतिकता के उपदेशक हैं। विचार की इस व्यापकता ने असहिष्णुता के युग में अपना स्वाभाविक प्रतिफल प्राप्त किया। बन्दी राजा ने अपने पुराने धर्मगुरु की पुस्तक प्रसन्नता-पूर्वक पढ़ी और अपने एक अन्य धर्मशास्त्री, हैमंड, को उत्तर तैयार करने की आज्ञा दी। उसके अनेक आलोचकों में स्काटलैंड का उन्मत प्रेसबिटरवादी, सैमुअल रदरफोर्ड (Samuel Rutherford) सर्वाधिक उग्र था। फिर भी प्रतिद्वन्द्वी परिपृच्छकों (inquisitors) के प्रतिवादों के होते हुए भी, "लिबर्टी आव प्रोफेसीइंग" व्यर्थ में नहीं लिखी गई और इसका शिष्ट निवेदन उन लोगों के द्वारा सुना गया, जो यह बात पूर्णतः भूल नहीं गए थे कि ईसाई धर्म उदारता और प्रेम का धर्म है।

पुनर्स्थापन के वर्ष वारसेस्टर (Worcester) के भावी बिशप और लॉक के विरोधी स्टिलिंगफ्लीट (Stilling fleet) ने कई दशकों के लिये एक ऐंग्लिकन पादरी द्वारा अन्तिम उदारपंथी तर्क प्रकाशित किया। जब धार्मिक समझौतों पर स्वतन्त्रतापूर्वक बातचीत हो रही थी, तो "आइरेनिकन" (Irenicon) नामक पुस्तक प्रकाशित हुई। यह पुस्तक धार्मिक संघर्ष और संकीर्ण कट्टरता के परिणामों के अन्धकारमय चित्रण से आरम्भ होती है। हेल्स, चिलिंगवर्थ और टायलर की भावना में वह कहता है कि चर्च के लिये ईसा मसीह ने जितने की अपेक्षा की थी उससे अधिक की माँग करना पूर्णतया अनुचित है। "इस बात के लिये किस संभव कारण का उल्लेख किया जा सकता है कि किसी चर्च से संगति के लिये वे ही बातें क्यों न पर्याप्त हों, जो शाश्वत मुक्ति के लिये पर्याप्त हैं? चर्च की एकता केवल आचार और विचार की अनुरूपता मात्र नहीं; प्रेम और अनुराग की एकता है।" यदि कोई विशिष्ट

शासन पद्धति आवश्यक रही होती, तो वह ईसा मसीह द्वारा अवश्य प्रकट की गई होती। देवदूतों का व्यवहार, यदि हम इसका ठीक-ठीक अन्वेषण कर सकें, अगामी काल को बाँध नहीं सकते, क्योंकि समय और परिस्थितियाँ बदलती रहती हैं। यदि किसी एक मात्र पद्धति के विचार को दूर कर दिया जाय, तो समझौता होना सरल हो जायगा और धर्माध्यक्षता तथा प्रेसबिटरवाद को संयुक्त किया जा सकता है। प्रत्येक संगति के उचित रूप में अपने नियम हैं; परन्तु उनको दैविक आदेश मानने की गलती नहीं करनी चाहिये। वह ऐम्ब्रोज़ (Ambrose) के कथन को अपनी सहमति के साथ उद्धृत करता है—"जब मैं रोम में रहता हूँ, तो साप्ताहिक अवकाश के दिन उपवास करता हूँ, जब मिलान में तो वैसा नहीं करता।" वह एक ऐसे चर्च की कल्पना करता है जो उन बातों के अतिरिक्त कुछ भी आरोपित न करे जो स्पष्टतया धर्मशास्त्रों में बतायी गयी हैं। किन्हीं नियमों और रीति-रिवाजों के समूह पर बल देना धर्मभेद को आमंत्रित करना और यहाँ तक कि उसे अनिवार्य करना है। उनको सरल बनाने की अविलम्ब आवश्यकता है और प्रेसबिटेरियनों की शंकाओं को दूर करने के लिये उपासना-विधि में सुधार आरम्भ करना चाहिये। न तो धर्माध्यक्षता के समर्थक और प्रेसबिटरवाद दोनों ही दैवी अधिकार के दावे के समर्थन में ईसा मसीह के एकशब्द की ओर भी इंगित नहीं कर सकते। धर्मगुरुओं के युग (apostolic age) के गहन अध्ययन द्वारा वह यह दिखाता है कि चर्च ने अपने को स्थानीय परिस्थितियों के अनुसार समायोजित किया और इसका संगठन मानवीय और ऐतिहासिक विकास है; "वह मात्र बुद्धिमत्ता का विषय है।" इस खोज के बल पर वह "हमारी गैर-ईसाई शत्रुता की समाप्ति का, जबकि हम शान्ति-दूत की सेवा का आडम्बर करते हैं'," आग्रह करता है।

इस शताब्दी के माध्यमिक दशकों में सहिष्णुता का तर्क पादरियों के एक दूसरे समूह द्वारा दृढ़ किया गया। यद्यपि चिलिंगवर्थ और टायलर ने धर्मशास्त्र पर चर्च के दृष्टिकोण से विचार किया, कैम्ब्रिज के प्लेटोवादियों ने इस पर दार्शनिक दृष्टिकोण से विचार किया। परम्परागत संकीर्ण कट्टरता के विरुद्ध उनकी प्रतिक्रिया ने श्रेष्ठ वस्तु के चुनाव पर बल देनेवाली एक ऐसी विचारधारा के लिए पथ निर्मित किया, जो सीधे सहिष्णुता की ओर अग्रसर होती थी। व्यक्तिगत

रूप से प्रत्येक ईसाई को न केवल बाइबिल की अपने अनुसार व्याख्या करनी चाहिये, वरन् उसे स्वयं अपना धार्मिक दर्शन निर्मित करना चाहिये। सन् १६४७ ई० में कामन्स सभा के सम्मुख एक उपदेश में कडवर्थ ने कहा कि धर्म का उद्देश्य विचारों का प्रचार नहीं वरन् लोगों को ईसा मसीह के बताए मार्ग से जीवन व्यतीत करने के लिए प्रस्तुत है। ह्विचकोट (Whichcote) ने कहा, "सत्य का परिरक्षण करना वस्तुतः ईश्वर का, और दयालुता को स्थायित्व प्रदान करना हमारा कर्तव्य है।" इस सम्प्रदाय का उच्च उद्देश्य धर्मशास्त्र को विवेक और नैतिकता की शब्दावली में प्रस्तुत करना था। तथापि, इस कारण, सहिष्णुता के समर्थन में उनका अनुदाय उनकी उपेक्षा अधिक अप्रत्यक्ष और कम शक्तिशाली था, जिन्होंने इसे अपने तर्क में सर्वप्रथम स्थान दिया और इस पर व्यावहारिक राजनयज्ञता की समस्या के रूप में ध्यान केन्द्रित किया।

धार्मिक स्वतन्त्रता के संदेश की अत्यधिक भिन्न दृष्टिकोण से व्याख्या 'इंग्लिश नान्‌कन्फर्मिटी' सर्वाधिक महत्वपूर्ण व्यक्तियों में से एक द्वारा की गई। रोजर विलियम्स (Roger Williams) सन् १६३१ में अमेरिका गया था, परन्तु उसने मैसाचुसेट्स (Massachusetts) में जीवन वैसा नहीं पाया, जैसी उसने आशा की थी। सलेम (Salem) का पादरी होने के बाद उसने अपने अनुयायियों को उपनिवेश के अन्य चर्चों से अलग होने की सलाह दी। 'चार्टर' (Charter) की आलोचना और उसकी इस युक्ति के कारण कि भूमि अब भी आदिवासियों की है, उसको निष्कासित कर दिया गया। उसके समुदाय ने, जो अपने पादरी को ईश्वर के समान मानता था, बहुमत द्वारा बनाए गए कानूनों का यह प्रावधान करते हुये पालन करने की प्रतिज्ञा की कि वे केवल नागरिक विषयों से संबन्धित हों। आत्मिक स्वतन्त्रता का सिद्धान्त स्पष्ट रूप से घोषित किया गया। प्रवासियों (emigrants) का दूसरा समूह नारागसेन्ट बे (Narragansett Bay) पहुँचा और उसने अपनी बस्ती को "रोड्स आइलैंड" (Rhodes Island) की संज्ञा थी। अब विलियम्स ने इंग्लैंड को प्रस्थान किया और बस्तियों को "जिस प्रकार वे परिस्थितियों के अनुसार सुविधाजनक समझें, स्वयं शासन करने" का अधिकार प्रदान करने वाला एक घोषणापत्र लेकर वापस आया। इस पर निवासियों ने घोषणा की कि "स्थापित शासन का

रूप प्रजातान्त्रिक है, अर्थात् वह सबकी, अथवा स्वतन्त्र निवासियों के बहुमत की स्वतन्त्र सम्मति पर आधारित है। इसके पश्चात् अधिनियमों और आदेशों का एक क्रम अंगीकृत किया गया जिसने 'डिक्लेरेशन ऑव दि राइट्स ऑव मैन' (Declaration of the Rights of Man) का रूप लिया। पाँच वर्ष पश्चात् दास-प्रथा समाप्त कर दी गई।

रोड्स आइलैंड का संस्थापक राजनीतिक और आध्यात्मिक रूप से स्वतन्त्र मनुष्यों का उपनिवेश स्थापित करके ही संतुष्ट नहीं रहा। मैसाचुसेट्स (Massachusetts) में उस समय तक रहने के समय ही उसने आत्मिक स्वतन्त्रता के बपतिस्मावादी तर्क की एक कॉटन (Cotton) को भेजी थी और उससे उस पर अपना मत भेजने की प्रार्थना की थी। कॉटन ने मौलिक और परिस्थितिजन्य में विभेद किया और उचित रूप से शिक्षित अन्तरात्मा उत्पीड़न करना अस्वीकृत किया। "परन्तु यदि कोई अमान्य विचार वाला व्यक्ति चेतावनी के बाद भी अपने त्रुटियों पर हठ करे तो यह अंतःकरण के कारण न होगा।" इस सीमित सहिष्णुता के सिद्धांत के उत्तर में विलियम्स ने "दि ब्लडी टेनेट ऑव पर्सीक्यूशन" (The Bloody Tenet of Persecution) नामक पुस्तक प्रकाशित की। वह मौलिक बातों के सम्बन्ध में इस प्रतिबन्ध को दृढ़तापूर्वक अस्वीकृत करता है। ऐसी चाहे जितनी भी बातों को सुरक्षित किया जाय, उन सहस्रों मनुष्यों की आत्मायें, जो उन्हें स्वीकार नहीं करतीं, "अनन्त जीवन के समूह को सीमित" करती हैं। राजनीतिक खड्ग दम्भियों के राष्ट्र का निर्माण कर सकता है, पर एक भी ईसाई नहीं बना सकता। 'कान्ग्रीगेशनलिज्म' (Congregationalism) के संस्थापक राबर्ट ब्राउन (Robert Brown) की भाँति उसने घोषणा की कि दंडनायकों को कोई धर्म सम्बन्धी प्राधिकार प्राप्त नहीं है। संक्षेप में, विचार-स्वातन्त्रय की न केवल सुरक्षा को बिना संकट में डाले अनुमति दी जा सकती है वरन् बिना संकट उठाये इसे प्रतिबन्धित नहीं किया जा सकता। संप्रभुता जनता में स्थित है, जो जिस प्रकार का शासन चाहे, स्थापित कर सकती है। परन्तु वह भी दंडनायकों को धार्मिक अधिकार-क्षेत्र नहीं प्रदान कर सकती, क्योंकि वह स्वयं इस पर अधिकार नहीं रखती। प्रीलेटवादी (Prelatists), प्रेसबिटेरियन और 'इंडिपेन्डेन्ट्स' (Indepen-

dents) सब "उसी मानव-शक्ति की छाया में बैठने की" आकांक्षा करते हैं; परन्तु केवल पार्थक्यवादी (Separatists) ईसा मसीह की भावना समझने का उचित दावा कर सकते हैं। जहाँ उदार ऐंग्लिकन सब ईसाइयों को एक राष्ट्रीय चर्च से ग्रहण करना चाहते थे, विलियम्स को एकता के आदर्श की तनिक भी चिन्ता न थी और उसने प्रत्येक व्यक्ति को उपासकों के किसी स्वायत्तशासी संघ में सम्मिलित होने या उसके निर्माण करने के लिये उत्साहित किया।

उसका अपने सिद्धान्तों पर विश्वास शीघ्र ही अनुभव की कठिन कसौटी पर कसा गया। एक ऐसा नया निवासी होने के कारण जिसने अपनी पत्नी को धर्मगुरु के उपदेश सुनने से बार-बार मना किया था, इस कारण मताधिकार से वंचित कर दिया गया कि उसने आत्मिक स्वतंत्रता का सम्मान करने की शपथ भंग की है। एक विधि-विरोधी आया जिसके द्वारा "सम्पूर्ण व्यवस्था की अस्वीकृति," कारावास के दंड से पुरस्कृत हुई। एक अन्य मुकदमे में उपनिवेश के निवासियों में से कुछ ने विधि का अतिक्रमण करने वालों पर कोई फैसला कार्यान्वित करना "हत्या करने के अभियोग" के समान घोषित किया। विलियम्स ने उत्तर दिया कि कमान्डर को ही जलपोत का पथ निश्चित करना चाहिये और न्याय, शान्ति और मर्यादा की अवश्य ही रक्षा की जानी चाहिए। सर्वाधिक क्लेशप्रद कसौटी सन् १६५६ में सामने आई जब पड़ोसी उपनिवेश "सभी 'क्वेकर्स' (Quakers), 'रैन्टर्स' (Ranters) और कुख्यात आमान्य विचार वाले व्यक्तियों" को बहिष्कृत करने को सहमत हुए और उन्होंने रोड्स आईलैण्ड को भी ऐसा ही करने के लिए कहा। जनरल असेम्बली (General Aesembly) ने उत्तर दिया कि आत्मिक स्वतन्त्रता उनके घोषणापत्र का आधार है और इसे वे मानव जाति को प्राप्य सब से बड़े सुख के रूप में आदर करते हैं। मैसाचुसेट्स (Massachusetts) ने प्रत्युत्तर दिया कि वे सिद्धान्त जिन पर आपत्ति की जा रही है, "मनुष्यों के बीच नागरिक शासन को पूर्णतया समाप्त करने की" प्रवृत्ति वाले हैं। इस पर इंग्लैंड से परामर्श माँगा गया, जहाँ इसके लिए आयुक्त भेजे गए। "क्या वे लोग आप लोगों के बीच शांति पूर्वक रहते हैं?" यह प्रश्न पूछा गया, और जब विलियम्स ने सहमतिसूचक उत्तर दिया, तो उन्होंने आगे कहा, "यदि वे स्वयं अपने ऊपर शासन कर सकते हैं, तो उन्हें तुम्हारे

शासन की कोई आवश्यकता नहीं है।" विलियम्स ने यह मंत्रणा मान ली और रोड्स आईलैंड स्वतन्त्रता का गेह बना रहा। यह बात औचित्यहीन नहीं थी कि उसने वेन (Vane) को लिखा कि "हमने उतनी स्वतन्त्रता का उपभोग किया है, जितना स्वर्ग में रहने वाले किसी व्यक्ति ने।" यद्यपि मानचित्र में रोड्स आईलैंड एक खंड मात्र है पर वह मुख्यतया ऐसे प्रथम स्थल के रूप में जाना जाता है, जहाँ पूर्ण धार्मिक स्वतन्त्रता का उपदेश दिया गया और साथ ही उस पर व्यवहार किया गया। इंग्लैंड में कॉमनवेल्थ (Commonwealth) उतनी ही असहिष्णु सिद्ध हुई, जितना राजतन्त्र; और क्रामवेल ने यद्यपि यह घोषणा की कि राज्य अपनी सेवा के लिए लोगों का चुनाव करने में उनके विचारों पर ध्यान नहीं देता परन्तु अपनी इच्छा के अनुसार लगभग निर्बन्ध स्वतन्त्रता प्रदान करना असम्भव पाया।

(२)

अपने पुनर्स्थापन के ठीक पहले प्रकाशित ब्रेडा की घोषणा (Declaration of Breda) में चार्ल्स द्वितीय ने अपनी प्रजा के सम्मुख इन प्रसिद्ध शब्दों द्वारा अच्छा उदाहरण प्रस्तुत किया, "हम सुहृद अंतःकरण की स्वतन्त्रता की घोषणा करते हैं, और किसी व्यक्ति को धामिक विषयों में ऐसे मतभेदों के कारण तंग नहीं किया जायगा या उस पर संदेह नहीं किया जायगा, जो राज्य की शान्ति भंग नहीं करते। उसने फ्रेडरिक महान् (Fredrick the Great) के इस ऐतिहासिक कथन का समर्थन किया होता, "हमारे राज्य में हर काई अपने-अपने ढंग से स्वर्ग जा सकता है।" परन्तु पार्लमेंट और चर्च के सम्मुख वह अशक्त था। चिलिंगवर्थ और टायलर का उदार ऐंग्लिकनवाद विलुप्त हो गया था। पादरी वर्ग की सेवाय अधिवेशन (Savoy Conference) सफल बनाने की कोई इच्छा नहीं थी और ऐक्ट ऑव युनिफॉर्मिटी (Act of Uniformity) ने २ हजार धर्मोपदेशकों को उनके पद से हटा दिया। सन् १६६२ ई० में उस महान् निष्कासन के कुछ ही समय बाद चार्ल्स द्वारा प्रकाशित स्वतन्त्रता की घोषणा क्लेरेंडन और शेल्डन के द्वारा नष्ट कर दी गई। राजा को धन की आवश्यकता थी और 'केवेलियर पार्लमेंट' ने सामूहिक रूप से

'क्लेरेंडन-कोड' के नाम से पुकारी विधियों को पारित करने की आज्ञा के बदले में ही अपना कोष खोला। सन् १६६७ में "कैबल" (Cabal) मंत्रिमंडल के प्रतिस्थापन से कौंसिल सदन (Council Chamber) में अपेक्षाकृत अधिक सहिष्णु भावना प्रविष्ट हुई; बकिंघम और ऐश्ले ने सहिष्णुता का उसके गुणों के कारण और कैथोलिक क्लिफर्ड ने अपने मित्रों की दशा सुधारने की आशा से समर्थन किया। सन् १६७० ई० में की गई डॉवर की गुप्त संधि में चार्ल्स ने अपने को कैथोलिक घोषित किया, यद्यपि अपने विश्वास की घोषणा उसने स्थगित कर दी। सन् १६७२ ई० में राजा ने अपने मन्त्रियों के समर्थन से प्रसिद्ध डिक्लेरेशन आव इन्डल्जेन्स (Declaration of Indulgence) प्रकाशित की। "हम अपने इस संकल्प और प्रसन्नता की घोषणा करते हैं कि धार्मिक विषयों में दण्ड विधान का क्रियान्वय तत्काल समाप्त हो और ऐसा ही किया जाता है।" यदि यह किसी ऐसे राजा द्वारा प्रकाशित की गई होती जिसका प्रोटेस्टेन्टवाद निंदा के परे होता, तो घोषणा का भिन्न रूप में स्वागत हुआ होता। परन्तु 'गनपाउडर षडयंत्र' (Gunpowder Plot) अब भी भुलाया नहीं गया था और जनसमूह कैथोलिक षड्यंत्रों की कल्पना से चिंतित था। शेल्डन और उसके पादरी वर्ग ने तुरन्त "पोपशाही नहीं" का तीव्र स्वर उठाया और ऐंग्लिकन चर्च को राजा की नीति के विरुद्ध आयोजित किया गया। धार्मिक विरोध उन लोगों द्वारा भी दृढ़ किया गया, जिन्होंने राजपद द्वारा राज्य की विधियों को विलम्बित करने के दावे का विरोध किया था। जब सन् १६७३ ई० में कामन्स सभा की बैठक हुई तो राजा ने दृढ़ता से घोषित किया कि उसने अपनी घोषणा (Declaration) पर स्थिर रहने का निश्चय किया है; परन्तु सदैव धन की प्रचण्ड आवश्यकता में रहने वाले राजा के लिए विरोध पक्ष बहुत शक्तिशाली था। "कैबल" मंत्रिमंडल का पतन हो गया, घोषणा वापस ले ली गई, तथा टेस्ट ऐक्ट (Test Act) पारित हुआ, और यार्क के ड्यूक ने अपने पद से त्यागपत्र दे दिया। राजा ने सच्चाई से कैथोलिकों को बंधनमुक्त करना चाहा था और उसे इस बात का दुःख नहीं था कि उसी क्रिया से असहमतिवादियों (Non-conformists) की जंजीरें कट गई होतीं; परन्तु उसे रोम-विरोधी भावना की शक्ति का अब

अनुभव हुआ और उसने फिर कभी असहिष्णुता के प्रवाह को रोकने की चेष्टा नहीं की।

फिर भी घोषणा (Declaration) के प्रभाव पूर्णतया नष्ट नहीं किए जा सके। इसके लागू रहने के वर्ष में अनेक असहमतिवादी समुदाय (Congregration) स्थापित हुए और 'नानकन्फर्मिटी' ने वह आधार पुनः प्राप्त कर लिया, जिसे उसने क्लेरेंडन के शासनकाल में खो दिया था। टोरी रेरस्बी (Reresby) ने लिखा है, "राजा के पुनर्स्थापन के समय से चर्च पर यह सबसे बड़ा आघात था, सभी पंथानुयायी अपनी सभाओं में सार्वजनिक रूप से पुनः एकत्र होने लगे क्योंकि समस्त विधियाँ भी उन्हें यथार्थ सहमतिवादी बनाने में कभी समर्थ नहीं हो सकती।" कैथोलिक, कैथोलिक राजा के सत्तारूढ़ होने की प्रतीक्षा में थे और प्रोटेस्टेन्ट, राजा की सहानुभूति और अपनी संख्या के सार्वजनिक प्रदर्शन द्वारा उत्साहित हुए थे। सन् १६८७ की 'डिक्लेरेशन ऑव इंडलजेन्स' (Declaration of Indulgence) से भिन्न, जो जेम्स के कैथोलिक कार्यक्रम की एक चाल मात्र था, सन् १६७२ की घोषणा धार्मिक स्वतंत्रता के इतिहास में एक सीमा चिन्ह है। इसके अतिरिक्त अन्य शक्तियाँ भी उसी दिशा में गतिशील थीं। पैटी (Petty) और टेम्पिल (Temple) जैसे प्रभावशाली व्यक्तियों ने सहिष्णुता की विज्ञता के सम्बन्ध में हालैंड की ओर ज्वलंत उदाहरण के रूप में निर्देश किया। वैज्ञानिक जाँच की इस नई प्रवृति ने रायल सोसायटी (Royal Society) की स्थापना में अभिव्यक्ति पाई। धर्मशास्त्रियों की तीव्र प्रतिद्वन्दिता के बावजूद भी, युग अधिक धर्म-निरपेक्ष और मानवीय हो रहा था। ग्लैन्विल की पुस्तक 'वेनिटी ऑव डॉगमेटाइजिंग (Vanity of Dogmatising) व्यापक रूप से पढ़ी गई और अद्वैतवाद (Unitarianism) का प्रसार आरम्भ हुआ। वातावरण के इस परिवर्तन में यह बात महत्वपूर्ण थी कि अमान्य विचार रखने वालों के जलाए जाने की व्यवस्था करने वाला कानून 'कैवेलियर पार्लमेंट द्वारा रद्द कर दिया गया।

यद्यपि धर्मशास्त्रियों के द्वारा उत्पीड़न के पक्ष में दिए जाने वाले तर्क दिन प्रतिदिन क्षीण होते जा रहे थे, फिर भी राज्य की शांति के लिए

सहिष्णुता के संकट के बारे में विश्वास उत्पन्न कर देना अभी भी सम्भव था। पुनर्स्थापन के अत्यन्त सक्रिय और आक्रामक राजपक्षावलम्वी पुस्तिका लेखकों का यह प्रिय अस्त्र था। रोजर ले' एस्ट्रेंज (Roger L' Estrange) को अन्तराज्यिक काल में दी गई यातना के लिए सन् १६६३ में प्रेस नियंत्रक के पद पर नियुक्ति द्वारा पुरस्कृत किया गया। उसने परीक्षक-पद (censorship) पर अपने आरोहण का संकेत धार्मिक स्वतंत्रता पर आक्रमणों के क्रम प्रथम के प्रथम प्रहार द्वारा किया। उसने कहा, कि 'ऐक्ट ऑव यूनिफॉर्मिटी' (Act of Uniformity) विचारों को नहीं, क्रियाओं को सीमित करता है, क्योंकि व्यवहार की स्वतंत्रता "न केवल अविवेकपूर्ण है वरन् ईसाई धर्म और सार्वजनिक शांति से पूर्णतया असंगत है।" "यह पूछना कि तुम लोग अपने अन्तःकरण के अनुसार अपने ऊपर शासन कर सकते हो, यह कहने के समान है कि तुम राजा की विधियों से अब और शासित न होओगे। सभी मतों के प्रति सहिष्णुता सब प्रकार की दुष्टता के प्रति सहनशीलता है और इसलिए अवैध है।" असहमतिवादी (Noncomformists) गृहयुद्ध और राजा की मृत्यु के भार से लदे हुए हैं। "धर्म के प्रति सहिष्णुता राजद्रोह की आज्ञा का आसन्न मूल है। वह इस प्रश्न पर विवाद नहीं करता कि विचार सही हैं या गलत, वरन् वह उनके परिणामों के आधार पर निर्णय करता है। वह सार्वजनिक सुरक्षा के नाम पर धार्मिक स्वतंत्रता का खंडन करता है।" बाद की पुस्तिकाओं में वह धर्म पर राज्य के अधिकार की ऐसी भाषा में घोषणा करता है, जो हॉब्स को संतुष्ट कर देती। वह आगे लिखता है, "जब असहमतिवाद (dissent) व्यावहारिक रूप लेता है, तब यह आत्मिक स्वतंत्रता का प्रतिपादन नहीं, वरन् शासन के विरुद्ध प्रत्यक्ष षड्यंत्र बन जाता है। "ऐक्ट आव यूनिफॉरमिटी" (Act of Uniformity) का क्यों अंत कर दिया जाय? वे लोग धर्म-भेद की भाँति राजद्रोह के लिए भी स्वतंत्रता की माँग कर सकते हैं।"

चार्ल्स द्वितीय के शासनकाल में सहिष्णुता की समस्या पर चलने वाले अनेक विवादों में से किसी ने भी उतना ध्यान आकर्षित न किया, जितना सैमुएल पार्कर और ऐंड्र्यू मार्वेल के बीच विवाद ने। 'प्योरिटन' पिता का पुत्र,

पार्कर पुनर्स्थापन के पश्चात् विजयी पक्ष में सम्मिलित हुआ और उसने प्योरिटनों पर हास्यपूर्ण व्यंग करके राजपक्षावलम्बी और ऐंग्लिकन क्षेत्रों में प्रशंसा प्राप्त की। वह आर्कबिशप शेल्डन का धर्मोपदेशक बना और ऑक्सफोर्ड के बिशप के पद तक उन्नति की। उसकी निर्विवाद योग्यता और ओजस्वी शैली ने उसे भयंकर आलोचक बना दिया और कई वर्षों तक वह असहिष्णु ऐंग्लिकनवाद का सर्वाधिक उग्र प्रतिपादक रहा। सन् १६७० में उसने "ए डिसकोर्स ऑव एक्लेज़ियास्टिकल पॉलिटी" (A Discourse of Eclesiastical Polity) नामक पुस्तक प्रकाशित की, "जिसमें धर्म के सांसारिक पक्ष में प्रजा के अन्तःकरण पर दन्डनायक का अधिकार घोषित किया गया है, सहिष्णुता से होने वाली हानिओं और असुविधाओं का वर्णन किया गया है और अन्तःकरण की स्वतंत्रता के समस्त दावों का पूर्णतया उत्तर दिया गया है।" हॉब्स को गलत सिद्ध करने का वह विस्तृत आडम्बर करता है और दृढ़तापूर्वक इस बात का समर्थन करता है कि "किसी मानवीय विधि में, चाहे वह नागरिक विधि में हो या धार्मिक विधि में यदि वास्तव में कोई दोष हो, तो मनुष्य की अपेक्षा ईश्वर की आज्ञा का पालन होना चाहिए।" परन्तु जब वह यथार्थ समस्याओं के निकट आता है तो अन्तःकरण सम्बन्धी अधिकार वायु में लुप्त जाते हैं। "क्या प्रजा अपने संप्रभु के विरुद्ध विद्रोह करती है? अन्तःकरण ही तो अस्त्र उठाता है। क्या वे राजा की हत्या करते हैं? यह भी अन्तःकरण के द्वारा होता है? क्या वे चर्च की संगति से पृथक् होते हैं?" अन्तःकरण ही धर्म भेद उत्पन्न करता है। प्रत्येक वस्तु जो मनुष्य के मन में है वही उसका अन्तःकरण बन जाती है।" सहिष्णुता अराजकता है, और बल प्रयोग शांति का मूल्य। जैसा सभी स्वीकार करते हैं, यदि दन्डनायक सदाचार को नियंत्रित कर सकता है, तो वह धर्म को भी नियंत्रित कर सकता है। वह दन्ड विधान को पारित करने और फिर अन्तःकरण को आघात पहुँचाने के भय से उसके प्रवर्तन में ढील देने की कठोर आलोचना करता है। असहमति (Dissent) राजद्रोह है। "यदि विधियों के प्रति उत्तरदायित्व का कोमल अन्तःकरण के बन्धन के सम्मुख समर्पण करना पड़े, तो वह व्यक्ति कितना दुर्जेय है, जो अपने से श्रेष्ठजनों के समस्त आदेशों का पालन न

करने की इच्छा रखता है। वह एक सनकपूर्ण सूत्र में आगे लिखता है, "दुर्बल अन्तःकरण कमजोर बुद्धि की उपज है।" कुछ लोग थोड़ा सा दंड सहन करके दैवी पुरुष कहलाने की ख्याति प्राप्त करके प्रसन्न होते हैं। वह इस निष्कर्ष पर पहुँचता है, "यदि वे असंतोष प्रकट करने का साहस करते हैं और उनका अभिमानी मन अपने से श्रेष्ठ व्यक्तियों की डाँट-फटकार को बुरा मानता है, तो दंड द्वारा सुधार के अतिरिक्त और कोई उपाय नहीं है। उन्हें मूर्खता से निकालकर सुधारना और दंडित कर आज्ञाकारी बना देना चाहिए।" यदि धार्मिक अधिकार क्षेत्र का दुरुपयोग भी किया जाय, तो भी यह अन्तः-करण को स्वतंत्रता की अपेक्षा कम ही हानिकारक होगा।

राजनीतिक सत्ता से विरोध पक्ष को कुचलने के लिए किए गए इस क्रूरता-पूर्ण निवेदन ने सहिष्णुता के आजीवन समर्थक और 'इंडिपेन्डेन्ट' धर्मशास्त्रियों में महानतम जॉन ओवेन (John Owen) को संयमित उत्तर देने के लिए उत्तेजित किया। जब पार्कर ने अपनी पुस्तक का समर्थन करते हुए प्रत्युत्तर दिया, तो मार्वेल ने बकिंघम के लोकप्रिय, प्रहसन के शीर्षक के अन्तर्गत अपनी प्रमुख गद्य रचना "दि रिहर्सल ट्रांसपोज्ड" (The Rehearsal Transposed) के साथ इस विवाद में प्रविष्ट हुआ। उसे किसी धर्मानुयायी ईसाई द्वारा राज्य के सम्मुख अंतःकरण के बलिदान की असंगति दिखाने में तनिक भी कठिनाई नहीं होती है। पार्कर के इस अभियोग का कि असहमतिवादियों ने अनुष्ठान की संज्ञा प्राप्त "दो या तीन लाक्षणिक रीतियों" के बारे में अनुचित रूप से विवाद किया, मार्वेल स्पष्ट रूप से उत्तर देता है। "उन्हें इसलिए शिकायत है कि यहाँ एक मानवीय संस्था को दैवी संस्था के सामान शक्तिशाली बना दिया गया है।" वह इस ईसाई धर्मोपदेशक में उदारता के अभाव का दूसरा सुदृढ़ सबूत प्रस्तुत करता है। "ऐसा क्यों है कि इस वर्ग के पादरी सदैव सर्वाधिक उतावली पशुवत और खूनी मंत्रणा के पक्ष में हों? गृहयुद्ध न तो उन्हें विवेकपूर्ण बना सकता है और न ही सम्राट का सुखदायी पुनरागमन उन्हें अच्छे स्वभाव वाला बना सकता है। यदि वे केवल बाइबिल के अनुसार आचरण करें, तो वे संसार में राज्य के सर्वोत्तम मंत्री हो सकते हैं; फिर भी साधारणतया यह देखा जाता है कि राजा लोग उसके शासन में गलत राह पर जाते हैं। यदि कोई मंत्रणा औरों की अपेक्षा अधिक उतावली, अधिक

खूनी, अधिक उग्र और अधिक अतिपूर्ण हो सकती है, तो वह इन्हीं लोगों की मंत्रणा है।" वह धर्माधिकारियों से राजाओं तक, "जो सम्पूर्ण राज्य के अधिकारी, और शान्ति के निमित्त ऐसी अनेक बातों पर झुक जाने वाले हैं जहाँ तुम्हारा अभिमानी हृदय उन पर झुकने के पहले खंड-खंड हो जाएगा।"

मार्वेल की बुद्धिमत्ता और व्यंग से पूर्ण इस पुस्तक ने अविलम्ब लोकप्रियता प्राप्त की। बर्नेट लिखता है, पार्कर की युग के सजीवतम हास्यकार द्वारा आलोचना हुई, जिसने परिहासोत्पादक प्रवृति से परन्तु ऐसे विचित्र और मनोरंजक ढंग से लिखा की राजा से लेकर व्यापारी तक के द्वारा उसकी पुस्तकें अत्यन्त आनन्द के साथ पढ़ी जाती थीं, और न केवल पार्कर को ही बल्कि उसके पूरे दल को उसने नीचा दिखाया, "क्योंकि सभी बुद्धिमान लोग उसी के पक्ष में थे।" जब पार्कर ने एक ऐसी पुस्तक के द्वारा उत्तर दिया, जो तीक्ष्ण व्यक्तिगत आक्षेपों से पूर्ण थी तो हल (Hull) निर्वाचन-क्षेत्र के प्रतिनिधि ने "सेकेन्ड पार्ट ऑव दी रिहर्सल ट्रान्शपोज्ड" (Second Part of the Rehearsal Transposed) प्रकाशित किया। अपने शत्रु के स्वार्थपूर्ण जीवन का ध्वंसकारी भंडाफोड़ करने के पश्चात् वह असहिष्णुता की दुष्टता तथा पागलपन के विषय में प्रभावशाली ढंग से लिखता है। "वह कौन राजा है जो लाखों मनुष्यों को उसकी आय वृद्धि करने के लिए परिश्रम-रत देखता है, अथवा उसकी सेवा में अपने जीवन को खतरे में डालते हुए देखता है परन्तु उन पर ऐसी दयालु कोमलता की कल्पना करता है, जिसके अन्य लोग अपने मन की संकीर्णतावश सक्षम नहीं हो सकते ? जो कोई भी युग-युग के इतिहास के पृष्ठों पर दृष्टिपात करेगा वह देखेगा कि शासन की क्षमाशीलता के समान और कोई वस्तु अधिक सफल नहीं होती। कठिनाई से ही अनुमान लगाया जा सकता है कि किसी ऐसे राजा में कितना आकर्षण होगा जो प्रतिदिन प्रजा का अधिकाधिक स्नेह प्राप्त करता जाता है।" जहाँ धर्मशास्त्री हेल्स, चिलिंगवर्थ और जेरेमी टायलर ने उत्पीड़न (Persecution) को ईसा मसीह को शिक्षा के विपरीत कह कर उसकी आलोचना की थी, मार्वेल ने इसे राज्य की शक्ति और एकता के लिये घातक कह कर निंदित किया।

सहिष्णुता का एक अपेक्षाकृत अधिक महान् और प्रभावशाली समर्थक

विलियम पैन (William Penn) था, जिसकी पुस्तक "ग्रेट केस ऑव लिबर्टी ऑव कान्शेन्स वन्स मोर ब्रीफली डिबेटेड एन्ड डिफेन्डेड" (Great Case of Liberty of Conscience once more briefly debated and defended) न्यू गेट से सन् १६७१ में प्रकाशित हुई, जहाँ लेखक अपने सामयिक कारावासों में से एक व्यतीत कर रहा था। इस महान-'क्वेकर' ने अपने पन्थ के अन्य सदस्यों के समान, धार्मिक स्वतन्त्रता की इसलिये माँग नहीं की कि वह स्वयं भुक्तभोगी था, वरन् इसलिए कि यह उसके सम्प्रदाय के सिद्धान्तों में अन्तर्निहित थी। आत्मज्ञान में विश्वास करने वाले के लिए बल प्रयोग बहुत बड़ी बुराई है। उसने घोषणा की, "मेरे लिए टावर (Tower) संसार की निकृष्टतम युक्ति है।" अंतःकरण सम्बन्धी विषयों में प्रतिबन्ध अथवा उत्पीड़न दैविक विशेषाधिकार पर आक्रमण है। दूसरे, बल-प्रयोग में ईसाई धर्म की समाप्ति सन्निहित है, क्योंकि ईसा मसीह का राज्य आध्यात्मिक था। तीसरे, बल-प्रयोग बाइबिल की स्पष्ट मन्त्रणा के विपरीत है। चौथे, यह स्वतन्त्रता के प्राकृतिक अधिकार तथा विवेक के सिद्धान्त का विनाशक है, क्योंकि हम अपनी समझ के विरुद्ध विश्वास नहीं कर सकते। "क्या मनुष्य यदि वे अपने अंतःकरण के विरुद्ध नहीं जाते, तो यहाँ और यदि विरुद्ध जाते हैं तो दूसरे लोक में उत्पीड़ित हों?" अंततः, बल प्रयोग नाराजी उत्पन्न करता है और देश की सम्पदा, एकता और शक्ति को हानि पहुँचाता है। "बल-प्रयोग ने अब तक कभी भी एक अच्छा ईसाई या अच्छा नागरिक नहीं बनाया।" यह संक्षिप्त परन्तु बहुमूल्य पुस्तिका राजद्रोही सिद्धान्तों की अस्वीकृति और इस घोषणा के साथ समाप्त होती है कि 'क्वेकर्स' (Quakers) एकत्रित होना जारी रखेंगे, चाहे इसके लिए उन्हें कुछ भी मूल्य चुकाना पड़े।

चार वर्ष पश्चात् सन् १६७५ में पैन ने अपने तर्कों को दूसरी पुस्तिका "इङ्गलैंड्स प्रैज़ेन्ट इन्टरेस्ट डिसकवर्ड" (England's Present Interest Discovered) में दुहराया। इसमें वह सहिष्णुता के राजनीतिक और व्यावसायिक तर्कों पर इस आशा में जोर देता है कि शायद वे उस लक्ष्य तक पहुँच सकें, जहाँ विवेक और धर्मशास्त्र के प्रति अपील को अनसुना कर दिया गया है। उत्पीड़न (Persecution) व्यापार को हानि पहुँचाता है और आप्रवासन

(Immigration) को निरुत्साहित करता है। इसके अतिरिक्त, यदि कोई अन्य राज्य अंतःकरण की स्वतंत्रता प्रदान करेगा, तो लाखों असहमतिवादी देश छोड़कर चले जा सकते हैं। हालैंड अपने द्वार अनवरुद्ध कर देने के कारण ही महानता प्राप्त कर सका है। इसलिये अराजकता से रक्षा करने के बदले असहिष्णुता शासन के लिये संकट है। केवल यही नहीं कि यह सम्पूर्ण राष्ट्र को चर्च में नहीं ला सकती, बल्कि जितनी एकता आज है उसको भी यह सङ्कट में डाल देगी। कठोरता से षड़यंत्रों का जन्म होता है, जब कि सहिष्णुता सभी सम्प्रदायों को स्थापित व्यवस्था के समर्थन के लिए एकत्र करेगी। राष्ट्र चर्च से बड़ा है और उसका चर्च के लिए उत्सर्ग नहीं किया जाना चाहिये। सन् १६७९ में पोपवादियों के षड़यंत्र से उत्पन्न भय के काल में पैन की पुस्तक "ऐड्रेस टु प्रोटेस्टेट्स" (Address to Protestants) ने उसके पहले की पुस्तिकाओं के तर्कों को दुहराया और इस बात का आग्रह किया कि समाज का बन्धन मत नहीं, गुण हैं। रोजर विलियम्स की भाँति पैन को भी अपने सिद्धान्तों को 'न्यू वर्ल्ड' में प्रयोग करने का अवसर मिला था। सन् १६८२ में पेन्सिलवानिया (Pennsylvania) के संविधान में, जिसे उसने प्रस्तुत किया, किसी धर्म को आधिकारिक प्राथमिकता नहीं प्राप्त हुई और सभी अद्वैतवादी मतों (monotheistic faiths) को वर्तमान रहने की अनुमति दी गई।

जैसी सहिष्णुता की वह माँग कर रहा था, वह अन्ततोगत्वा जेम्स द्वितीय द्वारा प्रदान की गई। यद्यपि हैलीफैक्स ने राजा के उद्देश्यों पर शंका के कारण शांति प्रस्ताव को अस्वीकृत कर दिया, पर पैन ने उसे आभार सहित स्वीकार किया। वह जेम्स को जानता था और उसे धार्मिक स्वतंत्रता के लिये सच्चे प्रेम से प्रेरित मानता था। इसके अतिरिक्त, वह कैथोलिकवाद के प्रति वर्तमान घृणा से पूर्णतया मुक्त था। वह जानता था कि लार्ड बाल्टिमोर (Lord Baltimore) के उपनिवेश 'मेरीलैंड' (Maryland) में पूर्ण सहिष्णुता वर्तमान है, जब कि 'क्वेकर्स' को योरोप और अमेरिका दोनों ही में ऐंग्लिकनों और प्योरिटनों के कारण कष्ट सहना पड़ा। अपनी रचना "गुड एडवाइस टू दि चर्च ऑव इंग्लैंड, रोमन कैथोलिक ऐंड प्रोटेस्टेंट डिसेन्टर" (Good Advice to the Church of England, Roman

Catholic and Protestant Dissenter) में उसने समस्त चर्चों की समानता की माँग की और किसी विशिष्ट धर्म की प्रधानता का विरोध किया। इस दिशा में परमाधिकार की सहायता से प्रगति हुई, इस बात पर पेन को, जो दंड विधानों को पूर्णतया नैतिक पुष्टता से हीन मानता था और विश्वास करता था कि 'डिक्लेरेशन' विधानमंडल के द्वारा शीघ्र ही कर दी जाएगी, कोई आपत्ति नहीं थी। कुछ मास पश्चात् जेम्स को विलियम्स के पक्ष में पदत्याग करना पड़ा और 'टॉलरेशन ऐक्ट' (Toleration Act) ने कानून का रूप ले लिया। यद्यपि कैथोलिकों को इसके क्षेत्र से अलग रखा गया था और केवल असहमतिवादियों को दंडविधान से कुछ शर्तों पर मुक्त किया गया था, परन्तु वह स्वतंत्रता जो इसने प्रदान की, स्थायी विजय थी; क्योंकि वह पार्लमेंट और जनमत की सहमति पर आधारित थी, राजा की किसी संदिग्ध अवधि की घोषणा पर नहीं। इस प्रकार, अनेक परिवर्तनों के पश्चात् शताब्दी के अन्त में राजनीतिक स्वतन्त्रता के समान ही धार्मिक क्षेत्र में निश्चित प्रगति का दर्शन और स्थापन हुआ।

अध्याय ११

राज्य और व्यापार

सत्रहवीं शताब्दी में यह विश्वास कि सरकार को देश के उद्योग और वाणिज्य से अपने को सक्रिय रूप में सम्बन्धित रखना चाहिए, उतना ही सामान्य था जितना यह मत कि धर्म राज्य का एक विभाग है।

(१)

सामन्तवादी और मध्ययुगीन योरोप के विघटन के साथ आर्थिक स्थिति में एक विशाल परिवर्तन हुआ। आविष्कार के युग ने वैदेशिक और औपनिवेशिक व्यापार का विकास किया, और स्पेनाधिकृत अमेरिका (Spanish America) के सोने ने योरोपीय देशों की मुद्रा में क्रांतिकारी उलट-पुलट उत्पन्न कर दी। सुधार आन्दोलन (Reformation) ने नए राज्यों और शक्तिशाली सरकारों के अभ्युदय में योग दिया जिन्हें अपनी सेना के लिये मनुष्यों और द्रव्य की आवश्यकता थी; और धार्मिक युद्धों का युग ऐसे काल द्वारा अनुसरित हुआ, जिसमें व्यावसायिक: स्वार्थ वैदेशिक नीति निर्धारित करते थे। राज्य में व्यावसायिक वर्ग शक्तिशाली तत्व बन गया। राजनयज्ञों ने (Statesmen) ने बढ़ते हुए उद्योगों का राजनीतिक महत्व अनुभव करना आरम्भ किया। जहाँ कृषि किसी द्रुत विकास के लिए समर्थ नहीं जान पड़ती थी, उद्योगों (Manufactures) ने गहनतर जनसंख्या और राष्ट्रीय सम्पति में असीमित अभिवृद्धि की समान रूप से आशा प्रस्तुत की। राज्य के प्रतिपोषक संरक्षण में व्यापार की असीमित सम्भावनाएँ दिखाई पड़ती थीं। इस प्रकार आर्थिक प्रतिस्पर्द्धा ने राष्ट्रों के संघर्ष में एक कारण के रूप में स्थान ग्रहण किया, और सम्पत्ति का संग्रह करना पश्चिमी योरोप की प्रत्येक सरकार का मुख्य कार्य बन गया।

वाणिज्यवाद (Mercantilism) अथवा उत्पादन और विनिमय का राज्य द्वारा व्यवस्थित नियंत्रण, एक विचारधारा होने की अपेक्षा एक दृष्टिकोण

ही था। परन्तु कुछ विश्वास समस्त देशों के अग्रणी वाणिज्यवादियों (Mercantilists), बोदाँ (Bodin) और मॉन्शे्टीन (Montchretien), सेरा (Serra) और मन (Mun) में समान रूप से प्रचलित थे। आर्थिक राष्ट्रीयता का सबसे बड़ा प्रयोक्ता कॉल्बर्ट (Colbert) था और इसकी सर्वाधिक विशिष्ट सफलता थी सन् १६५१ का 'ब्रिटिश नेविगेशन ऐक्ट'। राजनयज्ञों और सिद्धान्तवादियों ने समान रूप से राष्ट्रीय सम्पत्ति के स्रोत के रूप में कृषि की अपेक्षा उद्योगों को अधिक महत्व प्रदान किया और गृह-व्यापार की तुलना में वैदेशिक व्यापार को। बहुमूल्य धातुओं के विशाल संचय की महत्ता पर उन्हें गम्भीरतापूर्वक विश्वास हो गया था। उनका विश्वास था कि घनी जनसंख्या शक्ति का स्रोत होती है। उन्हें आश्वस्त कर दिया गया था कि राज्य के साधनों के विवेकपूर्ण प्रयोग द्वारा समाज की सम्पत्ति, शक्ति और जनसंख्या बढ़ाई जा सकती है। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए प्रत्येक उपाय न्यायसंगत माना जाता था। एक उद्योग के प्रति पक्षपात और दूसरे को हतोत्साह किया गया, अधिकार-पत्र स्वीकृत किए गए और एकाधिकार स्थापित किए गये। उपनिवेश मातृ-देश के हित के लिये शोषित किए जाने वाली भू-सम्पत्ति के समान थे। उद्योगों के पोषण के लिये राज्य 'द्रुत-वृद्धि केन्द्र' (Forcing-houses) बन गए। संसार ऐसी विशेषाधिकार-प्राप्त कम्पनियों के बीच विभक्त कर लिया गया, जो साहसिक सदस्यों के जीवन और धन पर ध्यान रखती थी। संक्षेप में वाणिज्यवाद (Mercantilism) एक महान् सत्ता के सृजन का उपकरण था। अर्थशास्त्र को राजनीति में विलय कर दिया गया।

इस पद्धति का मुख्य तत्व, जैसा कि इसके अंगरेज प्रतिपादकों की रचनाओं से प्रतीत होता है, आयात-निर्यात का अन्तर (balance of trade) था। इस तथ्य से प्रभावित होकर कि द्रव्य एक अनुपम वस्तु है जिसकी सदैव माँग रहती है और जो उपयोग के लिए सदैव प्राप्त रहता है, वाणिज्यवादी अपने राष्ट्र का अन्य देशों से व्यवसाय इस प्रकार नियमित करना चाहते थे कि बहुमूल्य धातुओं का अधिकाधिक अंश आकर्षित किया और रोका जा सके। प्रत्येक देश को अपनी उत्पादित वस्तुओं का अधिकाधिक भाग निर्यात, और जो वस्तु पूर्णतया आवश्यक हो, वही आयात करनी चाहिए और इनके अन्तर

को धन के रूप में लेना चाहिये। इस अन्तर को आयात-निर्यात के अन्तर (balance of trade) के नाम से जाना जाता था, और इसे वाणिज्य की विभिन्न शाखाओं की उपयोगिता की कसौटी के रूप में माना जाता था। जब दिये हुए द्रव्य से प्राप्त किया हुआ द्रव्य अधिक होता था, तो इस अन्तर को अनुकूल कहा जाता था। इस परिणाम को प्राप्त करने के लिए, जिस पर राष्ट्र का कल्याण आधारित माना जाता था, सरकार को कुछ वस्तुओं का आयात या निर्यात रोकने, कुछ वस्तुओं के आयात पर उपहार प्रदान करने, विदेश की उन वस्तुओं पर कर लगाने में जिन्हें वह प्रवेश की अनुमति देती है, और बहुमूल्य धातुओं का निर्यात नियंत्रित या उसका निषेध करने तक को औचित्यपूर्ण बताया गया। यद्यपि सोने और चाँदी मात्र को ही सम्पत्ति यदाकदा ही कहा गया, पर जनता के मत में सम्पत्ति और द्रव्य में भेद न करने की सामान्य प्रवृति थी।

वैदेशिक व्यापार की समस्याओं पर सर्वप्रथम व्यवस्थित वार्ता जेम्स प्रथम के शासनकाल में आरम्भ हुई, जब मुद्रा (Currency) के एक विशेषज्ञ गेरार्ड मैलीन्स (Gerard Malynes) ने जिसका वाणिज्य सम्बन्धी विषयों में प्रिवी कौंसिल द्वारा प्रायः परामर्श लिया जाता था, पुस्तिकाओं की एक माला में अपने विचारों को प्रस्तुत किया। क्योंकि उसके विचार से विनिमय का अर्थ अर्घ (value) के बदले अर्घ देना था, इसलिए विनिमयकर्ताओं के कार्य उसे राजस्व के अपहरण प्रतीत हुए। इसलिये उसने इस प्रक्रिया के सरकार द्वारा नियंत्रण का समर्थन किया। अनुभवी-व्यापारी मिसेल्डन (Misselden) द्वारा, जिसने कई बार व्यापारी साहसिकों (Merchant Adventurers) का वैदेशिक मिशनों (missions) में प्रतिनिधित्व किया था, इस भ्रांति की आलोचना की गई। उसकी पुस्तक "फ्री-ट्रेड, ऑर दि मीन्स टु मेक ट्रेड फ्लरिश" (Free Trade, or the Means to make Trade flourish) में सम्पन्नता के तथाकथित ह्रास पर, जिसके लिए उसने वैदेशिक वस्तुओं के अत्यधिक उपयोग को दोषी ठहराया, विचार किया गया था। जब मैलीन्स ने उत्तर दिया, तो मिसेल्डन ने "सर्किल ऑव कामर्स ऑर दि बैलेंस ऑव ट्रेड" (The circle of Commerce or the Balance of Trade) नामक

पुस्तिका द्वारा कठोर प्रत्युत्तर दिया, जिसमें उसने सोना-चाँदी (bullion) के निर्यात का इस आधार पर समर्थन किया कि इस प्रकार क्रय की हुई वस्तुओं को पुनः निर्यात कर अन्ततोगत्वा और अधिक धन प्राप्त होगा। तर्क की यह रेखा उसके मित्र मन (Mun) के, जिसकी सर्वाधिक प्रसिद्ध रचना ने युग के प्रमुख विचारों को उच्च कोटि की शास्त्रीय अभिव्यक्ति प्रदान की थी, तर्क के पूर्णतया अनुरूप थी।

टामस मन (Thomas Mun) ने, जिसे कभी कभी वाणिज्यवाद का संस्थापक कहा जाता है, पूर्व के साथ व्यापार (Levant trade) में बहुत अधिक धन कमाया और विदेशों में पर्याप्त अनुभव-प्राप्त करने के बाद, ईस्ट इंडिया कम्पनी का एक डायरेक्टर नियुक्त किया गया। "डिस्कोर्स ऑव ट्रेड फ्राम इंग्लैंड टु दि ईस्ट इंडिया" (Discourse of Trade from England to the East Indies) नामक रचना इस कम्पनी के समर्थन में ही प्रकाशित की गई, जिसने इस शिकायत का उत्तर दिया कि इसके द्वारा सिक्कों के निर्यात से द्रव्य दुष्प्राप्य हो जाता है। जब कम्पनी सन् १६०० में स्थापित हुई, तो उसने ३०,००० पौंड के मूल्य की मुद्रा या सोना-चाँदी (bullion) के निर्यात की आज्ञा इस शर्त पर प्राप्त कर ली, कि वह धन जो विदेश भेजा जायगा, उसके बराबर धन प्रत्येक यात्रा की समाप्ति के छः महीने के भीतर पुनः आयात किया जायगा। परन्तु इस संकीर्णतः सीमाबद्ध विशेषाधिकार तक की तीव्र आलोचना हुई। संभवतः सन् १६३० के लगभग लिखी गई, एक अपेक्षाकृत बहुत महत्वपूर्ण पुस्तक, "इंग्लैंड्स ट्रेज़र बाई फारेन ट्रेड" (England's Treasure by Foreign Trade) उसकी मृत्यु के बीस वर्ष बाद सन् १६६४ में प्रकाशित हुई। यह सत्रहवीं और अठारहवीं शताब्दियों में प्रायः पुनः प्रकाशित होती रही और इसे तब तक लगभग नियामक अधिकार प्राप्त रहा, जब तक "दि वैल्थ ऑव नेशन्स" (The Wealth of Nations) ने इसका स्थान नहीं ले लिया।

पुस्तक का उपशीर्षक घोषित करता है कि "हमारे वैदेशिक व्यापार का अन्तर हमारे कोष का नियम है" और इसका उद्देश्य ऐसे साधनों को स्पष्ट

करना घोषित किया गया है, राज्य जिनसे समृद्ध हो सकता है। मुख्य बात प्रारम्भिक पृष्ठों में ही स्पष्टतया कह दी गई है। "हमारी सम्पत्ति और कोष बढ़ाने का सामान्य साधन वैदेशिक व्यापार है, जिसमें हमें सदैव इस नियम का पालन करना चाहिए—विदेशियों की वस्तुओं से हम जितने अर्घ का उपभोग करते हैं उसकी अपेक्षा प्रतिवर्ष उनको अधिक अर्घ की वस्तुओं का विक्रय करना। हमारे माल का वह भाग जो हमें उपभोग की वस्तुओं के रूप में नहीं लौटाया जाता, निश्चय ही धन के रूप में वापस आना चाहिये।" इसलिये अपने निर्यात बढ़ाने और वैदेशिक वस्तुओं का उपभोग घटाने के लिये प्रत्येक प्रयत्न किया जाना चाहिये। परती भूमि, सन, पटुआ और अन्य ऐसी वस्तुएँ पैदा करने के लिये प्रयुक्त होनी चाहिये, जो आजकल आयात होती हैं। यदि हम भोजन और वस्त्र की वस्तुओं में वैदेशिक माल की माँग कम कर दें, तो हम लोग अपना आयात और भी कम कर सकते हैं। फैशन का वहम और अतिरेक, अन्य देशों जैसी उपभोग-निरोधन विधियाँ बनाकर ठीक किया जा सकता है। "यदि अपने पहनावे में हम लोग अतिव्ययी हों, तो यह व्यय हम अपने यहाँ की ही वस्तुओं पर करें, जिससे धनी लोगों को सफलता निर्धनों को काम दे सके, चाहे विदेशियों द्वारा निर्मित वस्तुओं का उपभोग लाभप्रद ही क्यों न हो। हम उन वस्तुओं का ऊँचा मूल्य ले सकते हैं, जिनकी हमारे पड़ोसियों को आवश्यकता है और जिनकी पूर्ति अन्य कोई देश नहीं कर सकता; परन्तु उनमें से जिन वस्तुओं का एकाधिकार हमारे पास नहीं हैं, उनको सस्ते से सस्ता बिकना चाहिए। विदेशी सामग्री से इङ्गलैंड में निर्यात के लिए तैयार की हुई वस्तुएँ शुल्क से मुक्त होनी चाहिये। अपनी वस्तुओं का निर्यात हमें अपने ही जहाजों से करना चाहिये और हमें अपने मत्स्य-पालन का विकास करना चाहिये। कम्पनी के एक डाइरेक्टर की हैसियत से लिखते हुए, मन Mun) पूर्वी द्वीप समूहों (East Indies) के साथ हमारे व्यावसायिक कार्यकलापों को सर्वाधिक लाभप्रद बताता है, न केवल इसलिए कि अपने लिये हम उनके द्वारा उत्पादित वस्तुएँ सस्ते मूल्य पर पा जाते हैं, प्रत्युत् इसलिये भी कि हम बची हुई वस्तुओं को अपने पड़ोसियों के हाथ ऊँचे दामों पर बेचते हैं। यह "इतनी अधिक सार्वजनिक सम्पत्ति, शक्ति और सुख आयात करने वाले इस महान और

उत्तम व्यापार को कायम रखने और विकसित करने के लिये हमें अधिकाधिक प्रयत्न करने के लिये उत्साहित कर सकता है।"

एक प्रभावशाली अध्याय का शीर्षक "दि एक्सपोर्टेशन ऑव आवर मनीज़ इन ट्रेड इज ए मीन्स टु इन्क्रीज आवर ट्रैज़र" (The Exportation of our moneys in Trade is a means to increase our Treasure) दिया गया है। सोने-चाँदी की मुद्रा के प्रचलन के समर्थकों ने यह माँग की कि बहुमूल्य धातुओं को देश के बाहर जाने ही न दिया जाय अथवा उनके निर्यात पर अधिक से अधिक कठोर प्रतिबन्ध लगाए जायँ। जनसाधारण के पूर्वाग्रहों (prejudices) का, जो जब द्रव्य देश के बाहर जाते हुए देखते हैं तो उसका तीक्ष्ण स्वर में विरोध करते हैं, अनुभव करते हुए मन इस प्रश्न पर विस्तार से विचार करने के लिये आगे बढ़ता है। धातु-मुद्रा के प्रचलन के समर्थकों की इस धारणा को स्वीकार करते हुए कि व्यापार से बहुमूल्य धातुओं के संचित कोष में वृद्धि होनी चाहिए, वह यह तर्क प्रस्तुत करता है कि यह परिणाम उनके प्रतिबन्ध रहित निर्यात द्वारा सर्वोत्तम रूप में प्राप्त होता है। वह कहता है, "द्रव्य से व्यापार उत्पन्न होता है और व्यापार द्रव्य को बढ़ाता है। पहले हमें अधिक वस्तुओं के आयात द्वारा अपना व्यापार बढ़ाना चाहिए जिन्हें फिर बाहर भेज कर यथोचित काल में, जितना धन प्रारम्भ में बाहर भेजा गया था, इससे बहुत अधिक प्राप्त किया जा सकेगा।" व्यक्तियों की भाँति राज्यों के लिये भी यह बात सही है कि जो द्रव्य को ताले में बन्द नहीं करते हैं वरन् उपयोगी वस्तुओं का उत्पादन करते हैं, "जिनसे वे अपने द्रव्य को कई गुना बढ़ाते हैं और इस प्रकार एक के दूसरे में अनवरत और नियमित परिवर्तन द्वारा धनी बन जाते हैं, क्योंकि जिनके पास उपयोग की वस्तुएँ होती हैं उन्हें द्रव्य की कमी नहीं रह सकती।" नकदी (cash) व्यापार का जीवन नहीं है जो वस्तु-विनिमय से आरम्भ हुआ और अब मुख्यतया साख पर चलता है। निस्सन्देह, द्रव्य का आधिक्य मूल्य बढ़ा देता है, जो कुछ व्यक्तियों के लिये अच्छा परन्तु सार्वजनिक कल्याण के विरुद्ध हैं क्योंकि जब मूल्य बढ़ा दिया जाता है, तो माँग घट जाती है। हमें अपने द्रव्य और वस्तुओं (merchandise) दोनों से ही व्यापार करना चाहिये। "यदि हम कृषक को केवल बीज बोने के

समय देखें जब वह बहुत अच्छे बीज जमीन में फेंकता है तो हम उसे कृषक की अपेक्षा पागल समझेंगे, परन्तु जब हम फसल के समय उसके परिश्रम पर विचार करते हैं, तो उसके कार्यों का महत्व समझते हैं।"

मन अपनी पुस्तक के सबसे बड़े अध्याय में मैलीन्स की इस भ्रांति पर विचार करता है कि विनिमय असीमित रूप से शक्तिशाली है। एक-एक करके उसके "कष्टपूर्ण विभ्रमों" का परीक्षण और खंडन किया गया है। "मैं काफी दिनों तक इटली में रहा हूँ, जहाँ ईसाई जगत (Christendom) में बड़े से बड़े बैंक और बैंक वाले व्यापार करते हैं, फिर भी मैंने न कभी यह देखा न सुना कि वे सगठन बनाकर विनिमय के मूल्य पर अधिकार करने योग्य हो गए हों; परन्तु व्यापार में द्रव्य के आधिक्य और अप्राप्यता ने सदैव उन्हें पराजित किया है तथा विनिमय को ऊँचे या नीचे भाव पर चलने को विवश किया है।" यह विध्वंस कार्य इतनी प्रभावशालीनता से सम्पादित किया गया था कि यह सिद्धान्त मैदान से गायब हो गया। एक और भ्रांति जिस पर वह चोट करता है, यह है कि ज्यों-ज्यों सूदखोरी बढ़ती है, व्यापार गिरता जाता है; और यह सिद्ध करने में उसे जरा भी कठिनाई नहीं होती कि ब्याज की दर व्यापार के साथ बढ़ती है और उसके कम होने पर गिर जाती है। पुस्तक के अन्त में वह अपने इस दावे को पुनः प्रस्तुत करता है कि वैदेशिक व्यापार सम्पत्ति और धन का प्रमुख साधन है; क्योंकि देशीय व्यापार में एक का लाभ दूसरे की हानि होती है। परन्तु पूर्णतया इसी बात पर निर्भर न रहना अत्यंत आवश्यक है क्योंकि यदि युद्धकाल में विदेशी राज्य अंग्रेजी कपड़े और अन्य वस्तुओं के प्रवेश पर प्रतिबंध लगा दें, तो हमारे श्रमिकों में से अनेक बेकार हो जाएँगे। इसलिए यह अत्यावश्यक है कि कृषि और मत्स्य-पालन के उद्योगों को पूरक के रूप में आरम्भ किया जाये। वह वाक्पूर्ण उत्साह के साथ समाप्त करता है, "फिर भी वैदेशिक व्यापार, राजा की विशाल आय, राज्य का सम्मान, व्यापारियों का सुप्रतिष्ठित धंधा, हमारी कलाओं का शिक्षालय, हमारी माँगों की पूर्ति, हमारे निर्धनों का रोजगार, हमारी भूमि की उन्नति, हमारे नाविकों का पोषक, हमारे राज्य की प्राचीर, हमारे लिए धन का साधन, हमारे युद्धों में हमारा संबल तथा शत्रुओं के लिये हमारा आतंक है।"

मन की पुस्तिका आयात-निर्यात के अन्तर के सिद्धान्त और इसे प्राप्त करने के उपाय का पहला व्यवस्थित विवरण है। आकार में संक्षिप्त, तर्क में स्पष्ट, देश और विदेश के दीर्घ अनुभवों के भंडार से समृद्ध, इसने ईस्ट इन्डिया कम्पनी की आलोचना को पराजित करने का तात्कालिक उद्देश्य सफलतापूर्वक प्राप्त किया। हालैंड के उत्थान और स्पेन के पतन ने उसे ज्वलंत उदाहरण उपलब्ध किये। सन् १६६४ में उसकी पुस्तक के प्रकाशन, और शुल्क-कार्यालय (Custom-house) में राशि को दर्ज करा लेने के पश्चात् असीमित परिमाण में सोने-चाँदी को निर्यात करने की पार्लमेंट द्वारा दी गई आज्ञा, अपेक्षाकृत प्रारम्भिक और संकीर्ण वाणिज्यवादी सिद्धान्त (mercantilist doctrine) का अन्त लक्षित करती है, जिसे हम सोने-चाँदी की मुद्रा के चलन का समर्थन करने वाले वाद (bullionism) की संज्ञा दे सकते हैं। मन द्वारा प्रतिपादित वाणिज्यवाद, अपने समय की आवश्यकताओं के अनुकूल बनाया गया था। यद्यपि इसका आयात-निर्यात के अन्तर का सिद्धान्त भ्रमपूर्ण था पर इसने यह स्वीकार किया कि उद्योगों का विकास राष्ट्रीय सम्पन्नता का मार्ग है। 'नेवीगेशन ऐक्ट', जिसने सामुद्रिक यातायात के व्यापार को ब्रिटिश अथवा माल का उत्पादन करने वाले देशों के जलपोतों तक ही सीमित कर दिया, व्यवसाय के लिये एक अवरोध था; परन्तु इसने हालैंड के व्यवसाय पर हानिकारक आघात किया और ब्रिटिश व्यावसायिक जलशक्ति की स्थापना की। इस प्रणाली के व्यावहारगत दोष ये थे कि नियमित उद्योग परिवर्तनों के अनुरूप नहीं होते और व्यापार कभी-कभी कृत्रिम मार्गों में प्रवाहित होने लगता है। इसमें मौलिक भ्रांति यह थी कि एक देश का व्यावसायिक लाभ केवल दूसरे देश की हानि पर ही संभव होता है।

(२)

यद्यपि वाणिज्यवाद इस शताब्दी के सिद्धान्त और व्यवहार पर छाया रहा, पर अर्थशास्त्रियों के एक छोटे दल ने इसके अन्तिम दशकों में असीमित व्यापार के महत्व पर जोर दिया। यह कोई आकस्मिक घटना नहीं थी कि ऐडम स्मिथ (Adam Smith) के पूर्ववर्ती टोरी थे। ह्विग दल जिसका जन्म अंशतः

फ्रांसीसी प्रभाव के प्रति घृणा के कारण हुआ था, उक्त देश के साथ व्यापार को अधिकतम संभव संकीर्ण सीमाओं में बाँधना चाहता था। इस प्रकार अपनी राजनीतिक शत्रुता को आर्थिक तर्क का आधार देते हुए उन लोगों ने अधि-अन्तर (overbalance) का भय खड़ा किया। दूसरी ओर टोरी दलवाले, जो साधारणतया स्टुअर्ट राजाओं की फ्रांस के साथ निकट सम्बन्ध रखने की नीति का समर्थन करते थे, मुक्त व्यापार से हितों का प्रचार और अन्तर (balance) के सिद्धान्त को अस्वीकार करते थे। चार्ल्स द्वितीय ने स्वभावतः फ्रांसीसी व्यापार की अनुमति दे दी, क्योंकि यह ठोस और स्वतंत्र राजस्व प्रदान करता था। इस प्रकार आर्थिक विचारधारा राजनीतिक गुटों का युद्ध-स्थल बन गयी। व्यावसायिक वर्ग शिकायत करता था कि फ्रांस समृद्ध और इंग्लैंड निर्धन हो जाएगा और ह्विग दल वालों ने, जो उनका प्रतिनिधित्व करते थे, घोषणा की कि "फ्रांसीसी वस्तुओं के आयात के कारण राष्ट्र की अत्यधिक सम्पत्ति समाप्त हो गई है।" सन् १६७८ में पार्लमेंट ने फ्रांसीसी शराब, रेशम और अन्य ऐसी वस्तुओं के आयात पर निषेध लगा दिया, जिनका भुगतान नकदी में होता था। परन्तु 'ग्रेट प्रोहिबिशन' (Great Prohibition), जैसा कि इस ऐक्ट को पुकारा गया, जेम्स द्वितीय के शासन-काल में रद्द कर दिया गया और उसका स्थान ऊँची दर वाले आयात-निर्यात को दे दिया गया। आयातों की बाढ़ आरम्भ हो गई और जब क्रांति ने टोरी दल की सरकार का अंत कर दिया तो फ्रांस के साथ व्यापार पर पुनः प्रतिबंध लगा दिया गया। परन्तु अब इसे युद्धकालीन युक्ति के रूप में ही उपस्थित और स्वीकृत किया गया था। जैकबवादियों के अतिरिक्त और सभी लोग, निषेध की आर्थिक दृष्टि से बुद्धिमत्ता के विषय में आश्वस्त न होने पर हुए भी, फ्रांस को अशक्त बनाने के लिये उत्सुक थे।

जबकि दलों के भाग्य का उत्थान और पतन होता रहा, वाणिज्य की समस्याओं पर क्रमबद्ध रूप में विचार करने के नए-नए प्रयत्न किए जाते रहे। टोरी दल के स्वतंत्र व्यावसायवादियों (Tory Free traders) में सर्वाधिक उल्लेखनीय डडले नार्थ (Dudley North) था, जो स्मरना (Smyrna) और कुस्तुनतुनिया में व्यापारी के रूप में बीस वर्ष व्यतीत करने के पश्चात्

चार्ल्स और ह्विग दलवालों के बीच संघर्ष के संकट काल में स्वदेश वापस लौटा और जिसने लंदन के शैरिफ़ (Sheriff of London) के रूप में शाही सत्ता का समर्थन करने में अग्रगण्य भाग लिया। राजनीति में उसका कार्यकाल संक्षिप्त ही रहा और उसकी ख्याति सन् १६६१ में प्रकाशित "डिस्कोर्सेज ऑन ट्रेड" (Discourses on Trade) पर आधारित है जो रोस्चर (Roscher) के कथनानुसार "दि वैल्थ ऑव नेशन्स" (The Wealth of Nations) का एक अध्याय बन सकती थी। कुछ ही सशक्त प्रहार फ्रांस के साथ व्यापार पर प्रतिबंध लगाने के तर्क को नष्ट कर देते हैं। "व्यापार के लिये संसार एक राष्ट्र की भाँति है और विभिन्न राष्ट्र व्यक्तियों की भाँति हैं। जनता के लिये कोई भी व्यापार लाभ रहित नहीं हैं; क्योंकि यदि कोई व्यापार लाभप्रद सिद्ध नहीं होता है तो लोग उसका त्याग कर देते हैं; और जहाँ व्यापार समृद्ध होता है वहाँ जनता भी समृद्ध होती है।" यद्यपि मन (Mun) ने संसार-व्यापी व्यापार की विभिन्न अवयवों द्वारा परस्पर सहायता करते हुए शरीर से तुलना की थी, परन्तु वह यह नहीं समझ सका था कि उसके सिद्धान्त उसे कहाँ ले जा रहे हैं। नार्थ के साथ हम अधिक आधुनिक वातावरण में साँस लेते प्रतीत होते हैं। वह कहता है कि सम्पत्ति सोने और चाँदी से स्वतंत्र रहकर विद्यमान रह सकती है, क्योंकि यह भूमि और उत्पादित वस्तुओं पर मनुष्य के परिश्रम से उत्पन्न होती है। "द्रव्य एक ऐसी व्यावसायिक वस्तु है, जिसका बाहुल्य और साथ ही साथ अभाव भी हो सकता है और वह भी असुविधा-जनक।" व्यापार में स्थिरता द्रव्य के अभाव के कारण नहीं वरन् अधि-उत्पादन या देश अथवा विदेश के राजनीतिक उपद्रवों के कारण है। "किसी विशेष व्यापार या हित के प्रति पक्षपात करना बुराई है, और वह जनता को लाभ से वंचित रखता है। सबको एक नीति के अनुसार व्यापार करने के लिए विवश करने से कुछ लोग लाभ उठा सकते हैं, परन्तु जनता लाभान्वित नहीं होती, क्योंकि यह प्रजा के एक भाग से छीन कर दूसरे को देना है। विधियाँ व्यापार में मूल्य निर्धारित नहीं कर सकतीं, जिसकी दरें स्वयं ही निर्मित होती हैं और होती रहेंगी।" कोई देश राज्य के नियंत्रण द्वारा सम्पन्न नहीं बनाया जा सकता और सरकार व्यापार में जितना ही कम हस्तक्षेप करे, उतना ही

अच्छा है। वह व्यय में अल्पता संबंधी विधियों के प्रति अपनी घृणा को छिपाने का प्रयत्न नहीं करता। वह स्वदेशी बाजार के महत्व की ओर निर्देश करता है, जिसकी वाणिज्यवादियों ने सामान्यतः उपेक्षा की थी। अन्त में वह यह दिखाता है कि ब्याज माँग और पूर्ति पर निर्भर रहता है और इसलिए राज्य द्वारा निश्चित नहीं किया जा सकता। नार्थ का संदेश यह था कि व्यापार की सहायता के संबंध में राज्य की सत्ता को अत्यधिक अतिरंजित किया गया है और किसी देश की जनता शांति, उद्यम और स्वतन्त्रता द्वारा ही संपन्नता की ओर प्रगति करती है; परन्तु उसकी पुस्तिका शीघ्र ही विलुप्त हो गई और संभवतः दबा दी गई।

ऐसा ही मत पार्लमेंट के सदस्य और उत्पादन कर के आयुक्त, उस कवि के पुत्र, जिसकी पुस्तिकाएँ क्रांति के तुरत बाद के वर्षों में प्रकाशित हुईं, चार्ल्स डेवनान्ट (Charles Davenant) की रचनाओं में मिलता है। वह कहता है, "व्यापार स्वभाव से ही स्वतन्त्र है, वह अपना ही पथ ग्रहण करता है और अपनी दिशा स्वयं ही सर्वोत्तम ढंग से निर्धारित करता है।" वह स्वीकार करता है कि एक व्यापार के आयात-निर्यात के अन्तर की हानि दूसरे में लाभ का कारण हो सकती है। वह सम्पूर्ण इंजिन की गति पर ध्यान दिए बिना उसके किसी विशेष पहिए पर ध्यान देने की भर्त्सना करता है। तथापि वह नार्वे और बाल्टिक सागर के देशों से व्यापार को दोष देता है, "जो सदैव हमारा द्रव्य खींचता रहा है।" कट्टरतापूर्ण वाणिज्यवाद का तीसरा आलोचक जोशिया चाइल्ड (Josiah Child) था, जो कई वर्षों तक ईस्ट इंडिया कम्पनी का प्राण रहा और उसकी महानता का संस्थापक था। सन् १६६८ में प्रकाशित और सन् १६९० में "न्यू डिसकोर्सेज आन ट्रेड" (New Discourses on Trade) नाम से पुनः प्रकाशित और परिवर्द्धित, उसकी पुस्तक "आब्जर्वेशन्स ऑन ट्रेड" (Observations on Trade) ने आयात-निर्यात के अन्तर के सिद्धान्त की कटु आलोचना की। उद्योग का महत्व आयात और निर्यात की तुलना से नहीं, जलीय यातायात की अवस्था के निरीक्षण और समृद्धि या अवनति के स्पष्ट वातावरण को ध्यान में रख कर आँका जा सकता है। इसलिए उसने व्यावसायिक स्वतन्त्रता के लिए आग्रह किया और आन्तरिक उद्योग पर लगभग

सभी प्रतिबन्धों के हटाये जाने की इच्छा की। फिर भी वह समस्त औपनिवेशिक व्यापार को मातृदेश तक ही सीमित रखते हुए और नकद भुगतान किए जाने वाली वस्तुओं के आयात को निरुत्साहित करते हुए प्रतिबन्ध के समर्थकों के अनेक मूलभूत विश्वासों से सहमत था। उसने इस विचित्र भ्रांति को भी प्रश्रय दिया कि हालैंड वालों ने ब्याज की कम दर लेकर हमारे व्यापार को स्वयं हस्तगत कर लिया है और वह यह मानता था कि कानून द्वारा इसकी सीमा चार प्रतिशत कर देनी चाहिये। टोरी 'फ्री ट्रेड' (Free Trade) गुट के चौथे सदस्य निकोलस बार्बन (Nicholas Barbon) ने बहुत ही हाल में उन अनेक पुस्तिकाओं के रचियता होने की खोज से, जो अब तक दूसरे लेखकों से संबंधित की जाती थी, वह स्थान प्राप्त किया है जिसके योग्य वह था। सन् १६६० में प्रकाशित उसकी पहली पुस्तक ने "निषेधों" (Pro hibitions) की व्यापार की अवनति के प्रमुख कारण के रूप में भर्त्सना की। यदि आयात वास्तव में स्वदेशी वस्तुओं के उत्पादन और उपभोग का मार्ग अवरुद्ध करता है, तो सस्ते दामों पर बिक्री को रोकने के लिए चुङ्गी लगायी जा सकती है परन्तु ऐसे उदाहरण कम ही होंगे। आयात-निर्यात के अन्तर के विरुद्ध उसका मुख्य तर्क इसे ठीक-ठीक ढूँढ़ने की विशाल कठिनाई है। इसके अतिरिक्त उसने देखा कि दीर्घकाल में वस्तुओं ही से वस्तुओं का भुगतान होता है और इस सत्य को समझ सकना वाणिज्यवाद के जाल से बचना है।

ये लेखक स्वतंत्र व्यापारवादी होने की अपेक्षा तत्व संचयी ही अधिक थे और इनमें परम्परागत विश्वास के मूल सूत्रों को मानते हुए ह्यूम और ऐडम स्मिथ की परिकल्पनाओं की धुँधली रूप रेखा मिलती है। फिर भी लॉक की तुलना में, जिसकी रचनायें विशुद्ध रूप में वाणिज्यवादी हैं, ये लोग एक अपेक्षाकृत अधिक प्रबुद्ध पीढ़ी के अग्रणी व्यक्ति हैं। उन्होंने इस विचार को अस्वीकृत किया कि राष्ट्रीय सम्पत्ति नकदी के संचय पर निर्भर है और उन्होंने इसका वास्तविक उद्‌गम प्रकृति और श्रम में स्थापित किया। उन्होंने वैदेशिक व्यापार के अतिरंजित मूल्यांकन को कम किया और कृषि की महत्ता पर जोर दिया। उन्होंने घोषणा की कि राज्य का उद्देश्य आयात-निर्यात का अन्तर प्राप्त करना नहीं, सम्पूर्ण जनसंख्या के लिए जीवन की आवश्यक वस्तुयें प्राप्त करना

है। उन्होंने निषेधों, आयात-करों और एकाधिकारों की व्यापक व्यवस्था का व्यापार के प्रोत्साहन की अपेक्षा बाधा के रूप में मानकर तिरस्कार किया। यदि उनका कर्तृत्व (achievement) नहीं, तो उनकी आकांक्षा निश्चय ही ब्रिटिश व्यवसाय को इसके चारों ओर बँधे परिधानों से मुक्त करने की थी।

(३)

सत्रहवीं शताब्दी के अधिकांश अर्थशास्त्रियों ने जहाँ अपना ध्यान वैदेशिक व्यापार की समस्याओं पर केन्द्रित किया, उनमें सर्वाधिक विख्यात सर विलियम पैटी ने अपनी तीव्र बुद्धि को आर्थिक और सांख्यिकीय अभिरुचि के अनेक विषयों की ओर लगाया। मुख्यतया फ्रांस और हालैंड में शिक्षा प्राप्त करके उसने शीघ्र ही अनेकों देशों और अनेकों क्षेत्रों के लोगों से, जिनमें मैरसेने की वह गोष्ठी भी थी, जो उसने पेरिस में अपने निकट एकत्रित कर ली थी, परिचय स्थापित किया। सन् १६४६ में तेईस वर्ष की अवस्था में इङ्गलैंड लौटकर उसने अल्प काल के लिए अपने को अपने पिता के वस्त्र व्यापार में लगाया; परन्तु वह शीघ्र ही आक्सफोर्ड चला गया, जहाँ उसने अपना चिकित्सा सम्बन्धी अध्ययन जारी रक्खा। विज्ञान में उसकी अभिरुचि और आविष्कार के प्राकृतिक गुण ने उसे उस विद्वत्-मंडली के प्रमुख व्यक्तियों में से एक बना दिया, जिनमें से एक दिन (Royal Society) उत्पन्न होने वाली थी। उसकी बहुमुखी योग्यता इस तथ्य से प्रकट होती है कि वह एक साथ ही आक्सफोर्ड में शारीरिक-विज्ञान (Anatomy) और ग्रेशम कालेज (Gresham College) में संगीत का प्राध्यापक था। किसी समय भी राजनीति में तीव्र रुचि न रखते हुए भी, विभिन्न दलों के व्यक्तियों से उसके संबन्ध अच्छे थे। आइरिश विद्रोहियों की भू-सम्पत्ति को सेना और कामनवेल्थ के अन्य समर्थकों या ऋण दाताओं में विभाजित करने की इच्छा करते हुए सरकार ने उसे देश का सर्वेक्षण करने के लिये नियुक्त किया। रियासतों का 'डाउन सर्वे' (Down Survey), जिसका यह नाम मानचित्र पर "नीचे" (down) अंकित किये जाने के कारण पड़ा, देश का प्रथम व्यापक और वैज्ञानिक अभिलेख था। विचाराधीन भूमि को चित्रांकित करने के पश्चात् उसने उसके वितरण की व्यवस्था की और अपना वेतन कैरी

(Kerry) नामक स्थान में भूमि क्रय करने में लगाया। वह हेनरी क्रामवेल का व्यक्तिगत सचिव बना और प्रोटेक्टरेट के पतन के पश्चात् उसने 'रोटा क्लब' (Rota Club) के वाद-विवादों को सुना। क्रामवेल से उसके सम्बन्धों के बावजूद भी चार्ल्स द्वितीय ने, जो वैज्ञानिक व्यक्ति के संसर्ग में आनन्द प्राप्त करता था, उसका स्वागत किया। वह रायल सोसाइटी के प्रथम सदस्यों में से एक था और उसे सन् १६६२ में 'नाइट' (Knight) की उपाधि मिली एवं उसने यंत्र-विज्ञान और आविष्कारों पर 'ट्रैन्जक्शेन्स' (Transaction) में कई लेख प्रकाशित कराए। धर्म के विषय में वह यदि संदेहवादी नहीं, तो उदारपंथी अवश्य था। उसकी आकांक्षा एक ऐसे नए सांख्यिकीय कार्यालय का अध्यक्ष होने की थी, जो जनगणना, देश की सम्पत्ति का मूल्यांकन, करों की वसूली की पुनर्व्यवस्था और सार्वजनिक स्वास्थ्य में सुधार करता। किसी ऐसे पद के लिए उसकी योग्यता को सार्वभौमिक स्वीकृति प्राप्त थी। एवलिन (Evelyn) लिखता है, "सम्पूर्ण संसार में उद्योगों के अधीक्षक का कार्य करने और व्यापार में सुधार के निमित्त उसके समान दूसरा कोई नहीं है। उसके लिए कुछ भी दुष्कर नहीं है। यदि मैं राजा होता, तो उसे कम-से-कम अपना द्वितीय परामर्शदाता अवश्य बनाता।"

यद्यपि पैटी को पुनर्स्थापन के बाद की सरकारों ने कभी भी किसी पद पर नियुक्त नहीं किया, पर उसने तत्कालीन समय के लिए पर्याप्त पुस्तकों की रचना की। यद्यपि सन् १६६२ में प्रकाशित "आबजर्वेशन्स ऑन दी बिल्स ऑव मार्टेलिटी ऑव दी सिटी ऑव लंडन (Observations on the Bills of Mortality of the City of London) बाद में आब्रे, एवलिन और बर्नेट द्वारा उसी से सम्बन्धित की गयी है, पर यह उसके एक मित्र कैप्टेन ग्रांट (Captain Graunt) द्वारा लिखी गई थी, जो एक वस्त्र विक्रेता था और जिसने गृह-युद्ध में सैनिक वृत्ति अपना ली थी, तथा जो अब 'कॉमन कौंसिल' (Common Council) का सदस्य था। परन्तु उसने भी इसकी रचना में सहयोग दिया हो यह संभव है, और लेखक की मृत्यु के पश्चात् इस रचना में कुछ अंश जोड़ते हुए इसका सम्पादन किया। ग्रांट की पुस्तक जीवन-मरण सम्बन्धी संख्याओं के विषय में लिखी गई प्रथम पुस्तक होने के कारण महत्वपूर्ण है। वह

रोगों का वर्गीकरण तथा रोगियों की आयु का अध्ययन करता है और जनसंख्या के घनत्व के बुरे प्रभाव को स्वीकार करता है। उसने लड़कों की उच्चतर जन्म-संख्या, शिशुओं की अधिक संख्या में मृत्यु, ग्रामीणों की अपेक्षा नागरिक मृत्यु संख्या का आधिक्य जैसी कुछ सामाजिक घटनाओं की नियमितता की खोज की थी। अगली शताब्दी में शुशमिल्च (Sussmilch की प्रसिद्ध रचना के प्रकाशित होने के पूर्व इतना विचारपूर्ण और व्यवस्थित कोई भी ग्रन्थ प्रकाश में नहीं आया। पैटी ने 'आबजर्वेशन्स' (Observations) को "संसार के लिये नये प्रकाश" के रूप में वर्णित किया है और बीस वर्ष बाद डबलिन की मृत्युसंख्या के विवरणों पर पुस्तक की रचना करके उसने अपने मित्र का कार्य जारी रखा। ग्रांट और पैटी जनसंख्या, जीवन, मृत्यु आदि से सम्बन्धित आंकड़ों के संस्थापक माने जाते हैं और समाजशास्त्रीय आंकड़ों के एकत्रीकरण और विश्लेषण के लिए जो प्रेरणा उन्होंने प्रदान की, वह डेवनान्ट (Davenant) और ग्रेगरी किंग Gregory King) की रचनाओं में पायी जा सकती है।

पैटी की आर्थिक रचनाओं में सबसे पहली और सबसे अधिक महत्वपूर्ण सन् १६६२ में प्रकाशित "ट्रीटाइज ऑन टैक्सेज ऐन्ड कॉन्ट्रीब्यूशन्स" (Treatise on Taxes and Contributions) है। यह रोचक और विस्तृत पुस्तक ह्यूम के पूर्व के अर्थशास्त्रीय साहित्य में सर्वाधिक मूल्यवान रचना के रूप में वर्णित की जाती है। यह राष्ट्रीय सुधार का कार्यक्रम और देश के साधनों के विकास के लिये एक निवेदन भी थी। राजत्व में पुनर्स्थापन के समय किए गए अथवा विचारित परिवर्तनों पर आधारित, उसका सर्वेक्षण विभिन्न आयात करों तक विस्तृत है और उनकी प्रकृति की टीका करता है। भूमि पर सामन्तवादी करों का पूर्णतया उन्मूलन कर उनके स्थान पर नए कर लादे गए और इस प्रकार प्रत्यक्ष का स्थान प्रधानतः अप्रत्यक्ष करों ने ले लिया। वह सुरक्षा, न्यायालय और प्रशासन की व्यवस्था, पादरी वर्ग का वेतन, शिक्षा को प्रोत्साहन, निर्धनों का पोषण, सड़कों और बन्दरगाहों के सुधार की राज्य के उचित उत्तर-दायित्व के रूप में गणना करता है। करों की अलोकप्रियता के कारणों का विश्लेषण करने के पश्चात् वह संभाव्य बचत की भी ओर ध्यान देता है। पादरी वर्ग की आय, जिन्हें वह उतना ही कम चाहता था जितना उनका मित्र

हाउस, कम और पुनः वितरित की जानी चाहिए और बहुत सारे अनावश्यक पदाधिकारियों को विमुक्त किया जाना चाहिए। राज्य को बेरोजगारों के लिए रोजी का प्रबन्ध करना चाहिए और सड़क-यातायात में पर्याप्त सुधार होना चाहिए। हालैंड से युद्ध के काल में, सन् १६६४ में, प्रकाशित "वर्बम सेपिइन्टी" (Verbum Sapienti) नामक पुस्तक में, जिसे "ट्रैटाइज ऑन टैक्सेज" का परिशिष्ट कहा जा सकता है, वह भूमि पर अत्यधिक कर और लंदन नगर के नागरिकों पर लगे अपर्याप्त कर की ओर ध्यान आकर्षित करता है।

अन्य विषयों की भाँति यहाँ भी पैटी कर-प्रणाली के उचित आधार के रूप में भूमि के सांख्यिक सर्वेक्षण और मूल्यांकन की आवश्यकता पर जोर देता है। चुङ्गी और उत्पादनकर पर आकर वह उस विवादास्पद क्षेत्र में पहुँच जाता है, जिसमें उसके अर्थशास्त्री बन्धु विशेष रुचि रखते थे। वह द्रव्य निर्यात पर प्रतिबन्ध की स्पष्ट असंभाव्यता स्थापित करता है और सिद्ध करता है कि इन और अन्य वस्तुओं के निर्यात पर प्रतिबन्ध लगाना उतना ही मूर्खतापूर्ण है। वह प्रश्न करता है, "मान लें कि हालैंड वाले श्रेष्ठतर कला के द्वारा हम लोगों से बहुत आगे निकल जाते हैं, तो क्या उनके बहुत से कुशल कारीगरों को अपने यहाँ बुलाना या अपने अत्यन्त प्रतिभावान लोगों को उनके यहाँ सीखने के लिए भेजना अच्छा नहीं होगा?" इसी प्रकार वह आयातों के निषेध का विरोध करता है। हम जल को उसके स्रोत की सतह से ऊँचा उठने की शिक्षा देने की चेष्टा के स्थान पर बोझीले, निरर्थक और अप्रचलित करों और पदों को हटा दें। वह ऐसे शब्दों में जो शीघ्र ही लोकप्रिय हो गए, घोषणा करता है, "श्रम सम्पदा का पिता और सक्रिय सिद्धान्त और भूमि इसकी जननी है।" यद्यपि उसने आयात-निर्यात के अन्तर के सिद्धान्त को अस्वीकृत किया और अच्छी प्रकार से अनुभव किया कि बहुमूल्य धातुएँ सम्पत्ति की सांकेतिक वस्तु मात्र है, परन्तु डडले नार्थ के अतिरिक्त अपने समस्त समकालीन व्यक्तियों के समान पैटी अपना एक पैर वाणिज्यवादी युग में रखे रहता है। वह आयातों के निर्यात से बहुत होने की स्थिति में निर्यात पर प्रतिबंधों से सहमत हो सकता है, इसके अतिरिक्त, वह हालैंड को ऊन के निर्यात को रोकने के लिए भी तैयार हो जाएगा, यदि कपड़े के उत्पादन में हालैंड की श्रेष्ठता इतनी कम हो कि ऐसा कोई पग पलड़े को हम

लोगों के पक्ष में कर दें। इस बात को निश्चित रूप से जानना कठिन है कि क्या पैटी जैसे लोग अपनी असंगतियों को जानते थे। संभव है उन्होंने अपने तर्क के प्रति संदिग्धता अनुभव की हो अथवा शायद उन्होंने वाणिज्यवादी सिद्धान्त पर अपरोक्ष आक्रमण करना ही उचित समझा हो।

"ट्रीटाइज़ ऑन टैक्सेज़" के एक अत्यन्त मौलिक भाग में अर्घ के मापदंड का पता लगाने की संभावना पर विचार किया गया है। वह इंगित करता है कि सोने और चाँदी का मूल्य पूर्ति और अन्य परिस्थितियों के साथ परिवर्तित हो सकता है और इसलिए यह निरपेक्ष मापदंड नहीं है। ऐसे मापदंड का पता लगाने के लिए वह "विभिन्न देशों के अत्यन्त सरलतापूर्वक प्राप्य भोजन" की दृष्टि से निर्धारित उत्पादन-व्यय का सहारा लेता है। यह प्रयत्न प्रशंसनीय था, परन्तु इसका परिणाम अत्यन्त अनिश्चित था। एक अन्य रोचक भाग में लगान की प्रकृति पर विचार किया गया है, जिसे वह कृषि के समस्त व्यय के भुगतान किये जाने के बाद बचे हुए एक प्रकार के लाभ के रूप में मानता है। एक बुद्धिमत्ता-पूर्ण और प्रभावशाली अंश में वह अर्थ-दंड को आय के साधन के रूप में आरोपित किए जाने का विरोध करता है, इसकी अर्थशास्त्री और राजनयज्ञ के दृष्टिकोण से धार्मिक सहिष्णुता की सशक्त माँग में परिणत होता है। अर्थदंड केवल शांति को वास्तव में भंग किए जाने पर ही लागू किया जाना चाहिए। उत्पीड़न राज्य को हानि पहुँचाने, आय कम करने, और साथ ही साथ व्यक्ति को दुःख देने के बराबर है। वस्तुतः यह पुस्तिका नीति के प्रत्येक पक्ष पर लेखक के विचारों से भरी पड़ी है और यह राजाओं के लिए वैसी ही उपयोगी पुस्तक है, जैसी वित्तव्यवस्था पर एक भाष्य।

पैटी की उत्तर-कालीन रचनाओं में सर्वाधिक रोचक "पॉलिटिकल अरिथ-मेटिक" (Political Arithmetic) है, जो ह्वाइटहाल में फ्रांस का प्रभाव प्रमुख हो जाने के समय लिखी गई थी, तब तक रोक रखी गई, जब तक क्रांति ने ऐसी स्पष्ट आलोचना को संकटहीन न बना दिया। वह कहता है कि उसने मात्र शब्दों और तर्कों के प्रयोग के स्थान पर उसने अपने को आंकड़ों, तोल और माप की शब्दावली में अभिव्यक्त किया है। वह इस विचार को तिरस्कृत करता है कि देश अवनत अवस्था में है और वह कहता है कि यह

चालीस वर्षों से सत्ता और संपत्ति की दृष्टि से आगे बढ़ा है। वह यह सिद्ध करने का प्रयत्न करता है कि इंग्लैंड की कायर नीति का कारण, विशेषकर यदि यह हालैंड से मित्रता कर ले और उसकी व्यावसायिक नीति का अनुसरण करे तो इसका कारण, दुर्बलता नहीं है। "अपनी स्थिति, व्यापार और नीति द्वारा कोई छोटा देश और लघु जनसमुदाय सम्पत्ति और शक्ति में अपने से बहुत बड़े जनसमुदाय और भू-भाग के अनुरूप हो सकता है।" यह बात कि फ्रांसीसी राजसभा इंग्लैंड की राजसभा से अधिक वैभवपूर्ण है, अधिक सम्पत्ति की अपेक्षा शोषण की ओर निर्देशन करती है। फ्रांस एक चेतावनी है और हालैंड एक उदाहरण। इंग्लैंड की महानता के अवरोध अविवेकशील नीति से उत्पन्न हुए हैं और उसमें परिवर्तन द्वारा हटाए जा सकते हैं। इस पुस्तिका में स्वस्थ आशावादिता और देश की शक्ति और सम्पदा के ओजपूर्ण विश्वासों की छाप मिलती है। उसकी प्रमुख रचनाओं में दूसरी मुद्राप्रणाली की योजना पर एक पुस्तक, लंदन के विकास, आवास, अस्पताल और अन्य ठोस समस्याओं पर लेख सम्मिलित हैं। "दि पॉलिटिकल एनाटोमी ऑव आयरलैंड" (The Political Anatomy of Ireland) और उसके बाद की "ट्रिटाइज आन आयरलैंड" (Treatise on Ireland) एक ही साथ समाजशास्त्र में वर्णनात्मक लेख और रचनात्मक राजनयज्ञता की चेष्टाएँ थीं। उसने इंग्लैंडवासियों के हितों के लिए आयरिश हितों की गौणता पर शोक प्रकट किया और आयरिश उद्योगों का सम्पूर्ण विनाश रोकने के लिए एक यूनियन से निवेदन किया। यदि उसके प्रिय शब्द का प्रयोग किया जाय, तो राजनीतिक अंकशास्त्र सैद्धान्तिक विज्ञान की अपेक्षा अधिक व्यावहारिक कला है। वह राजनीतिक अर्थशास्त्र के व्याप्तिमूलक मत का था। यद्यपि वह हॉब्स का मित्र था, पर बेकन के झंडे के नीचे लड़ा। उसका ढंग तथ्यों को एकत्रित करने और उनका वर्गीकरण करने के पश्चात् तब कोई सामान्य आक्षेप स्थापित करने का था। राजनीतिक अर्थशास्त्र राजकला की शाखा, सरकार और शासन-यंत्र का सुधार करने की चेष्टा थी। जो शताब्दी, अर्थवादियों (bullionist) द्वारा आरम्भ और नार्थ तथा पैटी से समाप्त हुई, वह स्थिरता की दोषभागिनी नहीं ठहराई जा सकती।

BIBLIOGRAPHY

General.—Dunning, *Political Theories from Luther to Montesquieu*; Gierke, *Althusius*; Gooch, *English Democratic Ideas in the Seventeenth Century*; Maitland, *Collected Papers*, Vol. I; McIlwain, *The High Court of Parliament*; Remusat, *La Philosophie en Angleterre depuis Bacon jusqu'à Locke*; *Cambridge Modern History*, Vol. VI, ch. xxiii; *Cambridge History of English Literature*, Vols VII and VIII.

Chapter I.– Gardiner, *History of England, 1603-1656*; Figgis, *The Divine Right of Kings*; Gardiner and Spedding, *Studies in English History*; Spedding, *Life and Letters of Francis Bacon*; Abbott, *Francis Bacon*; Church, *Bacon*; Reynolds' edition of Bacon's *Essays*.

Chapter II.—Leslie Stephen, *Hobbes*; Croom Robertson. *Hobbes*; A. E. Taylor, *Hobbes*; Tonnies, *Hobbes*; (ed. of 1912); Aubrey's *Lives*, Vol. I.

Chapter III. Gardiner, *History of England*; "Coke" in *Dictionary of National Biography*; Holdsworth, "The Influence of Coke," in *Essays in Legal History*, ed. Vinogradoff; Forster's *Sir John Eliot*; Grosart's Biographical Introduction to *The Monarchy of Man*, Vol. I; Reynolds' edition of Selden's *Table Talk*; Herbert Paul, *Men and Letters*; Franck, *Reformateurs et Publicistes*, Vol. II; *Great Jurists of the World*, ed. Sir John Macdonell.

Chapter IV. Gardiner's *History of England*, and *Oliver Cromwell*; Firth, *Oliver Cromwell and Cromwell's Army*; Borgeaud, *The Rise of Modern Democracy*; Gooch, *Democratic Ideas*; Rothschild, *Der Gedanke der geschriebenen Verfassung in der englischen*

Revolution; T. H. Green, *Four Lectures on the English Commonwealth.*

Chapter V. Masson's *Life of John Milton;* Mark Pattison, *Milton;* Seeley, "Milton's Political Opinions," in *Lectures and Essays;* Dowden, *Puritan and Anglican;* H. F. Russell Smith, *Harrington and his Oceana.*

Chapter VI. Berens, *The Digger Movement;* Bernstein, *Sozialismus und Demokratie in der englischen Revolution;* Gooch, *Democratic Ideas.*

Chapter VII. Shaw, *History of the English Church,* 1640-1660; Burrage, *The Early English Dissenters;* Dexter, *The Congregationalism of the Last Three Hundred Years;* Braithwaite, *The Beginnings of Quakerism;* Barclay, *The Inner Life of the Religious Societies of the Commonwealth;* Louise F. Brown, *The Political Activities of the Baptists and Fifth Monarchy Men during the Interregnum;* Weingarten, *Die Revolutionskirchen Englands;* Rufus Jones, *Studies in Mystical Religion.*

Chapter VIII. Airy, *Charles II;* Kent, *The Early History of Toryism;* Ewald, *Life of Algernon Sidney;* Christie, *Life of the First Earl of Shaftesbury* and *Memoir of Dryden,* in Globe edition of his *Poems;* Saintsbury, *Dryden;* Kitchin, *Sir Roger L'Estrange;* Macaulay, *History of England.*

Chapter IX. Foxcroft, *Life and Letters of Sir George Savile, Marquis of Halifax;* Herbert Paul, *Men and Letters;* Raleigh's *Introduction to the Works of Halifax.*

Chapter X.—Tulloch, *Rational Theology in England in the Seventeenth Century* ; Seaton, *The Theory of Toleration under the Later Stuarts* ; Ruffini, *Religious Liberty* ; Gosse, *Jeremy Taylor* ; Birrell, *Andrew Marvell* ; Bate, *The Declaration of Indulgence,* 1672 ; *Cambridge Modern History,* Vol. V. chs. xi and xxiv ; Masson, *Life of Milton,* Vol. III, 98—136.

Chapter XI.—Roscher, *Zur Geschichte der englischen Volkswirthschaftslehre (Abhandlungen der Sachsischen Akademie, 1857)*; Palgrave, *Dictionary of Political Economy*; Schmoller, *The Mercantile System*; Ingram, *History of Political Economy*; Mun, *England's Treasure by Foreign Trade*, edited by Ashley; Hewins, *English Trade and Finance chiefly in the Seventeenth Century*; Ashley, *The Tory Origin of Free Trade*, in *Surveys, Historic and Economic*; Fitzmaurice, *Life of Sir William Petty*; W. L. Bevan, *Sir William Petty*; *The Economic Writings of Sir W. Petty*, edited by Hull; Cunningham, *The Growth of English Industry and Commerce.*

अनुक्रमणिका